1998 से निरंतर प्रकाशित

RNI. No. MPHIN/2017/73838

ISSN 2581-446X

वर्ष-4, अंक-4, फरवरी-मार्च 2021 ₹ 25/-

# कला समय

कला, संस्कृति और विचार की द्वैमासिक पत्रिका

सांस्कृतिक यात्रा
रजत वर्ष की
ओर अग्रसर...

धरोहर के संग्राहक
और शिल्पकार
केन्द्रित विशेषांक

संपादक
भँवरलाल श्रीवास

# डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर राष्ट्रीय सम्मान से विभूषित प्रो. वी.एच. सोनवणे और प्रो. गिरीराज कुमार

पुरा सम्पदा के संरक्षण एवं पुरातात्विक संस्कृति के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर की उत्कृष्ट प्रतिभा को सम्मानित और प्रोत्साहित करने के लिए म.प्र. शासन, संस्कृति विभाग द्वारा डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर राष्ट्रीय सम्मान वर्ष 2005-06 में स्थापित किया गया है। सम्मानित पुरातत्ववेत्ता/संस्था को रूपये 2.00 लाख की नगद राशि एवं प्रशस्ति पट्टिका से अलंकृत किया जाता है। यह एकल सम्मान है अर्थात संयुक्त रूप से नहीं दिया जाता है।

इस बार दिनाँक 22 मार्च, 2021 को राज्य संग्रहालय सभागार में मुख्य अतिथि माननीय ऊषा ठाकुर, मंत्री, संस्कृति, पर्यटन एवं अध्यात्म, म.प्र. शासन एवं श्री शिवशेखर शुक्ला, प्रमुख सचिव, संस्कृति, जनसम्पर्क एवं पर्यटन द्वारा वर्ष 2016-2017 का प्रो. वी.एच. सोनवणे, बड़ौदा ( गुजरात ) तथा वर्ष 2017-18 का प्रो. गिरीराज कुमार, आगरा ( उ.प्र. ) को डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर सम्मान में 2.00 रूपये की राशि, प्रशस्ति पत्र तथा शॉल से गरिमापूर्ण समारोह में दोनों को विभूषित किया गया। प्रशस्ति का वाचन, प्रमुख सचिव, संस्कृति, श्री शिवशेखर शुक्ला द्वारा किया गया।

**1998 से निरंतर प्रकाशित**
RNI NO. MPHIN/2017/73838

कला समय पत्रिका अब वेबसाइट पर उपलब्ध
**www.kalasamaymagazine.com**

ISSN 2581-446X
(पंजीयन पूर्व प्रकाशित अंक, वर्ष सम्मिलित)
**(वर्ष : 20+04=24) पूर्णांक-109**
**वर्ष-4, अंक-4, फरवरी-मार्च-2021**

माधवराव सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल म.प्र. द्वारा 'रामेश्वर गुरू सम्मान' से पुरस्कृत
श्री भारतेन्दु समिति कोटा (राज.) द्वारा 'साहित्यश्री' सम्मान एवं
साहित्य मण्डल श्री नाथद्वारा (राज.) द्वारा 'सम्पादक रत्न' सम्मान से सम्मानित
म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन भोपाल (म.प्र.) द्वारा उर्मिला तिवारी स्मृति 'सप्तपर्णी सम्मान' से पुरस्कृत

# कला समय

## कला, संस्कृति और विचार की द्वैमासिक पत्रिका

**संरक्षक**
नर्मदा प्रसाद उपाध्याय
डॉ. महेन्द्र भानावत
पं. विजय शंकर मिश्र
श्यामसुंदर दुबे
पं. सुरेश तातेड़
कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय

**परामर्श**
लक्ष्मीनारायण पयोधि
डॉ. नारायण व्यास
ललित शर्मा
प्रो. सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग'
प्रो. सुधा अग्रवाल

**सांस्कृतिक प्रतिनिधि**
चेतना श्रीवास

**वेबसाइट प्रबंधन**
मयंक अग्रवाल

**कानूनी सलाहकार**
जयंत कुमार मेढ़े (एडवोकेट)

तारकसी शिल्पकार : गजेन्द्र सिंह कुशवाहा

**संपादक**
भँवरलाल श्रीवास

**सलाहकार संपादक**
डॉ. मुकेश कुमार मिश्रा

**सह संपादक**
डॉ. मधु भट्ट तैलंग

**उप संपादक**
राहुल श्रीवास

**संपादक मंडल**
रामेश्वर शर्मा 'रामूभैया'
**साहित्य**
हरीश श्रीवास
**कला**
डॉ. मुक्ति पाराशर
**संस्कृति**
नरिन्दर कौर
**प्रबंध**

**सदस्यता सहयोग राशि:**

| | | |
|---|---|---|
| वार्षिक | : 150/- | (व्यक्तिगत) |
| | : 175/- | (संस्थागत) |
| द्वैवार्षिक | : 300/- | (व्यक्तिगत) |
| | : 350/- | (संस्थागत) |
| चार वर्ष | : 500/- | (व्यक्तिगत) |
| | : 600/- | (संस्थागत) |
| आजीवन | : 5,000/- | (व्यक्तिगत) |
| (केवल 15 वर्षों के लिए) | : 6,000/- | (संस्थागत) |

**(कृपया सदस्यता शुल्क- ऑनलाइन/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा कला समय के नाम से उक्त पते पर भेजें)**

**कार्यालय सम्पर्क :**
**संपादकीय एवं सदस्यता सहयोग**
जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी,
भोपाल (म.प्र.)-462016
फोन : 0755-2562294, मो.- 94256 78058
ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com
bhanwarlalshrivas@gmail.com
वेबसाइट : **www.kalasamaymagazine.com**

**ऑनलाइन सदस्यता सहयोग सुविधा :**
**'कला समय' का बैंक खाता विवरण**
पंजाब नैशनल बैंक की शाखा अरेरा कॉलोनी भोपाल, म.प्र. **(IFSC : PUNB0093210)** के नाम देय, खाता संख्या **A/No. 09321011000775** में ऑनलाइन राशि जमा कराने के बाद रसीद की फोटोकॉपी अपने पूर्ण पते के साथ हमें भेज दें।

कला समय पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, यह जरूरी नहीं कि संपादक, प्रकाशक, मुद्रक उनसे सहमत हों। पत्रिका से सम्बन्धित समस्त विवाद, भोपाल न्यायालय के अधीन ही रहेंगे।
सम्पादन, संचालन, प्रबंधन एवं प्रकाशन- अवैतनिक/अव्यवसायिक

विशेष नोट : © सर्वाधिकार सुरक्षित 'कला समय' प्रबंधन यह स्पष्ट करना आवश्यक समझता है कि 'कला समय' में प्रवेशांक फरवरी-मार्च 1998 से लेकर अब तक प्रकाशित होने वाली समस्त सामग्री या सामग्री के अंश के पुनर्प्रकाशन तथा पुनरुत्पादन के सर्वाधिकार कॉपीराइट अधिनियम के अंतर्गत 'कला समय' के पास सुरक्षित हैं। अत: कोई भी व्यक्ति या संस्था 'कला समय' की इस सामग्री या इस सामग्री के अंश का उपयोग प्रबंधन की पूर्वानुमति के बिना न करें।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी भँवरलाल श्रीवास द्वारा दृष्टि ऑफसेट, 36-37, प्रेस काम्पलेक्स, जोन नं-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.) - 462016 से प्रकाशित। संपादक- भँवरलाल श्रीवास

महत्वपूर्ण विशेषांक के शिल्पी...

नर्मदा प्रसाद उपाध्याय

विजय बहादुर सिंह

डॉ. लक्ष्मी नारायण गर्ग

विजय मनोहर तिवारी

अखिलेश निगम

गोविन्द गुंजन

अशोक 'अंजुम'

रामप्रकाश त्रिपाठी

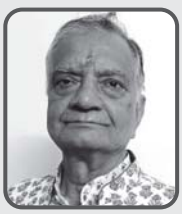
डॉ. देवदत्त शर्मा

डॉ. नारायण व्यास

ओ.पी. कुशवाहा

डॉ. शैलेन्द्रकुमार शर्मा

देवेन्द्र प्रकाश तिवारी

सुनील कुमार भट्ट

## इस बार


- संपादकीय / 5
  **शिल्प और संग्रह का अद्भुत संसार**
- आलेख / 6
  **साहित्य और कला के अंतर्संबंध/नर्मदा प्रसाद उपाध्याय/9**
- लोक में अद्वैत / 9
  **पानी पर लाठी मारने से अलग नहीं होता पानी / गोविन्द गुंजन**
- धरोहर / 11
  **एक जागते हुए कस्बे की कहानी / विजय मनोहर तिवारी**
- काष्ठ शिल्पकार/ 16
  **जीवन यात्रा पढ़ाव और समय चक्र / ओ.पी. कुशवाहा**
- धरोहर के संग्राहक
  **संग्रह के लिए प्रेरणा / डॉ. नारायण व्यास / 22**
  **कबाड़ से कलाकृतियाँ / देवेन्द्र प्रकाश तिवारी / 25**
  **माचिस मैन ऑफ भोपाल / सुनील कुमार भट्ट / 28**
  **मेरा जीवन मेरा आदर्श / शशिकान्त लिमये / 31**
  **मेरा 20 वर्षों का संग्रह / अरूण कुमार सक्सेना/ 34**
  **इतिहास की जानकारी हो यही उद्देश्य है / रामगोपाल ठाकुर / 39**
- हुनर विथि / 41
- धरोहर के संग्राहक
  **मैं बच्चों को नोटों के संग्रह के लिए प्रेरित करता हूँ / अजय मेहता / 61**
  **अजब अंकों के गज़ब रखवाले / सुधीर कुमार पाण्ड्या / 63**
  **मेरे विविध संग्रह / अमरजीत सिंह गांधी 'विन्नी' / 65**
  **150 देशों के सिक्कों का विशाल संग्रह / इन्द्रेश्वरी वल्लभ पंत / 67**
  **वजन नापने के विभिन्न मापों का अनोखा संग्रह / रंजीत कुमार झा / 71**
- मध्यांतर / 73
  **स्पेनिश कवि अरनेस्तो कार्देनाल की कविताएं, अनुवाद: मणि मोहन**
  **राम अधीर के गीत /75**
  **गोविन्दसिंह असिवाल की कविताएँ/76**
  **अशोक 'अंजुम' की ग़ज़लें / 77**
  **अपर्णा पात्रीकर की हिन्दुस्तानी ग़ज़लें / 78**
  **असंख्य रंगों का धनक है दीपक / डॉ. महेन्द्र भानावत / 80**
  **विचार: मैं बसंत हूँ/ डॉ. देवदत्त शर्मा /79**
- समाधान / 80
  **भारतीय संगीत में नृत्य का स्थान / डॉ. लक्ष्मी नारायण गर्ग**
- आलेख / 83
  **मालवा के लोक मानस का प्रभावी मंच है 'माच' / डॉ. शैलेन्द्रकुमार शर्मा**
- समय की धरोहर/ 85
- संस्मरण / 86
  **सेठ से पंडित रघुनाथ सेठ तक का सफरनामा / जगदीश कौशल / 86**
- स्मृति शेष/ 87
  **संकल्प रथ के सारथी: अधीर जी ... / नर्मदा प्रसाद उपाध्याय / 87**
  **बंसी कौल के रंग कर्म का ओर-छोर / रामप्रकाश त्रिपाठी / 88**
  **प्रथम गौंड महिला गौंडी चित्रकार : कलाबाई श्याम / विजय काटकर / 91**
- आयोजन / 93
  **कराल काल में काकलीं संगीत**
- पुस्तक समीक्षा
  **कला समीक्षा की कसौटी की परख / अखिलेश निगम/ 96**
- समवेत / 97
  **दर्पण म्यूजिक सोसाइटी ऑफ किराना घराना का संगीत समारोह / संगीत नायक पंडित दरगाही मिश्र संगीत अकादमी गुरुग्राम में वसंतोत्सव / 75 वें जन्म दिवस के अवसर पर अरूण तिवारी का अमृत महोत्सव / ''डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर स्मृति सम्मान'' से सम्मानित हुए ललित शर्मा**



**शब्द संयोजन एवं आकल्पन - गणेश ग्राफिक्स,** भोपाल, 9981984888 | **आवरण चित्र** - कुशवाहा परिवार | **अंतिम आवरण** - कुशवाहा परिवार | **छायाचित्र** - मनीष सराठे, सुनील सेन | **रेखांकन** - डॉ. भवानीशंकर शर्मा | **सहयोग** - धन सिंह, लता श्रीवास | **आवरण सज्जा** - मनोज माकोड़े, गणेश ग्राफिक्स, भोपाल

# शिल्प और संग्रह का अद्‌भुत संसार

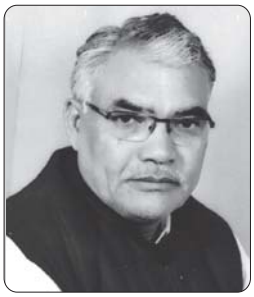

**''अगर इस बस्ती से गुज़रो**
**तो जो बैठे हों चुप**
**उन्हें सुनने की कोशिश करना**
**उन्हें घटना याद है**
**पर वे बोलना भूल गए हैं।''**

**- केदारनाथ सिंह**

अनमोल धरोहर पर जब हम नजर दौड़ाते है तो हैरानी होती है। आपके लिए महत्वहीन चीजें वे कहते है हमारे लिए खासी महत्वपूर्ण हैं। पर इनका खासा सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व है। सभी का उद्‌देश्य इस शिल्प और संग्रह के पीछे इसे भावी पीढियों के लिए सहेज कर रखना भी महत्वपूर्ण है। 'कला समय' ने भोपाल और बैरसिया के ऐसे पन्द्रह संग्रहकर्ताओं और शिल्पकारों तथा तारकसी कलाकारों से सम्पर्क स्थापित कर उनकी कला और कारीगरी को निहारा तो दूसरी तरफ वेस्ट से बेस्ट मॉडल तैयार कर हैरत में डाल दिया बिना पूंजी से मॉडल्स को आधार देने वाले डी.पी. तिवारी अपने मॉडल्स का संग्रहालय बनाने के लिये आतुर है तो दूसरी ओर शहर के 'माचिस मैंन' सुनील कुमार भट्‌ट ने माचिस संग्रह में वर्ल्ड रिकार्ड बना चुके है उनके पास दुनिया के विभिन्न प्रकार की पेंतीस हजार माचिसों का विशाल संग्रह है। डॉ. नारायण व्यास पुरात्ववेता के पास अद्‌भुत संग्रह है जो प्रेरणादायी ऐतिहासिक संग्रह है और आई.बी. पंत के पास लगभग 80-90 किलो दुनियाँ के सिक्को का विशाल संग्रह और नोटों का संग्रह है। तो सुधीर पांड्या के पास नोटों के संग्रह के साथ उल्टे लिखने और पर्यावरण बचाने नीम के पेड का जन्मदिन मनाने, लेप्टीयों की विस्तार जानकारी के साथ समान संख्या के नोट बैंक में जमा करने का रिकार्ड तथा तीन बार लिमका बुक में नाम दर्ज कराने का गौरव हासिल है। अरूण सक्सेना परिवार सहित नोट, सिक्के तथा जन्म तारीख के विशाल संग्रह करने का शौक है तो रणजीत झा के पास बाँटों का अद्‌भुत संग्रह जो देखते ही बनता है। अमरजीत गांधी बैरसिया के कपड़ा व्यापारी, लाइन्स क्लब के सदस्य के साथ समाजसेवा के रूप में उनकी अलग पहचान है। उनके पास विविध प्रकार के संग्रहों में नोट, सिक्कों के साथ अमिताभ बच्चन का दुर्लभ संग्रह है। उनका हर वर्ष कई दिनों तक उनसे पत्र व्यवहार भी होता रहा है। अजय मेहता भी शहर के प्रसिद्ध कपड़ा व्यापारी है आपके पास भी दुर्लभ नोट और सिक्कों का संग्रह है। रामगोपाल ठाकुर के पास सिक्कों, नोट, माचिस तथा डाक टिकिट का अद्‌भुत संग्रह है। शहर के सुप्रसिद्ध रंगकर्मी शशिकान्त लिमये रंगकर्मी, निर्देशक, लेखक का अपना निराला संग्रह है। इन सभी का अपना एक हाबी ग्रुप है। जिसके माध्यम से संग्रहित सिक्कों, नोटों, टिकटों का आपसे में आदान-प्रदान करना पूर्णत: नि:शुल्क तथा देश में जगह-जगह अपने संग्रहित साम्रगी की प्रर्दशनीयाँ लगाना तथा लोगों को समझाना और संग्रह की जानकारी देना। अपने व्यवसाय, नौकरी के साथ यह निराला शौक एक जुनून बना और अधिकतर लोगों ने कई रिकार्ड बनाये और नाम तथा प्रतिष्ठा हासिल की।

भोपाल शहर के काष्ठ शिल्पी ओ.पी.कुशवाहा उनके पुत्र गजेन्द्र सिंह कुशवाहा और राजेन्द्र सिंह कुशवाहा अपने पूरे परिवार के साथ काष्ठ शिल्प की मुखर कलाकृतियाँ लकड़ी पर उकेर कर उनके पास जीवन्त नायाब संग्रह उपलब्ध है साथ ही सुन्दरकाण्ड को लकड़ी पर उकेरकर तथा गणेश एक सागोन जड पर 521 गणेश के स्वरूपों को आकार दिया रामदरबार के साथ कृष्ण-राधा सहित रासलीला तथा चारों धार्मों के धार्मिक शिल्पों के माध्यम से चारों धर्मों को अपने शिल्पों के माध्यम से एकता का संदेश देती जीवन्त कृतियाँ शिल्पों के माध्यम से उकेरी है। जिसमें मांडू, खजुराहो, ताजमहल, सिगंल, डबल दरवाजे महत्वपूर्ण है। दूसरी ओर तारकसी विधा को लकड़ी पर उकेर पीतल से कर भारतीय विश्व धरोहर साँची स्तूप, भीमबैठका, सहित कई शिल्प कृतियों में प्राण फूँकने का काम सतत जारी है। इस परिवार को राष्ट्रपति सम्मान से लेकर कई सम्मानों का यश प्राप्त है। ओ.पी. कुशवाहा परिवार के इस काम पर फिल्म का निर्माण भी हुआ है। तो दूसरी ओर भोपाल को अपनी काष्ठशिल्प और तारकसी की कला के माध्यम से मध्यप्रदेश का नाम विश्व के मानचित्र पर स्थापित किया है। डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' जी के शब्दों में -

**''जब हाथ बिठालोगे सौ-सौ साँचों में/कंचन पिघलेगा जब सौ-सौ आँचों में**
**तब एक रेख का कही भँराव भरेगा/तब एक रूप का आकर्षण निखरेगा।''**

इसी संदर्भ में यहाँ गोपालदास 'नीरज' जी की कुछ पंक्तियाँ याद आती है।

**''मै तुफानों में चलने का आदी हूँ, तुम मत**
**मेरी मंजिल आसान करों है, फूल रोकते, कांटे मुझे चलाते**
**मरूस्थल पहाड चलने की चाह बढ़ाते**
**सच कहता हूँ, जब मुश्किलें ना होती हैं, मेरे पग**
**तब चलने में भी शर्माते..''**

होली पर्व की मंगलमय शुभकामनाओं के साथ आपकी प्रतिक्रिया का इंतजार रहेगा।

**- भँवरलाल श्रीवास**

■

आलेख

# साहित्य और कला के अंतर्संबंध

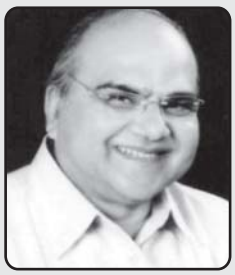

नर्मदा प्रसाद उपाध्याय

अंतर्संबंध का आशय अंतर से अर्थात् हृदय से जुड़ा होना है। यह संबंध दिखाई नहीं देता। जैसे हरिद्वार की गंगा जब प्रयागराज आती है तो इस संगम में अंत:सलिला सरस्वती मिलती है, विलीन हो जाती है। लेकिन दिखाई नहीं देती। संगम की पहचान तभी बनती है जब उसमें सरस्वती का विलय हो। संबंध बाहरी है, अंतर्संबंध आंतरिक। हृदय से जुड़े हुए।

दादा माखनलाल चतुर्वेदी कला को रुठने वाली लड़की कहते थे जो एक जगह सीधी नहीं बैठती, निरन्तर गतिशील रहती है और उसकी निर्मात्री शक्ति इतनी प्रबल होती है कि वह जाने कितने कला रूपों की जननी बन जाती है।

कला मनुष्य की उस तपस्या का मूर्त रूप है जो उसे विकास की ओर ले जाती है। भारतीय कला में निरन्तरता है, जड़ता या स्थिरता नहीं है। इसलिए खजुराहो के जीवंत शिल्प समाधि के नहीं संभावनाओं के शिल्प हैं। भारतीय कला की सौंदर्य दृष्टि अभिजात नहीं है। यहां सौन्दर्य लोक प्रकृति से आया है। सीता, शकुन्तला और पार्वती के सौन्दर्य का आख्यान जब कालिदास करते हैं तो वे उसी वन्य शोभा के परिप्रेक्ष्य में करते हैं जो हम सबकी है। सीता के स्नान से सरोवर तप से पूरित होते हैं, पार्वती के वन में किए गए तप से उनका सौन्दर्य निखरता है और दुष्यंत कण्व के आश्रम की उस कन्या के सौन्दर्य पर रीझते हैं जो श्रम से आया है।

भारतीय कला जैसा कि डॉ. आनंद कुमार स्वामी कहते हैं चिरनवीन है। उसका उद्देश्य नवीन बनाना नहीं बल्कि नवीन बने रहना है। वह परम्परा के बीच से परम्परा का अतिक्रमण करती है। भारतीय कला परम्परा को बंधन नहीं मानती वह पाश्चात्य कला से इस दृष्टि में भिन्न है कि वह देह के सुगठित होने पर बल नहीं देती सुसंहत होने पर देती है। वह निजता की आख्याता नहीं है, समग्र की उद्घोषक है।

भारतीय कला के आवश्यक तत्वों में प्रेषणधार्मी वाक्तत्व तथा मंगलादेशी विनायकधर्म शामिल हैं। विनायकधर्म से आशय है किसी सफल कलाकृति के लिए निरंतर किया जाने वाला प्रयत्न तथा संस्कार। भारतीय कला की अवधारणा में केन्द्र पर बल नहीं है बल्कि केन्द्र की परिधि में आने वाले उस समस्त संसार पर है जो अपने आपमें विश्व का लघुरूप है। यह धर्म के सच्चे मर्म से अलग नहीं है। वह जगत में बिखरे हुए सौंदर्य के रस की अनुभूति तो है ही इस रस से उपजने वाले सृजन की स्वाभाविक अभिव्यक्ति भी है।

भारत कला का मर्म उसका सौंदर्य पक्ष है और इस सौंदर्य के मूल में है रस जो वास्तव में अखण्ड होने का, सकल होने का सार है। यह सौंदर्य व्यष्टि का वह छंद है जो समष्टि के छंद से मिलकर चलता है और सुंदर को जन्म देता है। यह छंद शब्द में, रेखा में, गंध और वर्ण में सामंजस्य के भाव को ढूंढ लेता है। यही कारण है कि भारतीय कला के सौंदर्य में काव्य की प्रतिष्ठा हो जाती है। यहां वाणी और अर्थ विश्व के सर्वस्व हो जाते हैं और कालिदास इसी को अभिव्यक्त करते हुए कहते हैं –

**वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये,**
**जगत: पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ।**

पाश्चात्य सौंदर्य की अवधारणा से भारतीय अवधारणा का साम्य नहीं है। पश्चिम की अवधारणा वैयक्तिकता पर ज़ोर देती है। उसके केन्द्र में व्यक्ति है, लोक नहीं है। वहां समन्वय या समग्रता तथा अखण्डता के तत्व दिखाई नहीं देते। पश्चिम की कला अवधारणा विभिन्न खण्डों में अपने आपको अभिव्यक्त करती है। वहां कला एकाकी और स्वतंत्र है। विभिन्न अनुशासनों के बीच साझीदारी का प्राय: अभाव है जबकि भारतीय कला अवधारणा में यह एक आवश्यक तत्व है। पश्चिम में विशेष रूप से फ्रांस में अनेक कलावाद जन्मे और समय के साथ विलुप्त होते गए। जबकि भारत में वाद पर ज़ोर नहीं रहा। मूल संवेदना वही रही भले उसका समय के अनुरूप रुपांतरण होता रहा हो।

इस परिप्रेक्ष्य में स्पष्ट होता है कि भारतीय कला में अवधारणाओं का गुंजलक विद्यमान नहीं है। भारतीय कला में कहीं से कहीं तक क्लिष्टता नहीं है, दुरूहता नहीं है। वह नैसर्गिक है। भारतीय कलाकार ने अमूर्तन में भी अपनी उन मानस छवियों को साकार किया है जो कहीं अपने लोक की चिंताओं से जन्मी है। भारतीय कला के प्रवाहों की दिशा में भिन्नता है लेकिन उनके उत्स में भिन्नता नहीं है। उत्स की यह भिन्नता भले परिभाषित की जाने की चेष्टा की जाती रही हो किन्तु यह भिन्नता है नहीं।

जहां तक साहित्य का प्रश्न है यह शब्द संस्कृत के सहित शब्द से बना है जिसका अर्थ है साथ-साथ। जो सबके सहित है वह साहित्य है। साहित्य, सहित शब्द में आकारत्व के साथ 'य' प्रत्यय के योग से बना है। प्रख्यात वैयाकरण भामह ने अपने ग्रंथ काव्यालंकार में साहित्य की परिभाषा देते हुए कहा है, ''सहितस्य भाव: साहित्यम' राजशेखर और कुन्तक ने भी साहित्य का प्राय: यही अर्थ किया है। साहित्य तब तक साहित्य है ही नहीं जब तक उसमें कहीं स्व है, निजता है केवल अपने तक सिमटने का भाव है। साहित्य समग्र का है इसीलिए साहित्य है और तैत्तरीय उपनिषद में इस भावना का उद्घोष रसो वैस: कहकर किया गया है अर्थात रस हमारी सबकी दैवीय प्रकृति है। जहां रस है वहां वह है ही इसीलिए क्योंकि वह सबका है। भारतीय दर्शन का भी यही स्वर है–

**अयं निज: परो वेति, गणना लघु चेतसाम**
**उदार चरितानां च, वसुधैव कुटुम्बकम्**

पूरे विश्व को साथ लेने का भाव और यह भाव इतना प्रबल है

कि यदि तुलसी राम की कथा स्वांत: सुखाय भी लिखते हैं तो वह युगों-युगों के, पूरे समाज के सुख के लिए कही गई कथा हो जाती है और सूर जैसे दृष्टा जब अपनी आंखों के कोटरों में राधा-कृष्ण की लीला देखते हैं तो फिर वह लीला जन-जन की आंखों में समा जाती है और सूर के जैसा दृष्टिसंपन्न सर्जक हमें संसार में दूसरा नहीं दिखाई देता। उनकी आंखों का अन्धत्व समूचे युग का आलोक बन जाता है। सूर की आंखें हमारी आंखें हो जाती हैं। हम आज साहित्य को जिस विधागत रूप तक सीमित करते हैं यह साहित्य का, उसकी व्यंजना का विखण्डन है।

भारत में साहित्य का अर्थ बड़ा व्यापक है। भारतीय साहित्य भाषा को भाषा के साथ या भाव को भाव के साथ ही नहीं मिलाता अपितु मानव को मानव के साथ, अतीत को वर्तमान के साथ और बाह्य को अन्तर के साथ मिलाता है और इसे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल वृत्तियों का सामंजस्य कहते हैं और यही कार्य कला भी करती है।

मनुष्य के कला प्रयत्नों का अर्थ है जड़ता से संघर्ष और यही प्रयोजन साहित्य का भी है। नवीनजी की पंक्तियां हैं -

**कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ/ जिससे उथल-पुथल मच जाए**
**एक लहर इधर से आए/एक लहर उधर से जाए**

इस तरह दोनों के प्रयोजन समान हैं।

वास्तविकता यह है कि कला और साहित्य इन दोनों की प्रकृति और प्रयोजन एक जैसे हैं केवल माध्यम भिन्न हैं। जैसे हम कविता में शब्दों को, उनसे बने वाक्यों को पढ़ते हैं वैसे ही शिल्पी पत्थर की भाषा को पढ़ता और सुनता है। यह सोचना गलत है कि शिल्पी अपनी छेनी से पत्थर में मूर्ति बनाता है, सच यह है कि पत्थर की भाषा उसे अपना रूप बता देती है और वह सिर्फ यही करता है कि पत्थर की इस मूर्ति के स्पष्ट होने में पत्थर का जो अंश बाधक होता है उसे निकाल देता है तो वह मूर्ति स्वयं प्रकट हो जाती है। वास्तव में विषय के अंर्तनिहित छन्द को कवि और पत्थर के अंर्तनिहित छन्द को शिल्पी पहचानता है। आज कविता कानों का विषय बना दी गई है और चित्र या शिल्प आंखों के विषय मान लिए गए हैं जबकि सच्चे अर्थों में कविता आंखों का विषय भी होती है और चित्र या मूर्ति की ध्वनीयों को भी हमारे कान सुनते हैं।

कवि या शिल्पी वास्तविक जगत की वस्तुओं को देखकर पहले अपने चित्त में एक मानसी मूर्ति बनाते हैं और फिर कविता लिखी जाती है या मूर्ति बनाई जाती है। यह कार्य सरल नहीं होता। यह कहा गया है कि सीधी रेखा खींचने का काम सदैव टेढ़ा होता है।

साहित्य और कला इन दोनों की प्रकृति समान है। दोनों लोक के लिए, लोक की देन है तथा इन दोनों का प्रयोजन लोकहित है। कला और साहित्य तपस्या के प्रतिफल हैं और दोनों की पहचान एक-दूसरे से बनती है। यह अलग बात है कि इस अंतरावलंबन को हम नहीं पहचान पाते।

कला और साहित्य के भारतीय संदर्भ में लोक की दृष्टि बहुत महत्वपूर्ण है। यह लोक पश्चिम के फोक से पूरी तरह भिन्न है। यह लोक हमारी वाचिक परम्परा में आया है जिसके माध्यम से शब्द नहीं बल्कि चेतना परिवहित होती है। इसी लोक शब्द से आलोक बना है जिसका अर्थ है उजाला। इस लोक से कला और साहित्य दोनों अटूट रूप से सम्बंद्ध हैं। भारत में कला अपने लोक का प्रतिनिधित्व करती है। यहाँ तक कि मध्यकाल के राज्याश्रयी चितेरों और शिल्पियों ने भी अपने लोक को रचा है। सांची, भरहुत, अमरावती, नागार्जुनकोण्डा, कार्ले, कान्हेरी, भज, बदामी और सित्तनवासल की कला से लेकर अजन्ता और बाघ तक में लोक के दर्शन होते हैं। यह लोक कला और साहित्य में कुछ इस तरह समाया है कि उसके बिना इन दोनों की पहचान नहीं बनती।

कला और साहित्य के बीच अंतर्संबंध वेदों के समय से हैं। वेद, पुराण, ब्राह्मण और स्मृतियों से लेकर पाणिनी की अष्टाधयायी, कौटिल्य का अर्थशास्त्र और वात्सयायन के कामसूत्र से लेकर वाल्मीकि की रामायण और वेदव्यास के महाभारत तक के ग्रन्थ साहित्य और कला के ग्रन्थ हैं। इनका विभाजन हमने धर्म, साहित्य और कला के ग्रन्थों के रूप में कर दिया है। ईसा पूर्व की सदियों में रचे गए इन ग्रन्थों की परम्परा बाद में कालिदास, बाणभट्ट और भोज तक निरंतर चली तथा इन महान कवियों और लेखकों ने जो ग्रन्थ रचे वे कला और साहित्य के अंतर्संबंधों पर केन्द्रित ग्रन्थ थे। मुझे इस संदर्भ में दसवीं सदी के बाद रचे गए एक ग्रन्थ की याद आती है यह है, माधवाचार्य विद्यारण्य के द्वारा रचित ग्रन्थ 'पंचदशी'। यह साहित्यिक ग्रन्थ कहा जाता है लेकिन वास्तव में यह साहित्यिक प्रतीकों के माध्यम से हमारे कला दर्शन की कहानी कहता है। इस संदर्भ में विशेष रूप से कालिदास, अमरूक और जयदेव का स्मरण होता है। उदाहरण के रूप में यदि कालिदास को लें तो यह ज्ञात होगा कि कालिदास का कृतित्व केवल शब्द धारोहर नहीं है बल्कि वह मूर्तिकला, शिल्प, संगीत, नाट्य और चित्रकला जैसे अनुशासनों में भी मूर्त हुआ है।

कालिदास की कृतियों का यदि केवल चित्रांकन की दृष्टि से ही परिशीलन किया जाए तो यह ज्ञात होता है कि उनकी सभी कृतियों में चित्रांकन के विपुल संदर्भ हैं। ये दो तरह के हैं। एक ओर तो वे चित्रों के संबंध में भिन्न-भिन्न प्रसंगों में संदर्भ देते हैं तो वहीं दूसरी ओर अपनी रचनाओं में इतना बिम्बात्मक विवरण देते हैं कि समूचा चित्र हमारी आंखों के सामने मूर्त हो उठता है। रघुवंश, मेघदूत, कुमारसंभव, ऋतुसंहार जैसे काव्य तथा अभिज्ञानशाकुंतल, विक्रमोवर्शीय तथा मालविकाग्निमित्र में कालिदास ने जो बिम्ब खींचे हैं वे अद्‌भुत हैं। इन बिम्बों के आधार पर परवर्तीकाल में भी पहाड़ और राजस्थान की शैलियों से लेकर मालवा और दकन तक की शैलियों में बहुत सुंदर लघुचित्रों के अंकन हुए। कालिदास ने अपनी सभी नायिकाओं के सौन्दर्य का सजीव वर्णन किया, विशेष रूप से पार्वती का। उन्होंने पार्वती के केवल दैहिक लावण्य का ही वर्णन नहीं किया अपितु उनकी कुशाग्र बुद्धि का भी बिम्बात्मक वर्णन किया। उन्होंने लिखा कि पार्वती ने जब पढ़ना आरम्भ किया तो पूर्व जन्म की सभी विधाएं उन्हें वैसे ही स्मरण हो आईं जैसे शरद ऋतु के आगमन पर गंगा में हंस स्वयं आ जाते हैं अथवा स्वत: चमकने वाली जड़ी बूटियों से रात को चमक आ जाती है।

पार्वती की उज्जवल मुस्कान के बारे में उन्होंने लिखा कि यदि नवपल्लवों के बीच सफेद फूल को रख दिया जाए या लाल रंग के मूंगे पर उज्जवल मोती रख दिया जाए तो दोनों में से एक की तुलना पार्वती के अरुण अधरों पर कान्ति बरसाने वाले उनके उज्जवल मंद हास्य से की जा सकती है। इसी तरह बारहवीं सदी में जयदेव के द्वारा रचित ग्रन्थ गीतगोविन्द अत्यंत महत्वपूर्ण है जिसकी प्रत्येक अष्टपदी जहां एक ओर साहित्य का मानक है वहीं दूसरी ओर वह संगीत और चित्रकला जैसी महान कलाओं की उद्‌गाता

भी है। नाट्य, संगीत, चित्रांकन और नृत्य ये सब कलाएं गीतगोविन्द में विद्यमान हैं तथा गीतगोविन्द के आधार पर इन अनुशासनों का आज के समय तक विस्तार हुआ है। गीतगोविन्द की अष्टपदियां विभिन्न रागों में निबद्ध हैं।

आगे चलकर यह परम्परा खड़ी बोली के साहित्य में भी निरंतर चली आती है। भारतेन्दु से लेकर उनके समकालीन प्रताप नारायण मिश्र और बालमुकुन्द गुप्त जैसे निबंधकार कला और साहित्य के आख्याता हैं, और आगे के काल में माखनलाल चतुर्वेदी जैसे महान रचनाकार हमारे बीच आते हैं जिन्होंने 'कला का अनुवाद' और 'साहित्य देवता' जैसे अर्न्तअनुशासिक ग्रन्थ लिखे। अज्ञेय, डॉ. राम विलास शर्मा और नामवर सिंहजी तथा डॉ. रमेश कुन्तल 'मेघ' जैसे रचनाकारों ने हमारे कला और साहित्य की अर्न्तअवलंबित परम्परा पर आधुनिक युग में विचार किया है।

यदि भारतीय लघुचित्रों की परम्परा को लें जो ग्यारहवीं सदी से लेकर उन्नीसवीं सदी तक अप्रतिहत रूप से विद्यमान रही तो हम पाऐंगे कि इन लघुचित्रों में राग-रागिनियों को चित्रित किया गया है अर्थात् ध्वनि का चित्रण है। हम देखेंगे कि इन लघुचित्रों में वाल्मीकि की रामायण, तथा व्यास के महाभारत के प्रसंगों सहित कालिदास के रघुवंश, मेघदूत तथा अभिज्ञानशाकुन्तल के प्रसंगों को चित्रित किया गया है। मुग़लकालीन लघुचित्रों में ऐतिहासिक घटनाओं का चित्रण है। फतेहपुर सीकरी के निर्माण से लेकर विभिन्न युद्ध दृश्यों को चित्रित किया गया है। मध्यकाल की पहाड़ी और राजस्थान व मालवा की चित्रशैलियों में केशव की रसिकप्रिया व कविप्रिया, बिहारी की सतसई, मतिराम के रसराज तथा पुहकर की रसबेली के प्रसंगों को चित्रित किया गया है। इस चित्रण में कल्पनाशीलता भी है जो इस चित्रकर्म को साहित्य के निकट ले जाती है। इसलिए यह सूत्र ध्यान में रखा जाना बहुत आवश्यक है कि ये अंतर्संबंध भारतीय कला और साहित्य के दृढ़ स्तम्भ हैं।

यहां एक और दिलचस्प तथ्य का उल्लेख करना चाहता हूँ जिसे स्व. रायकृष्णदासजी ने उद्घाटित किया था तथा जो साहित्य, कला और इतिहास इन तीनों के अंतर्संबंधों पर विस्तार से प्रकाश डालता है। उन्होंने ग्यारहवीं से सत्रहवीं सदी तक चित्रांकन की उस शैली को अपभ्रंश शैली का नाम दिया जिसमें भारत में मुख्य रूप से भारत में जैन ग्रंथ चित्रित किए गए थे और इसका कारण उन्होंने यह दिया कि उस काल में भारत में अपभ्रंश बोली जाती थी जो अनगढ़ भाषा थी और जिसका प्रभाव चित्रांकन पर हुआ जिसके कारण अपभ्रंश शैली में अनगढ़ तथा अपरिष्कृत चित्र बनाए गए। उन्होंने उस समय के साहित्य ग्रंथों से ऐसे उदाहरण दिए जिनके अनुसार राजदरबार के कवि अपभ्रंश के कवियों को निम्न मानकर उनकी हंसी उड़ाते हैं। यह तथ्य साहित्य, इतिहास और कला के इन तीनों के अंतर्संबंधों को उजागर करता है। वैसे भी कालक्रम के लिहाज से विभाजित शिल्प, स्थापत्य और चित्रांकन इतिहास के अन्तर्गत ही आते हैं।

डॉ. रामविलास शर्मा ने अपनी कृति आस्था और सौन्दर्य में इस अंतर्संबंध के बड़े रोचक विवरण दिए हैं। उन्होंने डॉ. वृन्दावन लाल वर्मा के उन नोट्स का वर्णन दिया है जो उन्होंने मृगनयनी तथा गढ़कुंडार लिखते समय लिए थे। इनमें ग्वालियर के किले का चित्र भी है और कुतुबमीनार की लाट पर खुदे हुए शिलालेख का वर्णन भी है।

कला और साहित्य के अंतर्संबंधों का भारतीय संदर्भ में पूर्ण औचित्य है इसलिए कि भारतीय साहित्यिक और कलात्मक परिप्रेक्ष्य के प्रयोजन एक जैसे हैं। हमारे यहां ये अंतर्संबंध आज के नहीं हैं, ये हमें विरासत में मिले हैं। वात्सयायन ने जिन चौंसठ कलाओं को गिनाया है उनमें एक तिहाई कलाएं साहित्यिक व ललित कलाएं हैं। जैसे कथा, नाटक, आख्यायिका, काव्य, शिल्प, छन्द, विदेशी लिपियों व विदेशी भाषाओं में पारंगत होने की कला, वीणा, वेणु, मुरज तथा कांस्य वाद्यों का बजाना व नृत्य, गीत, चित्रकर्म, पुस्तक लेखन व पत्रच्छेदन जैसी कलाएं।

ये हमारे संस्कारों में हैं। इन अंतर्संबंधों के कारण हमारे चिंतन का और उस चिंतन से उपजे सृजन का क्षेत्रफल बढ़ता है।

हुआ यह है कि हमने इन अंतर्संबंधों की पड़ताल करना बंद कर दिया। हम जड़ता से जुड़ गए। आप स्मरण कीजिए हमारे वेद की ऋचाओं का जिनमें किसी ईश्वर की वंदना नहीं है बल्कि अग्नि की, ऊषा की और नदी की वंदना है। इसलिए कि आदिमानव इर्द-गिर्द के वातावरण को जीवंत रूप में देखता था। उसके लिए पेड़, पशु, पक्षी, नदी और पर्वत सब जीवंत थे। वे उसके लिए प्राणवान थे और इसी जीवंतता ने मनुष्य के विकास का पथ प्रशस्त किया। वास्तव में विकास के पथ पर आगे बढ़ने में ही कलात्मकता विद्यमान थी, वह सृजन विद्यमान था जो साहित्य की आत्मा है। साहित्य और कला के अंतर्संबंध इसलिए भी होना चाहिए क्योंकि आज विश्व में निकटता इतनी बढ़ी है कि उस निकटता की यह आवश्यकता हो गई है कि हम समग्रता में एक दूसरे को समझें और जानें। अपने अस्तित्व को अलग-अलग रखते हुए हम इस निकटता को अनुभव नहीं कर सकते और यह निकटता तभी जानी जा सकती है जब हमारे तमाम अनुशासन एक दूसरे से मिलें, उनकी आवाजाही हो और वे एक दूसरे की सर्जनात्मकता को ग्रहण कर सकें।

संवेदना का स्वभाव ही है रुपांतरित होना। वह कला और साहित्य की विभिन्न विधाओं में रुपांतरित होती है। यह संवेदना कविता में भी ढलती है तथा रंगों और रेखाओं के माध्यम से चित्रों में और पत्थर के माध्यम से शिल्प में। स्रोत एक ही है लेकिन स्रोतस्विनी के प्रवाह अलग-अलग होने के कारण दूरियां बढ़ती हैं।

आज विधागत रूप से संवाद होना बंद हो गया। इसके कारण अपरिचय का क्षेत्रफल बढ़ा और सृजनात्मक आयामों की सीमाएं संकुचित हुईं। आज आवश्यकता इस बात की है कि चाहे कलाकार हों या साहित्यकार वे आत्मचिंतन करें, परीक्षण करें स्वयं का। उन्हें लगेगा कि वास्तव में हमारी विरासत को विस्मृत कर देने के कारण, धरातल को परिवर्तित कर देने के कारण कहीं ग़लती हुई है जिसके कारण सर्जनात्मकता आहत हुई है। यह प्रयास किया जाना चाहिए कि संवादों की निरंतरता बनी रहे तथा कला और साहित्य की रक्तवाहिनियों में दौड़ने वाले रक्त का प्रवाह कभी थमे नहीं।

लेखक प्रख्यात ललित निबंधकार तथा कलाविद् है।
-85, इन्दिरा गांधी नगर, आर.टी.ओ. कार्यालय के पास, केसरबाग रोड, इन्दौर (म.प्र.)
पिन-452001 मो. नं.-94250 92893

■

# पानी पर लाठी मारने से अलग नहीं होता पानी

गोविन्द गुंजन

बचपन में जब कभी हम भाई बहनों में कुछ तकरार या लड़ाई झगड़ा हो जाता तो हमें समझाते हुए आपसी मेल कराते हुए माँ अक्सर कहा करती थी कि – 'क्या पानी में लकड़ी मारने से पानी अलग होता है ?'

मेरे बाल मानस को यह उक्ति तब भी रोमांचित कर देती थी, और मेरी कल्पना को पंख लगा देती थी। मैं कल्पना में खो जाता था जिसमें किसी नदी में कोई लाठी मारता मगर पानी अलग नहीं होता था। इधर लकड़ी पानी में जाती, उधर लहरें आपस में लिपट जाती। कभी कोई नाविक नदी में चप्पु चलाता दिखता। हर बार वह अपने चप्पु से पानी को काटता मगर पलांश मे फिर लहरें आपस में जुड़ जाती। नदी अखंडित बहती रहती और नाव आगे बढ़ती रहती।

लाठी मारकर पानी को अलग नहीं किया जा सकता, इस उक्ति को मैंने बाद में लोकभाषा निमाड़ी में भी पाया और गुजराती में भी निमाड़ के किसान भी आपसी लड़ाई झगड़ों के निपटारे में यही कहते मिलते थे कि – 'लट्ठ मारयो, पाणी दुई नी होतो।' तब मैं समझा कि यह लोक की महिमा है जो एकता के प्रतीक के रूप में पानी का रूपक पूरे ब्रम्हाण्ड की भी अखंडित एकता पर लागू करता है। यह लोकजीवन की आरभटी है। जल की विराटता केवल बाहर ही नहीं, वह हमारी अंत:सलिला बनकर भी हमारी चेतना में एक अनंत अखंडता का अद्वैत भाव हमारे प्राणों में संलयन करती है। यह अद्वैत भाव एकता का आबशार उत्स या उदभेद वसुधा की प्रत्येक जलस्विनी में प्रवाहित है। कोई भी झील हो, छीलर हो, पुष्कारिणी हो, पोखर हो, ताल तड़ाग हो, सरोवर हो, जलकूप हो, बावड़ी हो या कोई भी घाट हो, सर्वत्र यही जल अनंत अखंडित एक्य का ही चिरकालीन अनवरत सत्य अहोरात्र प्रतिवर्तन करता रहता है, दोहराता रहता है, चाहे हम उसे समझे या ना समझे। वह एक ही सत्य का अनावर्तन करता है कि सब एक ही है, सब एक का ही विस्तार है, और सभी में एक ही आत्म तत्व ब्रम्ह का वास है ! सारी पृथकताएं या विलगताएं बाहरी विस्तार भर है, पर सबके भीतर एक ही सत्य एक ही आत्म एक ही ब्रम्ह का अंतर्भूत सत्य विद्यमान है जो सबको एक बिन्दु पर एकता के सूत्र में बांधकर रखता है।

लोक जीवन में अद्वैत दर्शन का गहरा प्रभाव है, किन्तु यह ब्रम्ह के अद्वैत से अधिक ब्रम्हाण्ड के अद्वैत पर बल देता है। इस दृष्टि से इसका आत्म दर्शन एक लौकिक एवं व्यवहारिक धरातल पर काम करता है। यह सृष्टि के चराचर जीवों एवं प्रकृति के बीच एकता का सामंजस्य निर्मित करता है। सृष्टि के सभी प्राणियों एवं जड़ प्रकृति के बीच व्याप्त अनंत एकता का यह सूत्र ही हम सबको आपस में जोड़ने वाला मूल्यवान सूत्र है जो अस्तित्व की रसालता या माधुर्य को सृजता है। हम सबको आपस में जोड़ता है।

आदिगुरू शंकराचार्य ने भी अपने अद्वैत दर्शन को ब्रम्ह के अद्वैत तक सीमित नहीं रखा। उन्होंने इस सत्य को व्यवहारिक धरातल पर भी उतारा था। उन्होने भारत के दक्षिण को उत्तर से जोड़ा, पूरब से पश्चिम को जोड़ा और चार धर्मों की स्थापना करके भारतीय महाद्वीप को सांस्कृतिक एकता के गहरे सूत्रों से आपस में जोड़ा था। आध्यात्मिक तल पर शंकराचार्य ने जिस अद्वैत दर्शन के माध्यम से जिस ब्रम्ह सत्ता का अखंड स्वरूप प्रतिपादित किया उसी का विस्तार वह भौगोलिक एकता को दृढ़ करते हुए समस्त जीवों एवं प्रकृति को एक्य के रूप में भी सुदृढ़ करते हैं, उन्होने उत्तर दक्षिण के पार्थक्य को दूर किया। संपूर्ण राष्ट्र को सांस्कृतिक एकता के अटूट सूत्र में पिरो कर बहुत गहरा संदेश दिया। इसी का सुफल है कि रामेश्वर का जल लेकर केदारनाथ पर चढ़ाने को जाता हुआ हर मनुष्य हमारी सांस्कृतिक एकता को सृदृढ़ करने का निदर्शन करता हुआ हमारी एकता की अंर्तदीप्ति को हमारी सांस्कृतिक अंजोरी को प्रसारित करता हुआ प्रतीत होता है। यह आलोक जितना प्रसारित होगा उतना ही हमारा राष्ट्र मजबूत होगा।

आज हमारा राष्ट्र भाषा प्रांत, जाति आदि के गहरे विभेदों से कमजोर हो रहा है एवं हमारी एकता के सूत्र शिथिल हो रहे हैं, उस पर ध्यान आकर्षित करते हुए कभी मनीषि पं. विद्यानिवास मिश्र ने लिखा था कि – ''यदि भारत में प्रांतीयता के फैलते हुए रोग को रोकना है और भारत को राजनैतिक से अधिक सांस्कृतिक सूत्र में जोड़ना है तो हमें भारत के सामान्य जन की भावना का ध्यान करना पड़ेगा, न कि भारत के सीमित बुद्धिजीवियों की भावना का, जो उखडे बिरवो को कहीं भी आरोपित होने के लिए आकुल हैं। बुद्धिजीवी वर्ग को तो अपने शौक के लिए नहीं, बल्कि अपने अस्तित्व के लिए सामान्य जन की आकांक्षा तक पहुंचना है।

यदि सचमुच ही भारतीय एकता का मात्र गुणगान नहीं बल्कि अनुसंधान भी करना है तो शंकर के कृतित्व का उत्तर और दक्षिण में पुन: मूल्यांकन करना होगा और उसी पृष्ठभूमि में नए भारत की भावना का चित्र उतारना होगा। उत्तर दक्षिण को शंकर ने ही सबसे पहले एक किया। शंकर के बाद तुलसी तथा अन्य वैष्णव कवियों ने दक्षिण की दर्शन धारा को भी अपने भक्ति काव्य में उतार कर भारतीय जनता के लिए जीवन संबल दिया। वह संकल्प आज हाथ से छूट सा रहा है, बहुत कुछ तो इसलिए कि लोगों में बड़ी गलत फहमी है कि भक्ति में मनुष्य का अवनमन है।''

लोकजीवन का अध्यात्म भी अपने मूल स्वरूप में प्रकृति से प्रेरणा पाता है। यही कारण है कि लोक में अद्वैत जीवों की परस्पर दूरियों को मिटाने के लिए प्रकृति के ही उपादानों का सहारा लेता है। निमाड़ के निर्गुण संत सिंगाजी आज से पांच सौ बरस पूर्व पानी के ही रूपक से ही हमें इस अखंडित एकता के सत्य को समझाते है – '**एक बूंद की रचना सारी, जाका सकल पसारा/ सिंगाजी नऽ भर नजरां देख्या/ओ ही गुरू हमारा**/ और यह भी कहा कि–

दूजे दूज दूजा नहिं कोई/जो जाने सो आप ही होई।' जल के रूपक में लोकजीवन ने गहरे एकता के सूत्रों का अनुसंधान किया है।

मध्यकालीन सामंतवाद ने अपनी जड़े जमाने के लिए इसी जल की एकता को तोड़ने का षड़यंत्र रचा था। सामंतवादी व्यवस्था समाज की आपसी फूट से ही शक्ति ग्रहण करती है। इसीलिए पुरोहित वर्ग की सहायता से जातियों में पानी की छुआछुत का जाल फैलाया गया। कुछ जातियों के हाथों का स्पर्श किया हुआ जल दूसरी जातियों को पीने से रोका गया। जल को छुआछुत के जाल में अपना हथियार बनाने के पीछे समाज को तोड़ने और अपनी शोषण श्रृंखला को बढ़ाने की सामंतवादी नीति ने गहरा विभेद समाज में पैदा किया था। सामंतवादी इस सत्य से अवगत थे कि जल ही समाज में एकता का सबसे गहरा संदेश देता है, इसीलिए उनका प्राथमिक वार जल पर था।

कबीर ने जल की छुआछुत का उस काल में गहरा विरोध किया था। उन्होने समाज को फटकारते हुए कहा था – 'हिन्दू गागर छुवन न देई अपनी करे बढ़ाई/वेश्या के पायन तर सोवे, यह देखो हिन्दुआई।' दुर्भाग्य है कि मध्यकालीन समाज में यह षडयंत्र इतना सफल हुआ कि वह अमानवीय हदों तक भेदभाव का साधन बन गया। प्रेमचंद की कहानी ठाकुर का कुआ जैसी अनेक कथाओं में इस षडयंत्र का भांडा फोड़ किया गया है।

'लोकजीवन में जल का जो महत्व है वह उसकी इसी एकात्मकता की शक्ति के ही कारण है। जल अपना मूल स्वभाव कभी नहीं खोता आप पानी को गर्म करो, परंतु वह फिर शीतल हो जाएगा। शीतलता पानी का स्वभाव है। ऋग्वेद के ऋषि इस जल में अमृत और औषधि का वास मानते है' **अप्सु अन्तः अमृतम अप्सु भेषजम/अपाम उत प्रशस्तये देवाः भवेत वाजिन** (अर्थात जल में अमृत है, जल में औषधि है/हे ऋषिगणों ऐसे श्रेष्ठ जल की स्तुति करने में शीघ्रता बरते। (ऋग्वेद प्रथम मंडल/पंचम अध्याय/) वेद के ऋषि उद्घोषणा करते है कि – **जलं हि प्राणिनः प्राणाः। जलं शस्यस्य जीवनम। न जलेन बिना लोके शस्य बीज प्रजायते।'**

जल अद्वैत वाद का विराट लौकिक प्रतीक है इसकी गहराई में जो सत्य अनंत काल से इस जीवन में व्याप्त है। अधजल गगरी छलकत जाए के ब्याज से यही कहा गया है कि इस सत्य को तुच्छ चित्त वाले ग्रहण नहीं कर सकते। इस सत्य के सामने दैव दनुज किन्नर सभी पानी भरते है। किंतु जिन लोगों ने अपनी शर्म छोड दी हो उनके लिए तो चल्लु भर पानी में डूब मरने के अलावा अन्य क्या उपाय है ? एकता के इस महामंत्र को जिस समाज ने खंडित करने का काम किया वह इतना शक्तिशाली था कि गरीब निर्धन समाजजन उनका विरोध करने की स्थिति में नहीं था आखिर पानी में रहकर वो मगर से बैर कैसे करते ? जैसे चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता वैसे ही सामंतवादी शोषकों पर किसी नीति नियमों की नैतिकता नहीं ठहरी, और उन्होंने अपना शोषण चक्र स्थापित करके समाज में एक बड़े वर्ग को अपना शिकार बनाया। जो उनकी बात नहीं मानता उसका हुक्का पानी बंद कर देना उनके बाये हाथ का खेल था। वो अपने उन जर खरीद पुरोहितों का उपयोग करते थे जो घाट घाट का पानी पीने वाले थे, इसलिए समाज में उनका जाल फैलता ही गया। कमजोर वर्ग की हर वस्तु हथियाने उन पर कब्जा करने के लिए उनके मुंह में पानी आने लगता था। किसी का भी पानी उतार देना उनके लिए कठिन नहीं था। उनके अत्याचारों से मानवता पानी पानी हो गई। दूध का दूध पानी का पानी करने वाला कोई बचा नहीं। गरीबों का अपनी जमीन अपने खेतों से दानापानी उठ गया। शोषण के दैत्यों ने हमारी सामाजिक सांस्कृतिक एकता के पूरे परिश्रम पर पानी फेर दिया। लोक के अद्वैत का यह सूत्र हमारे हाथों से छूट ना जाए इस हेतु सजग रहने की आवश्यकता है। एक राजस्थानी लोक कहावत में कहा गया है कि '**घीयड़ो ढुले तो म्हारो काई नहीं जासी। पानीडो ढुले तो म्हारो जी बल जासी।**' अर्थात घी ढुल जाए तो मेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा, परंतु पानी ढुल जाएगा तो मेरा जी जल जाएगा।

लोकजीवन में अद्वैत का यह मूल्यवान सूत्र हमारी परस्पर एकता को आज भी अखंडित रखने की शक्ति रखता है।

लेखक: कवि, गीतकार, ललित निबंधकार है।
18, सौमित्र नगर, सुभाष स्कूल के पीछे, खण्डवा
मोबा. नं. 9425342665

**यह मोह से भरा हुआ संसार एक स्वप्न की ही तरह है, यह तब तक ही सत्य प्रतीत होता है, जब तक व्यक्ति अज्ञान रूपी निद्रा में सो रहा होता है, परंतु जाग जाने पर इसकी कोई सत्ता नहीं रहती।**

**– आदि शंकराचार्य जी**

# एक जागते हुए कस्बे की कहानी

विजय मनोहर तिवारी

मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल से सिर्फ 150 किलोमीटर के फासले पर है आठ हजार आबादी का गांव-उदयपुर। ऐतिहासिक रूप से समृद्ध यह इलाका विदिशा जिले में है। उदयपुर की प्रसिद्धि एक हजार साल पुराने शिव मंदिर की वजह से है, जहां दूर-दूर से लोग आते रहे हैं। परमार राजवंश की 12 वीं पीढ़ी के राजा हुए हैं उदयादित्य। आज का यह गांव उन्हीं के नाम पर है। मंदिर भी उन्हीं का बनवाया हुआ है। उनके समय यह एक हरा-भरा और व्यवस्थित नगर रहा, जहां सदियों तक मंदिर, बावड़ी, तालाब और महलों के निर्माण होते रहे। परमार राजाओं की महिमा इन्हीं की वजह से है। लोगों की दिलचस्पी सिर्फ मंदिर में ही रही और एक नगर की बिखरी हुई विरासत धूल मिट्टी, झाड़ी-टीलों में गुम होती चली गई। लेकिन अब उदयपुर जाग उठा है। वह इतिहास की चादर को झटकार कर अपने बारे में बहुत कुछ बता रहा है। इतिहास ने यहां एक करवट ली है और हर दिन नई-नई जानकारियां सामने आ रही हैं।

देश के जाने-माने इतिहासकार डॉ. सुरेश मिश्र के साथ एक हेरिटेज वॉक के बाद के इन तीन महीनों के अनुभव किसी चमत्कार से कम नहीं हैं। आमतौर पर हमारे सरकारी सिस्टम में इतनी तेजी से कुछ होता नहीं है। उदयपुर अपने पुराने डिजाइन पर ऊबड़-खाबड़ हालत में मौजूद है, जहां परमार राजवंश के वास्तुशिल्प के अनुसार दीवार-दरवाजे, मंदिर, महल, तालाब, बावड़ी, कमरे, दीवारें और गलियां हैं। इनसे गुजरते हुए लगता है कि आप अतीत में लौटकर सदियों पहले के खोए हुए वैभव की सैर कर रहे हैं।

उदयपुर में हमने देखा कि महाराजा उदयादित्य के राजमहल के एक बंद दरवाजे पर टंगा वह साइनबोर्ड नए इतिहास की घोषणा कर रहा था- 'निजी संपत्ति, उदयपुर पैलेस, वार्ड नंबर-14, खसरा नंबर-822, काजी सैयद इरफान अली, काजी सैयद महबूब अली, काजी सैयद अहमद अली।' मैंने फेसबुक पेज की इस पोस्ट की लिंक व्हाट्सएप के जरिए अपने साठ-सत्तर मीडिया के मित्रों को भेजी और महल के तीन फोटो प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के साथ केंद्रीय पयर्टन मंत्री को ट्वीट किए। इसके आगे यह सोशल मीडिया की ताकत की भी कहानी है। हमने लौटकर अपने अनुभव सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर ही बांटे। फेसबुक पेज पर पहली पोस्ट पांच जनवरी को लिखी, जिसका शीर्षक था-'उदयपुर पैलेस, खसरा नंबर-822, निजी संपत्ति'।

सोशल मीडिया पर मशहूर न्यूजपोर्टल 'ऑपइंडिया' ने मेरी पहली फेसबुक पोस्ट को ले लिया था। उदयपुर में जब हलचल हुई तो ऑपइंडिया के एडिटर अजीत भारती ने एक दिन अपने यूट्यूब चैनल के लिए 50 मिनट लाइव किया। इस शो को 37 हजार लोगों ने देखा। मेरी हर पोस्ट को नौ-दस हजार लोगों ने पढ़ा। गोविंद सक्सेना की ग्राउंड रिपोर्ट भी एक लाख से ज्यादा दर्शकों ने देखी और समाचार अड्डा पर अंकित शर्मा के वीडियो 15 हजार से ज्यादा लोगों ने देखे। महाराष्ट्र के अखबार 'तरुण भारत' ने सभी संस्करणों में उदयपुर की कहानी छापी। इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हेरिटेज (इंटेक) के भोपाल कन्वीनर डॉ. मदनमोहन उपाध्याय की पहल पर पहली बार राजधानी में कथा उदयपुर सुनी गई।

विदिशा में पत्रिका संवाददाता गोविंद सक्सेना की नजर सबसे पहले फेसबुक पोस्ट पर पड़ी। उन्होंने हमसे अलग से बात की और एक बड़ी खबर अखबार के स्थानीय संस्करण में लिखी। प्राचीन विरासत का मामला होने से कुछ संगठन जागे और प्रशासन की रजाई खींचकर एक ज्ञापन सौंप आए। इस तरह यह मामला सोशल मीडिया के जरिए प्रिंट मीडिया से होकर आम नागरिकों के संज्ञान में आ गया। फौरन असर यह हुआ कि एक तहसीलदार को राजमहल के खंडहरों पर देखा गया। सवालों के साथ कुछ कैमरापर्सन भी वहां गए। एक हलचल शुरू हो गई।

**बाबर, चंदेरी और उदयपुर!**

अब आगे का दृश्य मजेदार है। निजी संपत्ति का दावा करने वाले एक साहब साल 2021 से किसी उड़ने वाले घोड़े पर सवार होकर सीधे बादशाह जहांगीर के दरबार में जा पहुंचे। फरमाया कि जहांगीर ने इस महल की संगे-बुनियाद उदयपुर में रखी थी। शाहजहां के समय यह बनकर तैयार हुआ और काजी साहब के खानदान को दे दिया गया ताकि वे मस्जिद में नमाज पढ़ाते रहें। उन्हें 84 गांवों की काजियात दी गई थी। यह इस्लामी हुकूमत में इस्लामी कानून लागू करने वाली व्यवस्था थी। आजादी के बाद काजी साहब कहीं शहर में बस गए और 2021 की जनवरी में बस्ती वालों को ज्ञान हुआ कि महल में मदरसा रहा है।

अगर जहांगीर के आधार पर इसे उनकी निजी संपत्ति मान लिया जाए तो मध्यप्रदेश सरकार को वे 84 गांव भी इन्हें देने चाहिए, जिनकी काजियात मुगलों ने अता फरमाई थी। महल के निजी संपत्ति के दावे पर इनके पास जहांगीर-शाहजहां का यही किस्सा है। शायद उनके संज्ञान में यह नहीं रहा होगा

कि 15 अगस्त 1947 के बाद ही निजाम नहीं बदला है। 1857 में अंग्रेज ही आखिरी मुगल को रंगून रवाना कर चुके थे। अब लालकिले पर मुगलों का कोई दावा नहीं है। न कोई मुगल हैं। इस्लाम का वो तथाकथित सुनहरा दौर इरफान हबीबों के ख्यालों में रोशन है। तहसीलदार ने कैमरे के सामने फरमाया कि कल किसी ने गेट पर निजी संपत्ति का बोर्ड लगा दिया था, उसे आज हटा दिया गया है। यह साढ़े तीन बीघा में फैला राजमहल सरकारी संपत्ति है।

किसी भी सरकारी दफ्तर से इतनी चौकस कार्रवाई आमतौर पर होती नहीं है। आप लाख ज्ञापन सौंपते रहिए और जगाते रहिए, ढीट और जड़ सिस्टम के कानों पर जूं नहीं रेंगती। राजनीतिक आकाओं के इशारे पर ही अफसरों की जड़ जमात जागती है। लेकिन यह मामला एक केस स्टडी बन गया है। महल पर कब्जे को साबित करने के लिए एक फारसी लेख का हिंदी अनुवाद एसडीएम के सामने पेश किया गया। यह जहांगीर के समय का कोई फरमान है–'कागजात जामा मस्जिद व महल कस्बा उदयपुर।' यह लेख इन पंक्तियों से शुरू होता है–'ऐ वो जात कि हर राजदार के सीने में तेरा राज पैबस्ता है कि तेरी रहमत सब पर है, जो शख्स भी तेरी बारगाह में नियाजमंदी के साथ आता है, वह कब तेरी बारगाह से महरूम जाता है।'

जहांगीर के समय औलिया इब्न अब्दुल समद ने इस मस्जिद और महल कस्बा उदयपुर सरकार चंदेरी सूबा माल सरहद गोंडवाना की बुनियाद रखी थी। महल और मस्जिद की तामीर आधी ही हो पाई थी कि बादशाह इंतकाल फरमा गए। दरबार बंदगाने जलालते पनाह बंदे इलाही शहाबुद्दीन मोहम्मद करनसानी शाहजहां बादशाह गाजी, जिन्होंने इस मस्जिद में नमाज अदा की है। अब आगे की पंक्ति पर गौर कीजिए–'जो शख्स भी इस जामा मस्जिद में नमाज अदा करे तो वो हजरते फिरदौस मकानी को फातिहा के साथ

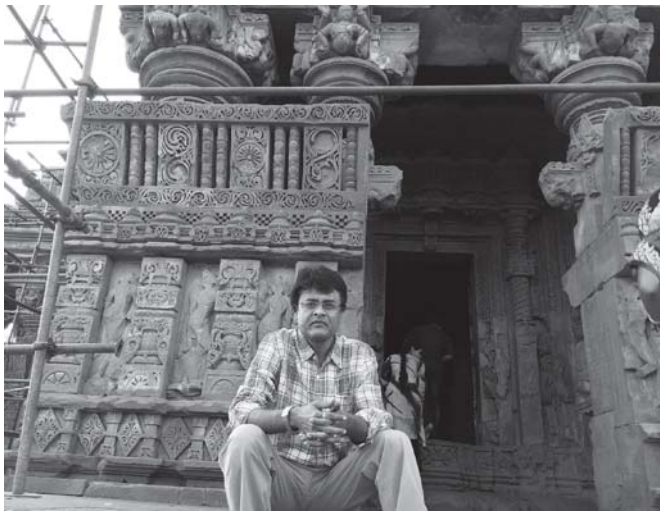

याद करे और मौजूदा जमाने के बादशाह की हुकूमत को दुआ ए खैर में याद रख। बतारीख 10 जिलहिज्जा, 1041 हिजरी कुदसी।' 15 मई 2008 की तारीख में इस अनुवाद के नीचे कागज पर नोटरी की सील लगी है। मेरा ध्यान 'फिरदौस मकानी' पर अटका है! ये फिरदौस मकानी कौन हैं?

फिरदौस मकानी मुगल हमलावर बाबर की उपाधि है। फिरदौस मकानी यानी जिसका जन्नत में मकान हो। बाबर का उदयपुर से क्या ताल्लुक हो

सकता है। यह खोजने के लिए मैंने बाबरनामा की पनाह ली। मुझे मालूम था कि वर्तमान मध्यप्रदेश में चंदेरी अकेली जगह है, जहां बाबर ने सीधा हमला बोला था। वह एक क्रूर हत्याकांड की जघन्य स्मृति है। वहां 4–5 हजार राजपूतों के साथ मौजूद राजा मेदिनीराय को कुटुंब समेत खत्म किया गया था। रानी मणिमाला और राजपूत औरतों के जौहर का वह स्मारक आज भी चंदेरी की याददाश्त में दर्ज एक भीषण हादसे की गवाही है।

चंदेरी में एक महीने के आतंकी घेराव के बाद 29 जनवरी 1528 को बाबर ने लिखा–'हमारे बहुत से आदमी किले पर चढ़ गए तो काफिरों ने इतना भी युद्ध नहीं किया। हमारे कुछ आदमियों ने उन्हें कत्ल कर दिया। दीवारों से उनके चले जाने का कारण यह था कि उन्होंने यह समझ लिया था कि उनकी शिकस्त तय है। इसलिए वे अपनी औरतों और रूपवतियों की हत्या करके जान गंवाने के मकसद से निकल पड़े। हमारे आदमियों ने भीषण हमला करके दीवारों के आसपास से उन्हें भगा दिया। फौरन बाद दो–तीन सौ आदमी मेदिनीराय के घर में घुस गए। वहां दुश्मनों ने एक दूसरे की इस तरह हत्या कर दी–एक आदमी तलवार लेकर खड़ा हो जाता था। अन्य लोग खुशी से अपनी गर्दन उसकी तलवार के नीचे रख देते थे। इस प्रकार वे बहुत बड़ी संख्या में दोजख को पहुंच गए। अल्लाह की मेहरबानी से यह किला 2–3 घड़ी में बिना नक्कारे और पताका के फतह हो गया। चंदेरी के उत्तर–पश्चिम में काफिरों के सिरों की एक मीनार के निर्माण का हुक्म हुआ। इस फतह की तारीख फतहे–दारुल हरब निकली। मैंने इसकी रचना इस प्रकार की है–'कुछ समय तक हम चंदेरी में ठहरे, काफिरों से वह जगह भरपूर थी और हमने जंग की, जंग के जरिए हमने वह किला फतह किया, उसकी फतह की तारीख दारुल–हर्ब हुई।'

मुगलों के उस भयावह खूनखराबे के बाद चंदेरी सरकार के मातहत उदयपुर एक कस्बे के रूप में दर्ज हुआ। उदयपुर में एक चंदेरी गेट आज भी है। मस्जिद में बाबर को फातिहा की दुआ के साथ याद रखने का फरमान सबकी नींद उड़ाने के लिए काफी था। आज से पहले किसे इस फरमान की जानकारी थी? नहीं थी तो क्यों नहीं थी? किसे इस कब्जे का पता था? नहीं था तो क्यों नहीं था? किसे पता था कि फिरदौस मकानी भारत के किस आतंकी गुनहगार का दूसरा नाम है, जिसके लिए उदयपुर में दुआएं हो रही हैं? पुरातत्व वाले कामगार क्या रहे थे? जिले में आने वाले अफसर किस दुनिया में थे? स्थानीय

जनप्रतिनिधियों का ध्यान किधर था? बेचारी जनता तो सरकारों के भरोसे ही है!

**इस्लामी हमलावरों के निशान अब भी हैं**

उदयपुर की प्रसिद्धि नीलकंठेश्वर मंदिर से है, जो राजा भोज के बाद हुए महाराज उदयादित्य ने बनवाया था। वे परमार राजवंश में 12 वें राजा हैं, जो राजा भोज के भाई थे। उदयपुर का नाम उनसे ही जुड़ा है। उस दौर में राजा के समय युवराजों को राजधानी से दूर के महत्वपूर्ण नगरों और सैन्य ठिकानों की कमान सौंपी जाती थी। यह उनके पारिवारिक प्रशिक्षण का हिस्सा था। बाद की सदियों में इस्लामी हमलावरों से यह नगर अछूता नहीं रहा। इसके सबूत मंदिर में ही दिखाई देते हैं, जहां मूर्तियों को तोड़ा-छीला गया है। मंदिर का अपनी पूरी ऊंचाई में बचे रहना किसी चमत्कार से कम नहीं है।

मैंने कुछ समय पहले विदिशा जिले के एक कलेक्टर को इस नगर में जीवित बचे रह गए इतिहास को सहेजने की दृष्टि से कुछ सुझाव और निवेदन एक पत्र में लिखे थे। मैंने सुझाया था कि काशी विश्वनाथ कॉरिडोर की तर्ज पर अगर कुछ काम हो तो उदयपुर राजधानी भोपाल के काफी पास पर्यटन मानचित्र पर चमक सकता है। कलेक्टर का नाम भी किसी प्राचीन सूयर्वंशी राजवंश की तरह काफी प्रभावशाली था, जिसका जिक्र मैंने उस पत्र में विशेष रूप से किया था कि आपके नाम से लगता है कि यह पराक्रम आप कर सकते हैं-'परमवीर अशोक चक्रधारी वीर बहादुर महाप्रतापी कुंअर विक्रमसिंह।' मुझे बड़ी उम्मीद थी कि वे कम से कम कागजों पर एक योजना ही बनाते, कोई मीटिंग करते। लेकिन महीनों बाद उनके तबादले की खबर आई। अक्सर नाम भी एक किस्म का फरेब रचते हैं। विजय नाम होने से भर से कोई विजेता नहीं हो सकता! कलेक्टर या कमिश्नर हो सकता है!!

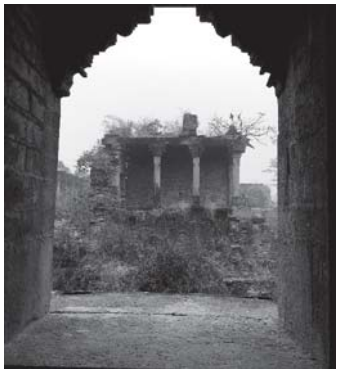

मैंने उन्हें उस पत्र में बताया था कि मंदिर की उस संकरी गली के एक मकान पर जामा मस्जिद की तख्ती टंगी है, जिसकी छोटी सी मीनारों पर टोपी की तरह प्लाईवुड और लोहे की बड़ी मीनार ढांकने की तैयारी है। इससे चार किलोमीटर दूर से दिखाई देने वाला मंदिर भी एक दिन ढक जाएगा। सिविल सेवाओं में चयनित होने के साथ ही 'इतिहास' अपनी किस्मत पर रोने के लिए पीछे छूट जाता है। वह बस एक स्कोरिंग सब्जेक्ट था। पद पर आने के बाद कमाई का गणित स्कोर बढ़ाता है। जहां तिए-पांचे हैं, जहां निन्यानबे के फेर हैं, जहां दो दूनी चार नहीं, दो और दो पांच हैं। पसंदीदा पोस्टिंग बच्चों का खेल नहीं है। कहां का इतिहास और कैसी धरोहर?

**सबसे पुरानी स्मृतिः 1080 और 1229 के शिलालेख**

राजा उदयादित्य का एक संस्कृत शिलालेख सन् 1080 का है और दूसरा राजा देवपाल का सन् 1229 का। इनके अनुवाद मंदिर परिसर में ही होने चाहिए। पहला शिलालेख राजा उदयादित्य के ध्वजारोहण की जानकारी देता है। कालांतर में परमारों का वैभव इस्लामी आतंकी अलाउद्दीन खिलजी के हाथों खत्म हो गया था। मंदिर परिसर में फारसी के दो शिलालेखों में मोहम्मद बिन तुगलक का नाम है। महाराज उदयादित्य के 250 साल बाद तुगलक यहां क्या करने आया? क्या किसी गंगा-जमनी झपके में वह मंदिर में पूजा करने आया था? इस इलाके में शम्सुद्दीन इल्तुतमिश, अलाउद्दीन खिलजी, मोहम्मद तुगलक, शेर शाह सूरी के हमले, लूट और कब्जे क्रम से हैं। मुगलों के बाद नवाबों के नाम से नए कब्जेदारों की घातें हैं।

यह तो सदियों की खामोशी थी। उदयपुर चश्मदीद है। भुक्तभोगी है। हर दिन की एक रात है। हर रात की एक सुबह भी है। इन शिलालेखों के पास जब आप मंदिर के चारों तरफ पैदल परिक्रमा करेंगे तो ऊपर बीस फुट तक एक भी मूर्ति साबुत नहीं पाएंगे। देवी-देवता सब क्षत-विक्षत हैं और तब आपको समझना चाहिए कि तुगलक के जाहिल हमलावर यहां क्या करने आए थे? अब यह सवाल बड़ा है कि यह मंदिर बच कैसे गया? इसका हाल विदिशा के बीजामंडल की तरह क्यों नहीं हुआ? इस बात की पूरी गुंजाइश है कि इस इलाके के स्थानीय लोगों के संगठित प्रतिरोध की वजह से सिर्फ मूर्तियां ही खंडित हो पाईं और उन इस्लामी कब्जेदारों पर काबू पा लिया होगा। हमले बाद में जारी रहे लेकिन उन अंधड़ों से उदयपुर बाल-बाल बचा रहा।

साल 2021 की जनवरी उदयपुर की एक नई भोर लेकर आई। यह एक उदास कस्बे की अंगड़ाई है, जो सदियों से हमसे कुछ कहना चाहता था। आजादी के बाद कुछ दशकों का इंतजार और किया। अभी लगा कि नीलकंठेश्वर के तीसरे नेत्र की पलक बहुत हल्की सी हिली है। इंसानों की तरह इतिहास के सब्र भी टूटते हैं। उदयपुर का सब्र टूटना ही था। उदयादित्य तो अब नहीं रहे। लोकतंत्र आ गया। अब हर नागरिक उदयादित्य है, जो अपने सेवकों को सिंहासन तक भेजता है। पुरखों की पुकार सुन ली गई। उदयपुर नींद से जाग गया।

उदयपुर के हिंदू हों या मुसलमान, सबके महान पुरखों ने हजार साल पहले यहां पत्थरों पर जादू रचा था। वह सिर्फ कारीगरी का हुनर नहीं था। आला दरजे की इंजीनियरिंग के साथ गणित, मूर्ति और चित्र कला के फनकारों ने जाने कहां-कहां से आकर अपने कला-कौशल की नुमाइश की होगी। इतने विशाल परिसरों में ये पूजास्थल दरअसल शिक्षा, संस्कृति और कला के विकसित और व्यस्त केंद्र थे। परमार इस काम के लिए प्रसिद्ध रहे हैं, जिन्होंने धार, उज्जैन और मांडू में सरस्वती कंठाभरण बनवाए थे। राज्य इन्हें पोषित करता था। समाज सहेजता था। लेकिन ये सब इतिहास के अंधड़ों के उस पार की गौरव गाथाएं हैं। बीच में सदियों की अमावस इस्लामी हुकूमत के रूप में टिकी रही है।

उदयपुर की जागृति का सबसे बड़ा नतीजा मंदिर के रास्ते पर दिखा, जहां सदियों पुराने कब्जे हटने लगे। यह मंदिर तक जाने वाली एक संकरी दमघोंटू गली थी। 57 साल के राजा मियाँ ने अपने हिस्से की आठ फुट ज्यादा जमीन रास्ते को चौड़ा बनाने के लिए आगे आकर दी। राजा मियाँ ने इस बात का इंतजार नहीं किया कि सरकारी अमला आकर हिदायत या समझाइश दे। जो काम जरूरी है, वह कल पर नहीं टाला। महीने भर में देखते ही देखते संकरी गली तीस फुट चौड़े रास्ते में बदल गई। महाराष्ट्र के अखबार तरुण भारत ने इसे मध्यप्रदेश का काशी विश्वनाथ कॉरिडोर कहा।

**अनजाने और अछूते उदयपुर का आमंत्रण**

एक अनजाना और अछूता उदयपुर आपको आमंत्रित कर रहा है। मंदिर की गली में सबसे बाद में जाइए। सबसे पहले किसी से बीजामंडल का

पता पूछिए। एक ऐसी बदहाल इमारत, जिसमें एक अधूरा शिलालेख, मंदिर जैसे ही प्रवेश द्वार, स्तंभ और गर्भगृह हैं। यहां आपको मवेशी बंधे हुए और भूसा भरा हुआ मिलेगा। यह जरूर मंदिर से संबंधित किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति का निवास रहा होगा। वे पुरोहित भी हो सकते हैं और मुख्य प्रबंधक भी।

किसी से जैन मंदिर परिसर का पता पूछिए। वहां निहत्थे तीर्थंकर दशकों से आपकी ही प्रतीक्षा में हैं, जिनकी जीवंत प्रतिमाओं पर किसी कालखंड में प्रहार किए गए थे। उनकी खंडित प्रतिमाएं भी उतनी ही पुरानी हैं, जितना उदयपुर का इतिहास। कभी यह नगर महान तीर्थंकरों के समृद्ध अनुयायियों की व्यावसायिक और सामाजिक सेवा का भी सक्रिय केंद्र रहा होगा। आज सिर्फ तीन परिवार जैनियों के हैं। मलूकचंद जैन के पास अपने घर के हिस्से के उस टीले की कहानी है, जिसकी खुदाई में शानदार कलाकृतियों वाला एक पुराना आवास दफन था। पिसनहारी का एक सादा मंदिर कोई भी बता देगा। इसके प्रवेश द्वार की नक्काशी बेजोड़ है।

राजमहल के खंडहरों में कूद-फाँदकर जहां तक जा सकते हैं जाइए। उन कक्षों में घूमिए, जो मलबे में बदल रहे हैं। उनके दरवाजे और दीवारों में बचे रह गए आले परमारों के डिजाइन की शानदार नुमाइश हैं। गलियारों के स्तंभों के बीच उठा दी गई पत्थर की दीवारें आपको साफ बताएंगी कि ये बाद के दौर के कब्जे हैं। जब परमारों का सूरज डूबा होगा तब यहां दिल्ली के तुर्क हमलावरों के झपट्टे पड़े थे। घटेरा रोड पर एक देवी मंदिर है, जहां दो बावड़ी और पूरे परिसर में कई खंडित मूर्तियां। यहां हाल ही में एक टीले की खुदाई में एक पुरानी बावड़ी मिली। ईंट के भट्टों के बीच बरबाद होने की कगार पर एक और शानदार बावड़ी है, जिसमें एक अपठित शिलालेख भी है।

अब आप ऊपर पहाड़ की तरफ देखिए। मूल पर्वत से कटा हुआ एक शिवलिंग के आकार का टुकड़ा मीलों दूर से दिखता है। यह परमारों के समय 'रॉक टेम्पल' का एक बहुत अधूरा काम है, जो पूरा नहीं हो पाया था। उस कटी हुई पहाड़ी पर मूर्तियां तराशी जा रही थीं। फिर किसी वजह से यह प्रोजेक्ट बंद हो गया होगा। अब यहां हरी-हरी चादरें दरगाहों का ताजा ऐलान हैं। पहाड़ी रास्तों में किले की प्राचीरों के अवशेष आपसे गुस्सा नजर आएंगे, क्योंकि उन्हें देखने कोई नहीं आता। उनके पास सदियों की गवाही है। उनसे अकेले में संवाद कीजिए।

आठ हजार की आबादी में एक-डेढ़ हजार मुसलमान हैं, जो अपने मुस्लिम अतीत की कहानियों में किसी मस्जिद तक ले जाएंगे। लेकिन परमार राजा उदयादित्य के समय इनके पुरखों में कोई शिल्पी, कोई प्रहरी, कोई व्यापारी, कोई दरबारी, कोई अधिकारी, कोई पुरोहित ही रहा होगा। मूर्तियों के खंडन-मंडन की तरह पहचानें भी खंडित हैं। धूल रास्तों पर भी है, पत्थरों पर भी, याददाश्त पर भी।

जब आप यह सब देखते हुए गलियों में घूमेंगे तो कई जगह पुराने पत्थर के दरवाजों से होकर गुजरेंगे। एक दरवाजे के पास बड़े बाजार का नाम है, जहां कतार से वो दुकानें नजर आएंगी, जहां सदियों का मलबा भरा हुआ है। कभी ये रौनकदार बाजार का हिस्सा रहे होंगे। कई पुराने मकान मलबे में बदल रहे हैं। किसी मलबे के ढेर से चढ़कर जब आप झाड़ियों के भीतर झांकेंगे तो चौक, कमरे और बरामदे नजर आएंगे। जरूर इन बड़े घरों में कोई खास लोग रहते होंगे। वे कौन थे, कब उनके यह शानदार घर वीरानी के हवाले हो गए और आज इनका वारिस कौन है?

फंड का रोना बददिमाग और बदकिस्मत रोते हैं। उदयपुर और पठारी विदिशा जिले में पत्थरों की खदानों से मालामाल इलाका है। मीडिया की रिपोर्टें बताती हैं कि हर दिन गैर कानूनी तौर पर काटा गया लाखों रुपए का पत्थर खदानों से निकाला जाता है। गंज बासौदा सबसे नजदीक एक शहर है, जहां किराना, कपड़ा, अनाज और पत्थर के करोड़पति कारोबारी सौ से ऊपर होंगे। कोई कलेक्टर उदयपुर के विकास के लिए सच्चे मन से झोली फैलाएगा तो एक ही बैठक में दो-चार करोड़ जुटाना मुश्किल नहीं होगा। उन उदार धनपतियों तक कोई इस पवित्र भाव से जाए तो सही। उन्हें कोई आडडिया दे तो सही। पहले से बने कानून हैं और उनका पालन कराने की ताकत कलेक्टर के हाथ में है। वह चाहे तो क्या नहीं कर सकता? मगर वह क्यों चाहे? अगर चाहना ही है तो अपने लिए चाहेगा। और वही क्यों चाहे?

किसी की नजर न लगे, उदयपुर में इतिहास की यह अंगड़ाई बेहद हसीन है। इसका स्वागत करने का बासौदा वालों का हक पहला है। वे अपने अतीत को टटोल रहे हैं। कोई मधुर शर्मा अपनी टोली के साथ कैमरे लिए पहाड़-जंगल, गली-कूचों में झांक रहे हैं। उनके सामने उदयपुर अपनी नई परतें खोल रहा है। यूट्यूब के प्लेटफार्म नंबर-एक पर कोई अमित शुक्ला वैदिक एक्सप्रेस में नई जानकारियों की सवारी करा रहे हैं। कोई गगन दुबे मंदिर की भित्तियों पर मौन मूर्तियों से बात कर रहे हैं। उनके पास प्रश्न हैं। खंडित और आहत देवी उनसे अपनी व्यथा कह रही हैं। कोई प्रवीण शर्मा एक पुराने घरों की अंधेरी दीवारों से कान लगाए हैं। हर दीवार कुछ कहती है। हर स्तंभ को अपनी बारी का इंतजार है। हर बावड़ी आपके आने से प्रसन्न है। अंकित शर्मा अपना समाचार अड्डा यहीं लगाकर बैठ गए हैं। उनके भ्राता कमलेश शर्मा अपने विद्यार्थियों को उदयपुर के महान इतिहास से साक्षात्कार कराने की तैयारी में हैं। कोई कौस्तुभ शिरढोणकर हैरत से सारी हलचल देख रहे हैं। हर कोई सक्रिय हो उठा है। लोकल के लिए वोकल होने की गुंजाइश से वे क्यों न खुश होंगे!

उदयपुर आंखें मलता हुआ एक उदास सा कस्बा है, जहां इतिहास की एक असरदार गूंज ठहरी है। हम अपने ही अतीत से गहरे अपरिचय में हैं। हम खुद से ही अनजान हैं। सदियों पहले इतिहास के जिन आश्चर्यों को हमारे पुरखों ने अपने पुरुषार्थ से गढ़ा था, उनकी तरफ हम हैरत भरी निगाहों से देखते हैं। हम उन मंदिरों को एक रात में बना हुआ माने बैठे रहते हैं, जो सौभाग्य से बचे रह गए और जिन्हें हजारों कल्पनाशील शिल्पियों, वास्तुविदों, श्रमिकों और कलाओं को प्रश्रय देने वाले महान राजवंशों की कई-कई पीढ़ियां लगी थीं। मैं मानता हूं कि इंसानों की तरह इतिहास भी करवट लेता है। उसका भी धैर्य टूटता है। वो कब तक अतीत का सारा बोझ गुमनामी में लिए पड़ा रह सकता है। आखिर कब तक? उदयपुर आज जैसे जाग रहा है। वह अपना नया परिचय दे रहा है। वह सदियों की धूल झटकार कर हमसे कुछ कहना चाहता है। तराशे गए पत्थरों से

जैसे हमारे पुरखे हम सबको पुकार रहे हैं। वो किसी और ग्रह से आए हुए लोग नहीं थे, जो स्थापत्य के ये बेमिसाल नमूने निर्माण करके चले गए।

वे हमारे ही पूर्वज हैं, जो अपनी इन महान कलाकृतियों में जीवित हैं। जब भी मैं ऐसे किसी स्मारक के शानदार गढ़े गए पत्थरों से रूबरू होता हूं तो लगता है कि इन्हें मेरे किसी पूर्वज ने खदानों से निकाला होगा। मेरा ही कोई अंश होगा, जिसने पत्थरों को काट-छांटकर प्रतिमाओं को बाहर निकाला होगा। वे मेरे ही पुरखे थे, जिनकी सर्वश्रेष्ठ प्रतिभा इन रूपाकारों में ढली थी। उदयपुर अपना परिचय स्वयं दे रहा है। उसका सब्र टूट रहा है। नई-नई कहानियां सामने आ रही हैं।

**आपबीती : एक खंडित देवी का वक्तव्य**

**हे देवी, अपनी व्यथा कहो!**

'वह एक लंबी कथा है। सुख के छोटे और दुख के लंबे कालखंड की व्यथा कथा। मुझे परमारों के वो महान शिल्पी याद हैं जिन्होंने खदानों से लाए पत्थरों पर कई सालों के परिश्रम और कौशल से हमें उभारा था। वे चकित होकर देखते थे और लगातार प्रयास करते थे कि सौंदर्य में कोई कमी न रह जाए। प्रतिमा जब तक जीवंत न हो वह पाषाण ही है। जब इस स्थान पर मंदिर का निर्माण शुरू हुआ तो वर्षों तक उत्सव का वातावरण रहा। भूमिपूजन, शिलान्यास और गर्भगृह में अभिषेक का वह उत्सव, जब महाराज उदयादित्य स्वयं अपने मंत्रियों सहित सपरिवार यहां उपस्थित थे। धारा नगरी, उज्जयिनी, मंडपदुर्ग और भोजपाल से भी अनेक प्रमुख सामंत और शिल्पी अपने शिष्यों के साथ यहां आए थे। वे सब राजमहल के अतिथि थे। उदयपुर में एक नया अध्याय आरंभ हो रहा था। यह मंदिर किसी स्वर्ण मुद्रिका में जड़े दुर्लभ हीरे जैसा दूर से चमकता था।'

'परमार वंश के सभी राजा कलाप्रिय थे। मंदिरों के निर्माण पूरे राज्य में चलते थे। भोजपुर की चट्टान से लेकर धारा नगरी, उज्जियनी, मंडपदुर्ग और ओंकारेश्वर तक कितने नाम गिनाएं। अगर परमारों के राज में कोई सबसे व्यस्त था तो वे आदरणीय शिल्पकार थे। वे पत्थरों पर आश्चर्य उकेरते थे। एक दिन हम सब देव प्रतिमाएं अपनी जगह पर स्थित हो गईं और मुख्य शिल्पी अवलोकन के लिए आए। मंदिर के ध्वजारोहण समारोह की शोभा ने लोगों को सरस्वती कंठाभरणों के उत्सव स्मरण करा दिए। उदयपुर की स्मृतियों में वैसा समारोह दूसरा नहीं हुआ। राजमहल से लेकर दुर्ग के सभी द्वारों, नगर के द्वारों और रास्तों, सभी मंदिरों को दीयों और पुष्पों से सजाने की व्यापक तैयारियां की गई थीं। भोज की वंश परंपरा गौरवान्वित थी। नीलकंठेश्वर महादेव मंदिर लोक को समर्पित हो रहा था। दूर-दूर के राजाओं ने अपने शुभकामना संदेश सहित यहां के शिल्पियों के समूहों की मांग भेजी थी।

'एक दिन दुर्ग के बाहर कुछ अनजाने चेहरे मंडराते हुए दिखे। उनका हुलिया और भाषा अलग थी। वे घेरकर हमले की तैयारी करते रहे। फिर हमने नगर में कोलाहल सुना। चीख-पुकार, आग और धुएं से उदयपुर का आसमान भर गया। कई लोग अपनी प्राण रक्षा के लिए ऊपर पहाड़ पर छिप गए। आक्रमणकारियों के समूह कुछ अजीब से नारे लगाते हुए मंदिर के चारों तरफ के रास्तों पर भर गए। राज्यों के लिए ये संघर्ष नए नहीं थे। हमने समझा नगर के नए स्वामी आ गए हैं। अब यहां परमार नहीं रहेंगे। संभवत: कलचुरियों ने आधिपत्य कर लिया है। किंतु यह हमारी चिंता का विषय नहीं था। हमें अपनी सुरक्षा या सम्मान को लेकर कोई चिंता नहीं थी। परमार हों या कलचुरि, चोल या राष्ट्रकूट, पल्लव या पांड्य या पाल वे सब भारतीय सनातन परंपरा के राजवंश थे...

'वे लोग चारों द्वारों से मंदिर की तरफ आए। यह उदयपुर का सबसे प्रमुख आकर्षण जो था। हमने मूर्तियों में से मुस्कुराकर उन्हें देखा। राज्य के विस्तार की कामना के वशीभूत वे विजयी मुद्रा में थे। उनकी तलवारों से खून टपक था। वे चारों तरफ घूम-घूमकर अपलक हम सब देवप्रतिमाओं को निहार रहे थे। उनकी भाषा समझ के परे थी। कुछ लोग मंदिर में भीतर जाने लगे। उनके हाथों में लोहे के छैनी और हथौड़े देखकर विचित्र लगा। कुछ ही देर में भीतर से ठोकने-पीटने की आवाजें सुनाई दीं। कुछ लोग मंदिर में ऊपर चढ़ने लगे। इससे पहले कि मैं कुछ समझती मेरे ऊपर से कुछ पत्थर गिरना शुरू हो गए...

'विष्णु का हाथ उनके अस्त्रों सहित टूटकर गिरा, गणेश का मुकुट कई टुकड़ों में जाकर नीचे बिखर गया, काली के नरमुंड पाषाण के टुकड़ों में झरने लगे, पता नहीं किसका हाथ टूटा और किसका सिर। वे जहां तक ऊपर चढ़कर जा सकते थे, चढ़े और मूर्तियों पर प्रहार करते रहे। वे सबसे पहले चेहरों को विकृत कर रहे थे। फिर हाथ और पैरों पर एक अंतिम चोट। पूरे प्रांगण में विध्वंस का अकल्पनीय दृश्य था। चारों कोनों पर बने मंडप क्षत-विक्षत कर दिए गए। वे विक्षिप्त भयंकर शोर कर रहे थे। तभी एक जत्था मंदिर के भीतर संग्रहीत अमूल्य रत्नाभूषण और स्वर्ण मुद्राओं को लेकर बाहर आया। सब कुछ लूट लिया गया था।

'एक लंबी सी दाढ़ी वाले ने प्रार्थना में अपने हाथ आसमान की तरफ उठाए और उन विध्वंसकारियों को आशीष दिए। वह उनका सरदार या कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति था, जो बड़ी ठसक से वहां आया था। उसके सम्मान में तलवारें उठाकर सबने गले फाड़ दिए और कोई नारा लगाया। अब वे मंदिर के पीछे एक दीवार बनाने का प्रयास करने लगे। इसके लिए वो सारे पत्थर मंदिर से ही तोड़कर निकाल रहे थे। अपनी भाषा में दो शिलालेख बनाकर दो द्वारों में लगा दिए। एक पर लिखा नाम अब तक याद है-'मोहम्मद बिन तुगलक।' एक हमलावर मेरी प्रतिमा के सामने आया तो देवता के एक कटे हुए सिर को जोर की ठोकर मारकर दो शब्द बोला-'बुतपरस्ती हराम।' मैं इसका अर्थ नहीं समझी, लेकिन उसकी घोर घृणा का अनुभव बहुत निकट से किया। उसने संकेत से किसी श्रमिक को बुलाया जो प्रांगण में एक मंडप की मूर्तियों को तोड़ रहा था।

'अब वह मेरी तरफ संकेत कर रहा था। मैं पाषाण निश्छल और साक्षी भाव में थी। दो लोग मेरी तरफ चढ़ने लगे। उनकी दाढ़ियां थीं। मूंछे नहीं थीं। वे ललचाई नजरों से ऊपर से नीचे तक मुझे देख रहे थे। एक अपना हाथ मेरे वक्ष पर फेरते हुए बोला-'हूर से कम नहीं मगर कम्बख्त पत्थर है।' बस यही मैंने सुना और मेरे मस्तक पर एक भरपूर प्रहार हुआ। एक गलाफाड़ नारे की गूंज-'अल्लाहो-अकबर।' मेरी पाषाण देह पर उनके छैनी-हथौड़ों की ठक-ठक देर तक मुझे अनुभव होती रही। उस दिन जैसे उदयपुर का वैभव अस्त हो रहा था।

-लेखक मध्यप्रदेश में राज्य सूचना आयुक्त हैं। सात किताबें प्रकाशित हैं। भारत भर की आठ परिक्रमाएं की हैं। मो.: 09893043200

■

# जीवन यात्रा पढ़ाव और समय चक्र

ओ.पी. कुशवाहा

हे समस्त गुणीजनों,

**आप सभी की उड़ानें-हमेशा ऊँची रहें। इन्ही शुभकामनाओं के साथ, शिल्पकार परिवार का सादर-पूर्वक नमन स्वीकार हो- ओम प्रकाश।**

मेरा जन्म 07 जुलाई 1944 को ग्राम- कलाई जिला- अलीगढ के एक साधारण परिवार में हुआ। प्राईमरी शिक्षा गांव में मिडिल तक साधू आश्रम एवं इंटर तक हरदुआगंज में पूर्ण हुई। बडे भाई स्व. श्री राजपालसिंह म.प्र. शासन में सेवारत थे, इस कारण उनके प्रयास से वर्ष 1965 से वन विभाग में सेवारत हो गया। वर्षो से हमारा परिवार भोपाल रेलवे स्टेशन के समीप हिनौतिया (चाँदबढ़) में निवासरत था, इस कारण वर्ष 1984 की भीषण गैस त्रासदी का भी शिकार हुआ। प्रारंभिक काल से ही आध्यात्मिक रूझान होने के कारण वर्षो तक भौतिक एवं आध्यात्म के बीच ही झूलता रहा। स्वप्नों में वृक्षों की जडों में देव-दर्शन, जंगलों में उनकी खोज, नौकरी में अति सीमित वेतन तथा अन्य कारणों से वर्ष 1986 में वन विभाग से स्वेच्छिक सेवा निवृत्ति लेकर शासकीय नौकरी को अलविदा कर दिया। छत्तीसगढ प्रथक राज्य बन जाने के कारण मेरे कुछ साथी रायपुर पहुँचे थे, और उनके माध्यम से मैं पहुँच गया भोपाल से एक हजार कि.मी. दूर बस्तर (जगदलपुर नहीं)। किराये का कमरा लेकर वहीं डेरा जमा लिया और बस्तर के चारों ओर निवासरत ग्रामीण अंचलों में अनेक शिल्पकारों से परिचय होता गया। उन्हीं के यहाँ खाना-पीना, रहना और वुड कार्विंग की बारीकियों को स्वयं के भीतर समाहित करता रहा। अधिकतर आदिवासी कलाकार ट्राइवल आर्ट के अलावा जो उनकी समझ में आता उसे सृजित कर जगदलपुर बेच देते। इस आदिवासी काष्ठ शिल्प से लोगों को हमेशा मोहित नहीं किया जा सकता। कलाकारों के पास भविष्य की कोई योजना नहीं। उन्हें सही ढंग से कोई मार्गदर्शन देने वाला नहीं। देशी महुआ दारू, मुर्गा लडाई, छोटे-छोटे काम, जीवन स्तर और भविष्य की चिन्ता नहीं, यही थी उनकी रोजमर्रा की जीवन शैली। मेरे पीछे-पीछे मेरा ज्येष्ठ पुत्र गजेन्द्रसिंह भी बस्तर आकर रम गया। कलाकारों के बीच हमने कई वर्ष गुजारे। कलाकारों से गहरे संबंध स्थापित हुए। काष्ठ कला एक टीम वर्क है। एक-दो कलाकार भी मिलकर किसी ऊंचे मुकाम तक नही पहुंच सकते। बस्तरिया कलाकारों को उनकी अपनी ही जीवन शैली भाती है। पैसों का अत्याधिक मोह नहीं, इसलिए बाहर जाकर काम करने को तैयार नहीं। मुझे काष्ठ शिल्प में उस मुकाम तक जाना था, जहाँ के बारे में किसी ने सोचा नहीं।

कुछ बस्तरिया शिल्पकारों को साथ लाकर हमने भोपाल में एक टीम बनायी। मेरा छोटा बेटा राजेन्द्र कुशवाहा भी इसी विधा में प्रवेश कर गया। अत्याधिक मेहनत एवं खर्चा। शिल्प संसार जीवन यापन का मार्ग नहीं। काफी समय बाद प्रतीत हुआ कि हमारा भविष्य उज्जवल नहीं। कल्पनाओं से परे अनेकों दुर्लभ कार्य किये, लेकिन कोई बाजार नहीं। सागौन की ऊँची- ऊँची कीमतें, महीनों की मेहनतें, हस्तशिल्प विकास निगम की कोशिशें, ढेरों बडे-बडे सम्मान, पचास से अधिक अखबारों द्वारा लम्बी-लम्बी लीड के साथ प्रकाशन, दूरदर्शन द्वारा एक डाक्यूमेंटरी फिल्म का निर्माण और संपादन उपरांत प्रसारण, 521 गणपति प्रतिमाओं की कृति लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड 2011 इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड 2012 एवं यूनिक वर्ल्ड रिकॉर्डस 2012 में दर्ज, अनेक प्रंसगों पर सम्पन्न शिल्प कृतियाँ भी ग्राहकों को समीप ना ला सकीं। उसी दौरान स्वजातीय बंधु स्व. श्री रामस्वरूप शाक्य, ''शिल्प गुरू'' भारत सरकार से पुरस्कार धारक

मैनपुरी से ''सूरज कुण्ड'' मेला (हरियाणा) में जाकर मुलाकात की। उनके तारकसी शिल्पों का अध्ययन किया। मैनपुरी में हफ्तों रहकर उनके शिल्प की बारीकियों को समझा, इस विधा में अधिक व्यय की आवश्यकता नहीं थी, इस कारण 10-11 वर्ष पूर्व काष्ठ शिल्प को बंद कर तारकसी शिल्प में प्रवेश हुआ। तारकसी शिल्प में हमने आमूलचूल परिवर्तन किया। पीतल तार को सागौन पटियों में उभार देकर श्री डायमेंशन में परिवर्तित किया। चूँकि आर्कलॉजीकल सर्वे ऑफ इंडिया के सुपरटेडेन्ट आर्कलोजिस्टों से हमारे पूर्व से संबंध थे, इस कारण यहाँ भी प्रागैतिहासिक संसार ''भीमबैठका'' तथा अन्य विश्व धरोहरों को पकड़ कर कार्य प्रारंभ किये।

श्री राम जन्मभूमि अयोध्या-बाबरी ढांचे के प्रमुख पुरातत्वीय जांच कर्ता, जिनके द्वारा प्रेषित प्रमाणित जाँच रिपोर्टे एवं उनके कथनों का अध्ययन कर मान. सर्वोच्च न्यायालय ने अपना निर्णय दिया, जिन्होने

डॉ. के.के. मुहम्मद

चम्बलों के बीहड़ों में अनेक वर्षों पूर्व भूकंप से ध्वस्त हुए बटेश्वर में स्थित 200 मंदिरों की श्रृंखलाओं को दुर्दान्त गुर्जर डाकुओं के मध्य 100 से अधिक ध्वस्त मंदिरों को उनके मूल स्वरूप में पुर्नजीवन देने वाले डॉ. के.के. मुहम्मद तत्कालीन अधीक्षण पुरातत्वविद अर्कलॉजीकल सर्वे ऑफ इंडिया की हमारी कार्यशाला और परिवार पर हमेशा कृपा बनी रही। उन्होने अनेकों बार कार्यशाला का भ्रमण किया। उनका कहना था कि जो कार्य भारत सरकार को करना चाहिए, वह कार्य यह शिल्पकार परिवार कर रहा है, जो बधाई का पात्र है, इनका सहयोग मार्गदर्शन करना हमारा भी दायित्व है। आपने हमारे यहॉ सृजित काष्ठ विश्व धरोहरों युग-युगीन सांस्कृतिक विरासतों के फोटो भेज कर श्रीमान भगवान देव इसरानी- सेकेट्री से नई विधानसभा भवन में स्थापित हेतु प्रयास किया। आपने खजुराहो की पाषाण प्रतिमाओं को काष्ठ रिप्लिका के सृजन की अनुमति जारी की। मेरे अनुरोध पर काष्ठ कृतियों के साथ "Vote For Taj" के लिए कुशवाहा समाज द्वारा न्यू मार्केट में 05-07-2007 को प्रायोजित रैली में प्रांरभ से समापन तक प्रथम पंक्ति में शामिल होकर हमारे समाज का मान बढाया। आपने लाईब्रेंरी में अध्ययन हेतु अनुमति जारी की। उन्होने विश्वधरोहर साइट ''भीमबैठका'' में इन्टरपिटेशन सेंटर के निर्माण हेतु भारत सरकार से प्लान एवं बजट स्वीकृत कराया, हमें आश्वस्त किया कि सेंटर में एक आर्ट गैलरी होगी, जिसमें आपके द्वारा सृजित भित्ति शैल चित्रों के छोटे-बडे पैनल्स का निरन्तर विक्रय होता रहेगा। भीमबैठका में प्रतिवर्ष देश-विदश के लाखों पर्यटकों का आवागमन होता है। कल क्या होगा- कोई नही जानता? अमरीकी राष्ट्रपति महोदय का दिल्ली आगमन स्वरूप भारत सरकार ने उनका स्थानांतरण दिल्ली कर दिया। हमारे सारे सपने चूर-चूर हो गये। मुहम्मद सा. का प्रभार रीजनल डायरेक्टर ओटा जी ने ग्रहण किया। उन्होंने इंटरपिटेशन सेंटर निर्माण को बस्तों के हवाले कर दिया। म.प्र. में खजुराहो, सॉची, मांडू, ओरछा, भोजपुर, ग्वालियर सभी पुरातात्विक स्थलों पर इंटरपिटेशन सेंटर संचालित है, लेकिन विश्व की सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रागैतिहासिक विश्व धरोहर साइट भीमबैठका के मस्तिष्क पर यह ताज नहीं है। राक आर्ट सोसायटी ऑफ इंडिया के राष्ट्रीय अधिवेशन फरवरी 2020 में हम पिता-पुत्र दोनों हीं तीन दिनों तक उनके साथ रहे। कैलीग्राफी में सृजित ''अल्लाह ओ अकबर'' एक काष्ठ कृति हमारे द्वारा उन्हे भेंट की गयी।

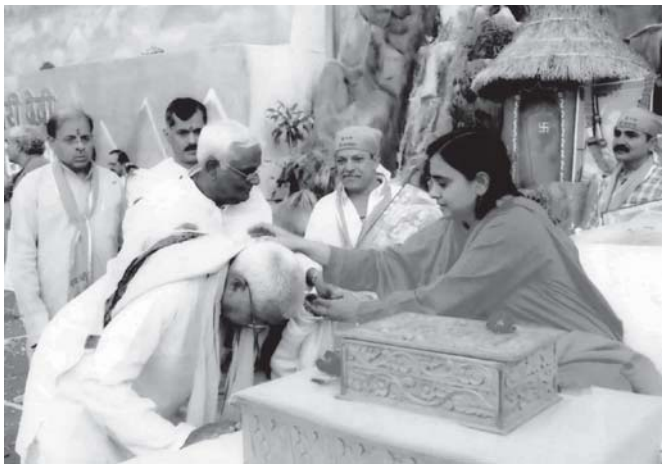

डॉ. नारायण व्यास, डी.लिट. शैलचित्र कला, अधीक्षण पुरातत्वविद मंदिर सर्वेक्षण भारत सरकार के साथ वर्ष 2005 से आज पर्यन्त तक उनका साथ, सहयोग एवं मार्गदर्शन बना हुआ है। डॉ व्यास जी के साथ हम दोनों की संयुक्त प्रदर्शनियॉ इंदिरा गांधी आर्ट सेंटर नयी दिल्ली, भारतीय इतिहास संकलन समिति मध्य भारत भोपाल जिसके लोकार्पण पश्चात, आर.एस.एस. प्रमुख संघ संचालक स्व. के.एस. सुदर्शन जी द्वारा शाल, श्रीफल एवं फूल मालाओं से मेरा सम्मान किया गया। रायसेन क्षेत्र का युग-युगीन इतिहास संबंधी तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी, प्रदर्शनी एवं जिला मुख्यालय के सभी स्कूल, कॉलेज के छात्र-छात्राओं द्वारा अनेक प्रस्तुतियॉ दी गयी, वही स्टेज पर शाल श्रीफल एवं फूल मालाओं से मेरा सम्मान हुआ। इसके अतिरिक्त सिगग्नेचर बिल्डिंग कोलार रोड, रीजनल सांइस सेंटर (राष्ट्रीय मानव संग्रहालय) में भी हमारी संयुक्त प्रदर्शनियाँ लगी।

श्रीमती अरूणा शर्मा, महानिदेशक दूरदर्शन एंव प्रसार भारती दिल्ली के निर्देश पर दूरदर्शन भोपाल ने दिनांक 28.10.2010 से 14.11.2010 के मध्य हमारे शिल्प संसार पर केन्द्रित फीचर फिल्म का निर्माण एवं संपादन उपरांत प्रसारण किया। मुझे भी दूरदर्शन से रू. 2000 का भुगतान हुआ। अर्न्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संस्थान ''भारत भवन'' भोपाल में हमारी प्रदर्शनी की अनुमति श्रीमान मनोज श्रीवास्तव, आई.ए.एस. कमिश्नर महोदय सूचना प्रकाशन एवं स्टेट म्यूजियम में प्रदर्शनी हेतु श्रीमान पंकज राग आई.ए.एस. कमिश्नर महोदय पुरातत्व द्वारा जारी की गयी। हमारी तीन प्रदर्शनियों का लोकार्पण मान. श्री लक्ष्मीकांत शर्मा, पूर्व संस्कृति मंत्री मध्यप्रदेश शासन एवं उनके साथ 2-2 अन्य मान. मंत्री महोदयों म.प्र. शासन द्वारा किया गया।

शिल्पकार परिवार के छोटे सदस्य राजेन्द्र सिंह कुशवाहा को

विज्ञान भवन नयी दिल्ली में महामहिम राष्ट्रपति महोदय के कर कमलों से सिद्धहस्त शिल्पियों संबंधी राष्ट्रीय पुरस्कार (National Award) 2005 प्राप्त हुआ। संपूर्ण म.प्र. की काष्ठ शिल्प विधा में आप अकेले ही नेशनल अवार्डी है। भारत सरकार के सौजन्य से देश के एकमात्र विशाल सांस्कृतिक एवं हेन्डीक्राफ्ट मेला सूरज कुंड (हरियाणा) एवं दिल्ली हाट में अनेकों बार आपकी सहभागिता रही। भारत सरकार ने आपको सिडनी (आस्ट्रेलिया) एवं जौहान्सबर्ग (साउथ अफ्रीका) भी भेजा गया।

शिल्पकार परिवार के ज्येष्ठ पुत्र गजेन्द्र सिंह कुशवाहा को म.प्र शासन ने तारकसी शिल्प के माध्यम से अनेक सांस्कृतियों, विश्व धरोहरों, प्रागैतिहासिक संसार रचने पर विश्वकर्मा पुरस्कार (प्रथम) सम्मान निधि रू एक लाख से सम्मानित किया गया। इंडिया इन्टरनेशनल ट्रेड फेयर प्रगति मैदान, नई दिल्ली में म.प्र. मंडप का प्रथम पुरूस्कार एवं शील्ड मा. स्व. श्री बाबूलाल गौर, पूर्व मुख्यमंत्री महोदय म.प्र. शासन एवं उद्योग मंत्री महोदय के कर कमलों से प्रदान की गयी। म.प्र. हस्त शिल्प विकास निगम ने आपको जहॉगीर आर्ट गैलरी मुम्बई, गोवा, जयपुर, बैंगलुरू, चंडीगढ, एवं राजकोट की प्रदर्शनियाँ में शामिल किया। देश के बाहर दुबई प्रदर्शनी में आपकी 15 दिनों तक सहभागिता रही है।

शिल्पकार परिवार ने हमेशा उन धर्मो, संस्कृतियों एवं विश्व धरोहरों पर सृजन कार्य किये हैं, जिनके संबंध में किसी शिल्पकार ने कल्पना तक नहीं की होगी। धनाभाव एवं भारी कष्टों के बीच सृजित हमारे काष्ठ सृजन आज भी मील के पाथर है 'कल्पनाओं से परे' म.प्र. सागौन काष्ठ पर सतयुग, त्रेता, द्वापर के प्रसंग, जैनधर्म, बौद्ध धर्म, ईसाई धर्म,

इस्लाम एवं अन्य अनेक विश्व धरोहरों, युग युगीन सांस्कृतिक विरासतों प्रागैतिहासिक संसार बस्तरिया आदिवासियों की मूल संस्कृति इत्यादि पर हुए सृजन कार्य सैकड़ों वर्षो तक निज स्वरूप में स्थित रहेंगे। समय चक्र घूमता ही रहता है। तूफान आते-जाते रहते है। वर्तमान में हमारा परिवार शांति पूर्वक जीवन यापन कर रहा है। अब कोई भागम-भाग नहीं। यदि परमात्मा चाहेगा तो एक बार फिर काष्ठ शिल्प संसार में वापस आयेंगे। इसके अलावा अब कोई और अन्य चाह भी शेष नहीं। अंत में हे गुणी जनों, एक बार पुन:शिल्पकार परिवार का सादर पूर्वक नमन स्वीकार करने की कृपा होवे।

-10 प्रकाश नगर (बिजली कालोनी) गोंविदपुरा- भोपाल 462023 (म.प्र.)
मो.: 8435786515

■

# कलाकार का संघर्ष

**गजेन्द्र सिंह कुशवाहा**

मैं परिवार का ज्येष्ठ पुत्र था, इसलिए पिता के कंधे से कंधा मिलाकर साथ चलना मेरा धर्म था। परिवार में एक प्रिटिंग प्रेस संचालित थी, जिसे मैं संभालता था। प्रिंटिंग प्रेस लाइन के अलावा मुझे दूसरे अनुभव थे नहीं। पिता अनुभवशाली व्यक्ति थे। कुछ लोगों के षडयंत्रों एवं प्रेस में बडी चोरी हो जाने के कारण प्रिटिंग प्रेस बंद करनी पडी। हमारा पीड़ित परिवार दुखी अवश्य था, लेकिन दिली हौसलों की कमी नहीं थी। पिता अकेले ही बस्तर जाकर भविष्य के संबंध में काष्ठ शिल्प संबंधी विषयों का अध्ययन कर रहे थे। मैं भी उनका साथ देने बस्तर पहुंच गया। भोपाल से लगभग 1000 किमी दूर, आदिवासीय क्षेत्र, वहाँ की अलग संस्कृति, आचार- व्यवहार, सोच समझ एवं हिन्दी भाषा का ज्ञान ना होने से वार्तालाप में अनेकों परेशानियाँ उठानी पडी। पिता दुखी अवश्य रहते थे लेकिन वह थे

अपनी धुन के पक्के। लगभग 15-20 वर्षो तक बस्तर में हमारा किराये का मकान, वाहन एवं अन्य घरेलू सामान मौजूद रहा। बस्तरिया काष्ठ कलाकारों से मेरे दोस्ताना संबंध बने। मैंने भी इस विधा में शिक्षण-प्रशिक्षण प्राप्त किया। बारम्बार जगदलपुर जाकर काष्ठ शिल्प बेचने वाली अनेक दुकानों को देखने परखने का मौका मिला। वहाँ भी अनेक कलाकारों से परिचय हुआ। बस्तर के चारों ओर 30-40 किलोमीटर क्षेत्र में हमारा अधिकतर आना-जाना रहा। नक्सलाईट एरिया होने के बावजूद भी हमें कभी कोई परेशानी नहीं हुई। नारायणपुर के निकट ''अबूझमाड़'' जो मुख्य प्राचीन आदिवासीय क्षेत्र एवं नक्सलाईट के गढ़ मे संचालित एक काष्ठ शिल्प

कार्यशाला में कई बार जाने का मौका मिला। कोडागाँव, नारायणपुर, दंतेवाड़ा एवं स्थानीय ग्रामीण क्षेत्रों में काष्ठ, ढोकला, लोह शिल्पों को समीप जाकर बारम्बार देखा। पिता के मन में क्या था, मैं नहीं जान पाया।

वर्ष 1990 के आसपास बस्तर के कुछ शिल्पकारों के साथ भोपाल में काष्ठ शिल्प का कार्य प्रारम्भ किया। भोपाल से बाहर प्रथम बार हमारी प्रदर्शनी भारत अर्न्तराष्ट्रीय व्यापार मेला प्रगति मैदान नई दिल्ली स्थित म.प्र. मंडप में प्रदर्शित हुई।

मंहगे सागौन काष्ठ शिल्प के खरीददार तो नहीं मिले, लेकिन स्टाल पर रोजाना भारी भीड लगी रही। म.प्र. मंडप का प्रथम पुरस्कार एवं शील्ड मान. स्व. श्री बाबूलाल गौर जी पूर्व मुख्यमंत्री एवं उद्योगमंत्री महोदय के कर कमलों से मुझे प्राप्त हुई। भोपाल में अधिकतर लोगों की सोच थी कि बस्तर जाओ फ्री में शिल्प भर लाओं। क्यों धन बर्बाद करो, लेकिन उनकी सीमित और अज्ञानी सोच को कौन बदल सकता था। बस्तर में तो आम की लकड़ी को भी सागौन बनाकर बेचा जाता था। लोग शिल्प देखते है, खरीदते है लेकिन वे काष्ठ पर ध्यान नहीं देते। सैकडों वर्षों तक निज स्वरूप में स्थित रहने वाली म.प्र. सागौन काष्ठ पर ही हमारे सृजन कार्य सम्पन्न हुए। मंहगे शिल्प के खरीददार नहीं मिले और हमारी आर्थिक स्थिति नीचे ही गिरती गयी।

आर्थिक स्थिति सुधारने हेतु तारकसी शिल्प का माध्यम तलाशा। इसमें खर्चा कम और एक-एक कृति की कीमत रू. 500/- तक। समस्या फिर खडी, किस तरह का सृजन किया जाये। भोपाल में कोई मार्केट नही। डॉ. के.के. मुहम्मद सा. एवं डॉ नारायण व्यास दोनों ही अधीक्षण पुरातत्वविदों के मार्गदर्शन में प्रदेश एवं देश की विश्व धरोहरों एवं प्रागैतिहासिक संसार भीमबैठका के सेकडों भित्ति शैल चित्रों का रिप्लिका सागौन काष्ठ पटियों पर सृजित किया। भीमबैठका में इन्टरपिटशेन सेंटर बनाने की पूरी प्रक्रिया डॉ. के.के. मुहम्मद साहब ने पूर्ण कर हमें अश्वस्त किया कि अब आपके समस्त शिल्प इस इन्टरपिटेशन सेंटर से बिक्री होते रहेंगे। विभाग अपना कमीशन काटकर आपको भुगतान देता रहेगा। उसी दौरान उनका ट्रांसफर दिल्ली हो गया और हम यहाँ भी भारी निराश हो गये।

म.प्र. शासन ने हमारे तारकसी शिल्प में सृजित देश- की सांस्कृतिक धरोहरों पर विशेष कार्य करने हेतु विश्वकर्मा पुरस्कार प्रथम, पुरस्कार निधि एक लाख से सम्मानित किया। भीमबैठका में कभी इन्टरपिटेशन का निर्माण होगा, इसी आशा में जीवनयापन करने हेतु पृथक व्यवसाय प्रांरभ कर दिये है। जीवन की समस्याओं से भी मुक्ति मिल गयी है। कल क्या होगा- मैं तो नही जानता लेकिन एक बार उजाला आयेगा अवश्य, इसी आशा और विश्वास में।

- श्री ओ.पी. कुशवाहा के ज्येष्ठ पुत्र है।

तारकसी शिल्पकार- 10 प्रकाश नगर, बिजली कालोनी, गोविन्दपुरा, भोपाल

■

# काष्ठ शिल्प और नेशनल अवार्ड

राजेन्द्र सिंह कुशवाहा

मैं राजेन्द्र सिंह कुशवाहा, शिल्पकार परिवार का सबसे छोटा सदस्य। काष्ठ शिल्प और तारक्सी शिल्प संबंधी सृजन कार्य मैंने कभी देखा नहीं। विद्यार्थी जीवन में परिवार के साये में रहना पढ़ना-लिखना, खाना पीना यही मकसद रहता था। पिता बस्तर जाकर रहने लगे थे, इस कारण मेरा भी बस्तर आना-जाना प्रारंभ हो गया 'हम उम्र होने के कारण शिल्पकारों से घनिष्ठ संबंध बनते गये। पूरे क्षेत्र से परिचित हो

गया। बस्तरिया कलाकार घर पर हर किसी प्रकार का सृजन करते और जगदलपुर जाकर दुकानों पर बेच देते और स्वयं भी दिन भर मजदूरी करते। उनके भविष्य को आगे बढाने वाला कोई नहीं। राज्य शासन भी मदद नही करती। शासन द्वारा देहातों एवं नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में कलाकारों को ट्रेनिंग देने हुए भेजना रहता था। बस्तर के कलाकारों की उस समय

ऐसी स्थिती होती थी कि सुबह से रात्रि तक महुआ की देशी दारू, मुर्गा लड़ाई, गपसप करना। भविष्य की और परिवार की चिन्ता नहीं, घर की महिलाएं खेतों में जाकर मजदूरी करती। बाहरी लोगों के पास आदिवासियों की बड़ी-बड़ी जमीनें हुआ करती। रजिस्ट्री होती नहीं थी इस कारण केवल स्टाम्प पेपर पर ही उन्हे कब्जा मिल जाता। जगदलपुर में काष्ठ शिल्प का बहुत बडा बाजार था, चारों और काष्ठ शिल्प का कार्य ही होता था। दुकानदार शासन प्रशासन कोई संस्था इत्यदि ने ना तो कलाकारों को विधिवत प्रशिक्षण दिया ना ही उनके कल्याण के लिए प्रयास किये मैं भी काष्ठ कला में रमता गया, ट्रायबल आर्ट से मैं आगे बढ़ता गया। जब बस्तरिया कलाकारों के साथ मेरे बड़े भाई भी कार्य करने लगे तब मैं भी पारंगत हो गया। पिताजी को सभी धर्मों, विश्व धरोहरों पाषाण मूर्ति कला, तारकसी शिल्प इत्यादि का भारी ज्ञान था, इसी कारण उनका रूझान इस ओर गया।

प्रारंभ में मैने सागौन की छोटी जड पर गहरी खुदाई में कार्य किया, उस सृजन पर म.प्र. शासन द्वारा स्टेट अवार्ड" काष्ठ शिल्प विधा के लिए प्रदान किया गया। उसके पश्चात बस्तरिया आदिवासी संस्कृति पर सागौन की विशाल जड़ पर अनेक प्रसंगो के साथ गहरी खुदाई करके सृजन पूर्ण किया। म.प्र. शासन की चयन कमेटी द्वारा यह सृजन चयन कर, भारत सरकार नयी दिल्ली को भेज दिया। वहाँ की निर्णायक कमेटी ने इस सृजन को श्रेष्ठ सृजन माना और मुझे महामहिम राष्ट्रपति महोदय के कर कमलों से विज्ञान भवन नयी दिल्ली में नेशनल अवार्ड प्रदान किया गया। भारत सरकार द्वारा एक बार मुझे सिडनी (ऑस्टेलिया) एवं एक बार जौहान्स बर्ग (साउथ अफ्रीका) भेजा गया। देश का सबसे बड़ा संस्कृतिक एवं हैन्ड्रीकाफ्ट मेला सुरजकुंड (हरियाणा) एवं दिल्ली हाट में मेरी अनकों बार सहभागिता रही। मान. श्री शिवराज सिंह चौहान एवं दो अन्य मान. मंत्रियो द्वारा मुझे महात्मा ज्योतिबा फूले सम्मान प्रदान किया गया। अनेक समस्याओं के कारण अभी हमारा कार्य अत्यंत धीमी गति से चल रहा है।

बुड कार्विंग कार्य एक समूह मे होने वाला कार्य है यदि एक-दो कलाकार कार्य करेगें तो उनकी रोजी-रोटी नहीं चल सकती। भारत सरकार द्वारा प्रायोजित गुरु-शिल्प परम्परा के अर्न्तगत मैने अनेक लोगों को प्रशिक्षित किया है। म.प्र. में मैं अकेला ही नेशनल अवार्डी काष्ठ शिल्पी हूँ। नयी पीढी इस विधा में आगे आना ही नहीं चाहती। यह विधा लुप्त होने के कगार पर ढगमगा रही है। मंहगी सागौन, कलाकार नहीं, मार्केट नही, शासन-प्रशासन का सहयोग नहीं । आखिर में कहाँ जावें शिल्पकार ?

-10 प्रकाश नगर बिजली कालोनी गोविंदपुरा भोपाल 462.023, मो. 9329159733

# अंधेरों से उजालों की ओर- कुशवाहा शिल्पकार परिवार

जे.सी. कुशवाहा

एक हजार वर्ष तक निज स्वरूप में स्थित रहने वाली म.प्र. की सागौन काष्ठ पर बिना विद्युत उपकरणों, 100 प्रतिशत हस्तशिल्प के माध्यम से इस साधारण परिवार ने अनेक धर्मो के धार्मिक प्रसंगों, अनके विश्व धरोहरों आदि मानवीय पुरखों का प्रागैतिहासिक संसार भीमबैठका, युग-युगीन सांस्कृति विरासतें, बस्तर की आदिवासी सांस्कृतिक धरोहरों के साथ-साथ अन्य सांसारिक प्रसंगों का ताना-बाना रचकर अनेकों दुर्लभ सृजन कार्य संपादित किये है। समर्पण और त्याग की भावना से परिपूर्ण इनके सृजन कार्य मनमोहक एवं वास्तविक होते हैं जो सुख-शांति अनुभव कराते

हैं। धनाभाव, अनेकों परेशानियाँ, आरा मशीनों से सर्वोत्तम सागौन लकड़ी

का चयन एवं क्रय, वन विभाग की नीलामी से सागौन का क्रय, उनका संकलन, अनेकों विषयों का गंभीर अध्ययन इस परिवार की तप और तपस्या को दर्शाता है।

विलुप्त हो चुकी तारकसी शिल्प के माध्यम से आपके ज्येष्ठ पुत्र गजेन्द्र सिंह कुशवाहा ने विश्व धरोहर साइट भीमबैठका (म.प्र.) जिसमें रायसेन-सीहोर-भोपाल जिला समाहित है के प्रागैतिहासिक संसार के भित्ति शैल चित्रों की हजारों प्रतिकृतियों के अलावा प्रदेश एवं देश की विभिन्न विश्व धरोहरों एवं सांस्कृति विरासतों पर अनेकों सृजन कार्य किये है। वर्णित समस्त धरोहरों की पीतल तार से निर्मित रिप्लिकाऐं पूरे देश में अन्य कहीं देखने को उपलब्ध नहीं हैं। आपके सृजन कार्यो/ काष्ठ शिल्प एवं तारकसी शिल्पों को भोपाल-इंदौर-गोवा के 50 से अधिक दैनिक अखबारों ने लम्बी-लम्बी लीड के साथ प्रकाशित किया है। देश के अनेकों प्रतिष्ठित स्थलों पर आपके सृजन कार्यों की प्रदर्शनियाँ लग चुकी है। व्यय की अधिकता और धनाभाव के कारण यह परिवार विगत 10 वर्षो से काष्ठ शिल्प छोडकर अन्य कारोबार के माध्यम से परिवार का जीवन यापन कर रहा है। आज भी इस परिवार के पास अनेकों दुर्लभ काष्ठ कला कृतियों का भंडार है। ऐसा सृजन काष्ठ शिल्प में देखने हेतु देश में कही भी उपलब्ध नहीं है। देव लोक तथा अन्य समस्त प्रसंगों में चेहरों की भावभंगिकाऐं, उनका श्रृंगार, उनके दर्शन मन मोह लेते है। गणपति की 521 प्रतिमाओं की कृति लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड 2011 इंडिया बुक ऑफ रिकार्ड 2012 एवं यूनिक वर्ल्ड रिकार्ड 2012 में दर्ज है।

कला समय ने शिल्पकार परिवार एवं उनके शिल्पों को वर्षो से चले आ रहे अज्ञातवास से निकालकर उजाले की ओर ले जाने का प्रयास किया है, उसके लिए संपादक महोदय भँवरलाल श्रीवास को कोटिशः धन्यवाद।

- दानिश हिल्स व्यू 2/195-कोलार रोड भोपाल, मो. 9406902149

■

**विचार**

# काष्ठ शिल्पी श्री ओ.पी. कुशवाहा



डॉ. नारायण व्यास

हमारे देश के जाने माने काष्ठ शिल्पी श्री ओ. पी. कुशवाहा को कौन नहीं जानता। इनका पूरा परिवार काष्ठ कला में माहिर हैं। इनकी कृतियां देश विदेश में प्रसिद्ध है। काष्ठ कला की प्रत्येक विधा में इन्होंने महारथ हासिल की है। इनके बनाए विशाल द्वार एवं उनपर बनी नक्काशी जिनमें रामायण,भागवत, कृष्ण लीला अद्वितीय है। वाकणकर जी द्वारा किया गया शैल चित्रकला में शोधकार्य से प्रेरणा लेकर तारा कशी का कार्य प्रारंभ किया। इस कार्य की प्रसिद्धि स्पेन में हो गई एवं शैल चित्रकला विशेषज्ञ इनकी कलाकृतियां वहां तक ले गए। काष्ठ पर उकेरी रामायण के पेनल्स, सभी धर्मों के प्रसंग काष्ठ पर उकेरे। इनकी बनाई मिरर फ्रेम और उनमें बनी देश की विश्व धरोहरें अद्वितीय है।

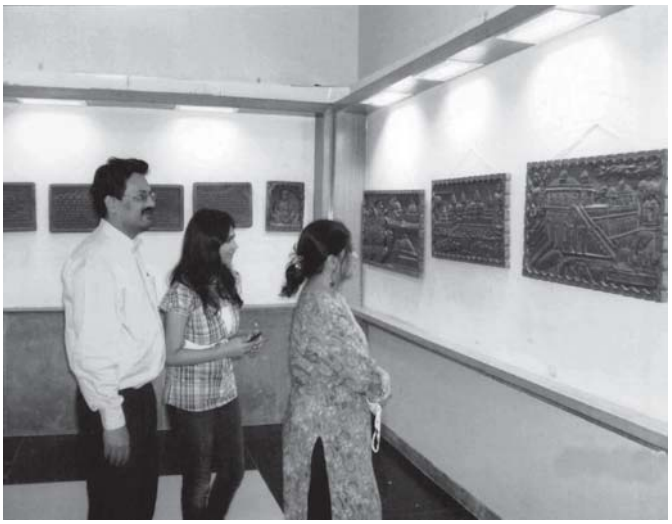

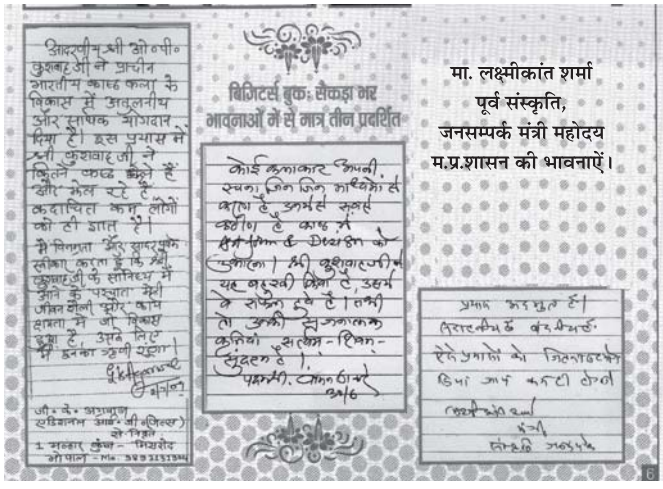






उन्होंने सागवान के वृक्ष की विशाल जड़ पर सैकड़ों गणपति प्रतिमाएं बनाई है जो एक विश्व धरोहर का स्थान ले सकती है। कई स्थानों पर इनकी कला की प्रदर्शनियाँ लग चुकी हैं। इन्होंने कई रेकॉर्ड्स बनाये हैं विशेष रूप से लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में इनका नाम दर्ज है।

इनके बनाए राम दरबार कृति में इन्होंने अथक परिश्रम से राम को जन जन तक पहुंचाने का प्रयास किया है जिसमें ये सफल हुए हैं। इन्होंने युग युगीन भारत की कला का अध्ययन कर उसे काष्ठ पर साकार किया है। तारकसी के कार्य में सफलता प्राप्त की है। एक महान कलाकार को उनके कार्यों को देखते हुए उचित सम्मान मिलना चाहिए। मैं इनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए अपनी ओर से इन्हें **काष्ठ शिल्प रत्न की उपाधि से विभूषित करता हूँ।**

95, फाईन एवेन्यू फेस-1, नयापुरा कोलार रोड, भोपाल म.प्र.469042
मो. 9425600143

■

धरोहर के संग्राहक

# संग्रह के लिए प्रेरणा

डॉ. नारायण व्यास

नाम : डॉ. नारायण व्यास
पिता : स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पं. वैद्य (स्व.) अनंत लाल व्यास
जन्म : 5 जनवरी, 1949, उज्जैन
शिक्षा : 1. एम.ए. (प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति), विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन 1970
2. पी.एच.डी., रानी की वाव (बावड़ी) की स्थापत्य एवं मूर्तिकला 1992
3. डी.लिट् (रायसेन जनपद की शैल चित्रकला एवं भीमबैठका) 2005
4. तीन वर्षीय चित्रकला में डिप्लोमा 1968
5. पुरातत्व में पी.जी. डिप्लोमा, 1972
अनुभव : भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण में 1972 से 2009 (जनवरी) तक सेवारत

**संग्रह के लिए प्रेरणा :**

संग्रह करने की प्रेरणा मुझे मेरे पिता जी से मिली। बचपन में मुझे पुराने सिक्के दिये उनमें ग्वालियर राज्य, इंदौर होल्कर राज्य इत्यादि के दिये। साथ ही उन्होंने विभिन्न प्रकार के डाक टिकट, पुराने अखबार, किताबें इत्यादि दी। सेवा निवृत्त होने के पश्चात मुझे पुन: संग्रह के प्रति रूचि जाग्रह हुई। चूंकि पुरातत्व का क्षेत्र होने से मैंने विचार किया कि उस प्रकार की सामग्री एकत्र की जाये जिसमें किसी प्रकार की बाधा न हो अथवा नियमानुसार उनका रजिस्ट्रेशन न करवाना हो। अत: मैंने आदिमानव के पाषाण काल के उपकरण, मिट्टी के पात्र, पुरानी पुस्तकें इत्यादि एकत्र करना प्रारंभ किया। कही सड़क बन रही हो, मिट्टी का कटाव हो रहा हो वहां से मैं सामग्री एकत्र करता हूँ। एकत्र करने का मेरा यह उद्देश्य है कि विद्यार्थियों, शोधार्थियों को मेरी एकत्र की गई सामग्री का उपयोग आ सके। मेरे घर के बाहर रेत की कई दुकाने हैं वहां नर्मदा की रेत आती है प्रात: भ्रमण में उस रेत में कई प्रकार के पत्थर एवं आदिमानव के पत्थर मिले है। घर के पास सड़क निर्माण के समय मिट्टी डाली गई उसमें कई पत्थर मिले। सामग्री की कई जगह प्रदर्शनीयाँ लगाई तथा विद्यार्थी बहुत लाभांवित हुए। मेरा संग्रह देखने

तथा शोध कार्य के लिये कई शोधार्थी आते रहते हैं।

मेरे द्वारा किया गया संग्रह विद्यार्थियों, शोधार्थियों के शोध कार्य के लिये किया गया है, जिसे कई शोधार्थी अवलोकनार्थ आते हैं। मेरे संग्रह का निम्न रेकार्ड्स में नाम दर्ज हुआ है।

**संग्रह का नाम तथा रेकार्ड्स**

- लिमका बुक ऑफ रेकॉर्ड्स – प्राचीन ईंटे
- गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड – पद छाप वाली ईंट
- इण्डियन स्टार बुक ऑफ रेकॉर्ड्स – पद छाप वाली ईंट
- चैंपियन बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड्स – आदिमानव द्वारा निर्मित पाषाण उपकरण
- अमेजिंग बुक ऑफ इण्डियन वर्ल्ड रेकार्ड – --''--
- इनक्रिडेबल बुक ऑफ रेकॉर्ड्स – पदछाप वाली ईंट
- हाई रेंज, बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड्स – आदिमानव द्वारा निर्मित पाषाण उपकरण
- दैनिक भास्कर द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम इण्डिया बुक ऑफ रेकॉर्ड्स, एशिया बुक ऑफ रेकॉर्ड्स – एक सलाम देश के नाम
- आसाम बुक ऑफ रेकॉर्ड्स – आदिमानव द्वारा निर्मित पाषाण उपकरण
- जिनियस वर्ल्ड रेकॉर्ड्स – --''--
- एक्सलेंसी बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड्स – आदिमानव द्वारा निर्मित पाषाण उपकरण
- भारत वर्ल्ड रेकॉर्ड्स – --''--
- गैलेक्सी बुक ऑफ रेकॉर्ड्स – --''--
- पाण्डीचेरी बुक ऑफ रेकॉर्ड्स – --''--
- रेकार्ड राईजर्स – --''--
- उत्तर प्रदेश बुक ऑफ रेकॉर्ड्स – प्राचीन ईंटे
- इण्डिया बुक ऑफ रेकॉर्ड्स – सदाबहार पौधे के लिए
- जिनियस बुक ऑफ रेकॉर्ड्स – आदि मानव द्वारा निर्मित

पाषाण उपकरण

- वण्डर बुक ऑफ रेकॉर्ड्स (इंटरनेशनल) – पदधाप वाली प्राचीन ईंट
- तेलगू बुक ऑफ रेकॉर्ड्स – --0--
- युनिवर्सल रेकॉर्ड्स फोरम – --0--

**संग्रह के अंतर्गत प्राप्त प्रमाण पत्र**

- लाईफ टाईम अचिवमेंट अवार्ड, युनिवर्सल रेकॉर्ड फोरम्
- यू आर एफ टाप टेलेंट ऑफ द इयर 2015, यूनिवर्सल रेकॉर्ड फोरम्
- रेकार्ड ऑयकन, 2016 यूनिवर्सल रेकॉर्ड फोरम्
- इण्डिया स्टार अवार्ड्स, 2017
- इण्डिया स्टार पसेसन अवार्ड, 2018
- इण्डिया स्टार आयकन अवार्ड, 2018
- इण्डिया स्टार पर्सनलिटि अवार्ड 2019
- एक्सलेंस कलेक्टर अवार्ड, 2019, उत्तर प्रदेश बुक ऑफ रेकॉर्ड्स
- एक्सट्रा आर्डिनरी कलेक्शन अवार्ड, 2020 उत्तर प्रदेश बुक ऑफ रेकार्ड्स
- भारतीय शान अवार्ड, 2020, कासक्स वर्ल्ड रेकॉर्ड्स
- राष्ट्रीय सम्मान अवार्ड, 2021, कासक्स वर्ल्ड रेकॉर्ड्स
- किंग बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड्स, संग्रह पर प्रमाण पत्र
- ग्लोबल फेम अवार्ड, 2021, कासमस वर्ल्ड रेकॉर्ड्स

- नेशनल पर्सनलिटि अवार्ड 2019, कासमस वर्ल्ड रेकॉर्ड्स
- विक्टोरियस ऑफ द ईयर अवार्ड, 2019 विक्टोरियस वर्ल्ड रेकॉर्ड्स
- जिनियसेस आउटस्टेंडिंग टेलेंट अवार्ड, 2018 (पदछाप ईंट) – जिवियसेस वर्ल्ड रेकॉर्ड्स
- जिवियसेस आउटस्टेटिंग टेलेंट अवार्ड, 2018 (पाषण उपकरण का संग्रह) – जिवियसेस वर्ल्ड रेकॉर्ड्स
- इण्डियन ह्यूमिनिटेरियन अवार्ड, 2020 – इण्डियन बुक ऑफ रेकॉर्ड्स
- एक्सलेंट ह्यूमिनिटि एण्ड पिस अवार्ड, 2020 – उत्तरप्रदेश बुक ऑफ रेकॉर्ड्स
- सर्टिफिकेट ऑफ अवेयरनेस 2020 – कासमस वर्ल्ड रेकॉर्ड्स
- सर्टिफिकेट ऑफ काईंडनेस कोविड-19 रिसपोंस – असिस्ट वर्ल्ड रेकॉर्ड्स

**संग्रह की प्रदर्शनियाँ**

मैंने अपने संग्रह का कई जगह प्रदर्शन किया है तथा प्रदर्शनियां लगाई हैं। मैंने अब तक पचास से भी अधिक प्रदर्शनियां लगाई हैं।

- रिजनल साईंस सेंटर भोपाल में विश्व संग्रहालय दिवस 18 मई के अंतर्गत वर्ष 2011 से 2020 तक 20 प्रदर्शनी लगाई है तथा 2020 की ऑन लाईन प्रदर्शनी थी।
- नूतन कॉलेज, भोपाल
- महारानी लक्ष्मीबाई कॉलेज, भोपाल
- कालेज ऑफ एक्सलेंस, भोपाल एवं संग्रहालय तैयार करवाया
- शासकीय हायर सेकेंड्री स्कूल, बैरसिया
- शासकीय हायर सेकेंड्री स्कूल, बरखेड़ा नाथू
- शासकीय हायर सेकेंड्री स्कूल, मिसरोद
- बेनजीर कॉलेज, भोपाल
- प्रत्येक वर्ष 2010 से अब तक विजया दशमी, दशहरे के अवसर पर आदि मानव के हाथियारों का प्रदर्शन
- इतिहास संकलन समिति के राष्ट्रीय सेमिनार में रायसेन में मेरे संग्रह की प्रदर्शनी

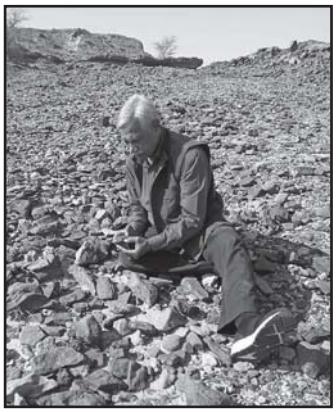

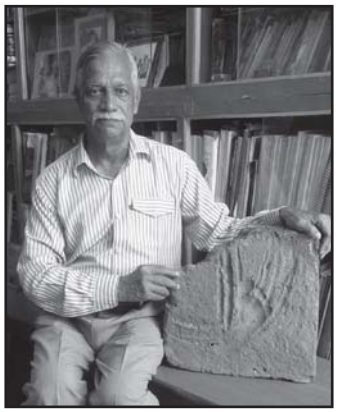

- राष्ट्रीय विज्ञान दिवस, 2018 में रविन्द्रनाथ टैगोर विश्व विद्यालय भोपाल में प्रदर्शनी
- प्रज्ञा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में वर्ष 2009 में प्रदर्शनी
- गणेश चतुर्थी के अवसर पर महाराष्ट्र समाज होशंगाबाद रोड पर प्रदर्शनी
- शासकीय नर्मदा महाविद्यालय, होशंगाबाद में प्रदर्शनी
- नेशनल इंस्ट्टीयूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी में विद्यार्थियों का संग्रह का प्रदर्शन
- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली में संग्रह की प्रदर्शनी वर्ष 2012, 2018, 2019
- इतिहास संकलन समिति, भोपाल के वार्षिक कार्यक्रम में कई बार प्रदर्शनी, हर्षवर्धन नगर
- सांची बुद्धिस्ट विश्वविद्यालय में संग्रह की प्रदर्शनी
- वाकणकर जन्म शताब्दी के अवसर पर संस्कार भारती के कार्यक्रम, मानस भवन, भोपाल, मार्च 2020
- माधवराव सप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय में 2017

**मेरे पास निम्नलिखित संग्रह हैं-**

- आदिमानव के पत्थर के हथियार
- प्राचीन मिट्टी के पात्र
- जीवाश्म
- डाक टिकट, पोस्ट कार्ड्स, लिफाफे, प्रथम दिवस आवरण
- पुराने समाचार पत्र/पत्रिकाएं
- पर्यटन संबंधी देशभर की जानकारी ब्रोशर्स, पिच्चर पोस्टकार्ड (स्मारकों के)

- पुराने बर्तन
- माचीस
- गणेश जी वाले विवाह के निमंत्रण पत्र
- पेपर कटिंग का संग्रह, 1966 से वर्तमान तक लगभग दो हजार
- चित्रों का संग्रह (मेरे द्वारा बनाये गये दो हजार से अधिक)
- पुरानी पुस्तकें
- पुराने पंचांग। सबसे पुराना हस्तलिखित पंचांग संवत् 1872
- पुरानी ईंटे, तीसरी शताब्दी ई. पूर्व से आजादी के पूर्व तक सौ से भी अधिक
- पुराने पत्र व्यवहार
- मेरे पिताजी की कई वर्षों की डायरियाँ (दैनंदिनी)
- पुराने मेडल्स
- विभिन्न प्रकार के अर्ध कीमती पत्थर
- पुराने लकड़ी के ठप्पे जिनके द्वारा कपड़ों पर छपाई की जाती थी। ये 100 वर्ष से भी पुराने हैं।
- पुरानी लगभग सौ वर्ष से प्राचीन पगड़ी
- पुराने वजन तोलने के बाट
- कबाड़ से जुगाड़ की आकृतियाँ
- पुराने छायाचित्र

पुराने भोज पत्र जिस पर पुस्तकें लिखी जाती थी।

**विभिन्न प्रकार के सम्मान**

संग्रह के प्रदर्शन पर कई जगह मुझे सम्मान प्राप्त हुए -

- रिजनल साईंस सेंटर, भोपाल (2011 से 2020)
- मानव संग्रहालय भोपाल एवं रिजनल साईंस सेंटर भोपाल, सम्मिलित रूप से
- इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली
- सप्रे संग्रहालय, भोपाल
- आजादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर स्वतंत्रता संग्राम शहीदों की जन्मभूमि से 75 स्थानों की मिट्टी एकत्रित कर 15 अगस्त 2021 तक प्रर्शनी लगाने का भी विचार है। जगह-जगह से मिट्टी इकट्ठी करने का कार्य प्रगति पर है।

सम्पर्क : 95, फाईन अवेन्यू, फेस-1, नयापुरा, कोलार रोड, भोपाल (म.प्र.)-462042,
मो.: 9425600143

धरोहर के संग्राहक

# कबाड़ से कलाकृतियाँ

**देवेन्द्र प्रकाश तिवारी**

जन्म तिथि : 18.11.1961
शिक्षा : एम.ए. ( इतिहास ) एवं एम.ए.( समाजशास्त्र )
व्यवसाय : कार्यालय अधीक्षक, साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड, भोपाल, म.प्र.
पता : बी-1, कोल परिसर, रायसेन रोड, पिपलानी, भोपाल- 462022
संपर्क : मो. 9300054165
E-mail : dptiwari61@gmail.com

अक्सर हम घर के लिए सजावटी वस्तुएं, पेंटिंग आदि खरीद लाते हैं जो कुछ समय तो ड्राइंगरूम की शोभा बढ़ाती हैं फिर पुरानी पड़ जाने पर हटा दी जाती हैं। लेकिन, यदि हम स्वयं कोई पेंटिंग या कलाकृति बनाते हैं तो उससे लगाव जीवन पर्यन्त रहता है। बचपन में मंहगे खिलौनों से न खेल पाने के मलाल से देवेन्द्र प्रकाश तिवारी को प्रेरणा मिली और अपने सपनों को पूरा करने के लिए खुद ही पसंदीदा खिलौने बनाने लगे। पॉलिश की डिब्बियों के पहिए, जूते के बॉक्स में लगाकर बनाए ट्रक को दौड़ाकर उन्हें जो आनन्द मिलता था वह अब कार यात्रा से भी नहीं मिलता।

देवेन्द्र प्रकाश तिवारी, बचपन से ही सेना के प्रति आकर्षित थे। स्कूल, कॉलेज में 7 वर्ष तक एनसीसी कैडेट रहते हुए अनेक उपलब्धियां हासिल की। 'ए', 'बी' और 'सी' सर्टिफिकेट, वार्षिक कैंप में सर्वश्रेष्ठ निशानेबाज अवार्ड, आर्मी अटैचमेंट कैंप, भोपाल से जबलपुर तक 'साईकिल एक्सपिडीशन कैंप' और 'आल इंडिया रॉक क्लाइंबिंग विथ एडवांस लीडरशिप' कैंप में बैस्ट कैडेट से सम्मानित होने के बावजूद भी एयरफोर्स और नेवी में जाने का अवसर चूक गए। लेकिन, अंतर्मन में मशीनगन, टैंक, तोप और हवाई जहाज छाए रहे इसीलिए, 1982 से भारत शासन उपक्रम सेवा की व्यस्तताओं के बावजूद भी घरेलू कबाड़ से सैन्य उपकरणों के छोटे-छोटे मॉडल फाईटर एयरक्राफ्ट, हैलीकॉप्टर, मिसाईल कैरियर व्हीकल, मल्टी बैरल रॉकेट लांचर आदि के ढेरों मिनियेचर मॉडल्स बना डाले। बेकार कलपुर्जों से तकनीकी यंत्रों के लघु प्रतिरूप बनाने की अनोखी कलात्मक अभिरुचि ने उन्हें राष्ट्रीय व अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति दिलाई है।

जब उनसे यह पूछा गया कि, आकृतियों को आकार देने के पूर्व आपके मन में किस तरह की कल्पना शक्ति काम करती है, कौन से बिंब आकार लेते हैं तो उन्होंने बताया कि, आम तौर पर घरेलू उपकरण जैसे, फ्रिज, वाशिंग मशीन, हीटर, माइक्रोवेव आदि बिगड़ जाने पर उनके खराब पार्टस बदल दिए जाते हैं। इसी प्रकार वाहनों के छोटे-छोटे स्पेयर पार्टस, नट-बोल्ट, पाउडर, क्रीम, टूथपेस्ट के ढक्कन इत्यादि भी उपयोग के बाद फेंक दिये जाते हैं। अर्थात जो वस्तु एक बार अनुपयोगी हुई उसका कबाड़ में जाना निश्चित है। इन्हीं स्क्रेप पार्टस के अनोखे आकार व आकृतियों को देखकर मेरे कल्पना के घोड़े दौड़ने लगते हैं और रचना शुरू हो जाती है। किसी पार्ट का बड़ी आकृति से साम्यता मिल जाना तो मानो सोने पर सुहागा है। उदाहरण के लिए फ्रिज का थर्मोस्टेट खराब हुआ तो उसमें टेप रिकार्डर के बैलेंस व्हील और सीलिंग आदि के संयोजन से खूबसूरत रोड रोलर का मॉडल बन गया जो बचपन से कल्पना में बसा था। दुबारा वही थर्मोस्टेट मिला तो उससे सड़क निर्माण में काम आने वाला रोड ग्रेडर बना दिया। अर्थात, वस्तु विशेष के लिए बने मेटल, रबर व प्लास्टिक पार्टस के संयोजन से एक नया दर्शनीय प्रतिरूप तैयार हो जाता है।

हमारे आसपास दिखाई देने वाले यंत्र/उपकरणों के मॉडल के अलावा अंतरिक्ष में स्थापित नासा का इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन, अपोलो मून मिशन का लैंडिग मॉडयूल, कम्यूनिकेशन सैटेलाईटस, हबल टेलिस्कोप, जियो सैटेलाइट लॉच व्हीकल (जीएसएलवी), पीएसएलवी, अग्नि और ब्रम्होस मिसाईल जैसे महत्वपूर्ण वैज्ञानिक और सामरिक उपकरणों के प्रादर्श भी निर्मित किए हैं। उनका मानना है कि, अन्य विधाओं की तरह यह भी एक कला साधना है जिसमें अभ्यास से परिपक्वता आती है। एक बार प्रारूप तैयार होने के बाद निरंतर संशोधन के विचार दिमाग में आते रहते हैं मानों खाते सोते-जागते बस उसे पूरा करने की जिद रहती है और सतत प्रयास से मॉडल्स में निखार आता जाता है। कई बार तो स्वमेव कुछ ऐसी चीजें पड़ी मिल जाती हैं जो लगता है मानो मेरे मॉडल को पूरा करने के लिए ही बनी हैं।

मृतप्राय सामग्री को उपयोगी बनाते हुए उसे सजीव कर देना बिना खर्च के यह सब कैसे संभव हुआ यह पूछने पर वे बताते हैं कि, हमारे विद्यालयों में क्राफ्ट एक्टीविटी के नाम पर मिट्टी या कागज के खिलौने आदि बनाना सिखाए जाते हैं जिससे बच्चे कला के विभिन्न रूपों से अपरिचित रह जाते हैं। हाईस्कूल व इंजीनियरिंग के छात्र भी बाजार से बने बनाए प्रोजेक्ट खरीदकर प्रस्तुत कर देते हैं व मौलिक विचारों पर ध्यान केंद्रित नहीं करते। मैनें बचपन में हमेशा खुद की कल्पना से नए सृजन की चेष्टा की और शिक्षकों की प्रशंसा बटोरी। मध्यमवर्गीय परिवार में मितव्ययी होने का पाठ पढ़ा इसलिए मेरे मॉडल्स भी पूरी तरह अनुपयोगी सामग्री से बनाए जाते हैं जो बिना या न्यूनतम खर्च के सर्वसुलभ हैं। मेरे मार्गदर्शन में कई छात्र-छात्राओं द्वारा बनाए गए प्रोजेक्ट विभिन्न स्तरों पर पुरस्कृत हुए हैं। मैंने कई विद्यालयों में कार्यशाला द्वारा बच्चों को घर की बेकार सामग्री द्वारा सजावटी वस्तुएं बनाने का प्रशिक्षण भी दिया है।

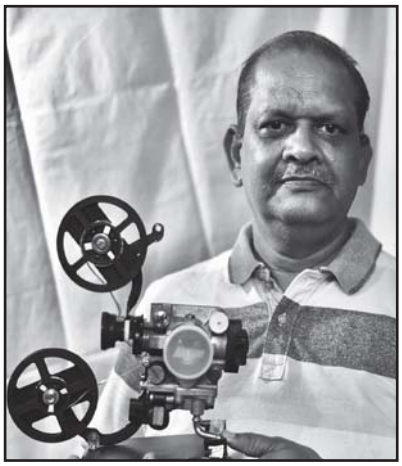
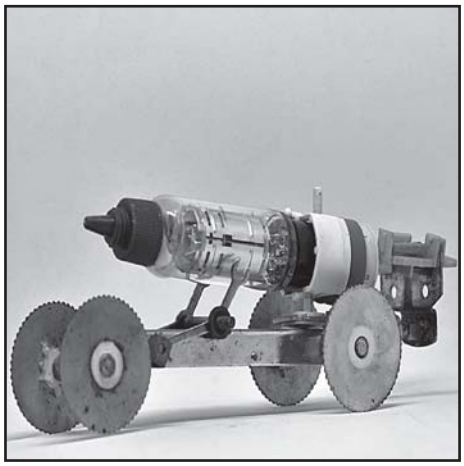

अभी तक उन्होंने कौन से विशेष मॉडल्स बनाए हैं और उन्हें बनाने में क्या सामग्री इस्तेमाल हुई है यह जानने की जिज्ञासा सभी को होती है तो उन्होंने कहा कि, सैन्य उपकरणों में अधिक रुचि होने के बावजूद अन्य विषयों पर भी ध्यान दिया और यातायात साधनों, हैवी अर्थमूवर मशीन, म्यूजिकल व फोटोग्राफी इंस्ट्रूमेंट, श्री गणेश, भगवान शिव की नंदी पर बैठी प्रतिमा, पशु-पक्षियों की आकृतियाँ बनाई। ऑल आउट मशीन में पुरानी फिल्मों के सुपरिचित हैलीकॉप्टर की झलक देख छोटी-मोटी चीजें जोडकर वैसा ही दिखने वाला मच्छर हैलीकॉप्टर बना डाला, जानी पहचानी आकृति होने से दर्शक उसके निर्माण की प्रक्रिया तुरंत समझ जाते हैं।

मेरे परिचितों व मित्रों के सौजन्य से प्राप्त खराब कलपुर्जों से अनायास ही संग्रहणीय अनुकृतियाँ निर्मित हुई हैं। यहाँ उल्लेख करना प्रासंगिक होगा कि, एक मित्र की कार का कारब्युरेटर हेड बदला गया जो कुछ काम आएगा सोचकर मुझे दे दिया। बस फिर क्या था उसे देखते ही बचपन में सड़क पर देखी फिल्मों के प्रोजेक्टर की स्मृति ताजा हो गई। उसमें एलईडी लाईट स्पूल जोडने भर से फिल्म प्रोजेक्टर का खूबसूरत मॉडल तैयार हो गया। इसी प्रकार, हमारे घरों में वाटर फिल्टर की कैंडल हर साल बदली जाती हैं जिन्हें आसानी से रॉकेट मॉडल बनाया जा सकता है। कार के निकले वाईपर से रामायण और महाभारत काल के तीर-कमान और आधुनिक आर्चरी गेम के घनुष बनाए गए हैं।

इन मॉडल्स के आकार के बारे में वे बताते हैं कि, मेरे अधिकांश मॉडल 2 से 12 इंच आकार के हैं। बड़ी रिस्ट वॉच के स्टील डायल पर मामूली काम से दो इंच का कछुआ बन गया वहीं टूटे कार मोबाईल हैंगर से पाँच इंच का आर्मी टैंक किंतु दो एयरक्राफ्ट कैरियर शिप लगभग 21 इंच के हैं जिन्हें फोटोकॉपियर मशीन के खाली टोनर कॉर्टरिज पर बनाया गया है। इसमें विमानवाहक युद्धपोत के सभी उपकरणों यथा- रनवे, दो एयरक्राफ्ट, हैलीपैड व हैलीकॉप्टर्स, कंट्रोल टॉवर, राडार, सेटेलाईट रिसीवर, दो क्रेन, मिनी सबमरीन, लाईफबोट, एंटी एयरकाफ्ट मशीनगन और टारपीडो मिसाईल आदि दृष्टव्य हैं। स्कैप वस्तु के आकार पर ही मॉडल का साइज निर्भर करता है कई बार वस्तुएं भिन्न आकार की होने से साथ जोड़ी नहीं जा सकतीं।

मेरे बहुत से मॉडल्स किसी अवसर विशेष का भी प्रतिनिधित्व करते हैं जैसे देश के वीर सैनिकों की शहादत को समर्पित मेरी कृति 'अमर जवान ज्योति' से प्रेरित है। कोरोना काल के दौरान सैनेटाईजेशन का महत्व बताने सफाई कर्मी, फयूमिगेशन मैन और स्प्रेयर कार्मिक के छोटे मॉडल बना दिये। इसी प्रकार अमेरिका द्वारा विशालकाय मदर बॉम्ब का परीक्षण करने की इमेज देखकर उसकी भी अनुकृति बना डाली जिसमें पिछले 35 वर्ष से सहेज कर रखा स्प्रिट सरफेस लेवलर चिरस्थाई हो गया। वहीं नासा द्वारा खोजे गए नये ग्रह का समाचार टीवी पर देखकर अंतरिक्ष में स्थापित हबल टेलिस्कोप का मिनियेचर मॉडल तैयार कर दिया। कम्प्यूटर हार्डडिस्क से निकली रैम स्ट्रिप, सोलर पैनल जैसी दिखी तो 12 रैम को पुराने कारब्यूरेटर में जोडकर नासा के इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन की अनुकृति बन गई। कम्प्यूटर सीपीयू के कूलिंग फैन से बहुत आसानी से चंद्रयान मिशन का मॉड्यूल बना दिया। भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा हायपरसोनिक मिसाईल के लॉच हेतु विकसित डिमांस्ट्रेटर व्हीकल-एचएसटीडीवी का बहुत छोटा सा मॉडल भी बनाया है।

मिनियेचर मॉडल ही क्यों, यह पूछने पर वे बताते हैं कि, बड़े मॉडल्स बनाना मुश्किल नहीं पर उन्हें घर में रखने की समस्या आती है। छोटे प्रतिरूप कम स्थान घेरते हैं, प्लॉस्टिक, रबर और मैटल पार्टस पार्टस से बने होने से पूरी तरह रखरखाव मुक्त हैं। सबसे बड़ी विशेषता यही है कि इनके निर्माण पर कोई व्यय नहीं किया गया है। दुकानों या सड़क किनारे पड़े नट-बोल्ट, पार्टस या परिचितों-मित्रों द्वारा दिए गए कबाड़ से ही ये बनाए जाते हैं। मॉडल सुंदर दिखाने के लिए मैंने कभी पेंट या पॉलिश का उपयोग नहीं किया। पार्ट्स की मौलिकता बरकरार रखते हुए सदैव बिना कॉट-छांट उपयोग करने का प्रयास किया जाता है। विगत 40 वर्षों से जारी इस कला यात्रा में अनेक ऐसे उपकरणों, यंत्रों के मॉडल्स बने हैं जो आज प्रचलन में नहीं हैं जैसे कि, रिकार्ड प्लेयर, शाही बग्गी, कैमल कार्ट, डबल विंग एयरक्राफ्ट, दूरदर्शन एंटीना इत्यादि। वहीं, इन मॉडल्स में जुड़कर अनेक ऐसे पार्टस भी संरक्षित हो गए जो वर्तमान में प्रचलित नहीं हैं जैसे कि, रेडियो वाल्व, कंडेंसर्स, एनालॉग टीवी ट्यूनर, बजाज स्कूटर एवं एंबेसेडर कार के पार्टस आदि। विभिन्न विषयों पर निर्मित मॉडल्स का विवरण निम्नानुसार है।

**थल सेना** - युद्धक टैंक, बोफोर्स तोप, एंटी एयरक्राफ्ट गन, मॉर्टार लॉचर, ग्रेनेड लॉचर, लाईट मशीनगन,मीडियम मशीनगन बैलिस्टिक मिसाईल, अग्नि और ब्रम्होस मिसाईल और इनके ट्रांसपोर्ट व्हीकल, रोबो कॉप, ग्रेनेडियर्स

**वायु सेना** - द्वितीय विश्वयुद्ध काल के युद्धक विमान, डबल विंग

एयरक्राफ्ट, ट्रांसपोर्ट और फाईटर हैलिकॉप्टर्स, पावर्ड ग्लाईडर, हॉट एयर बैलून, विंड डाईरेक्शन पोल

**जल सेना** – छोटे जलपोत, एयरक्राफ्ट कैरियर शिप, आईएनएस विराट और विक्रांत, पनडुब्बी, टारपीडो आदि।

**अंतरिक्ष विज्ञान** – नासा के इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन, चंद्रयान मिशन मॉड्यूल, स्पेस शटल लॉच स्टेशन, कम्यूनिकेशन सैटेलाईटस, हबल टेलिस्कोप, जियो सैटेलाइट लॉच व्हीकल जीएसएलवी, पीएसएलवी,

**व्यक्तिगत वाहन** – मोनो साईकिल, साईकिल, मोटर साईकिल, रेसिंग बाईक, रेसिंग कार,

**व्यावसायिक वाहन** – शाही बग्गी, कैमल कार्ट, ई-रिक्शा आदि।

**रेल्वे मॉडल्स**– स्टीम रेल्वे इंजन, गुड्स ट्रेन, कम्यूनिकेशन/मोबाईल टावर।

**खनन एवं सड़क निर्माण**–ड्रैग लाईन, जेसीबी मशीन, क्रेन, कंस्ट्रक्शन केन, डम्पर, ड्रिलिंग रिग मशीन, ट्रैक्टर ट्राली, रोड रोलर्स, रोड ग्रेडर

**फिल्म एवं फोटोग्राफी** – 35 एमएम फिल्म प्रोजेक्टर, मूवी कैमरा, लिफ्ट कैमरा, ट्रॉली कैमरा, स्पोर्टस व सीसीटीवी कैमरा।

**संगीत वाद्ययंत्र** – जॉज ड्रम सैट, गिटारिस्ट, पियानो वादक, सितारवादक, स्टैंड माईक आदि।

**धर्म और आध्यात्म** – श्री गणेश जी, नंदी पर विराजमान श्री शिवजी, शिवलिंग व नंदी, दशानन रावण, तीर-कमान

**मानव आकृतियाँ** – पति-पत्नि व बालक, प्रौढ़ शिक्षा प्रेरक अनुकृति, घुडसवार, सफाई कर्मी, फ्यूमिगेशन मैन, स्प्रेयर मैन,

**पशु-पक्षी व अन्य** – गाँधीजी का चरखा, डलझील का शिकारा, सारस, गिद्ध, कुत्ता, कछुआ,

भविष्य की योजनाओं के बारे में श्री तिवारी कहते हैं कि, मैं अपनी इस कला के माध्यम से कबाड़ प्रबंधन की आवश्यकता पर भी ध्यानाकर्षण चाहता हूँ ई-वेस्ट आज विश्व की बहुत विकराल समस्या है। टैक्नालॉजी के सतत् विकास से मोबाईल, कम्प्यूटर्स व अन्य उपकरण की कार्यशील आयु बहुत कम है। हर छह माह में नया मॉडल आने से पुराना कबाड़ हो जाता है। मेरे कलात्मक दृष्टिकोण का उपयोग कर ई-वेस्ट के सुरक्षित हिस्सों को कलाकृतियों में तब्दील किया जा सकता है जो कचरा प्रबंधन की दिशा में एक सक्रिय जनसहयोग सिद्ध होगा। इस विषय में शैक्षणिक व सरकारी संस्थानों को प्रयास करने होंगे ताकि, युवा आगे आकर पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कार्य करने को प्रेरित हों। मेरे सैन्य मॉडल्स को अधिकाधिक युवाओं तक पहुंचाकर मैं उन्हें सशस्त्र सेनाओं के माध्यम से देश सेवा के प्रति प्रोत्साहित करना चाहता हूँ। कुछ समय पश्चात अपने नए घर में एक लघु संग्रहालय की स्थापना का भी लक्ष्य है। उनकी इस कला का प्रदर्शन और प्राप्त सम्मानों के बारे में पूछने पर उन्होंने बताया कि – वर्ष 2005 में झील संरक्षण प्राधिकरण ने कबाड़ से जुगाड़ विषय पर केंद्रित दो दिवसीय प्रदर्शनी एवं प्रतियोगिता आयोजित की थी जिसमें मेरे बनाए मॉडल्स को बहुत पसंद किया गया। मुझे द्वितीय स्थान मिला व इस कला को आगे ले जाने की प्रेरणा भी।

जून 2013 में मुझे 'इंडिया बुक ऑफ रिकार्ड्स' द्वारा इंदिरा गाँधी कला केंद्र, नौएडा में आयोजित 'रिकार्ड्स ब्रेकर्स फेस्टिवल' में टॉप 100 टैलेंट से सम्मानित किया गया। अक्टूबर 2018 में भी संस्थान की 25 वीं वर्षगांठ के अवसर पर सिरिफोर्ट ऑडिटोरियम नई दिल्ली में आयोजित विश्व कीर्तिमानधारियों के फेस्टिवल में सम्मानित किया गया।

फिल्म अभिनेता व निर्देशक फरहान अख्तर के प्रोडक्शन हाउस द्वारा उन्हें फिल्म 'फुकरे' के म्यूजिक लॉच इवेंट पर जून 2013 को मुंबई में, देश भर से रेडियो मिर्ची द्वारा चुने गए 'टॉप फाईव जुगाडू' के तौर पर सम्मानित किया गया।

रीजनल साइंस सेंटर, भोपाल में प्रतिवर्ष 'विश्व संग्रहालय दिवस', 18 अप्रैल पर 'मेरा अपना संग्रह प्रदर्शनी आयोजित की जाती है। इसमें सहभागिता के साथ साथ केंद्र के मुख्य द्वार पर स्थापित 'मेरा अनोखा संग्रह डिस्प्ले कैबिनेट में मेरे बनाए एयरक्राफ्ट कैरियर शिप, आर्मी, एयरफोर्स एवं अंतरिक्ष विज्ञान संबंधित मॉडल्स को अनेक वर्षों से प्रदर्शित हैं।

रीजनल साइंस सेंटर, वर्ली, मुंबई द्वारा अप्रैल 2018 में विश्व संग्रहालय दिवस पर आयोजित प्रदर्शनी में भी सहभागिता कर भोपाल का प्रतिनिधित्व किया। सेंट विंसेंट पलोट्टी कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टैक्नोलॉजी, नागपुर में आयोजित टेक फेस्ट 2018 में प्रदर्शित।

यूनिवर्सल रिकॉर्डस फोरम, कोलकाता द्वारा आयोजित रिकार्डस् फेस्टीवल में, 'टॉप टैलेंट'से सम्मानित।

दूरदर्शन, भोपाल द्वारा वर्ष 1998 तथा 22.10. 2015 को आधा घंटे का विशेष स्टूडियो लाईव कार्यक्रम प्रसारित किया गया।

**बंसल न्यूज, ई-टीवी, इंडिया न्यूज, आईबीसी**-24 एवं आदि अनेक टेलीविजन समाचार चैनल्स द्वारा इस अभिनव कला पर कार्यक्रम टेलीकास्ट किए हैं। हाल ही में पत्रिका डिजिटल द्वारा भी एक विस्तृत वीडियो रिपोर्ट प्रसारित की गई।

पहली बार लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड मिलने पर रेडियो मिर्ची भोपाल द्वारा स्टूडियो में आमंत्रित कर इंटरव्यू प्रसारित किया गया। एसबीएस रेडियो, मेलबोर्न, आस्ट्रेलिया द्वारा लाईव टेलीफोनिक साक्षात्कार भी प्रसारित किया गया।

**कुछ उल्लेखनीय उपलब्धियों निम्नानुसार हैं :-**

'लिमका बुक ऑफ रिकार्डस' नेशनल रिकार्ड 2014, 2018 एवं 2021 , इंडिया बुक ऑफ रिकार्ड्स- 2013 में 'टॉप 100 टेलेंट ऑफ इंडिया' (क्रियेटिविटी), एवरेस्ट वर्ल्ड रिकार्ड। नेपाल वर्ष 2016 'उत्तर प्रदेश बुक ऑफ रिकार्डस' – 2016, ' इंडिया स्टार बुक ऑफ रिकार्डस' – 2015, 'वंडर बुक ऑफ रिकार्डस' – 2017, 'तेलगू बुक ऑफ रिकार्डस' द्वारा विशेष सम्मान पत्र – 2015, 'वर्ल्ड रिकॉर्ड्स इंडिया' – 2018

उनका यह जीवन मंत्र है कि, जिंदगी की भागदौड़ के बीच अपने शौक के लिए भी कुछ समय अवश्य निकालें और उसे आखिरी सांस तक जिंदा रखें।

■

धरोहर के संग्राहक

# माचिस मैन ऑफ भोपाल

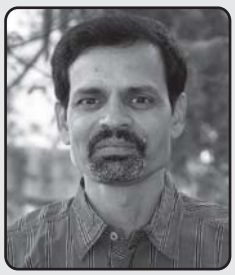

सुनील कुमार भट्ट

नाम: सुनील कुमार भट्ट
जन्मतिथि: 27 सितंबर 1968
पिता का नाम: श्री लक्ष्मीदत्त भट्ट
पता: ए-58, तुलसी परिसर, फेस-1, अवधपुरी, भेल भोपाल (म.प्र.)
मोबाईल/ईमेल 9425660310, ईमेल- sunilbhattkumar@gmail.com
व्यवसाय: बीएचईएल भोपाल में सब एडीशनल इंजीनियर पद पर कार्यरत।
शौक/अभिरुचि: माचिस संग्रह करना।

**माचिस का इतिहास:**

डाक टिकिटों की तरह माचिसें भी देश की कला संस्कृति, परिवेश और इतिहास को प्रदर्शित करती हैं। आदि मानव ने पत्थरों की रगड़ से आग जलाने का आविष्कार संयोग से किया था। वैसे ही माचिस का आविष्कार भी संयोग ही था। 18वी सदी में इंग्लैंड निवासी सर जॉन वाल्कर एक रासायनिक द्रव्यों के व्यापारी थे। एक बार उन्हें विशेष मिश्रण का आर्डर मिला जिसे उन्होंने एंटीमनी सल्फाईड को पोटेशियम द्रव में मिलाकर बनाया। दोनों को मिश्रित करने के लिए जिस लकड़ी का इस्तेमाल किया उस पर वह द्रव सूख गया। कुछ दिनों बाद जब वाल्कर ने अंधेरे में उस लकड़ी को यूं ही फेंका तो पत्थर की रगड़ से चिंगारी निकली। तीक्ष्ण बुद्धि वाल्कर ने यह समझ लिया कि यह उसी मिश्रण का कमाल था और इस तरह उसी मिश्रण को छोटी-छोटी तीलियों पर लगाकर माचिस का अविष्कार कर डाला। उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व लाईटर का आविष्कार हो चुका था किंतु सुविधाजनक होने से माचिस आम आदमी की पसंद बन गई।

श्री भट्ट बताते हैं कि, भारत में कभी 3700 माचिस निर्माता कंपनियों थी जो अब गिनी-चुनी रह गई हैं। इंडियन टौबेको कंपनी, और वेस्टर्न इंडिया मैच कंपनी प्रमख थीं जिनका अब संविलयन हो गया है। सबसे पहले 1920-27 के बीच कलकत्ता में माचिस कंपनी की स्थापना हुई इसके पूर्व जापान, ऑस्ट्रेलिया और स्वीडन में बनी माचिसों का भारत में आयात होता था। आजकल. विश्व की 70 प्रतिशत माचिस मदुराई तमिलनाडु के कोबीलपट्टी में बनती हैं और विश्वभर में निर्यात की जाती हैं। माचिस इतिहास के बारे में एक रोचक जानकारी यह है कि शुरुआत में माचिस पर उंट, घोड़ा, शिप आदि के चित्र छापे जाते थे वो इसलिए की ये ही माचिस को एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाने का माध्यम थे। स्वतंत्रता संग्राम से लोगों को जोड़ने के लिए माचिसों का इस्तेमाल हुआ। राजनीतिक दलों ने भी इसे अपने प्रचार का माध्यम बनाया और उनके दल के चुनाव चिन्ह माचिस पर अंकित कर प्रचार के लिए जारी किए गए।

श्री भट्ट विगत 39 वर्षों से माचिस की डिब्बियों का संग्रह कर रहे हैं। जब वे 14 वर्ष के थे तब स्कूल आते-जाते सड़क पर पड़ी माचिस उठा लाते और कॉपी पर चिपका कर दोस्तों को दिखाया करते। उनका शौक देखकर सहपाठी भी उन्हें माचिस से ताश खेलने के बजाए इकट्ठा कर के देने लगे। पारिवारिक सदस्यों और मित्रों से मिली प्रशंसा और प्रोत्साहन से उनका संग्रह बढ़ता गया और उनका शौक अब जुनून बन गया है।

श्री सुनील भट्ट के संग्रह में आज 35000 से अधिक देशी-विदेशी माचिसों का संग्रह है। 128 देशों में प्रचलित 75 अलग-अलग प्रकार की माचिसें जिनका मूल्य आधा आना से लेकर 250 रुपए तक है। लकड़ी, लोहा, प्लास्टिक, अष्टधातु और पीतल से बनी आजादी से पहले से लेकर आज तक की माचिसें उनके संग्रह में हैं। अगर आकार की बात करें तो सबसे छोटी आधा इंच और सबसे बड़ी एक फीट लंबी तीली की माचिस उनके पास है। उन्होंने स्वयं विश्व की सबसे छोटी माचिस बनाई है जिसकी लंबाई-चौड़ाई कमश: 2×3, 10×6 मिलीमीटर है। उनके पास अनेक देशी-विदेशी सेट्स भी हैं जिनमें अष्ट विनायक सेट, स्टैम्प क्वलिटी, सेवन वंडर्स, कई देशों के स्मारक, बर्तन और ईरान में जल संरक्षण पर आधारित सेट्स भी हैं। न केवल माचिस बल्कि उनके संग्रह में माचिस संबंधित सामग्री जैसे कि माचिस के बैग, मास्क, मोबाइल

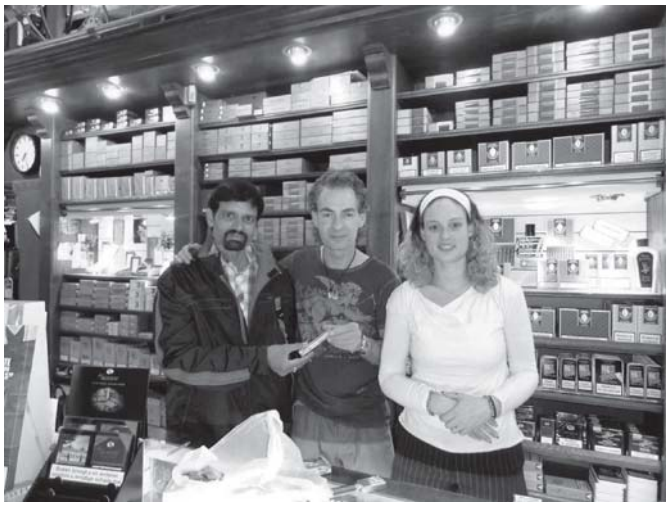

कवर, रिबन सेट्स, पोस्टकार्ड, लेटरहेड, कैलेंडर, कोस्टर, टाई और टी शर्ट आदि भी बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं।

विदेशी माचिसों की विशाल श्रृंखला बना लेने का रहस्य श्री भट्ट बताते हैं कि उन्होंने कोई विदेशी माचिस खरीदी नहीं हैं सिर्फ आदान-प्रदान के माध्यम से प्राप्त की हैं। वे केवल अपने देश में बनी माचिसें खरीदते हैं और उन्हें अपने विदेशी मित्र संग्रहकर्ताओं को भेंट कर बदले में उनके देश की नई जारी माचिसें प्राप्त करते हैं।

श्री सुनील भट्ट के पास कई विषयों पर माचिस संग्रह है जिससे उस कालखण्ड की धर्म संस्कृति और इतिहास का परिचय मिलता है। अखंड भारत, गाँधीजी, चरखा, राष्ट्रीय ध्वज, मुगल बादशाह, द्वितीय विश्वयुद्ध, सभी धर्मों के देवी देवता आदि लगभग 250 विषयों पर माचिस उपलब्ध हैं। माचिस पर समयानुसार उपयोगी संदेश भी छपते रहे हैं जैसे कि, 'बच्चा एक ही अच्छा', 'हम दो हमारे दो' स्वदेशी अपनाओ, बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ, जल है तो कल है, रक्त दान, महादान, एक कदम स्वच्छता की ओर इत्यादि। माचिस विज्ञापन का भी एक वृहद माध्यम रहा है। कई नामी कंपनियों के विज्ञापन माचिसों पर प्रमुखता से देखे जा सकते हैं।

**प्रदर्शनी और सेमिनार:**

श्री सुनील भट्ट ने घर पर ही माचिस का म्यूजियम बनाया है जिसे देखने के लिए देश भर से ही नहीं वरन स्वीडन, फ्रांस, जापान, रूस, नीदरलैंड, अमेरिका, जाम्बिया, न्यूजीलैंड, नेपाल, चीन, जर्मनी आदि से भी लोग आए हैं। मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री स्व. बाबूलाल गौर, विधायक श्रीमती कृष्णा गौर, प्रसिद्ध फिल्मकार श्री राजीव वर्मा आदि उनके संग्रहालय का भ्रमण कर चुके हैं। उन्होंने अपने माचिस संग्रह को विद्यालय, संस्थागत व सार्वजनिक कार्यक्रमों में छोटी-छोटी प्रदर्शनियों के माध्यम से लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया। अब तक वे 103 स्थानों पर संग्रह प्रदर्शित कर चुके हैं जिसमें भारत में 100 के अतिरिक्त स्वीडन, नीदरलैंड और एक आनलाईन प्रदर्शनी बांग्लादेश में भी आयोजित हुई है।

श्री भट्ट संस्थाओं और स्कूलों में प्रदर्शनी और कार्यशाला आयोजित कर बच्चों को माचिस के इतिहास महत्व के संबंध में जानकारी देते हैं जिससे प्रेरित होकर वे भी माचिस संग्रह में रुचि लेने लगते हैं। उनका कहना है कि, संग्रह कोई भी हो यदि जुनून के साथ किया जाए तो आने वाला वक्त आपको एक नई पहचान देता है।

**तीलियों की कलाकृति:**

श्री भट्ट ने इस अनोखे जुनून को आगे बढ़ाते हुए माचिस की तीलियों से भी सुदर कलाकृतियाँ निर्मित की हैं। संग्रहीत डिब्बियों की शेष तीलियों की अधिकतर मात्रा वे समीप के मंदिर में उपयोग हेतु भेंट कर देते हैं। लेकिन, उन्हें कुछ अलग करने के शौक ने तीलियों से थर्मोकोल पर महापुरुषों के रेखांकन का विचार दिया। उन्होंने तीलियों से महात्मा गाँधी, रवींद्रनाथ टैगोर, पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम साहब, मोदी जी, अमिताभ बच्चन जी इत्यादि के पोर्ट्रेट भी बनाए हैं।

इस शौक ने उन्हें महानायक श्री अमिताभ बच्चन से भेंट का अवसर भी प्रदान किया। वर्ष 2016 में कौन बनेगा करोड़पति के सेट पर श्री बच्चन से मुलाकात कर उनके नाम, फिल्मों के नाम, उनके चित्रों पर आधारित माचिस और सबसे छोटी माचिस का प्रस्तुतिकरण दिया। श्री अमिताभ जी ने 'वाह... बहुत नायाब' कहा और ऑटोग्राफ सहित शुभकामनाएं दी जो श्री भट्ट को मिला सबसे बड़ा उपहार है। उत्तर प्रदेश के बालकवि श्री मृगेन्द्र पाण्डेय ने श्री सुनील भट्ट की बायोग्राफी तैयार कर उन्हें भेंट की है।

एक सवाल जो पाठकों के मन में उठ रहा होगा कि उनके माचिस संग्रह को विशाल बनाने में स्वप्रयासों के अतिरिक्त किनका योगदान रहा तो श्री भट्ट ने कहा कि, मेरे संग्रह को बढ़ाने और व्यवस्थित करने में पत्नी श्रीमती तृप्ति भट्ट और दो बेटियों यशिका और आयुषी का विशेष योगदान है। मेरे मित्रों, संस्थान में सहयोगी, अधिकारीगण और देशी-विदेशी संग्राहक मित्रों का भी योगदान अमूल्य है। विशेषकर, सर्वश्री, विनायक जोशी, मुंबई, राजानी जी,

विशाल गर्ग, देवेन कालरा जी, गिन्नी भाई, राकेश भाई, मनोज भाई, अंकित भाई, वेदप्रकाश जी, एचएन गर्ग जी, मनीष सुरती, संजीव जैन, सुभाष अत्रे जी, मन्नान भाई, उत्पल सान्याल जी कोलकाता, संदीप जी, पटनायक जी, चंद्रशेखर नागदीव, सारड़ा जी, शाहखान, अमन खत्री, श्याम भाई और अनिरुद्ध जी इत्यादि। विदेशी मित्रों जैसे हालत्या, शकील भाई, पालवोयेटरयका, रोम ओलसम, विक्टर केसर गुश्रा, मेगयार इस्टवेन, ओम अरीला, जोसेफ करीगेर, गिजवेल, बाबर पीटर, मोजारक पीटर, कंटो, नीकोले वायलो, मैथ्यू लॉयड, स्टीवन स्मिथ इत्यादि।

## माचिस

छोटी डिब्बी है मगर बहुत बड़ा है काम।
अँधियारे डरते सदा, सुनकर इस का नाम।।
माचिस देखो गौर से, उसपर मिलता ज्ञान।
माचिस के ऊपर छपा, कला और विज्ञान।।
मन्दिर में भी मान है, मस्जिद में भी मान।
सब धर्मो में एक है, माचिस का सम्मान।।
हरदम बाँचा कीजिए, माचिस पर संदेश।
हर माचिस पर आपको, मिलता ज्ञान विशेष।।
पलक झपकते कर दिया, अँधियारे का नाश।
इसीलिए माचिस बना, उजियारा का खास।।
धनवानों के पास भी, निर्धन के भी पास।
सस्ता है बाजार में, सालों बारह मास।।
संग्रहकर्ता पूजते, माचिस को दिन-रात।
सोते उठते सोचते, माचिस के ही बात।।
दियासलायी जेब में, बीड़ी भी है साथ।
इक अलाव जलती रहे, कट जाएगी रात।।
है सुनील के पास में, माचिस का भंडार।
गागर में सागर लिए, जाना नभ के पार।।
मचिस से दीपक जले, अँधियारा हो दूर।
द्वार-द्वार बच्चे पढ़े, ध्यान लगा भरपूर।।

**-कुमार चंदन**
कवि, गीतकार, साहित्यकार, बीएचईएल, भोपाल

■

अपने शौक को जुनून की हद तक अपना चुके सुनील भट्ट जी को ढेरों सम्मान मिल चुके हैं और कई रिकार्ड बुक्स में नाम दर्ज करा चुके हैं।

लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड्स- वर्ष 2016 एवं 2021, इंडिया बुक ऑफ रिकार्ड्स- वर्ष 2021, भारत के कोहिनूर, जयपुर- वर्ष 2010, ग्लोबल वर्ल्ड रिकार्ड, नागपुर- वर्ष 2007, यूनीक वर्ल्ड रिकार्ड्स- वर्ष 2013, असिस्ट वर्ल्ड रिकार्डस, पुडुचेरी- वर्ष 2018, तेलगु बुक ऑफ रिकार्ड्स- 2017, यूनिवर्सल रिकॉर्ड्स फोरम, कोलकाता- वर्ष 2015 साथ ही, कई प्रतिष्ठित समाचार पत्र-पत्रिकाओं और न्यूज चैनल्स द्वारा उनके संग्रह को प्रमुखता से प्रकाशित/प्रसारित किया गया है।

धरोहर के संग्राहक

# मेरा जीवन मेरा आदर्श

शशिकान्त लिमये

**नाम**–शशिकान्त लिमये
**पिता**–स्व श्री वासुदेव राव लिमये
**जन्म स्थान**– ग्वालियर जन्मतिथि, 6 अगस्त 1957
**सम्प्रति**– 105 डी. के. हनी होम्स कोलार रोड नयापुरा भोपाल–462.042 (म.प्र.)
**मेरी धरोहर :**– मेरे कर्म. आचार विचार एवं वह मित्र जिन्होने मुझे आगे बढने का अवसर दिया साथ ही विविध आयामों से जोड़ने का नित नया अवसर प्रदान किया। शिक्षा– एम. ए. (अर्थशास्त्र समाज शास्त्र मध्यकालीन इतिहास एवं पुरातत्व तथा भारतीय संस्कृति) पत्रकारिता संस्कृत और प्रबंधन मे पत्रोपाधि...
**कार्य**– शासकीय सेवा (केन्द्रीय सिविल सेवा) के अन्तर्गत वरिष्ठ वित्त अधिकारी केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग भोपाल से सेवानिवृत दिनांक 31.8.2017 विविध कार्य स्वतंत्र शोधकर्ता, चिन्तक एवं विचारक रंगमंच की सभी विधाओं में सहभागिता शोधकार्य– सूर्य मंदिर और उसकी अवधारणा
'मराठी साहित्य में विक्रमादित्य''
'प्राचीन भारतीय रंगमंच एवं परम्परायें''
**लेखन**– 29 से अधिक नाटकों का लेखन मराठी हिन्दी में लेखन और पत्रिका सम्पादन,
**प्रकाशित पुस्तकें**– हिरोइन के बंगले में (नाटक) बंवडर (नाटक) सातवां कौन ? (नाटक) पेशवा साम्राज्य के तीन शतक (शोध साहित्य संकलन) स्वप्न स्वराज्य का (शोध आलेख).
**मेरा संग्रह**– 10,000 के करीब पुस्तको का संग्रह जिसमे कुछ पुस्तके –50 वर्ष से अधिक पुरानी है। कुछ सिक्के ,मराठी चन्दोबा के कुछ अंश संकलन रामायण, बुद्ध चरित्र आदि
**रंगमंच से जुड़ाव**– 25 से अधिक नाटको का मंचन, अभिनय एवं सहभागिता विद्यालय के लिये युवा संसद का आयोजन, रंग कर्म कार्यशालाओं का आयोजन।
**संस्था**–संस्था सारांश रंग शिविर की स्थापना एवं उसके अन्तर्गत, 600 से अधिक कार्यक्रमो का आयोजन –नाटक, काव्य गोष्ठीयाँ शोध संगोष्ठी, इतिहास पुरातत्व पर कार्यशालायें तथा ज्ञान धारा कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न विषयो पर परिचर्चा।

मध्यप्रदेश एवं देश की विभिन्न 25 से अधिक संस्थाओं की सदस्यता उनके कार्यो में सहभागिता प्रमुख संस्थायें– शान्ति विकास एवं सॉस्कृतिक एकता परिषद, महाराष्ट्र मण्डल कोलार भोपाल म.प्र., चित पावन संघ, करवट कला परिषद प्रभात साहित्य परिषद मराठी अकादमी आदि। आरोही भोपाल एवं आपेरा क्लब भोपाल की स्थापना।

फिल्म नाट्क निर्देशक जिनके साथ कार्य किया –श्रीशंकर सोनाने, स्व. यदुराज सिंह, श्रीमती सुधा पारणकर श्री विष्णु श्रीवास्तव, श्री बासु भट्टाचार्य, विजय दिण्डोरकर, राजेश राठी, आदि के साथ सहभागिता और अभिनय किया।

चलित वार्ता 09425637348 एवं 08989271238
मेल– saranshsahashi@gmail.com, shashilimaye.06@gmail.com

अपने बारे में कुछ लिखना अर्थात अपने मुँह मिया मिट्ठू बनना है। फिर भी कहता हूँ –

यह दिल अब भी खाली नहीं है, दुनियाँ के कमालो से, कोई पैदा तो करले देखने वाली नजर पहले। ऐसा ही सजल... सटीक और दूसरों की प्रेरणाओं से रोशन जीवन जीने का आनंद प्राप्त करने का संयोग मुझे प्राप्त हुआ।

समय और कालखण्ड के अनुसार मेरी जिज्ञासायें आवश्यकतायें और जिम्मेदारियों का दायित्व बढ़ता और घटता गया। बचपन अभावों में, जवानी रोजी रोटी की जुगाड़ में एवं अवसाद का समय अध्यात्म और चिंतन में गुजर गया, परन्तु बहुत कुछ प्राप्त कर लिया जिसे संजोकर रखा है बहुत कुछ प्राप्त करना है जिसे अपने अगले जन्म के लिये रखना है क्योंकि तमन्ना है कि जियूं तो हजार साल तक कम से कम लोगों के दिलों पर राज करूं। परन्तु कितना सफल हो पाऊंगा इसका पता नहीं है यह वक्त की नजाकत ही तय कर पायेंगी।

मेरा बचपन बड़े अभावों में बीता ... जिसके कारण जैसे–तैसे शिक्षा ग्रहण कर सकता था प्राप्त कर ली एवं तार्किक योग्यता के बल पर रोजी रोटी के

लिये शासकीय सेवा प्राप्त कर अपना और अपने परिवार का जीवन यापन सुचारू रूप से चलाने में समर्थ रहा और अपने परिवार की जिम्मेदारियों से भी मुक्त हो गया। जीवन पथ पर अनेक संकटों का सामना करना पड़ा जिसका अहसास कुछ यूँ हुआ कि ....

**टूटी हुई मुंडेर पर रौशन है इक चिराग।**
**तूफान से कह रहा है कि जालिम मुझको बुझा के देख।**

इन संकटों के बीच अपने आदर्शों पर अटल रहना मुझे मेरे माता-पिता और गुरुजनों से प्राप्त हुआ। जुनून और शौक का नशा बड़ा ही विषम है। जिसके आगे मदिरा का सेवन भी तुच्छ होगा। क्योंकि मदिरा पीने से क्षणिक सुख का अहसास होगा परन्तु अपने द्वारा कुछ कर गुजरने की इच्छाशक्ति से प्राप्त आनंद चिर स्थायी और लम्बे समय तक सुख देने वाला होता है। मैं दुनिया से बारंबार यही कहूंगा कि ....

**जमीं पर पड़े मेरे कदमों के निशान तुम्हें पल पल रिझाते रहेंगे।**
**मैं ख्वाब हूँ इस दुनियाँ का जो तुम्हें रूठ कर मनाते रहेंगे।।**

जब रोजी रोटी की जुगाड़ हो गयी, तो दिल मचलने लगा, उसे पंख लग गये कि चलो अपने अरमानों की दुनिया में रैन बसेरा किया जाये। मेरा परिवार केवल नौन तेल लकड़ी की जुगाड़ तक ही सीमित नहीं था। वह विविध क्षेत्रों में अपनी छवि निखारने के लिए लालायित था। मेरी बचपन में सितारों से दोस्ती थी, मुझे छत पर बैठकर उन्हें निहारना अच्छा लगता था। उन मनोहर रातों में कभी चांद बादलों के बीच चलता देख मेरा मन कल्पनाओं की उड़ाने लेकर हिचकौले खाने लगता। परन्तु सभी चीजे हासिल कर लेना हर किसी के बस की बात नहीं, यही जीवन है। जो पाया वह संजोता गया। जो खोया उसे खोजने का प्रयास किया।

मेरी जीवन के उतार चढ़ाव के इस सफर ने मुझे जितने भी साथी मिले वह कुछ ना कुछ अवश्य दे गये। जिनके कारण मैं जहां भी जैसा भी मुकाम हासिल कर पाया वह है तो बहुत छोटा पर उसकी गहराई समुद्र से गहरी है और ऊँचाई आसमान से भी ऊपर। माता पिता के संस्कार ऐसे रहे। जिसके कारण गलत व्यसनों का ब्यासंग नहीं मिला जहां गलत दिशा मिल रही थी वही संस्कारों ने कदमों की मंजिल को रोक दिया। कुछ समय के लिये वह सब अर्थहीन लगा परन्तु आज सोचता हूँ तो लगता है ठीक ही हुआ। मेरा जुड़ाव सदैव नितनयी जानकारी जुटाने और उन पर चिन्तन कर खोज करने की रही। इसके लिये मैंने लेखन का सहारा लिया। मुझे भाषा ज्ञान अल्प था परन्तु साहित्यकारों की संगत और उनकी समालोचना ने शब्दों की गहराई तक जाने का मार्ग प्रशस्त किया। जिसके कारण साहित्य के क्षेत्र में अपना स्थान बनाने के लिये सहायता मिली। वरिष्ठ साहित्यकारों का प्रोत्साहन और मार्गदर्शन भी प्राप्त होने से लेखनी में निरंतरता बनाने में सहायक रहे।

मेरे बचपन में गणित, विज्ञान और खगोलशास्त्र तथा ज्योतिष का घर में वर्चस्व था क्योंकि इन विषयों पर मेरे पिता का अध्ययन था साथ ही उनकी खोज करने की जिजीविषा का मुझे मार्गदर्शन भी मिला, उनकी इस परम्परा का प्रभाव इतना था कि खगोलीय पिण्डो और ज्योतिष्य के अध्ययन में मेरी रूचि बढ़ गई। बचपन में मुझे पिता के साथ इतिहास का छत्र विरासत में मिला क्योंकि परिवार में छत्रपति शिवाजी से रानी लक्ष्मीबाई की चर्चा आम होती थी। साथ ही ग्वालियर क्षेत्र के प्राचीन वास्तु का कौतुहल भी मेरे लिये अध्ययन का कारण बना। यही कारण है कि मैंने इतिहास के साथ पुरातत्व की थोड़ी बहुत जानकारी अपने मनोमस्तिष्क पर उतार ली।

डॉ. नारायण व्यास ने मेरी इस योग्यता में और रूचि में निखार लाने का कार्य किया। सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में मेरी रूचियाँ और विश्लेषण को प्रेरित करने में डॉ. महावीर प्रसाद मोदी का बड़ा योगदान रहा है जिनके सानिध्य में रहकर किसी भी विषय पर धाराप्रवाह बात करने की और मंचीय शालीनता की गहराईयों का ज्ञान प्राप्त हुआ।

मेरी विरासत में मुझे कई क्षेत्रों में कार्य करने का अवसर मिला। सेवाकाल में मुझे कई पुरस्कार मिले जो भाषा के क्षेत्र में थे। यह वह प्रेरक अस्य थे जिन्होंने मुझे हर क्षेत्र में निरंतर कार्य करने की प्रेरणा मिली। मेरे जीवन में प्रेरणादायी मंत्रों का कुछ संकलन इस प्रकार है।

डॉ. हुकुपाल सिंह 'विकल' के शब्दों में कुछ भी लिखो पर उस पर निरंतर मेहनत करने के बाद प्रस्तुत करो। डॉ. शिव कुमार अवस्थी – परीक्षा का फार्म तो भरो पढ़ाई अपने आप शुरू हो जायेगी। यदुराज सिंह मच पर खड़े रहो

संवाद की गहराई इतनी हो जो अभिनय को उत्पन्न करवाने जिसके लिये निरंतर अभ्यास करो। जीवन को आईने की छवि में देख कर शुरू करो। स्व. सुधा पाटणकर कोई भी काम असंभव नहीं प्रयास करो। सफलता कदम अवश्य चूमेगी। इनके अलावा भी जीवन में ऐसे प्रेरणादायी प्रसंग के साथ कई वाकये हुए जिनका प्रभाव मेरी कार्यशैली और चरित्र पर हुआ। अंत में यही कहूंगा कि राष्ट्र से प्रेम करे, कभी हार न माने अवसरवादी प्रकृति से सावधान रहकर अपनी गतिशीलता कायम रखे। कला समय का मैं आभारी हूँ जिसमें मुझे अपने बारे में लिखने का अवसर प्राप्त हुआ।

## आदमी सड़क का

## फकीरी

ना रही चिन्ता, रही ना अब कोई फिकर
मैं आदमी सड़क का सड़क पर आ गया।
मकान भी बेमानी लगने लगा, घर भी परेशान करने लगा।
ऐसी नादानी ने, मुझे रूखसत इस तरह किया
कि मैं आदमी सड़क का सड़क पर आ गया।
फकीर हूँ दुरुस्त सा, इन्सान हूँ तंदुरुस्त सा
नगमा हूँ किसी शायर का मोती हूँ किसी की आँख का।
बहका हूँ बहक गया हूँ
इरादा हैअब जीवन की धार में बहने का
इसलिये मैं आदमी सड़क का सड़क पर आ गया।
बहकते कदम रुक गये, अदा भी खामोश हो गयी
सन्नाटों की सांय सांय में हवा का रुख बदल गया
मैं आदमी सड़क का सड़क पर आ गया।
मिजाज में गुरूर था, आंखों में चमक थी।
खामोश सी अदाये, सुन्दर सी चितवन थी
कदम बहके थे, समय में बदलाव आया गया
मैं आदमी सड़क का सड़क पर आ गया।
जिस्म के चीथड़े फट पड़े सड़क भी उसे बेकरार थी निगलने
गरीबी, मुफलिसी, बेकारी ने भी दामन छुड़ा लिया
मैं आदमी सड़क का सड़क पर आ गया।
सितारों की जगमगाहट में यह चुभती सी रोशनी
अंधेरी तंग गलियों में चिंता की रेखायें खिंच गयी
पेट तो भूखा था, जिस्म भी अब नंगा हो चला था।
मैं आदमी सड़क का सड़क पर आ गया।
निशान गरीबी के, जिन्दगी के थपेड़ों में
खामोश जुबान भी ताक रही अब रोटी के टुकड़े।
जिन्दगी पर मुफलिसी का दाग अब स्याह हो गया
मैं आदमी सड़क का सड़क पर आ गया।
खामोश जिन्दगी का ढर्रा चल गया था।
भूख बेबसी लाचारी से दामन छुड़ा न सका था।
जिन्दगी की खूबसूरत गलती क अहसास हो गया।
मैं आदमी सड़क का, सड़क पर आ गया।
नसीब इंसान का, सड़क किनारे आ गया।
खामोश जिन्दगी के बिछड़ने का समय आ गया
शरीर का सहारा भी अब नकार कर गया था।
मैं आदमी सड़क का, सड़क पर आ गया।

## दरार

मेरे पैरो में पड़ी दरार, मेरी पत्नी को बहुत भा गयी है।
रिश्तों में पड़ी दरार को कमजोर बना गई है।
दिन में सूरज सी तपन
रात में चांदनी सी जगमगाहट
सेवा में न रखती कोई कसर
हर समय चेहरे पर मुस्कुराहट
कह रही है मेरी दरार को
जल्दी ना ठीक होना बहना
नहीं तो शुरू हो जायेगा
मेरा कहना और बिछड़ना
कितने दिनों की आरजू को
तुमने पूरा कर दिखाया है।
मेरे पति को आज तूने
घर में ही बसाया है।
ऐसी दरार पर करता है, मेरा दिल भी ऐतबार
जो रिश्तो में पड़ी दरार को
करती है दर किनार।
रंगीनियां जो इस दरार ने, मेरे घर में जो लाई है।
मेरे पति की वह चिड़चिड़ी
अदाये भी आज मुझे भाई है।
जानती हूँ उनके दिल का दर्द
जो इस दरार ने दे दिया है, पर सुकून है मुझे इसमें
कि घर में उनकी आवाज ही है।
अर्थों से ना नवाजा है, मैंने इनके प्यार को।
दिल से उन्हें चाहा है, जुदा कर पैरों की दरार को।
घर में बैठा है दिलबर, जिसके हाथों को मैंने थामा है।
मेरी रुसवाईयों ने अब, उन्हें करीब से पहचाना है।
दिलबर की रुसवाईयों ने, भी मुझे पहचान ही लिया है।
दरार जो जुदा कर रही थी
उसने ही मेरा घर संवारा है।
पहचान जिन्दगी की अब कदम चूम रही थी
पैरों में पड़ी दराए भी अब ठीक होने लगी थी
पत्नी को यह डर था
कि मैं बेवफा तो नहीं।
इन्तहां की राह गुजर गई
तो जिन्दगी खुश गंवार हो गई।

सम्पर्क : स्वतंत्र शोधकर्ता, सारांश रंग शिविर
105, डी.के. हनी होम्स, कोलार रोड, भोपाल, म.प्र.
मो.: 9425637348

■

# मेरा 20 वर्षों का संग्रह

अरूण कुमार सक्सेना

मेरा जन्म मध्यप्रदेश के रायसेन जिले के ओबेदुल्लागंज में। 9 सितम्बर 1960 को हुआ है। मैं वर्ष 1980 में भोपाल आ गया था। वर्तमान में मैं लोक शिक्षण संचालनालय, भोपाल में कार्यरत हूं।

मेरे पिताजी के समय से चलने वाले पुराने सिक्के घर पर रखे थे, उनको मैंने भी सम्भाल कर रखना शुरू किया।

मेरे पास सबसे पुराना सिक्का वर्ष 1904, 1907 एवं 1940 का आने का 75वां भाग का है। सन् 1927 से 1947 तक का आना, एक पैसा (छेद वाला), नया पैसा, रूपये का 100वां भाग के वर्ष 1957 से 1964 तक के 55 सिक्के है, मेरे पास वर्ष 1944 से 1968 तक का रूपये का 50वां भाग (दो नया पैसा) के 10 सिक्के हैं। इसके अलावा मेरे पास वर्ष 1943, 1945 एवं 1947 के छेद वाले सिक्के, वर्ष 196। से 1990 तक के 10 और 5 रूपये के 20 सिक्के, वर्ष 1969 से 1972 तक के बीस पैसे (पीले) कुल 2। सिक्के हैं। मेरे पास ग्वालियर होलकर सरकार के समय के सिक्के भी मौजूद हैं। मैं समाचार पत्र में प्रकाशित संग्रह की खबरों को निरंतर पढ़ता रहता था, तभी से मेरे मन में भी विचार आया कि मुझे इनका संग्रह करना चाहिए। मैं इन सिक्कों को खर्च करने के बजाय इकट्ठा करने लगा। सिक्के इकट्ठा करते हुए मुझे लगभग बीस वर्ष हो गए।

दुर्लभ सिक्कों को व्यवस्थित संग्रहित करने की शुरूआत वर्ष 2014 से हुई, इसी वर्ष मैं श्री नारायण व्यास जी के सम्पर्क में आया। उन्होंने दिसम्बर 2014 मैं मुझे पुरात्तव संग्रह्मलय में मुद्रा संग्रहण की कार्यशाला में

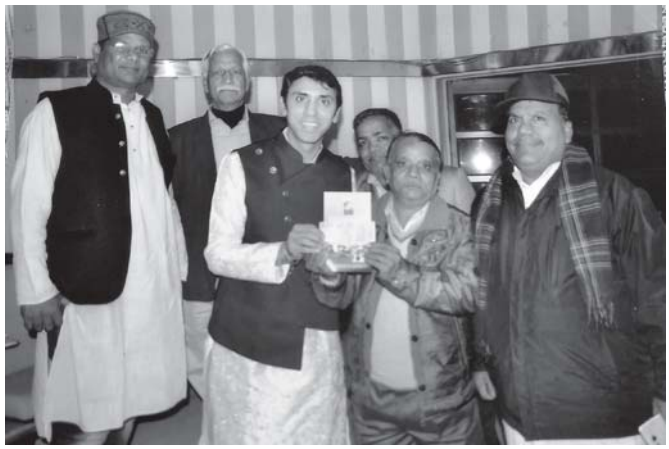

भाग लेने का आमंत्रण दिया। वहां विशेषज्ञों से मुझे मुद्रा संग्रहण की अदभुत एवं ज्ञानवर्धक जानकारियां प्राप्त हुई, जिनसे मुझे काफी लाभ मिला। वहां मुझे मध्यप्रदेश के विभिन्न जिलों से आए संग्रहकर्ताओं से मिलने का अवसर भी मिला और उनसे मुझे बहुत प्रेरणा मिली। तभी से मैं मेरे संग्रह के प्रति और भी जागरूक हुआ इस कार्य को बढ़ाने में मेरे परिवार के सदस्य, मित्र एवं सहकर्मी मेरा भरपूर सहयोग करते हैं। वे समय-समय पर मुझे दुर्लभ सिक्के ला कर देते है, जिनमें विदेशों के सिक्के भी होते हैं, जैसे :- इंग्लैण्ड, जापान, अमरीका, मॉरिशस, मलेशिया, यूरोप, इण्डोनेशिया, सिंगापुर, नेपाल, कनाडा, दुबई, पाकिस्तान, बांग्लादेश, थाईलैण्ड, इत्यादि। इन्ही सिक्कों को में अपने संग्रह में जोड़ लेता हूं।

सिक्कों के संग्रह के साथ-साथ मैं विगत पांच वर्षों से भारतीय डाक टिकटों का भी संग्रह कर रहा हूं। मेरे संग्रह में 25 पैसे से लेकर 50 रूपये तक के 500 डाक टिकट हैं। जिनमें प्रधान डाक घर के, फिल्म अभिनेता, फिल्म अभिनेत्री, संगीत निर्देशक, गीतकार, कवि, पटकथा लेखक, फिल्म निर्देशक, फिल्म गायक, फिल्म गायिका, फिल्म छायाकार, संगीतकार, फिल्म निर्माता, वाद्य यंत्र वादक, खिलाड़ियों एवं महापुरुषों तथा भगवान के नाम पर भारत सरकार द्वारा जारी किए गए डाक टिकट हैं।

वर्ष 2014 से आंचलिक विज्ञान केंद्र भोपाल के सहयोग से प्रति वर्ष संग्रहालय दिवस का अवसर पर मुझे और मेरे सह-संग्रहकर्ताओं को अपने-अपने संग्रह को प्रदर्शित करने का अवसर निरंतर प्राप्त हो रहा है। 2017 में माधव सप्रे संग्रहालय के द्वारा मुझे और मेरे सह-संग्रहकर्ताओं को संग्रहालय दिवस के अवसर पर प्रदर्शनी के लिए आंमत्रित किया गया था एवं संग्रहालय के अधिकारियों द्वारा सम्मानित भी किया गया था। साथ ही इसके अलावा 26 जनवरी 2018 को लोक शिक्षण संचालनालय में गणतंत्र दिवस के अवसर पर सिक्कों एवं डाक टिकटों की प्रदर्शनी लगाई, कार्यालय

के अधिकारी और कर्मचारियों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया इसके पश्चात सम्मानित किया। 18-05-2018 से 20-05-2018 में नेहरू विज्ञान केंद्र वर्ली, मुंबई मैं भी अपने संग्रह को प्रदर्शित करने के पश्चात समापन समारोह के अवसर पर मुझे प्रमाण पत्र और स्मृति चिन्ह से सम्मानित किया। विभिन्न स्थानों पर संग्रह को प्रदर्शित करने का मेरा अनुभव बहुत ही अच्छा रहा है। वहां हर वर्ग के लोगों से मिलने का मौका मिलता है। प्रदर्शनी में छोटे बच्चों से लेकर अनुभवी एवं जानकार लोग भी आते हैं। वे संग्रह को बहुत बारीकी से देखते हैं एवं उससे जुड़े प्रश्न पूछते हैं। लोगों की जिज्ञासाओं को शांत करना एवं उनके प्रश्नों का उत्तर सही तरीके से देना अपने आप मैं एक चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। संग्रह के प्रति उनकी रूचि को देखकर मुझे बहुत प्रोत्साहन मिलता है एवं उनके सुझावों से मैं अपने संग्रह को और बेहतर बनाने का प्रयास करता रहता हूं।

मेरा उद्देश्य यह है कि सेवानिवृत्त होने के बाद मैं अपने सिक्कों एवं डाक टिकट के संग्रह का और विस्तार करने का प्रयास करूंगा। मेरा सदैव यह प्रयास रहता है कि मैं अपने संग्रह से जुड़ी जानकारियां सभी तक पहुंचा सकूं। मेरा विचार है कि भावी पीढ़ी से अपने संग्रह से जुड़ी जानकारियां साझा करूं इसके लिए मैं स्कूलों में प्रदर्शनी लगाने के लिए प्रयासरत रहूंगा।

**सिक्कों का संग्रह**

पता- बृज विहार कालोनी - निवासी अरूण कुमार सक्सेना, कार्यालय, लोक शिक्षण संचालनालय म.प्र. भोपाल में कार्यरत के पास सिक्कों का कलेक्शन है।

1. महाराज होलकर सरकार 1944, 2. ईस्ट इन्डिया कम्पनी, 3. एक आना 1927, 1943, 1944, 1947, आने का 75 वॉ भाग - 1904, 1907, आधा पैसा 1/2 1939, 4. एक पैसा छेद वाला - 1945, 1947, 5. एक पैसे तॉबे का 1957 के 12 सिक्के, 1959 के 03, 1960 के 03, 1961 के 05, 1962 के 07, 1963 के 13, 1964 के 11, 6. दो नये पैसे 1957 के

01, 1962 के 02, 1963 के 03, 7. दस पैसे - गोल सिक्का- 1988 - 04, 1989 के 01, 8. दस पैसे वजनदार वाले 1957 के 01, 1959 के 02, 1962 के 01, 1965 के 01, 1968 के 01, 1969 के 01, 1971 के 02, 9. बीस पैसे का (गोल सिक्का) पीला कमल का फूल के, 1969 के 07, 1970 के

08, 1971 के 02, 10. बीस का पीला गोल सिक्का महात्मा गॉधी के 1969, 1948 के 02, 11. पॉच के सिक्के (तॉबे के) 1967, 1974, 1980, 1990, पाँच का वजनदार सिक्का 1961

**भारत के प्रधान डाक घर-**

डाक घर भारत-स्लोवेनिया-संयुक्त डाक टिकट-2008, कूचविहार प्रधान डाक घर-2010, उदगमंडलम् प्रधान डाक घर-2010, शिमला जी.पीओ-2010, नागपुर जी.पी,ओ-2010, दिल्ली जी.पी. ओ-2010, हवाई डाक के 100 वर्ष-2011, मुंबई जी.पी.ओ-2013, आगरा एच.पी.ओ-2013

**मनोरंजन जगत पर जारी डाक टिकट-**

**फिल्म अभिनेता**- राजेश खन्ना-2013, एस. वी. रंगाराव-2013, संजीव कुमार-2013, अल्लू रामलिंगयया-2013, शम्मी कपूर-2013, मोतीलाल-2013, बलराज साहनी-2013, अशोक कुमार-2013, देव आनंद-2013, पृथ्वीराज कपूर-2013, सोहराब मोदी-2013, राजेन्द्र कुमार-2013, महमूद-2013, नागेश-2013, टी. आर. सुन्दरम-2013, उत्पल दत्त-2013

**फिल्म अभिनेत्री**- देविका रानी-2011, नूतन-2011, कानन देवी-2011, सवित्री-2011, दुर्गा खोटे-2013, रूबी मायर्स-2013, स्मिता पाटिल-2013, सुरैया-2013, भानुमती-2013

**संगीत निर्देशक**- मदन मोहन-2013, नौशाद-2013

**गीतकार**- शैलेन्द्र-2013

**कवि**- शकील बदायूंनी-2013, मजरुह सुल्तानपुरी-2013, सलिल चौधरी-2013

**पटकथा लेखक** - सी. वी. श्रीधर-2013

**फिल्म निर्देशक**- राज खोसला-2013, भालजी पेंढारकर-2013, कमाल अमरोही-2013, तपन सिन्हा-2013, बी. आर. चोपड़ा-2013, हृषिकेश मुखर्जी-2013, यश चोपड़ा-2013, विष्णु वर्धन-2013, नितिन बोस-2013

**गायक** - भूपेन हजारिका-2013, कुमार गंधर्व-2014, भीमसेन

जोशी–2014, मल्लिकार्जुन मंसूर–2014

**गायिका**– गीता दत्त–2013

**फिल्म छायाकार** – अशोक मेहता–2013

**संगीतकार** – बिस्मिल्लाह खाँ, शंकर जयकिशन–2013, रायचंद बोराल–2013, ओ. पी. नय्यर–2013, रवि शंकर–2014, डी. के. पट्टामल– 2014

**फिल्म निर्माता**– ताराचन्द बड़जात्या–2013, बी. एन. सरकार–2013, चेतन आनंद–2013

**वाद्य–यंत्र वादक**– विलायत खान– 2014

**महापुरुषों के नाम जारी डाक टिकट** –

महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरु, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, बाल गंगाधर तिलक, सरदार वल्लभभाई पटेल, डॉ. भी. रा. अम्बेडकर, दीनदयाल उपाध्याय, श्यामा प्रसाद मुखर्जी, भगत सिंह, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, स्वामी विवेकानंद, जयप्रकाश नारायण

■

# संग्रह कार्य में मेरा सहयोग

**श्रीमती उषा सक्सेना**

मेरा जन्म भोपाल में 08नंबम्बर 1956 को हुआ है। मैनें भोपाल विश्वविद्यालय से स्नाकोत्तर की शैक्षणिक योग्यता प्राप्त की एवं लेखा प्रशिक्षण की परीक्षा उत्तीर्ण की। मैं 10 सितम्बर 1982 से 30 नबम्बर 2016 तक आयुक्त आदिवासी विकास, सतपुड़ा भवन, भोपाल में शासकीय सेवा में कार्यरत रही हूं। विभाग द्वारा समय–समय पर मुझे पदोन्नति के अवसर प्राप्त हुए।

मेरे पति लगभग 20 वर्षों से पुराने सिक्कों का अद्भुत संग्रह कर रहे हैं, उनको देख कर मेरी बेटी भी संस्मरण सिक्कों का संग्रह करने लगी। शासकीय सेवा में रहते हुए भी मैंने पति और बेटी को उनके संग्रह–कार्य में सहयोग किया। मैं 30 नवम्बर 2016 को अधीक्षक पद से सेवानिवृत्त हो चुकी हूं। सेवानिवृत्त होने के बाद से ही मैं संग्रह–कार्य में उनका पूर्णत: सहयोग कर रही हूं। उनके इस अद्भुत कार्य को देखकर मुझे भी संग्रह करने की प्रेरणा मिली। तभी से मैं भारतीय नोटों का संग्रह करने लगी। मैं नोटों के नम्बरों को बड़ी बारीकी से देखती थी। तभी से मैं विशेष अंकों के नोटों का संग्रह करने लगी। वर्ष 2014 से निरंतर हम सभी आंचलिक विज्ञान केंद्र, भोपाल में संग्रह को प्रदर्शित कर रहे हैं । मैं व्यक्तिगत रूप से भारतीय नोटों का संग्रह करती हूं, जिसमें मुझे मेरे पति और बेटी का पूरा सहयोग मिलता है।

आज मेरे पास विशेष अंकों के नोट संग्रह में मौजूद हैं। जो इस प्रकार है–

- मेरे संग्रह में 1,2,5,10,20,50,100,200,500 रूपये के 786 अंक वाले 300 नोट हैं।
- मेरे संग्रह में भारतीय वित्त सचिव द्वारा हस्ताक्षर किए एक रूपये के दस नोट हैं।
- मेरे संग्रह में 1,2,5,10,20,50,100,200,500 नोटों के सीरीज और नम्बर के बीच में स्टार अंकित 55 नोट हैं।
- मेरे पास विशेष अंकों वाले नोट हैं जैसे :– 100000, 222222, 166666, 299999, 611111, 404040, 606060, 808080 848484 इत्यादि ।

- मेरे संग्रह में डबल नम्बर के नोट जो इस प्रकार हैं :– 102102, 105105, 159159, 160160, 170170, 180180, 171171, 271271, 301301, 351351, 430430, 436436, 533533, 608608, 703703, 717717, 831831, 845845, 851851, 890890, 998998 इत्यादि
- इसके अतिरिक्त मेरे संग्रह में बड़े से छोटे अंकों वाले नम्बर के नोट 233232, 242121, 266166, 360350, 370369, 393293, 370360, 402401, 449339, 461361, 469468, 667567, 717617, 893892, 916816, 982981, 993893, 995885, इत्यादि ।

मेरे पास 10 रूपये के जन्म दिनांक की तारीख वाले 12580 नोट संग्रह में मौजूद हैं मेरे संग्रह में 10 रूपये के विशेष दिनांक एवं नम्बर की सीरीज वाले नोट मौजूद हैं जो निम्नानुसार हैं :–

1) सी. एम. हेल्पलाइन नम्बर 181
2) निर्वाचन आयोग का निशुल्क नम्बर 1950
3) चंद्रयान2 का अंतरिक्ष कक्षा में प्रवेश करने की दिनांक

22-07-2019

4) जम्मू कश्मीर में धारा 370 एवं आर्टिकल 35ए समाप्त की गई 05-08-2019

5) मध्यप्रदेश प्रथम स्थापना वर्ष की दिनांक का नोट 01-11-1956

6) सिक्किम प्रथम स्थापना वर्ष की दिनांक का नोट 16-05-1975

7) तेलंगाना प्रथम स्थापना वर्ष की दिनांक का नोट 02-06-2014

8) जम्मू कश्मीर को केंद्र शासित प्रदेश बनाने की दिनांक का नोट 31-10-2019

9) दिल्ली विधानसभा चुनाव 2020 की दिनांक का नोट 08-02-2020

10) मध्यप्रदेश उपचुनाव 2020 की दिनांक का नोट 03-11-2020

11) मध्यप्रदेश उपचुनाव के परिणाम 2020 की दिनांक का नोट 10-11-2020

12) मध्यप्रदेश की कुल विधानसभा सीट-230 के नम्बर का नोट

विभिन्न स्थानों पर संग्रह को प्रदर्शित करने का मेरा अनुभव बहुत ही अच्छा रहा है । वहां हर वर्ग के लोगों से मिलने का मौका मिलता है। प्रदर्शनी में छोटे बच्चों से लेकर अनुभवी एवं जानकार लोग भी आते हैं। वे संग्रह को बहुत बारीकी से देखते हैं एवं उससे जुड़े प्रश्न पूछते हैं। लोगों की जिज्ञासाओं को शांत करना एवं उनके प्रश्नों का उत्तर सही तरीके से देना अपने आप मैं एक चुनौतीपूर्णकार्य होता है। संग्रह के प्रति उनकी रूचि को देखकर मुझे बहुत प्रोत्साहन मिलता है एवं उनके सुझावों से मैं अपने संग्रह को और बेहतर बनाने का प्रयास करती रहती हूं।

■

# भरतनाट्यम और मुद्राओं का संग्रह साथ-साथ

रूचि सक्सेना

मेरा जन्म 10 नवम्बर 1994 को भोपाल में हुआ है। मैंने अपनी 12वीं तक की शिक्षा महर्षि विद्या मंदिर, रतनपुर भोपाल से उत्तीर्ण की है। मैनें अपनी स्नातक की शिक्षा सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या महाविद्यालय, भोपाल से ग्रहण की है एवं स्नातकोत्तर की शिक्षा शासकीय गीतांजलि कन्या महाविद्यालय, भोपाल से उत्तीर्ण की है। स्कूल के समय से ही मेरा रुझान पढ़ाई के साथ-साथ नृत्य में भी था। इसलिए मैंने भरतनाट्यम नृत्य की विधिवत शिक्षा ग्रहण करने का निश्चय किया। मेरे इस निर्णय में मेरे माता-पिता ने मेरा पूरा सहयोग किया। मैं विगत चौंदह वर्षों से भरतनाट्यम नृत्य का प्रशिक्षण मध्यप्रदेश शिखर सम्मान से अलंकृत सुप्रसिद्ध नृत्यांगना एवं गुरु श्रीमती डॉ. लता सिंह मुंशी के सानिध्य में प्राप्त कर रही हूं। अपने गुरु के मार्गदर्शन में मैंने देश एवं प्रदेश में अनेक नृत्य प्रस्तुतियां दी हैं। जिनमें प्रमुख एवं उल्लेखनीय प्रस्तुतियां हैं, 'कलामनीषी 2021', 'स्वयं-सिद्धा 2020', खजुराहो नृत्य समारोह-2020', 'प्रयागराज कुंभ- 2019', मध्यप्रदेश संस्कृति विभाग द्वारा आयोजित वार्षिक कार्यक्रम 'लोकरंग' में

2016 एवं 2020 में भी अपनी प्रस्तुति दे चुकी हूं। इसके साथ ही मैंने राजामानसिंह तोमर ग्वालियर विश्वविद्यालय से वर्ष 2016 में भरतनाट्यम में आठ वर्षों का डिप्लोमा (संगीतकला रत्न) प्राप्त किया एवं साथ ही वर्ष 2019 मैं राजा मानसिंह तोमर ग्वालियर विश्वविद्यालय से भरतनाट्यम नृत्य में स्नाकोत्तर की शैक्षिणिक योग्यता भी प्राप्त की है। वर्तमान मैं 'यमन अकादमी ऑफ फाईन आर्ट्स' में कलाकार के रूप में सक्रिय रूप से कार्य कर रही हूं।

शिक्षा एवं नृत्य के अतिरिक्त मैं भारतीय मुद्राओं का संग्रह भी करती हूं। मेरे पिता विगत 20 वर्षों से निरंतर सिक्कों का संग्रह कर रहे हैं और मैं इस कार्य में उनका सहयोग कर रही हूं। उनके इस कार्य को देखकर मेरे मन में भी जिज्ञासा उत्पन्न हुई और मैंने भी सिक्कों का संग्रह करना शुरू कर दिया। मुख्यत: मैं भारतीय संस्मरण (स्मारक) सिक्कों का संग्रह करती हूं। स्मारक सिक्कें ऐसे सिक्के होते हैं जिन्हें किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या

घटना को चिन्हित करने हेतु जारी किया जाता है। ऐसे 25 पैसे से लेकर 10 रूपये तक के लगभग 300 प्रकार के सिक्के मेरे संग्रह में मौजूद हैं।

वर्ष 2014 से आंचलिक विज्ञान केंद्र भोपाल के सहयोग से प्रति वर्ष संग्रहालय दिवस के अवसर पर मुझे और मेरे सह-संग्रहकर्ताओं को अपने- अपने संग्रह को प्रदर्शित करने का अवसर निरंतर प्राप्त हो रहा है।

**पांच रुपये के सिक्के** -

श्री माता वैष्णों देवी श्राईन बोर्ड 25वां वर्ष-सन् 2012, संयुक्त राष्ट्र संघ की 50वीं जयंती-सन् 1995, उत्सवस्त भारत-सन् 1956-2006, 1965 सामरिक अभियान का स्वर्ण जयंती वर्ष वीरता और बलिदान-सन् 2015, राष्ट्रमंडल के 60 वर्ष-सन् 2009, भारत की संसद के 60वर्ष-सन् 1952-2012, कॅयर बोर्ड के 60 वर्ष डायमंड जुबली-सन् 1953-2013, पेररिज्ञर अन्ना जन्मशती-सन् 1809-1969, जवाहर लाल नेहरु जन्मशती-सन् 1989, लालबहादुर शास्त्री जन्मशती-सन् 1904-2004, दाण्डी यात्रा के 75 वर्ष-सन् 1930-2005, संत अलफोन्सा जन्म शताब्दी-सन् 1910-2009, भारतीय रिजर्व बैंक प्लेटिनम जयंती-सन् 1935-2010, सी. सुब्रमणियम जन्म शताब्दी-सन् 1910-2010, मदर टेरेसा जन्मशती-सन् 1910-2010, आचार्य तुलसी जन्मशती-सन् 1914-2013, शहीद भगत सिह जन्मशती-सन् 1907-2007, होमी भाभा जन्मशती वर्ष-सन् 2008-2009, भारतीय नागर विमानन शताब्दी वर्ष-सन् 1911-2011, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद शताब्दी वर्ष-सन् 1911-2011, कोमागाटा मारु स्मरणोत्सव शताब्दी वर्ष-सन् 1914-2014, स्वामी चिन्मयानंद की जन्मशती-सन् 2015, मौलाना अबुल कलाम आजाद 125वीं जयंती-सन् 1888-1958, डा राजेन्द्र प्रसाद 125वीं जयंती-सन् 1884-2009, जवाहरलाल नेहरु की 125वीं जयंती-सन् 1889-2014, डॉ बी. आर. अम्बेडकर की 125वीं जयंती-सन् 2015, स्वामी विवेकानंद 150वीं जयंती-सन् 1863-1902, प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के 150 वर्ष-सन् 1857-2007, कूका आंदोलन के 150 वर्ष-सन् 1857-2007, आयकर भारत निर्माण के 150 वर्ष-सन् 1860-2010, भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक-सन् 1860-2010, मदन मोहन मालवीय की 150वीं जयंती-सन् 1861-2011, रविन्द्र नाथ टेगौर 150वीं जयंती-सन् 1861-2011, इलाहाबाद उच्च न्यायालय का 150वां वार्षिकोत्सव-सन् 1866-2016, 175वाँ जन्मदिवस जमशेदजी नुसीरवानजी टाटा-सन् 1839-2014


# कला समय

**आगामी अंक**
**अप्रैल-मई 2021**

## अरुण तिवारी जी के अमृत महोत्सव पर

**केन्द्रित विशेषांक**

**प्रेरणा समकालीन लेखन के लिए पत्रिका एवं प्रेरणा सीनियर सिटीजन टाइम्स समाचार पत्र के संपादक श्री अरुण तिवारी जी, साहित्यकार/पत्रकार के यशस्वी जीवन के 75 वर्ष पूर्ण होने पर विशेष सामग्री...अवश्य पढ़ें...**

**-संपादक**

धरोहर के संग्राहक

# इतिहास की जानकारी हो यही उद्देश्य है

रामगोपाल ठाकुर

नाम : रामगोपाल ठाकुर
शिक्षा : बी.ए., आई.टी.आई.
केन्द्रीय विद्युत अनुसंधान संस्थान में वरिष्ठ तकनीशियन के पद पर कार्यरत
1. देशभक्त युवा मंडल (समाजसेवी संस्था) (सचिव)
2. अविनाश नगर कल्याण समिति (सचिव)
3. वरिष्ठ नागरिक मंच - अविनाश नगर (संयोजक)
4. समाजसेवी (धर्मजागरण मानस मंडल, अविनाश नगर) (सचिव)

मो. 9425646990
mail: rgthakur62@gmail.com

**संग्रह:-**

1. डाक टिकिट- एक हजार से अधिक
2. सिक्कों का समूह- 960, आजादी के पहले और बाद के/ मुगल साम्राज्य/ विदेशी: अमेरिका, इटली, इंग्लैंड, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया, भूटान, नेपाल, चीन, मलेशिया, साउदी अरब, इजीप्ट, सिंगापुर, जापान, मॉरीशस, केन्या, श्रीलंका, चीन, स्पेन आदि।
3. माचिस : 2000 से अधिक प्रकार की माचिस का संग्रह भी है।

मेरा जन्म नर्मदा तट स्थित ग्राम बिसैर तह. बाड़ी, जिला रायसेन (म.प्र.) में एक कृषक परिवार में सन् 20.06.1962 को हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा दीक्षा गांव के ही मिडिल स्कूल में हुयी।

जो आसपास के गांवों का एकमात्र मिडिल स्कूल था। जो उस समय भोपाल नवाब हमीदुल्ला खां की बनाई कोठी में लगता था। नवाब उस कोठी का उपयोग नर्मदा नदी में शिकार हेतु करते थे। आजादी के बाद उस कोठी में मिडिल स्कूल लगने लगा। विशाल कोठी दो मंजिला थी। जिसमें प्रधानाध्यापक भी उसी में रहते थे। सन् 1971-72 में नर्मदा में भीषण बाढ़ आने के कारण कोठी इस लायक नहीं रही कि स्कूल का संचालन हो, वही एक मात्र स्थान था जहां पर आसपास के चार/पांच गांव के बच्चे पड़ने आते थे। कुछ समय खुले मैदान में आम के बगीचे में ही स्कूल लगा। कई वर्षों तक भवन के अभाव में जहां स्थान मिलता स्कूल लग जाता। परन्तु मन में सपने आगे बढ़ने के थे। आठवीं पास करने के बाद आगे की शिक्षा के लिये निकट संबंधियों के पास 1975 में ओंकारेश्वर पहुंचे वहां पर भी हाई स्कूल नहीं था। अत: वहां से 15-16 कि.मी. पर सनावद जिला खरगौन में प्रवेश लेकर विज्ञान विषय लेकर हायर सेकेन्डरी पास की इन 1975 से 1978 के तीन वर्षों में ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग होने के कारण वर्ष भर तीर्थ यात्रियों का आना जाना होता है। जो भारत के सभी प्रान्तों से आते हैं। अपने साथ

धूम्रपान के लिये माचिस भी लाते हैं। वही रंग-बिरंगी नये नये रंग रूप की माचिसों को एकत्रित करने का विचार आया साथ ही उस समय इंदौर होल्कर, स्टेट के ताँबे के नंदीछाप सिक्के मुझे मिल गये तो वहां से माचिस और सिक्के संग्रह करने का शौक लगा जो आज भी जारी है।

सन् 1978 में जब भोपाल आया तो 1978 से 1981 तक आई.टी.आई. अप्रेन्टीस के दौरान डाक टिकिट संग्रह करने का एक नया शौक लग गया। जब 1985 में केन्द्रीय विद्युत अनुसंधान संस्थान में नौकरी लगी तो सिक्के संग्रह करने के शौक को पुन: बल मिला क्योंकि यहां पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर परीक्षण हेतु/ग्राहक आते रहते हैं।

1985 में प्लाट कमीशनिंग हेतु जो टीम इटली से आयी थी उसने 'लीरा' सिक्कों का सेट दिया श्रीमती कृष्णा गौर जी ने 11 सिक्कों का सेट दिया जब बाबूलाल गौर (मुख्यमंत्री) थे उस दौरान अमेरिका यात्रा से लाये थे। कभी

बस में/ट्रेन में मित्रों से निरन्तर सहयोग का परिणाम की आज हजारों सिक्कों का संग्रह है। जिसमें नोट भी हैं।

आज मेरे संग्रह में आजादी के पहले से लेकर वर्तमान सिक्कों का संग्रह है।

विदेशी सिक्कों की बात हो तो मेरे संग्रह में अमेरिका, जापान, चीन, ब्रिटेन, साउदीअरब, ओमान, सिंगापुर, मलेशिया, कानाडा, मारीशस, युगांडा, श्रीलंका, नेपाल, पाकिस्तान, बंगलादेश, रूस, थाईलैण्ड, इटली, फ्रांस, स्पेन, केन्या, इज्पिट, आस्ट्रेलिया सहित कई देशों की करेंसी सिक्कों और नोटों में उपलब्ध है। भोपाल में कई विद्यालयों और रीजनल साइंस सेंटर में लगातार 2012 से विश्व धरोहर दिवस पर 'माय ओन कलेक्शन' के रूप में सिक्कों/डाक टिकिटों और माचिस का संग्रह प्रदर्शनी लगाकर निरंतर कर रहे हैं। जिससे युवा पीढी को इतिहास की जानकारी हो यही उद्देश्य है। व्यक्ति को जीने के लिये एक अदद शौक होना चाहिये जिससे जिन्दगी रंगों की तरह रंगीन बनी रहे। न कि उपयोग करो और फेको। (Use and Throw)

■

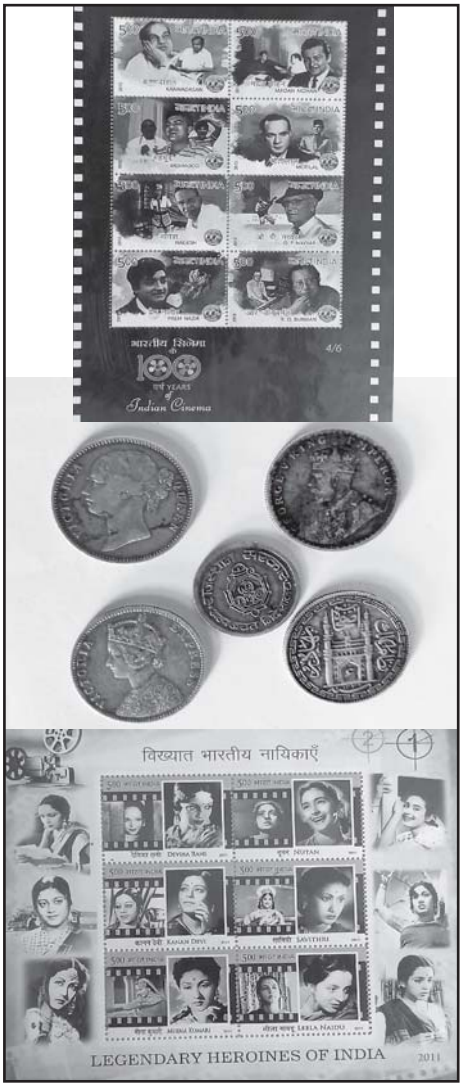

# काष्ठ शिल्पकार कुशवाहा परिवार

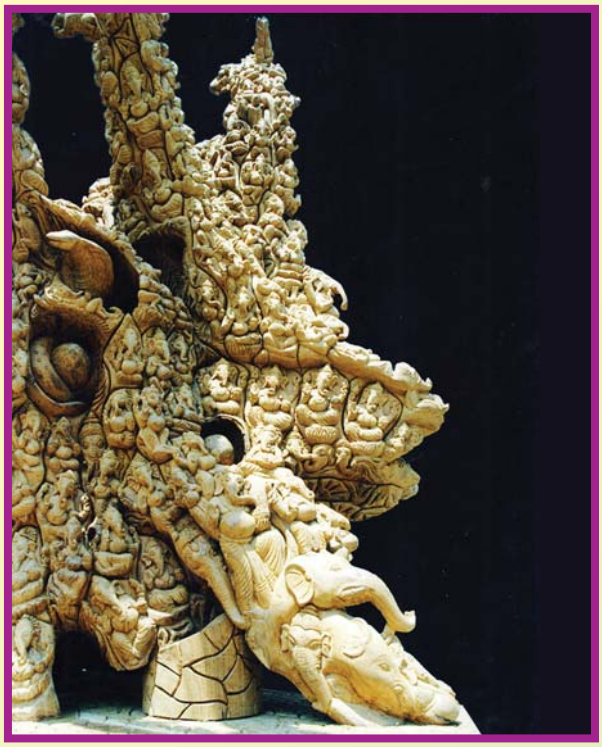

भोपाल- 300 वर्ष पुराने सागौन वृक्ष की जड़। ऊँचाई 188 एवं घेरा 251 से.मी.। विभिन्न मुद्राओं में 521 गणेश प्रतिमाओं का सृजन। कृति लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स 2011, इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स 2012 एवं यूनिक वर्ल्ड रिकॉर्ड्स 2012 में दर्ज।

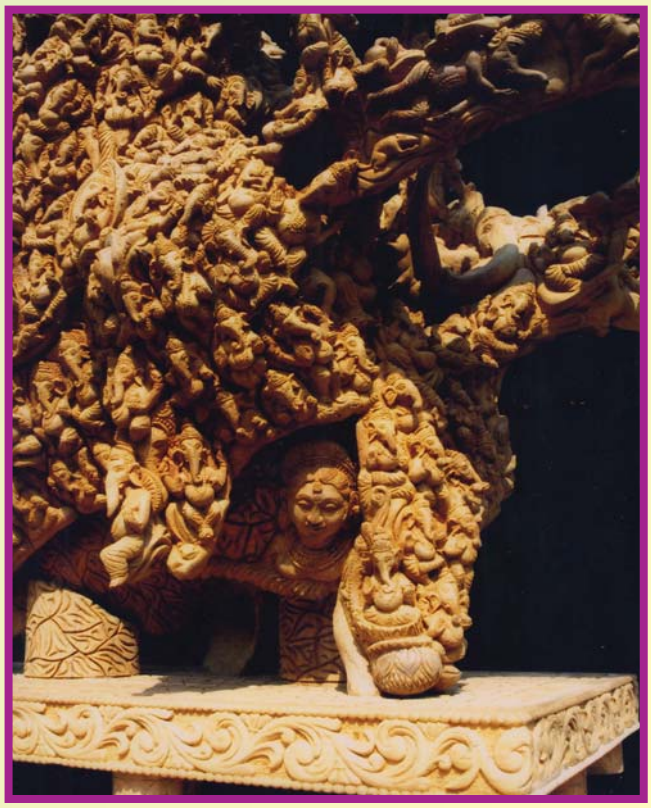

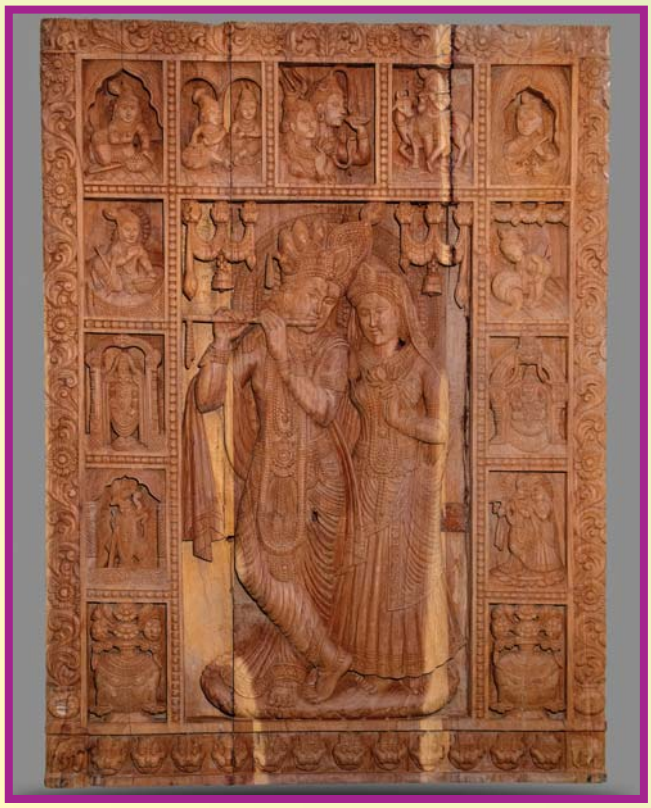

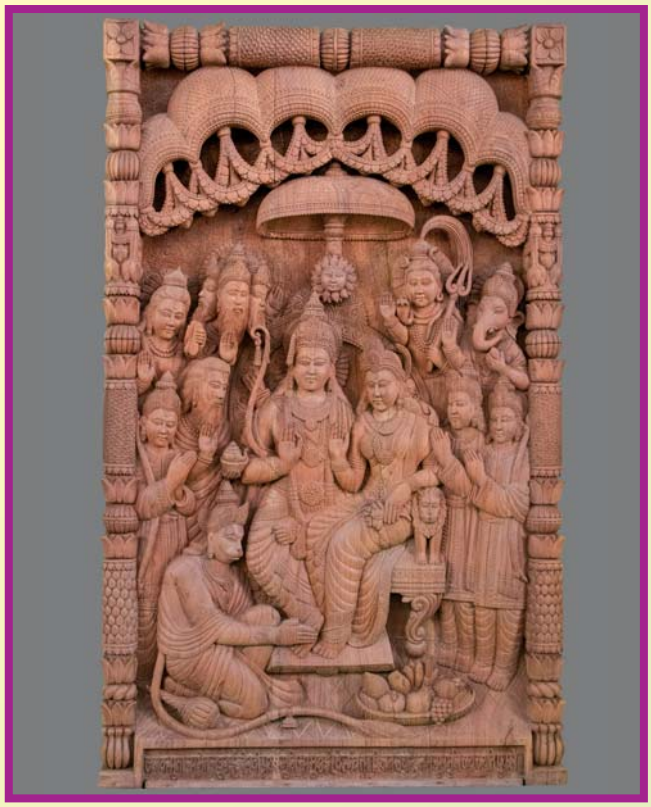

## बौद्ध धर्म काष्ठ शिल्प

## इसाई धर्म काष्ठ शिल्प

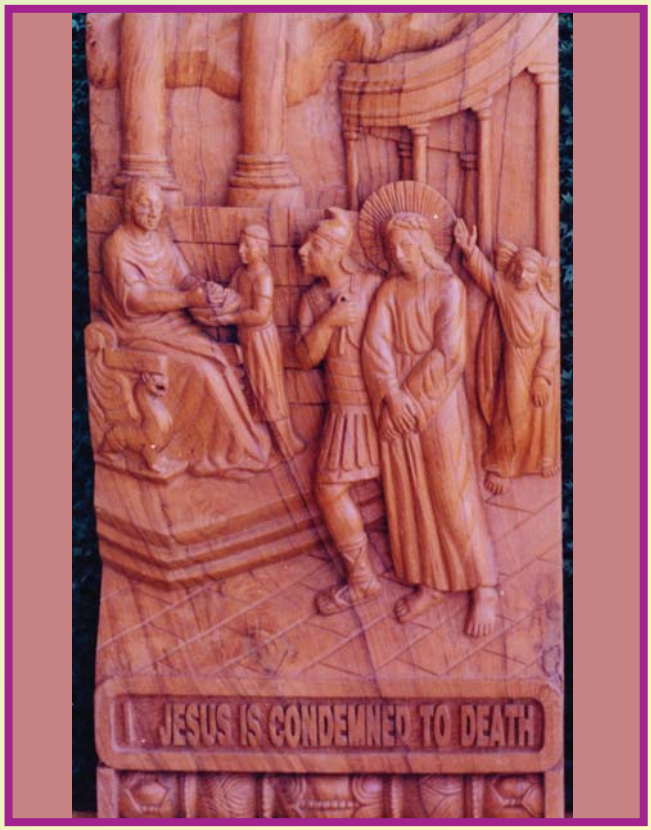


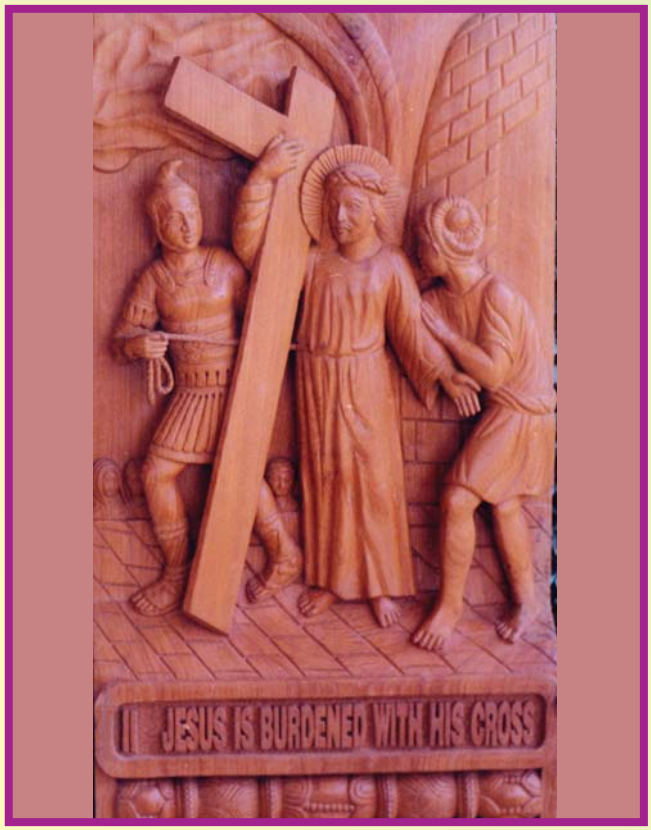


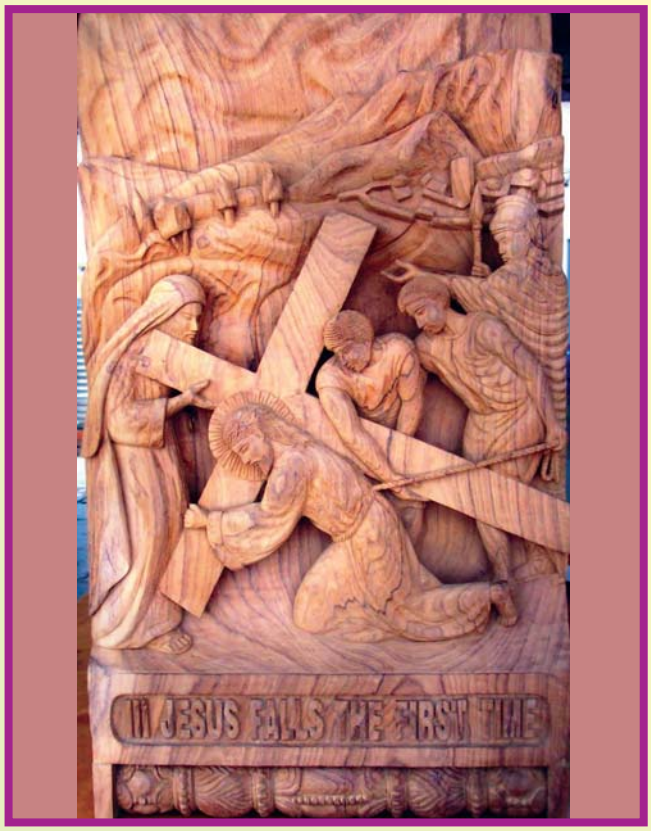


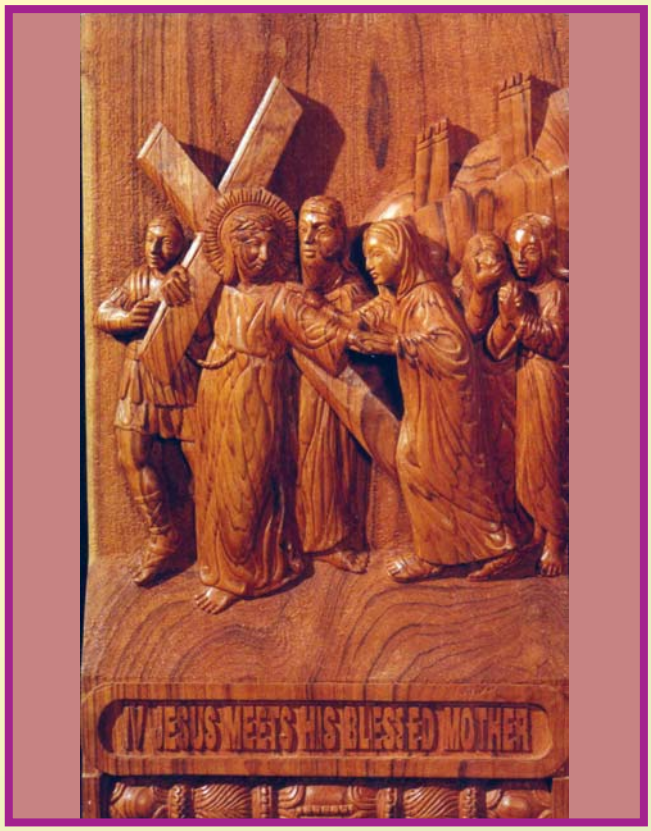

V SIMON THE CYRENEAN AIDS JESUS TO CARRY THE CROSS

VI VERONICA WIPES THE FACE OF JESUS

VII JESUS CONSOLES THE DAUGHTERS OF JERUSALEM

VII JESUS FALLS THE SECOND TIME

IX JESUS FALLS THE THIRD TIME

X JESUS IS STRIPPED OF HIS GARMENTS

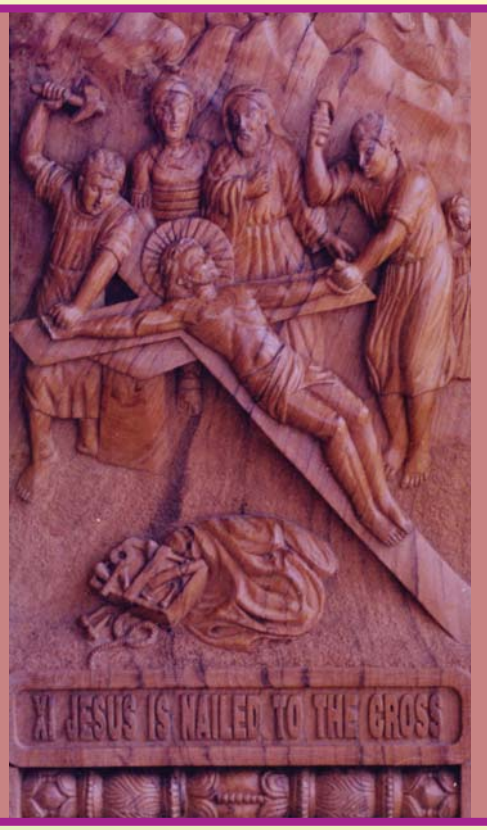


XI JESUS IS NAILED TO THE CROSS

XII JESUS DIES ON THE CROSS

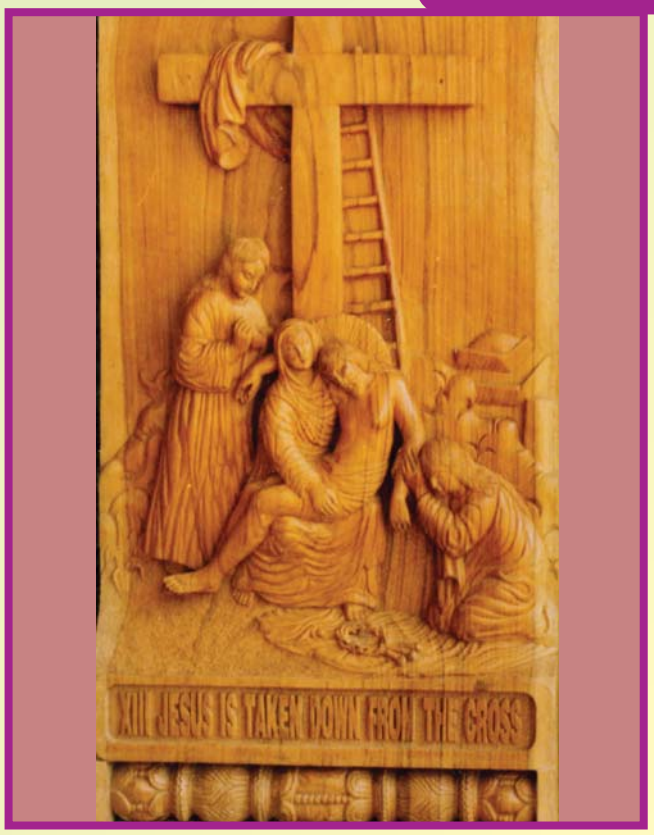

XIII JESUS IS TAKEN DOWN FROM THE CROSS

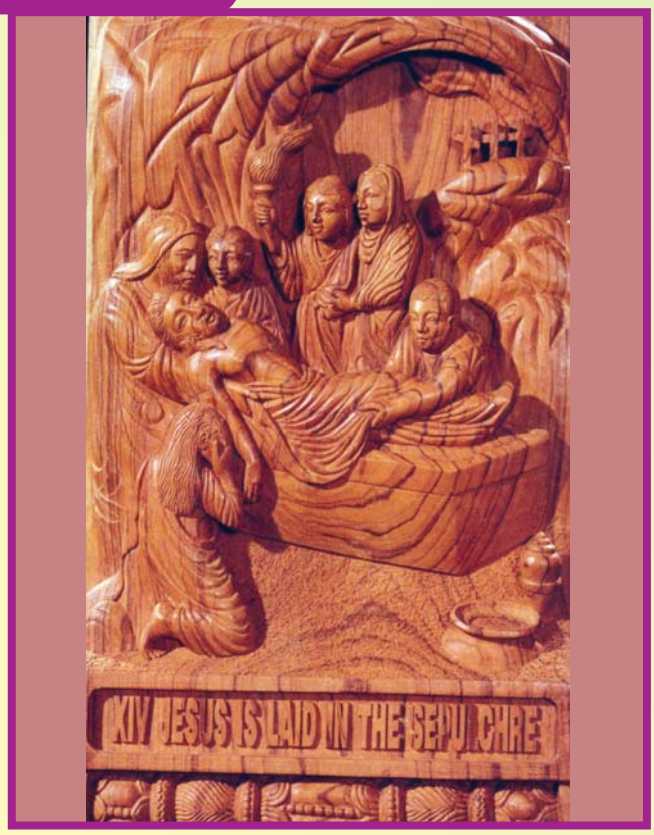


XIV JESUS IS LAID IN THE SEPULCHRE

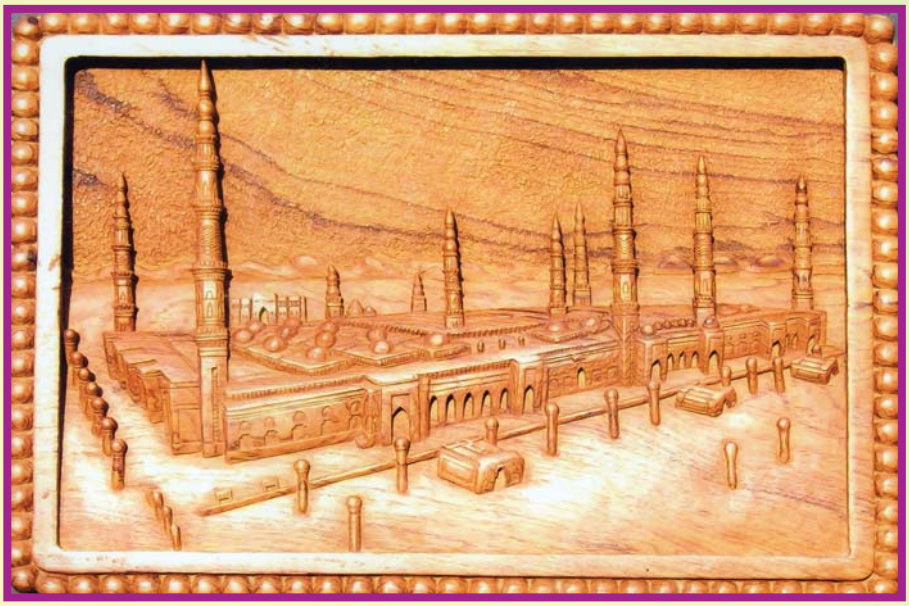

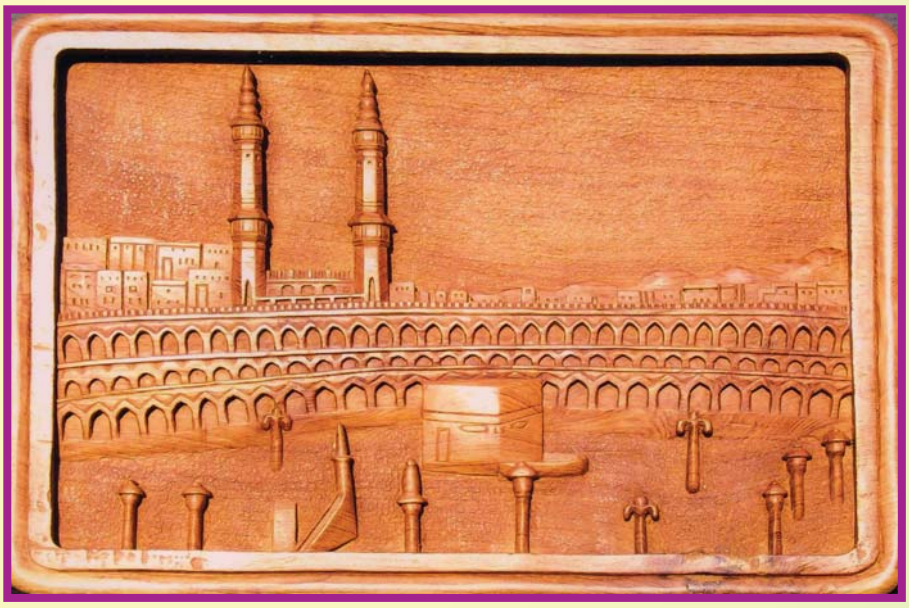

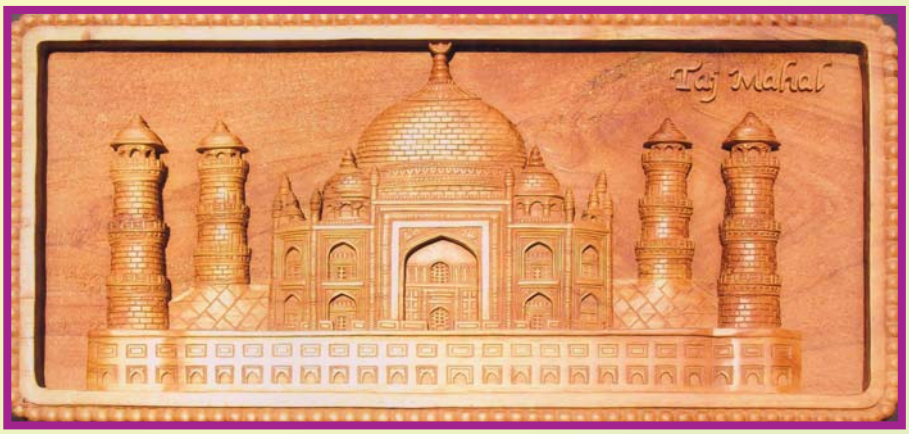
Taj Mahal

## हैरिटेज काष्ठ शिल्प

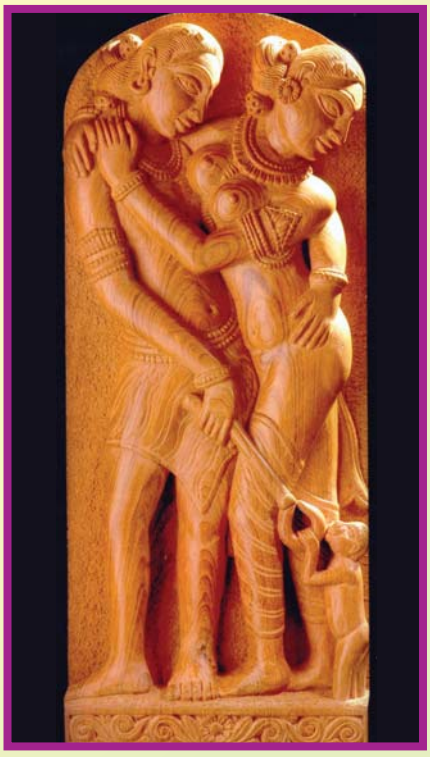

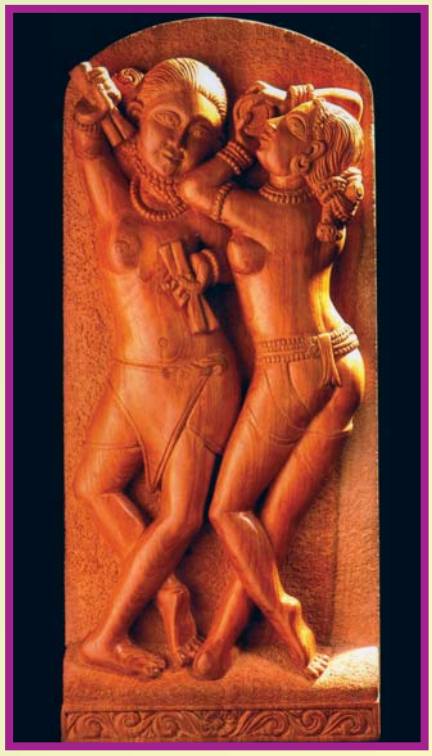

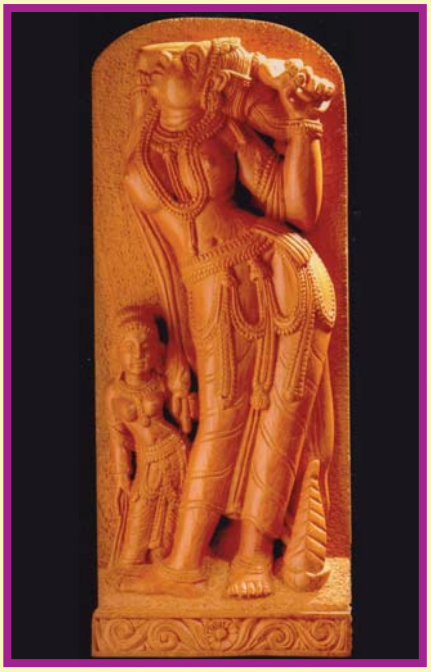

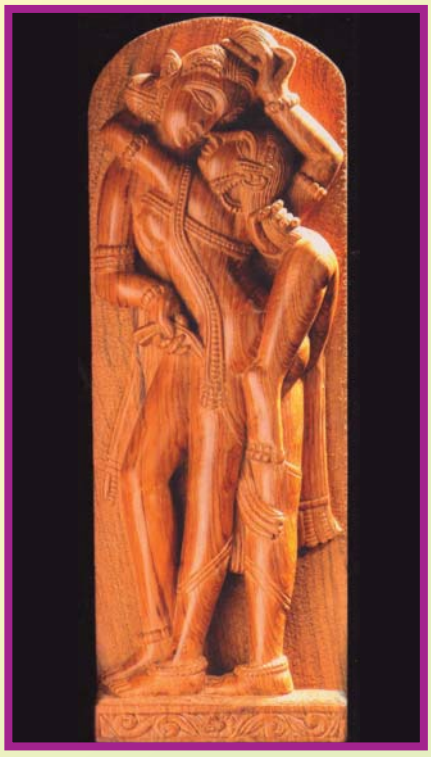

## तारकसी काष्ठ शिल्प

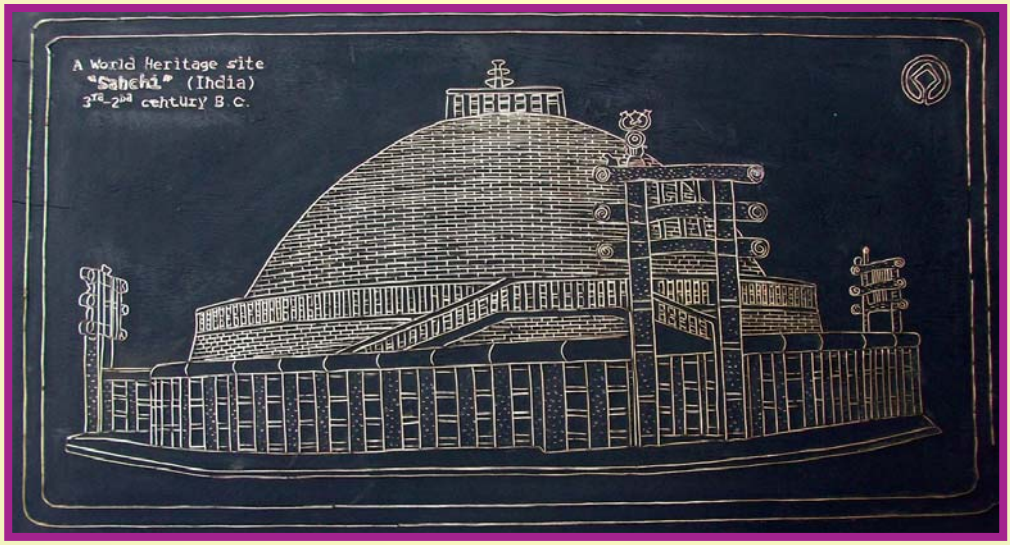


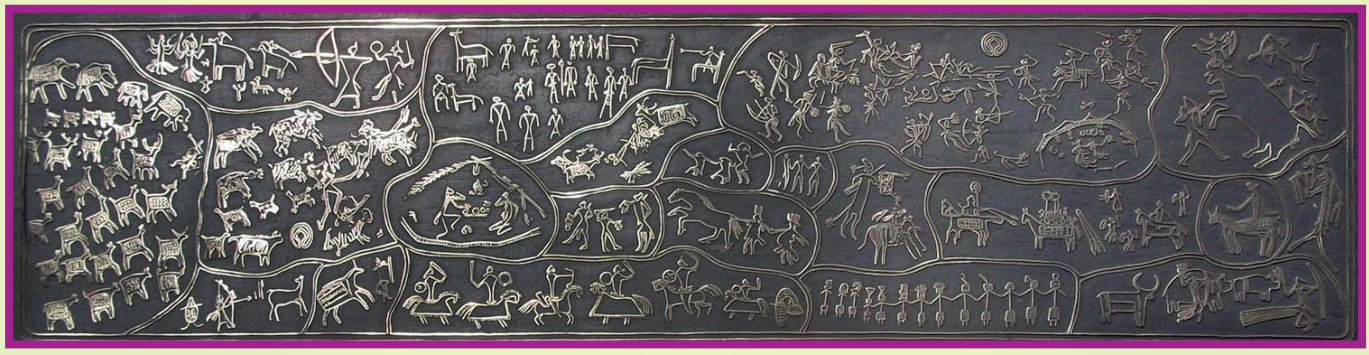

# श्रीरामचरितमानस काष्ठ शिल्प

# डॉ. नारायण व्यास का विशेष संग्रह

# देवेन्द्र प्रकाश तिवारी की कबाड़ से कलाकृतियाँ

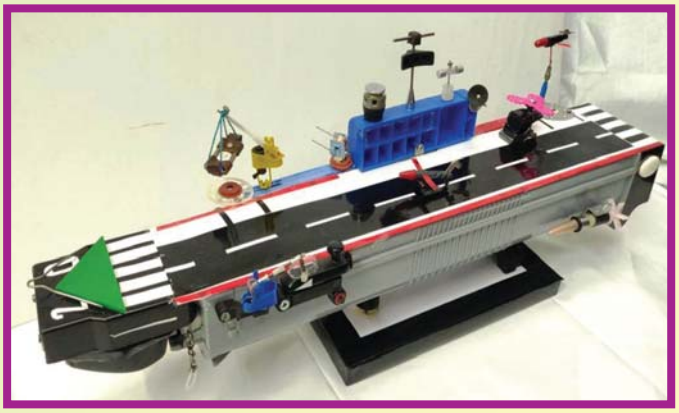

एयरक्रॉफ्ट कैरियर शिप – आई.एन.एस. विराट

द जाज़ बैंड

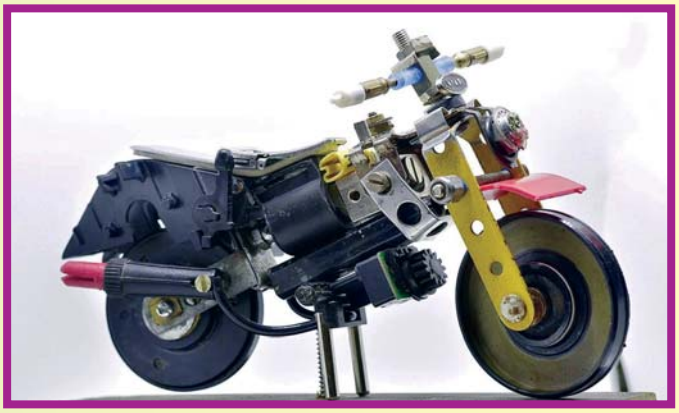

सुपर बाईक

शाही बग्घी

टू सीटर हैलीकॉप्टर

रेसिंग बाइसिकल

# धरोहर विथि

एंटी एयरक्राफ्ट गन

बीएसए मोटर साइकिल

अपोलो मून मिशन लैंडर

द मार्स मिशन

बैलेस्टिक मिसाइल लांचर

स्टीम इंजिन

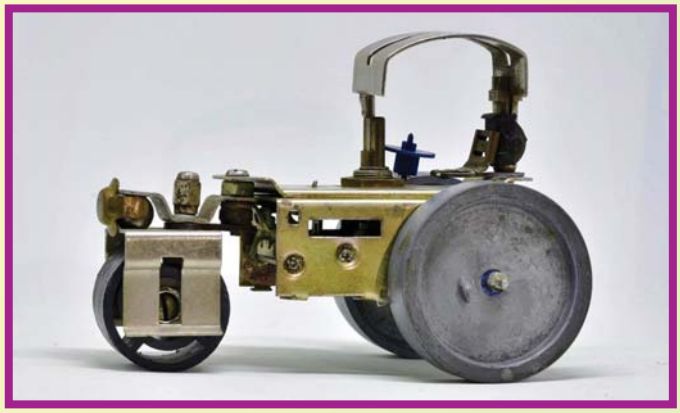

रोड रोलर

# सुनील भट्ट का माचिसों का नायाब संग्रह

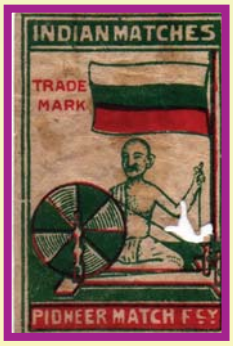

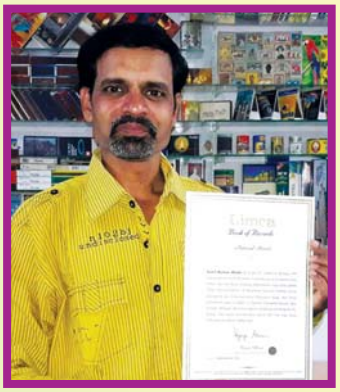

# शशिकान्त लिमये का रचना संसार

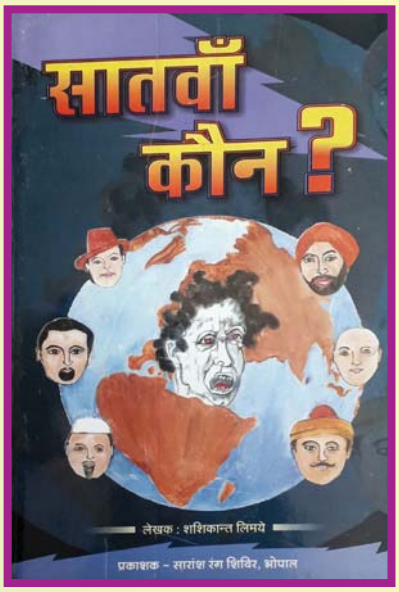

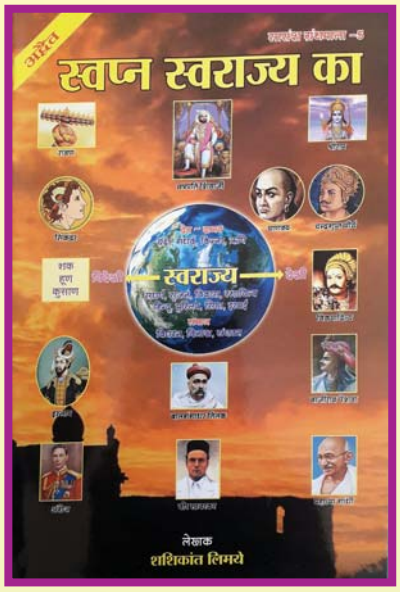


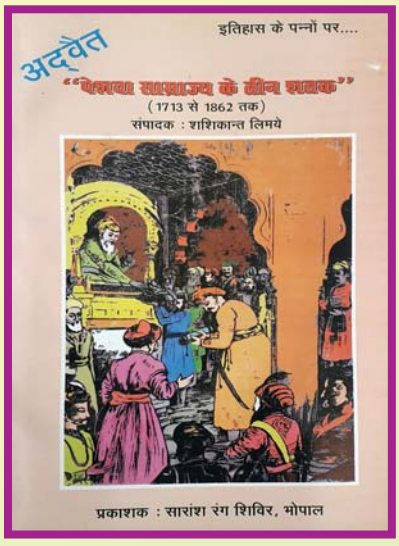

# अरूण सक्सेना का अनूठा संग्रह

धरोहर के संग्राहक

# मैं बच्चों को नोटों के संग्रह के लिए प्रेरित करता हूँ

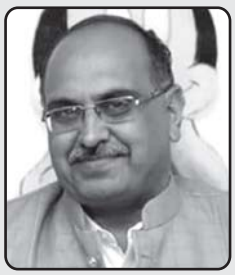

अजय मेहता

नाम : अजय मेहता, भोपाल
महामंत्री जैन स्थानकवासी श्वेताम्बर संघ, कार्यकारिणी सदस्य भोपाल स्टॉक इन्वेस्टर एसोसिएशन, जैन श्वेताम्बर सोशल ग्रुप।

अजय मेहता एलसी क्रियेशन मालवीय नगर भोपाल को सिक्के संग्रह करने का शोक 18 सालों से है दुर्लभ और खास भारतीय सिक्के जो भारत सरकार की टकसालों में ये अद्वितीय सिक्के ढाले जाते हैं जो कि चुनिंदा लोगों के पास जरूर है पर आमजन की पहुंच से बहुत दूर हैं। जो कि रूपये 5, 10, 20, 50, 60, 75, 100, 125, 150, 350, 500 और 1000 रूपये के चमचमाते सिक्के जिसमें 33-50 प्रतिशत चांदी, 30-40 प्रतिशत कापर, 5 प्रतिशत निकल, 5 प्रतिशत जिंक होता है जो महाराणा प्रताप, डॉ. एम.एस. सुब्बालक्ष्मी,महात्मा गांधी, काशी हिन्दू विश्व विद्यालय, राष्ट्रमण्डल के 60 वर्ष, आचार्य तुलसी, अटल बिहारी वाजपेयी, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, इलाहाबाद उच्च न्यायालय व भारत सरकार की मुम्बई प्रिंट द्वारा जारी 999 शुद्ध चांदी का रजत सिक्का गुरुनानक देव, श्री महालक्ष्मी पूजन जो कि 40 ग्राम वजन, 40 एम.एम. डायमीटर का है वो भी मेरे संग्रह में है व इस तरह के सिक्के इकट्ठे करने का शोक अनवरत जारी है।

मेरे कलेक्शन में मुगल कालीन सिक्के इतिहास की झलक के 1/2 Pice George v, हाफ आना, 1/2 आना, 1 आना, 2 आना, 4 आना ग्वालियर स्टेट, उदयपुर स्टेट के प्राचीन सिक्के व पन्द्रह विदेशी के बेहतरीन कलेक्शन मौजूद हैं।

मेरे पास महापुरुषों के चित्र वाले टिकट फर्स्ट डे कवर और सिक्के भी शामिल हैं जिसमें मदर टेरेसा, छत्रपति शिवाजी महाराज, डॉ. अंबेडकर सेल्यूलर जेल, अंतर्राष्ट्रीय युवा वर्ष, पर्यटन वर्ष।

**एक पैसे** के सिक्के 1943 लहौर मिंट के छेद वाले से लगाकर आजादी के बाद जारी हुए तांबे व ऐल्युमिनियम के 1972 तक के सिक्के। **दो पैसे** का सिक्का 1944 George vi से लगाकर आजादी के बाद जारी हुए दो नये पैसे रूपये का पचासवाँ भाग से ऐल्युमिनियम के 1979 के सिक्के। **तीन पैसे** 1964 से 1971 तक ऐल्युमिनियम। **पाँच पैसे** 1967 कलकत्ता मिंट से 1993 हैदराबाद मिंट व कमोरेटिव सिक्का बच्चे की मुस्कान राष्ट्र की शान भी है।

**दस पैसे** का 1961 का रूपये का दसवां भाग 1988 का टिक्कल सिक्का से 1991 तक के ऐल्युमिनियम सिक्के हैं। कमोरेटिव सिक्के 1974 नियोजित परिवार सबके लिये, 1975 समानता विकास शान्ति के लिये, 1977 विकास सबके लिये, 1978 सबके लिये अनाज और मकान, 1979 बच्चे की मुस्कान राष्ट्र की शान, 1980 ग्रामीण महिलाओं की प्रगति, 1982 विश्व खाद दिवस, नवम एशिया गेम भी है। **बीस पैसे** के पीतल वो 1968 से 1998 तक ऐल्युमिनियम व कमोरेटिव सिक्के 1969 महात्मा गांधी, 1970 सबके लिये अन्ना, 1983 मत्स्य उद्योग भी है।

**पच्चीस पैसे** रूपये का चौथा भाग 1960 का निकल का सिक्का, 1972 से 1990 तक के कापर निकल 2.05g, 19 mm वाले, 1988-2002 तक फेरेटिक स्टेनलेस स्टील 19 mm 2.85g वाले भी मौजूद हैं। कुल चार तरह के निकले हुए कमोरेटिव सिक्के 1980 ग्रामीण महिलाओं की प्रगति, 1981 विश्व खाद दिवस, 1982 नवम एशिया गेम, 1985 विकास के लिए वनिकी व 1914 George v से लगाकर 1945 George vi के चांदी के काफी सिक्के मौजूद हैं, 1947 का पाव रूपया जिसमें हैड की तरफ शेर व टेल की तरफ George vi king emperor का फोटो है।

**आधा रूपया** 1914 George V से लगाकर 1947 George VI तक के काफी सिक्के हैं, 1946 से 1956 निकल 1/2 Rupees आधा रूपया जिसमें हेड की तरफ रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया अंकित है वे 1957-63 तक 50 नये पैसे हैड की तरफ रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया का लोगो है 5.83g वजन है, 1972-84 कापर निकल 50 पैसे, 1984-90 के डिजाइन वाले होते हैं, 1988 से 2007 तक फेरेटिक स्टेनलेस स्टील के सिक्के, 2008-2010 तक नृत्य मुद्रा

वाले, 2011-16 16mm डिजाईनर वाले है। कमोरेटिव सिक्के 1964 जवाहर लाल नेहरू, 1969 महात्मा गांधी, 1972 25 वीं स्वतंत्रता जयंती, 1973 अधिक अन्न उगाओ, 1982 राष्ट्रीय एकता, 1985 इंदिरा गांधी, 1985 भारतीय रिजर्व बैंक, 1986 मत्स्य उद्योग, 1997 स्वतंत्रता का 50 वां वर्ष उपरोक्त संग्रह मेरे पास है।

**1 रूपया** 1889 Queen Victoria से 1945 George VI तक के बहुत सारे सिक्के व कमोरेटिव मुद्रा वाले 18 प्रकार व 1950 से डेफीनेटिव सिक्के हैं। **2 रूपये** 1982 राष्ट्रीय एकता से लगा कर 2010 का उन्नीस वां राष्ट्रमण्डल खेल दिल्ली तक के सत्रह प्रकार के कमोरेटिव व विभिन्न प्रकार के डेफीनेटीव सिक्के हैं। रूपये 5 कमोरेटिव सिक्के 1985 इंदिरा गांधी से लगा 2017 एम.जी. रामाचन्द्रन व डेफीनेटीव कलकत्ता, मुंबई, हैदराबाद, नोएडा के बहुत सारे काईन मौजूद हैं। रूपये 10 के क्वाईन 15 धारी, 12 धारी, 8 धारी, एकता व विविधता वाले डेफीनेटीव क्वाईन अलग-अलग मिंट के व कमोरेटिव 1969 महात्मा गांधी से 2016 तीसरा भारत अफ्रीका मंच शिखर सम्मेलन तक के काफी क्राईन मौजूद हैं।

**रूपये 20** के क्वाईन 2019-2020 का मेरे पास मिंट पेक थैली में उपलब्ध है।

जन्म तारीख से नोटों का कलेक्शन संग्रह करने का शोक है जिसमें लोगों के कुछ ख्याति प्राप्त लागे नाम निम्न है -

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद -भारत के प्रथम राष्ट्रपति-031284 -3 दिसम्बर 1884, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी - राजनीतिज्ञ और दार्शनिक-071279 -7 दिसम्बर

1874, गुरू गोविन्द सिंह - सिक्खों के दसवें व अंतिम गुरु - 221266 -22 दिसम्बर 1966, मौलाना मजहरूल हक - स्वतंत्रता सेनानी-251266-25 दिसम्बर 1861, मदन मोहन मालवीय - स्वतंत्रता सेनानी - समाज सुधारक, राजनीतिज्ञ -251261- 25 दिसम्बर 1811, पं. जवाहर लाल नेहरू - राजनीतिज्ञ-141189-14 नवम्बर 1889, नरेन्द्र मोदी - वर्तमान प्रधानमंत्री -70950 -17 सितम्बर 1950

मैं मेरे परिचित बच्चों को इस तरह के नोटों को संग्रह करने के लिए प्रेरित करता हूँ जिससे उनमें एक शोक का उत्साह हो, वो गलत दिशा में जाने से खुद को बचाए रखें।

- स्टार नोटो का बडा संग्रह जिसमे 10, 20, 50, 100, 200 व 500 के नोट है।
- 786 नम्बर के नोट जिसमें शुरूआत में 786 है, आखरी में 786 है, बीच में 786 है, उल्टे 786 ये सभी मेरे संग्रह मे मौजूद है।
- फैन्सी नोटो का संग्रह जैसे लेडर नम्बर मे 123456 का रूपये 50 वाला नोट रूपये 500 में डबल बडते हुए नोट 84 85 86 व डबल नम्बर 530 530, 697 697, 995995 इस तरह के काफी नोट है।
- रूपयें 1/ 1957 का जिसमे मिनिस्ट्री आफ फाईनेंस के सेकेट्री ए.के. रॉय द्वारा हस्ताक्षर किये जाते थे से लगाकर 2019 सुभाष गर्ग सेकेट्री मिनिस्ट्री ऑफ फाईनेंस के हस्ताक्षर है। रूपये 2 के विभिन्न प्रकार के 36 तरह के नोट होते है जिसमे से 22 तरह के मेरे संग्रह में मौजुद हैं रूपये पाँच के 1947 से 2017 तक के पैंतालीस तरह के मेरे पास है रूपये दस के गवर्नर पी.सी. भट्टाचार्य सन् 1965 से लगा कर 2019 गवर्नर शक्तिकान्त दास तक है।
- रूपये बीस का परिचय कराने वाले आर.बी.आई. गवर्नर एस. जगन्नाथन जिनका कार्यफल 16-06-1970 से 19-05-1975 तक का रहा था उनके चारो Insect A, B, C, D के मेरे संग्रह मे है व अलग-अलग आर.बी.आई. गवर्नर के भी है।
- रूपये 50 के आर.बी.आई. गवर्नर आई.जी. पटेल जिनका कार्यकाल 01-12-1977 से 15-09-1982 तक से अलग-अलग गवर्नर का संग्रह है। रूपये 100 के आर.बी.आई. गवर्नर के.आर. पुरी, जिनका कार्यकाल 20-8-1975 से 02-05-1977 तक था। उस समय से 2020 तक अच्छा संग्रह मौजुद है।
- रूपये 200 में आर.बी.आई. गवर्नर उर्जित पटेल जिनका कार्यकाल 04-09-2016 से 11-12-2018 तक का था व उसके बाद आर.बी.आई. गवर्नर शक्तिकान्तदास का रहा है। उन दोनों के कार्यकाल के with insect/ without insect लेडर नम्बर के भी मेरे संग्रह मे मौजूद है।

■

# अजब अंको के गज़ब रखवाले

सुधीर कुमार पाण्ड्या

नाम- सुधीर कुमार पाण्ड्या
पिता का नाम- स्व. प्रकाश चंद जैन पाण्ड्या
जन्मतिथि- 25 अगस्त 1964
पत्राचार का पता- अनेकांत नगर, लिली टाकीज के पास, जहाँगीराबाद भोपाल- म.प्र.
मोबाईल नम्बर- 7869995501, 9479541501
मेल-sudheerpandya555@gmail.com

एक इंसान कितने शौक रख सकता है और उनमे से कितने पूरे होते हैं अगर यह सवाल खुद से ही पूछा जाए तो शौक रखने का जवाब में तो शायद गिनती बहुत होगी लेकिन उनमें से पूरे होने वाले शौक बमुश्किल एक-दो ही होगे। लेकिन राजधानी भोपाल में एक शख्स ऐसे भी है जो कि अजीबो-गरीब शौक तो पाले हुए है ही साथ ही इनको पूरा करने में भी कोई कोर-कसर नहीं छोड़ रहे है। लिली टाकीज के पास अनेकांत नगर में रहने वाले श्री सुधीर कुमार पाण्ड्या के पास कई देशों के सिक्कों का कलेक्शन तो है ही, उनकी नजरें नोटों और सिक्कों में सरकारी हाथों से छूटी उन गलतियों को ढूंढती रहती हैं जो कि सख्त गुणवत्ता परीक्षण चरणों से गुजरने के बावजूद भी प्रचलन में आ जाते है। सुधीर जी अपने एक्स-रे जैसी निगाहों से इस खामियों को पहचान कर संग्रह करते है। इनका शौक यहीं तक सीमित नहीं रहा बल्कि, इस तरह के कई काम इनकी फेहरिस्त में शामिल है।

पेशे से किराना व्यवसायी सुधीर को लींक से कुछ हटकर काम करने का शौक है जिसे पूरा करने के लिए वे कई अनोखे कामों में हाथ आजमाते रहते हैं। बैंक खाते में पैसे जमा करने से लेकर ग्राहक को सामान देने के साथ रूपये/ चिल्लर आदान- प्रदान करने में भी उनकी किसी न किसी रिकार्ड पर नजर होती है। करीब चार सौ से अधिक डिफेक्टिव या मिसप्रिंट नोटों का संग्रह उनके पास है। इसी तरह ढलाई के दौरान दोषयुक्त रह गए 50 से अधिक सिक्के भी उनके संग्रह में शामिल में हैं। जिनमें एक तरफ बिना ढलाई के और शेर की आकृति बिना 1, 2 और 5 के सिक्के, आसमान आकार के सिक्के भी उनके पास हैं।

सुधीर बताते हैं कि एक बार दुकान पर विशेष अंकों वाला नोट मिला तो उसे अपने पास रख लिया और ऐसे ही और नोटों को इकट्ठा करने का विचार बनाया। धीरे-धीरे उनके पास 111111, 222333, 333444, 112233, 999999, 000786 जैसी सीरीज के अनगिनत नोटों का संग्रह हो गया। मित्रों और परिजनों के प्रोत्साहन से वे आगे बढते चले गए और पिछले 25 वर्षों से अनवरत उनकी संग्रह साधना जारी है। वे भेंट में मिले विशेष अंकों वाले करंसी नोटों को भेंटकर्ता के नाम सहित संग्रहीत कर उनके प्रति आभार प्रकट करते हैं। उनका मानना है कि, हर नोट कुछ कहता है, बस उसे एक बार ध्यान से देखने की जरुरत है। मसलन नोट पर दर्ज अंक में जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ, ऐतिहासिक और यादगार तिथियाँ देखी जा सकती हैं। उनके संग्रह में अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा, श्री एपीजे अब्दुल कलाम, हुसैन बोल्ट और भारतीय फिल्मी हस्तियों के जन्मदिन वाले नोट भी हैं।

आम तौर पर हम बैंक में 100, 500, 1000 या 2000 मूल्यवर्ग में धनराशि जमा करते हैं किन्तु सुधीर जी ने कुछ नया करने की नीयत से

111, 222, 333, 444, 555 ..... 1111, 2222, से लेकर 33333 जैसी समान अंकों वाली राशि ही भारतीय स्टेट बैंक, एचईटी शाखा के खाते में जमा करते हैं। शुरुआत में बैंक कर्मी उनके द्वारा इस तरह से नकदी जमा करने पर असंतोष जाहिर करते थे परंतु उनके जुनून और उन्हें लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में शामिल होने के बाद से सहर्ष सहयोग देने लगे। इस तरह बैंक कर्मियों विशेषकर श्री प्रदीप कुमार कुरुप और श्री हनुमान प्रसाद सैनी के सहयोग से श्री पाण्ड्या को तीन बार लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में जगह मिल गई है। उन्हें इंडिया स्टार बुक ऑफ रिकॉर्ड्स, यूनिवर्सल रिकॉर्ड्स फोरम, इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स तथा कई सामाजिक संस्थाओं द्वारा भी सम्मानित किया जा चुका है। समाचार पत्र पत्रिकाओं एवं टीवी चैनल्स पर भी सुधीर पाण्ड्या जी की बहुमुखी प्रतिभा पर कार्यक्रम,/ आलेख आदि प्रस्तुत किये जाते रहे हैं। उन्होंने भोपाल, दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और नागपुर आदि महानगरों में आयोजित प्रदर्शनियों में भी सहभागिता की है। श्री पाण्ड्या को श्री दिगंबर जैन सेवा न्यास द्वारा उत्कृष्ट प्रतिभा सम्मान, और समाज गौरव सम्मान से भी सम्मानित किया गया है।

हायर सेकेंडरी तक शिक्षा प्राप्त श्री सुधीर पाण्ड्या का यह जुनून शुरुआत में परिजनों को नागवार गुजरा। कई बार आर्थिक जरुरतों को पूरा

करने इस अमूल्य धरोहर की भी बलि देना पड़ी। अब ढाई दशक बीतने और ढेरों सम्मान मिलने के साथ, इस शौक को घरवालों ने भी स्वीकार कर लिया है। इसके अलावा श्री पाण्ड्या उल्टा लिखने की कला में भी निपुण हैं। अपने रिश्तेदारों, मित्रों और शुभचितकों को बधाई संदेश लिखकर भेजते हैं जो केवल आईने में ही पढे जा सकते हैं। विशिष्ट व्यक्तियों को भेजे उनके संदेशों के प्राप्त उत्तरों का संग्रह भी वे बड़े जतन से करते हैं। उनकी याददाश्त भी कमाल की है। परिचितों, मित्रों की जन्मतिथि, विवाह वर्षगांठ, मोबाईल नंबर आदि जबानी याद रखते हैं और समय पर शुभकामनाएं दिया करते हैं। श्री पाण्डया को एक हाथ से ताली बजाने में भी महारत हासिल है। वे वामहस्त यानि लेफ्ट हैंडर हैं। उन्होंने भोपाल और बाहर के निवासी लेफ्ट हैंडर लोगों के पते और मोबाईल नंबरों की सूची तैयार की है जिन्हें विश्व लेफ्ट हैंडर दिवस पर मिरर इमेज में शुभकामनाएं देते हैं।

Limca
Book of Records

National Record

Sudheer Kumar Pandya of Bhopal, Madhya Pradesh, who opened a current account in the name of M/s Pandya Departmental Store at the Het-Piplani branch of State Bank of India (SBI) in 1991 has been depositing interestingly odd amounts of cash like Rs 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 11, 22, 33, 44, 55, 66, 77, 88, 99, 111, 222, 333, 444, 555, 666, 777, 888, 999, 1111, 2222, 3333, 4444, 5555, 6666, 7777, 8888, 9999, 11111, 22222, 33333 and so on in his account since Sept 5, 2003. He has some 2,000 such entries in his account statement as on June 30, 2013.

Vijaya Ghose
Editor, Limca Book of Records

हमेशा कुछ अलग करने की स्वत: स्फूर्त प्रेरणा जागृत रहने से श्री पाण्ड्या सामाजिक सरोकारों से भी सतत् जुड़े रहते हैं। पिपलानी पेट्रोल पंप के पीछे स्थित आदर्श मार्केट में उन्होंने साथी दुकानदारों के सहयोग से 25 वर्ष पूर्व नीम वृक्षों का पौधा रोपण किया था। जिनका जन्मदिन पर्यावरण दिवस, 24 जून को प्रतिवर्ष धूमधाम से मनाया जाता है। पर्यावरण जागरूकता के प्रचार-प्रसार में इस आयोजन को भारी सराहना मिली जिसके फलस्वरूप इस वर्ष लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्डस में भी स्थान मिल गया है। ■

# मेरे विविध संग्रह

**अमरजीत सिंह गांधी 'विन्नी'**

नाम : अमरजीत सिंह गांधी 'विन्नी'
पिता: स्व. सरदार जसपाल सिंह जी गांधी
जन्म तिथि:-19.04.1974
शिक्षा: बी.एस.सी. (साइंस), व्यवसाय:- कपड़ा व्यापारी, रूचि:- समाज के लिए कार्य करना, शोक:- डाक टिकट संग्रह, करेंसी संग्रह।
उपलब्धि:- पेटा इण्डिया, पी.एम.ए. (श्रीमती मेनका गांधी), लॉयन क्लब की स्थापना, राष्ट्रीय चिंतन पर लेख।

संपर्क:- म.क्रमांक 408, वार्ड क्रमांक 9 सरदार पटेल वार्ड, मेन रोड बैरसिया-463106, मोबाईल 9827599031

**परिचय:-**

माता हरसिद्वि जी एवं श्री गुरू ठडेश्वरी महाराज की पावन पुनीत नगरी बैरसिया के प्रतिष्ठित परिवार में 19 अप्रैल जन्में। बैरसिया नगरी धर्म, अध्यात्म, संस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए जानी-पहचानी जाती है। मुझे घर में देश-प्रेम, पर-पीड़ा अनुभूति, सर्वहारा वर्ग के प्रति संवेदनशीलता जैसे उच्च संस्कार मिले। प्रारंभिक शिक्षा तालों एवं झीलों की नगरी भोपाल में सम्पन्न हुई। एवं उच्च शिक्षा B.Sc., M.A. सम्पन्न हुई। परिवार में माताजी, धर्म पत्नि, पुत्रियों ट्विकल, एवं वाणी पुत्र हनी गाँधी है।

**मेरे विविध संग्रह -**

- सिक्कीम पर डाक टिकट, क्वॉइन्स, सिख धर्म के सभी गुरू के जन्मदिन के नोट, गुरूगधी दिवस के नोट सभी गुरूओं के शहीद दिवस के नोट, सिख धर्म के टोकन, संतों पर डाक टिकट, लगभग 100 शीट
- सिनेमा की कहानी डाक टिकट एवं माचिस की जुबानी, रंजनीकांत जी, श्री अमिताभ बच्चन जी, लता मंगेशंकर जी जैसे सुपर स्टार पर टिकट, मैच बॉक्स एवं फिल्म रीलिज तारीख के नोट पर विशेष कलेक्टशन।

- मातृशक्ति माँ के विभिन्न रूपों पर लगभग 50 विभिन्न स्टीकरों, पोस्टर का कलेक्शन
- पोस्टकार्ड 1 आना से 50 पैसे तक के विभिन्न डिजाइनों के 100 से अधिक पोस्टकार्ड, राखी स्पेशल
- ताश के Special पत्ते 300 तरह के जोकर फल, फूल, देश भक्ति, जेट एयर लाइन हेरोइन, हीरों, बच्चों के कौन बनेगा करोड़पति,
- विश्व के लगभग 100 देशों के नोट या सिक्के जैसे पकिस्तान, श्रीलंका, अमेरिका, कनाड़ा बांग्लादेश, चीन, बर्मा, Zimbombwe, Dubai.
- भारतीय सिक्के अलग-अलग पेटर्न्स एवं सन् के अनुसार मुगलशासन काल, सिक्कों पर श्रीराम दरबार, श्री शिव परिवार, बीच में होल वाले, एक नया पैसा, 1 पैसा, 2 पैसा, 3 पैसा, 1 आना, 2 आना, 1 रूपया आदि।
- **नोटो के विभिन्न रूप** - P.M. वाले नोट -1 P.M. 234567, C.M. वाले नोट - 1 C.M.123456, Happy New Year वाले- 010120, Independant वाले - 150847, गणतंत्र दिवस वाले नोट - 260150, Holy Number- 000786, गिनती वाले नोट - 000001
- उल्टी गिनती वाले नोट - 100000, Valentine day वाले नोट -140280, A B C D वाले नोट - AA, BB, CC, डबल A B C D वाले नोट -AA BB CC, ABCD गिनती वाले नोट - A1, A2, A3 क्रिकेटरों की Date of Birth वाले नोट, क्रिकेटरों की Marrige date वाले नोट, फिल्म सितारों की Date of Birth वाले नोट, फिल्म सितारों की डंततपहम कंजम वाले नोट, राजनेताओं की Date of Birth वाले नोट
- लगभग 300 तरह के पत्थर, नग, नवरत्नों जैसे उपरत्नों का भी कलेक्शन है।
- विभिन्न संस्थानों साहित्यक, सांस्कृतिक, कार्यक्रमों की न्यूजपेपर

कटिंग लगभग स्वयं की 1000 खबरे, बुक, पम्प्लेट्स सामाजिक विषयों पर समय-समय पर आते है। उनका भी संग्रह लगभग 100 से आजादी के परवानों, मुख्यमंत्रीयों, देशभक्तों, पशु-पशुओं, महापुरुषों, कोविड-19, स्वच्छ भारत, बेटी बचाओं, सिनेमा,राशियों, परिधान, मसालों आदि के लगभग 100 देशों के डाक टिकट

- सिख धर्म के प्रतीक चिन्ह, एक ओंकार के 1600 अलग-अलग पेंटर्स जैसे- पुस्तकें, स्टीकर्स, कडे, न्यूजपेपर्स, की चैन, पोस्टर आदि पर
- राष्ट्रीय ध्वज ''तिरंगा'' लगभग 1000 अलग पैटर्न्स, न्यूजपेपर, पुस्तक, स्टीकर्स बेंच केप, पोस्टर, टेबल केप, आदि पर
- स्टीकर्स लगभ 2500 अलग-अलग पैटर्न्स- फल, नम्बर, फ्लिमों पर देवी देवताओं, महापुरूषों, पशु-पशुओं, राशियों,साड़ियों, की डिजाइन,

श्री अमिताभ बच्चन जी के पत्र लगभग 25 वर्षो से आ रहे है। जवाब में यहाँ से उनके जन्मदिन पर भी मैंने पत्र भेजे है।

श्री अमिताभ बच्चन जी के परिवार श्रीमती तेजी बच्चन जी, श्री हरिवंशराय जी बच्चन, श्री अमिताभ बच्चन, श्रीमती जया बच्चन जी, श्री अभिषेक बच्चन जी, श्रीमती ऐश्वर्या राय बच्चन जी के जन्म तारीख एवं विवाह की तारीख के नोट भी है तथा फिल्म तारीख वाले नोटो का संग्रह भी है। कैसेट आदि का भी संग्रह है।

श्री बच्चन परिवार की न्यूजपेपर पर आई खबरों की भी लगभग 1000 न्यूज है। श्री अमिताभ पर कलेण्डर, एडवटाईज, किताबे, पेन, की चेन, आदि का भी कलेक्शन है एक फिल्म ''अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों'' में श्री अमिताभ बच्चन जी के किरदार का नाम ''अमरजीत सिंघ''(मेरा नाम है) भी था।

**प्राप्त सम्मान -**

अन्तराष्ट्रीय सत्य समाज वर्धा (महाराष्ट्र) द्वारा 'सत्यश्री' अंलकरण, नवलेखन कला संघ द्वारा 'भाषा भारत रत्न' अंलकरण, रोटोमेक कम्पनी कानपुर द्वारा ''एक चिट्ठी भारत माँ के नाम'' प्रतियोगिता में लगभग 40 लाख चिट्ठीयों में से पुरुस्कार दिये।, लायंस क्लब इन्टरनेशनल द्वारा ''सर्वश्रेष्ठ सचिव'' 'सर्वश्रेष्ठ डिस्टिक्ट चेयरपर्सन' सर्वश्रेष्ठ अध्यक्ष' 'द लायंस ऑफ ईयर' सदस्यता वृद्धि अवार्ड, 'कन्टीब्यूटर, CCIF अवार्ड' अध्यक्षीय कार्यकाल में लियो क्लब गठन अवार्ड, श्री विनोद खन्ना जी, श्री अजय जडेजा जी, श्री मनमोहन सिंह जी (पूर्व प्रधान मंत्री जी) श्री नरेन्द्र दामोदर जी मोदी (प्रधानमंत्री महोदय), श्री ज्योतिराजे सिधिंया जी आदि द्वारा पत्राचार। सिन्थोल स्टार कान्टेक्ट, क्लोजअप विनर कान्टेक्ट्र, कांदम्बिनी सम्मान (2013), श्रीराम सेवक रामायण मण्डल सम्मान, Everest BooK of world Record (नेपाल), स्टार बुक ऑफ रिकॉर्ड, उत्तर प्रदेश बुक ऑफ रिकॉर्ड, ISO Certified (Gandhi Gallery), श्री रामकृष्ण पुष्पा देवी ट्रस्ट द्वारा (साहित्य सेवा 2013 सदस्य)

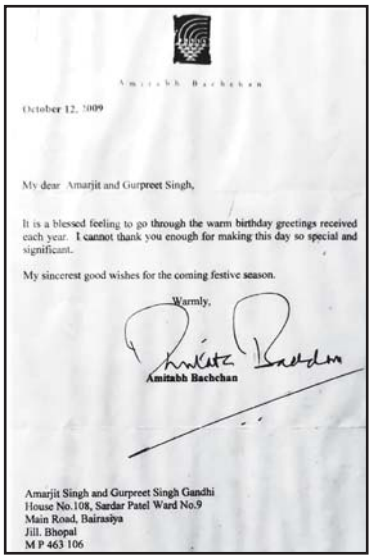

October 12, 2009

My dear Amarjit and Gurpreet Singh,

It is a blessed feeling to go through the warm birthday greetings received each year. I cannot thank you enough for making this day so special and significant.

My sincerest good wishes for the coming festive season.

Warmly,

Amitabh Bachchan

Amarjit Singh and Gurpreet Singh Gandhi
House No.108, Sardar Patel Ward No.9
Main Road, Bairasiya
Jill. Bhopal
M P 463 106

**सामाजिक प्रकल्प -**

लायंस क्लब इन्टरनेशनल के विगत 15 वर्षो से सक्रिय सम्मान, PETA INDIA, Deople for animal (Smt Menika Gandhi ji), अन्तर्राष्ट्रीय सत्य समाज के अजीवन सदस्य, भोपाल-गुरूद्वारा प्रबंधक कमेटी के अजीवन सदस्य, श्री हिन्दु उत्सव अध्यक्ष चयन समिति, मध्यप्रदेश लेखक संघ ईकाई बैरसिया, श्री रामलीला कमेटी बैरसिया, श्री चौपड़ युवा मंच, श्री कपड़ा व्यापारी संघ, श्री मध्यप्रदेश चेम्बर्स एण्ड कार्मस एण्ड इन्डस्ट्री के सदस्य, पूर्व सदस्य जनस्वास्थ्य एवं नेत्र शिविर समिति, पूर्व सदस्य रोगी कल्याण समिति हॉस्पिटल बैरसिया, पूर्व सदस्य श्री अमिताभ बच्चन फैन्स क्लब, पूर्व सदस्य श्री पुष्प दंत सागर श्रवण व्यास संस्कृति, श्री पुष्पगिरि (सोनकच्छ श्री दिगम्बर) जैन समाज, श्री जैन मिलन शाखा बैरसिया, श्री फादर ऐग्नेल स्कूल पालक-शिक्षक संघ सदस्य, नगर विकास योजना बैरसिया के स्टेंयरिंग ग्रुप मेंम्बर, ताजमहल को विश्व धरोहर में शामिल होने हेतु अभियान(7/7/2007), समय-समय पर लांयस क्लब के माधयम से नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर, पौधारोपण, पर्यावरण संबंधित कार्य, पूर्व सदस्य भोपाल पंजाबी समाज,

**Participation -** My own collection "Exhibition in mumbai, My own collection "Exhibition in Regional Science center, The lions Club International Convention in Bankok (Thailand 2000)

**प्रेरणा-**

मेरे दादा जी स्व. दौलत सिंह जी गाँधी जी ने मुझे लगभग 35 वर्ष पहले विदेशी नोट दिया था। तब से ही कलेक्शन करने की शुरूआत हुई। इसमें मेरा पूरा परिवार के साथ-साथ 30-35 दोस्तों ने भी सहयोग दिया तब यहाँ तक मेरा संग्रह पहुँचा तथा चाहता हूँ कि मेरी कर्म भूमि का नाम (बैरसिया) देश के साथ-साथ विदेशों में भी पहुँचे।

■

# 150 देशों के सिक्कों का विशाल संग्रह

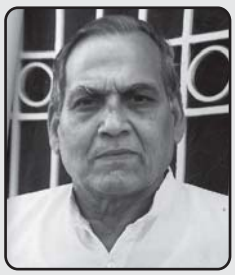

इन्द्रेश्वरी वल्लभ पंत

**नाम** : इन्द्रेश्वरी वल्लभ पंत (स्वामी विरिंची)

**पिता का नाम :** स्व. श्री कृष्ण दन्त पंत

**माता का नाम :** स्व. श्रीमती चन्द्रकला पंत

**जन्म दिनांक :** 31 मार्च 1941

**शिक्षा** : एम.एम.अर्थशास्त्र- धर्मरत्न-धर्मविशारद

**मूल निवासी :** उत्तराँचल (मलेरा ग्राम)

**सम्प्रति** : भेल, भोपाल से सेवानिवृत्त उत्पादन अभियन्ता

**तकनीकि :** तकनीकि डिप्लोमा

**अन्य** : 1975 में राष्ट्रीय अग्निशमन विद्यालय में ट्रेनिंग (अग्निशमन) प्रशिक्षक, 1989 में नागपुर राष्ट्रीया सुरक्षा महाविद्यालय, नागपुर में ट्रेनिंग (नागरिक सुरक्षा प्रशिक्षक)

**विदेश यात्रा** : मॉरिशस, जाम्बिया, केन्या, तंजानिया दक्षिण अफ्रीका, साउथ रेडिशिया, नार्थ रेडिशिया

**लेखन कार्य :** 1960 से अब तक लेख, कवितायें स्थानीय समाचार पत्रों में प्रकाशित (भेल भारती, शिक्षा प्रदीप, भेल सन्देश, शंखनाखर) कला बीथी 'राष्ट्रीयता के स्वर, साहित्य साधना, शब्द-शब्द बोलेगा, चिन्मया मिशन वार्षिक पत्रिका, ज्ञान विज्ञान बुलेटिन!

**शौक :** सिक्के इकट्ठा करना- 100 देशों के सिक्के एवं 50 देशों की पेपर करेन्सी।

**योग :** 2001 में योग से बरकतउल्ला विश्वविद्यालय योग एवं विज्ञान में सर्टिफिकेट, 1999 से सेवानिवृतित के बाद योग शिक्षक के रूप में, नि:शुल्क योग, स्वास्थ्य के प्रति समाज में जागरूकता बढ़ाने हेतु समर्पित, अभी तक 352 से अधिक शिविरों का आयोजन विदेशों से आये लोगों को भी योग सिखाया।, पुरस्कार 1983 में सर्वश्रेष्ठ सुझाव पुरस्कार, 1992 में सर्वोच्च सुझाव पुरस्कार, 1994 से 1998 तक जागरूकता पुरस्कार, बाल साहित्य सम्मान 2012- कुशल योगाचार्य 20 अप्रैल 2013 में योगाचार्य सम्मान, 2013 इसके अलावा आप 22 सालों से योग गुरू तथा सिक्कों, नोटो की कई प्रदर्शनियॉ जगह जगह हुई उसमें प्रमुख, सप्रे संग्रहालय, रीजनल साइन्स सेन्टर, इन्टरनेशनल पब्लिक स्कूल चिन्मय मिशन भेल के सभी स्कूलों में प्रदर्शनियाँ लगाई गई।

**सम्पर्क** : 22- ए/2ए, साकेत नगर, भोपाल (मध्यप्रदेश), दूरभाष : 0755-2454431, 08989545731

**मेरा संग्रह 5 पैसे से 100 तक :**

बच्चों की मुस्कान राष्ट्र की शान नवम एशियाई खेल दिल्ली। 1909-1969 महापुरूषों के नाम की अनेक मुद्रायें महात्मा गांधी, इन्दिरा गांधी, राजीव गांधी, सरदार वल्लभ भाई पटेल, छत्रपति शिवाजी भगतसिंह, दादा भाई नवरोजी, सुभाषचन्द्र बोस जन्म शताब्दी, लोकनायक जयप्रकाश शताब्दी, पंडित जवाहरलाल नेहरू शताब्दी, देशबन्धु चितरंजन दास, डां, श्यामाप्रसाद मुखर्जी, भारत संसद के 60 वर्ष राष्ट्रीय अभिलेखाकार के 125 वर्ष, भारतीय रिजर्व बैंक की प्लेटिनियम जयंती श्री वैष्णवदेवी राष्ट्रीय एकता, 25वी स्वतंत्रता जयंती, अब्दुल कलाम आजाद 125 वी जयंती, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की 125वीं जयन्ती भगवान महावीर 2600वां जन्म कल्याणक, दाड़ी यात्रा के 75 वर्ष, संयुक्त राष्ट्र की 50 वी जयंती, योग मुद्रायें (अग्नि) एवं प्राणमुद्रा मदनमोहन मालवीय 150वीं जयन्ती, राष्ट्र मण्डल के 60 वर्ष, डा. बी.आर. अम्बेडकर की जन्मशती।

**विभागों के नाम प्रचलित मुद्रायें**

अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष, छोटे किसान, नियोजित परिवार खाद्य एवं पोषकता दिवस, वर्षा संचित खेत, पयर्टन वर्ष सेल्युलर जेल, अन्तराष्ट्रीय परिवार वर्ष राष्ट्र मण्डल संसदीय सम्मेलन, समेकित बाल विकास सेवा योजना, भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परिक्षक, जलजीवन का आधार एवं विश्व खाद्य दिवस, बालिका का भविष्य देश का, सम्पर्ण जीवन योग है, भारतीय टकसाल कलकत्ता 60 वर्ष। जैविक विविधता एवं खाद्य दिवस, बालिका भविष्य देश का। भारतीय रिजर्व बैंक प्लेटिनियम जयंती। नवम् एशियाई खेल। जैविक विविधता, विश्व खाद्य दिवस, खुशहाल बालिका भविष्य देश का। ग्रामीण महिलाओं की प्रगति, भारतीय कृषि संगठन। रेलवे के 150 वर्ष भोला गार्ड हाथी के बच्चें के हाथ में लालटेन, भारत के उच्चतम न्यायालय के 50 वर्ष, विश्व खाद्य एवं पर्यावरण दिवस (1989) विश्व खाद्य दिवस (1964) आयकर भारत के निर्माता 150 वर्ष (चाणक्य) श्रमजगत। स्वस्थ माँ से स्वस्थ शिशु, खाद्य एवं कृषि संगठन। मत्सय उद्योग, अग्नि एक्सपों फायर बोर्ड के 60 वर्ष अधिक अन्न उपजाओं।

स्वतंत्रता के 50 वर्ष। भारत के डाक विभाग के 150 वर्ष, भारतीय स्टेट बैंक के 200 वर्ष 1806-2006 भारतीय रिजर्व बैंक की स्वर्ण जयन्ती।

**भारतीय गणतंत्र की विशेष मुद्रायें-**

बच्चों की मुस्कान राष्ट्र की शान 5, 10, 25 पैसे 10 रूपये 50 रूपये, सबके लिये अनाज और मकान 5 एवं 10 पैसे, सबके लिये अनाज और मकान 5 एवं 10 पैसे (नियोजित परिवार सबके लिये अनाज), विकास के लिये बचाइये 5 एवं 10 पैसे, ग्रामीण महिलाओं की प्रगति 10 पैसे (एकता विकास एवं शान्ति), 20 पैसे- (1) पीतल (सुनहरी रंग) महात्मा गांधी, (2) कमल का फूल-हमारी संस्कृति का प्रतीक, (3) उगता हुआ सुरज एवं कमल, मत्सय उद्योग, विश्व खाद्य दिवस।

**25 पैसे** - नवम एशियाई खेल दिल्ली, विकास के लिये बानिकी, गेड़ा (स्टेन स्टील), ग्रामीण महिलाओं की प्रगति

**50 पैसे** - पंडित नेहरू, इन्दिरा गांधी, भारतीय रिजर्व बैंक की स्वर्ण जयन्ती, अधिक अन्न उपजाओं, मत्सय उद्योग, 25वीं स्वतंत्रता जयन्ती, राष्ट्रीय एकता, स्वतंत्रता के 50 वर्ष

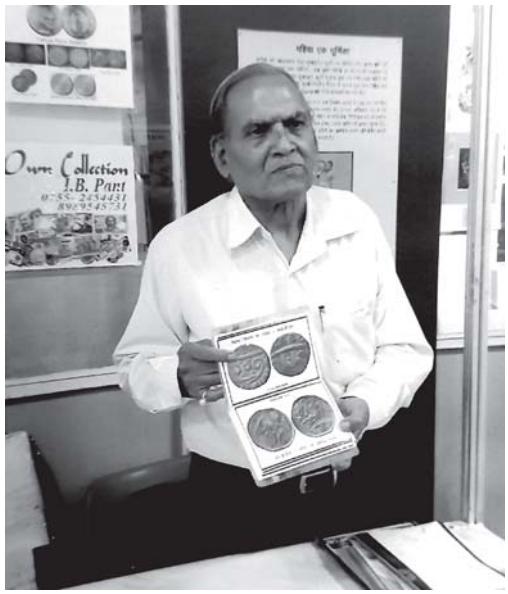


**1 रूपये की मुद्रायें** - अर्न्तराष्ट्रीय परिवार, छोटा किसान, अर्न्तराष्ट्रीय युवा वर्ष, सेल्यूर जेल (पोर्ट ब्लेयर), विश्व खाद्य एवं पर्यावरण, सन्त ज्ञानेश्वर, राजीव गांधी, डा. बी. आर. अम्बेडकर की जन्मशती, आठवां विश्व तामिल सम्मेलन सन्त तिरूवल्लूवर, स्वर्ण जयंती भारत छोडो आन्दोलन, छोटा परिवार सुखी परिवार, योग मुद्रा- प्राण मुद्रा, सरदार पटेल, वर्षा संचित खेती, बालिका भविष्य देश का, पर्यटन वर्ष, खाद्य एवं पोषकता, खुशहाल बालिक भविष्य देश का, संसदीय सम्मेलन, महात्मा गांधी, भारत डाक के 150 वर्ष, भारत के लोक नायक जय प्रकाश।

**दो रूपये की मुद्राये**- जैविक विविधता विश्व खाद्य दिवस, राष्ट्रीय एकता, डॉ आर. बिन्दू, सन्त तिरूवल्लवर (आठवां तामिल विश्व सम्मेलन), छत्रपति शिवाजी, देशबन्धु चितरंजनदास, छोटा परिवार सुखी परिवार, लुई ब्रेल, डा. बी.आर. अम्बेडकर, सरदार पटेल, जल जीवन का आधार, विश्व खाद्य दिवस, नवम एशियाई खेल दिल्ली, योग भोग मुद्रा, रेलवे के 150 वर्ष, जल जीवन का आधार, भारत के उच्चतम न्यायालय के 50 वर्ष, विश्व खाद्य एवं पर्यावरण, विश्व खाद्य दिवस।

**5 रूपये की मुद्रायें**- श्री माता वैष्णव देवी रंजन, भारतीय रिजर्व बैंक प्लेटिनियम जयन्ती, पं मदनमोहन मालवीय 150 वीं जयन्ती, रविन्द्रनाथ टेगोर 150 वीं जयन्ती, भारतयी टकशाल कलकत्ता, राष्ट्र मण्डल के 60 वर्ष, भारत के नियंत्रक एवं भत्ता लेखा परिक्षक, अब्दुल कलाम आजाद 125 वी जयन्ती, पं. नेहरू (जवाहरलाल) 125वीं जयन्ती, शहीद भगतसिंह जयन्ती, कु. कामराज, दादाभाई नवरोजी, दांडी यात्रा के 75 वर्ष, संयुक्त राष्ट्र की 50 वीं जयन्ती, श्री जगत गुरु नारायण गुरुदेव, सी. सुब्रमरियणम जन्म शताब्दी, मदर टेरेसा जन्म शताब्दी, पं. राजेन्द्र प्रसाद 125 वीं जयंती, भारतीय आयु विज्ञान एवं अनुसंधान परिषद 100 वर्ष, कूका आन्दोलन के 150 वर्ष 1857-2007, खाद्य एवं कृषि संगठन 50 वर्ष, श्रम जगत 1919-1994 (75 वर्ष), इन्दिरा गांधी (बड़ी मुद्रा) 1917-1984, स्वस्थ्य मां से स्वस्थ्य शिशु 1996, भगवान महावीर 2001 2600वां जन्म कल्याणक, भारतीय नगर विमानन की शताब्दी (1911-2011), संत गुरू राम सिंह आन्दोलन 150 वर्ष 1857-2007, भारत बैक के 200 वर्ष (1806-2006), पं मोतीलाल नेहरू 150वीं जयन्ती।

**दस रूपये की मुद्रायें**- बच्चों की मुस्कान राष्ट्र की शान, ग्रामीण महिलाओं की प्रगति, विश्व खाद्य दिवस, लोकनायक जयप्रकाश, नवम एशियाई खेल दिल्ली, भारतीय रिजर्व बैंक की प्लेटिनियम जयन्ती, श्री वैष्णव माता देवी, स्वामी चिन्मयानन्द, राष्ट्रीय अभिलेखाकार 125 वर्ष

**20 रूपये** - पंडित जवाहर लाल नेहरू जन्मभूमि 1989, 20 रूपये नया।

**50 रूपये की मुद्रायें**- बच्चों की मुस्कान राष्ट्र की शान, विश्व खाद्य दिवस 1981।

100 रूपये की मुद्रायें- ग्रामीण महिलाओं की प्रगति, भारतीय बैंक के 200 वर्ष, विश्व खाद्य दिवस, नवम एशियाई खेल, भारत डाक के 150 वर्ष, मदर टेरेसा जन्म शताब्दी, सी. सुमरिणयम जन्म शताब्दी, भारतीय आयुर्विज्ञान एवं अनुसंधान परिषद के 100 वर्ष, कूका आन्दोलन के 150 वर्ष, भारतीय नगर विमानन शताब्दी।

**प्राचीन मुद्रायें ( मेरे संलकन में ) -**

मोहम्मद गौरी, बादशाह अल्लाउद्दीन खिलजी, मांडू सुल्तान, ताबीज वाले सिक्का, मोहम्मद अकबर गाजी, शाह आलम बादशाह, हिजरी, शाह आलम बादशाह जूलस- 300 हिजरी, नजाद अजभाढ- 207 हिजरी। असलम साब जहान 302 हिजरी शाहजहॉ 302 हिजरी।

**विभिन्न राज्यों की मुद्रायें-**

भोपाल नवाब, जयपुर, रतलाम, ग्वालियर, होल्कर राज्य, लखनऊ नवाब, उदयपुर, चित्रकुट, सोरठा, कच्छ, जावरा, ट्रावनकोर, बडौदा, मैसूर (टीपू सुल्तान), निजाम हैदराबाद, गोआ। तूतीकोरन 1/8 फेनेम/अयूस 1540-1842

100 से अधिक- कुछ चांदी के सिक्के (मांडू सूलतान के ताबिज) 1. तिब्बत (चुंगू 2 मोहम्मद आलम गांजी 303 हिजरी बादशाह अल्लाउद्दीन खिलजी 3. चित्रकूट, उदयपुर, होल्कर राज, निजाम हैदराबाद

– 9 रूपये से दो आना, रानी विक्टोरिया महारानी विक्टोरिया।

**प्राचीन दुलर्भ सिक्कों का संग्रह –**

मोहम्मद गजनवी, महमूद गजनवी, मोहम्मद खिलजी, मोहम्मद बादशाह अदान मिनाली उस्मान अली स्वाले, शाह आलम आबाद (नबाहाबूल) ब्लद मोहम्मद (महिउद्दीन) हि 320 (मोहम्मद शाह आलम हबूस), शाहबद कुल बुर्श शाह अननूर, मोहम्मद एबिन (कलमा) अकबर उद्दीन बादशाह अली, मोहम्मद अकबर गाजी, अफरान शानी हि. 110, मोहम्मद अलाउद्दीन फात्मा हसन, हसैन मिजान (शिया हकुमत), महाराजा जोरजून अतातक–खत, बदोरत बरनाल महारख बरनाल दारद सनम, शाह आलम बादशाह जूलस 300 हि, जाजर शाह हुसब 1111 हि, बादशाह अलाउद्दीन खिलजी (चांदी) 1296–1306, अतद अहमीन हल्का अतवल्ला 83 हि, सररबहु बाला 126 हिं 207 हि 302 हि, सररबहु बाला 269 हि, शाह मरबढ शाह सिलस सिलवस एक सीफापाई, नजाद अजयाढ 207 हि, शाह आलम बादशाह जायूस 307 हि, बसलमसाब जहान 302 हिं (3 सिक्के), एडवर्ड पाव आना – 196 हि (बन्दोशाह अजदी अमरातान एडवर्ड मार्कबर एडवर्ड, ईमसरर बहुवाला– 1310 हिं, अलहादी भोजपाल मोटा– 100 हि, 606 हि दो सिक्के, काल, रवि (गुरूमुखी), भोपाल पावआना 1265 हि (2) शाहजहां बेगम भोपाल, भोपाल जवेसी– 1 पैसा (नवाब) 1292 हि (हुस्न सदुर सरमाला जर्ब), हमतिद हक्समीज जयपुर, राजाधिराज उदयपुर, फातमा अलीमखदूम शाह 110 हि, भोपाल रियासत पाव आना, सरर बहुवाला 269, 606 हिजरी, असलम साबजहान– 302 हि 6 सिक्के, शाहजहां 302 हि लखनऊ, लखनऊ नवाब रईस, अलवाहा अरैहमा सुलतान– 161 हि, नजाद अजमाढ 207 हि, शाहजहां बेगम नीम आना (तलवार, मशाल) भोपाल 1786 सन्, भोपाल रियासत पाव आना, सुलतान अलताफ आलीशाह महमूद, पंचमार्क सिक्का, शाह आलम II, रूमिगुलाम (रसुदोल्ला), बादशाह आलम अलतवी आल मंगीर प्प 1900 सन्, नस अर्द वाईस भोपाल नवाब, महमूद शाह सुल्तान, बहराम जबीन टीपू सुलतान हाथी 1772 128 हि (पाव आना)(मैसूर), जरोबर बरनाले, रतलाम– एक पैसा 1945, सोरठ सरकार 1 दोकडा सं 1945, जावरा सरकार सिक्का, कच्छ राज्य महाराओ श्री विजयराज्य कच्छ ढबुसं 2000, महराओ श्री खगार जी सवाई बहादु दोढ दोकडों 1947 कच्छ, ट्रावनकोर राज्य, मोहम्मद आलम गाजी 303 हिं– चांदी का सिक्का, गोवा राज्य– 1. 10 सन्टोबोज– 1958, 2. 1/4 रूपया – 1952, चित्रकुट उदयपुर – आधा आना दोस्ति लेघन 1999, चांदी के सिक्के 2, जयपुर राज्य महाराजाधिराज सवाई मानसिंह एक आना सं 1943– एकआना 1944, ग्वालियर – 1. श्री माधवराव सिंधिंया श्री जीवाजी राव शिन्दे 2. आलि जहाँ बहादुर, आधा आना (पाव आना), होल्कर राज्य – महाराजा शिवाजीराव पाव आना सं, होल्कर बहादुर पाव आना सं 1948 इन्दौर आधाा आणा सं., बडौदा सरकार – श्री गायकवाड सरकार श्री सयाजीराव गायकवाड, 1 पैसा, दोन पैसे, श्री सयाजीराव मं गायकवाड सेना खास खेल शमशेर, बहादुर दोन पैसे, रतलाम– एक पैसा (हनुमान) तुतीकोरन, निजाम हैदराबाद – चांदी के

सिक्के एक रूपये से दो आना एवं अन्य सिक्के – 1 पाई तक छेद वाला सिक्का तांबे का, तिब्बत – चांदी का सिक्का चुंगू, रूपया, चांदी के सिक्के (ईस्ट इ.क.), विलियम IV – 1835, रानी विक्टोरिया – 1840, महारानी विक्टोरिया – 1862, एडवर्ड 1903, जार्ज ट – 1917–1944, एडवर्ड 1/2 रूपया– 1907, आठ आना– 1919, पंजम 1/4 आना, एडवर्ड– 1906, दो आना– 1905।

**छेद वाली मुद्रायें–**

फ्रान्स, चायना, ईस्ट अफ्रीका, भारत, हैदराबाद, सौरठा, स्पेन, नार्वे, डेन्मार्क, पाकिस्तान, नेपाल, जापान, ग्रीस

**ईस्ट इंडिया कम्पनी की मुद्रायें–**

1845 आधा आना कोई नही 4 नग ये मुद्रायें इसिलिये विशेष है।, 1835 एक चौथाई 4 नग इन पर कोई छायाचित्र नही है, एडवर्ड– 1905, 1907, 1908, 1910, 8 नग

**विभिन्न देशों की छेद वाली मुद्रायें–**

1. जापान–15– 2. नेपाल–9 3. पाकिस्तान–9 4. पुर्तगाल–9 5. ईस्ट अफ्रीका–2, ग्रीस–2 7. स्पेन–20 8.चायना–2 9. फ्रान्स 10.नार्वे–4 11.डेन्मार्क–5 12.भारत–15 (निजाम हैदराबाद–2–सोरठ–2 (75 मुद्राये))

**विभिन्न देशों की कागजी मुद्रायें–**

अमरीका 1, 5 डालर, आस्ट्रेलिया– 5 डालर, अर्जनटायना 19 पैसों, टीनाड एन्ड टैबोको 1 डालर, सिंगापुर 1, 2 डालर, भलाया डालर, भुटान निट्रोयम, बहरीन 1, 1/2 दीनार, बलगारिया 1 लेव, बंगलादेश 7, भारत 30, चायना 125.10 यूआन, कोलेम्बिया 1000, 2000, क्रोसिया 5–10 कवा, इटली 500, 1000 लीरा, ईजीप्ट 1 पोण्ड, इथोपिया 100 बीर, जार्जिया 1 लारी, होगकांग 10 डालर 100, घना 1 केडी, इन्डोनेशिया 1000 रूपया, ईरान, ईराक 500 सेरे, कुवैत 1/2 दीनार, म्यामार 10 क्यात, मालदीप 10, 20, नेपाल 1–50–20, नाईजीरिया 5 500 नैरे, नीदरलैण्ड 1 रिंग 50 से, मारीशस 506 रू., ओमान 250 दिनार 100, पाकिस्तान 1 रूपया, फिलीपाईन्स 2, 10, 20 पैसो, पौलेण्ड 50–10 त्रिलोरी, सेमानिया 1–2000 ली, सुडान– 20 पोन्ड 100 ब्याला, सऊदी अरब 5,10,1–5,

सूरीनाम 25, श्रीलंका रू. 10-500, स्वेडन 10 कोनर, दक्षिण अफ्रीका 10 रेन्ड, लोअस 5 कीपास, ताकिस्तान 5 लारी, यूरो 5, कतर 1 रेयाल, कतर एवं दुबई, थाईलेण्ड 10, 20, 20, 20 भाटस, यू.ए.ई. 5-10 दीहरूमस, तुर्कीस्थान ताजिकस्तान, कोरिया दक्षिण 1000 वोन, युगोस्लवाकिया 10 दिनार, तंजानिया 10 शि, यमन 50 रेयाल, बालरूस 50 100 रेयाल, यू.एस.एस.आर., वियतनाम डोगंस 500,100,2000, टर्की 500000, सशेल्सदीप 25 रू. सर्बिया 100 दिनार, 50 सेन्ट से लेकर 5 लाख कागजी मुद्रायें विभिन्न देशों की 200 से अधिक 1 डालर से 100 डालर तक, 1 से 1, 2, 5, 10, 20, 25, 50, 100, 200, 500, 1000, 2000, 5000, 10000, 20000 एवं 5 लाख तक के विदेशों की पोलीमार मुद्राये- आस्ट्रेलिया 5 पौंड ब्रिटिश पोन्ड, हांगकांग- 10 डालर बल्गारिया 1 लेव नेपाल का 10 रूपये मालदीप 10, 20 रूपये रोमानिया 1 ली. 2000 ली., वियतनाम- 10 हजार डोंग, 500 से लेकर 10000 तक की मुद्रायें ईरान, इराक, जापान, इन्डोनेशिया, टर्की, द. कोरिया मोजेम्बिक 500, 1000, 2000, 5000, 10000 टर्की 1 लाख

**विदेशी मुद्रायें ( कागजी )-**

नेपाल- गाय एवं नदियों, शेर, भारत- गाय घोडा हाथी गेंडा, यू. ए.ई.- हिस मारीशस हिरन, तन्जानिया- शेर एवं हिरन (बारहसिंगा) हाथी, क्रोसिया- मछली, इटली। यूएई- हिरन, कनाडा-बारहसिंगा, हिरन। मारीशस- हिरन, आयरलैण्ड- घोडा जंगली भेड, आस्ट्रेलिया- कंगारू

**प्रसिद्ध मीनार एवं दीवार-**

पीसा की मीनार- ईटली के यूरो पर (सेन्ट), बर्लिन की दीवार- जर्मनी के यूरो सेन्ट पर।

**मन्दिर-**

श्री गोरखनाथ - नेपाल श्री स्वयंभू चेतन्य, जानकी मन्दिर- नेपाल, वागेश्वरी मन्दिर- नेपाल।

**विभिन्न देशों की मुद्राये ( कागजी )-**

अमरीका- डालर, आस्ट्रेलिया- डालर, अर्जनटाईना- पैसो, ट्रीनाडएडटबेको -डालर, मलाया - डालर, भूटान- निट्रोगम, बहरीन- दिनार, सिंगापुर- डालर, बल्गारिया - लेव, बंगलादेश - टका, वर्मा- क्यात, चायना- यूआन, कोलम्बिया- पैसों, कम्बोडिया- रीलस, क्रोसिया- कूना, ईटली - लीरा, इजिप्ट- पोन्ड, इथोपिया- बीर, जार्जिया- लारी, हांगकांग- डालर, धाना- केडी, इन्डोनेशिया- रूपया, ईरान-रेयाल, कुवैत- दीनार, म्यांमार- क्यात, मालदीप - रूपया, 27 मलेशिया- रिंगिंट, नाईजीरिया- नैरे, मारीशस- रूपया, 30. नेपाल- रूपया, नीदरलेण्ड गिल्डन, ओमान- ओ. रियाल, पाकिस्तान- रूपया, फिलीपाइन्स-पैसो, पौलेन्ड-ज्योटी, रोमानिया- ली, सुडान- दीनार पोण्ड, सऊदअरब - रेयाल, सूरीनाम- गिल्डन (गुल्डन), श्रीलंका- रूपया, स्वीडन-क्रोनर, द. अफ्रिका-रेन्ड, लाओस- कीपस, यूरो-यूरो, थाईलैण्ड- भाटस, कतर - रेयाल, यूएई - दिरम, तार्किस्तान -लारी, द. कोरिया- वोन, ताजकिस्तन- सोमिनी, युगोस्लवाकिया -दीनार, तन्जानिया- शिलिंग, यमन- रेयाल, बाल रूस- रूबल, वियतनाम- डोंग, भारत - रूपया, टर्की- लीरा (टरकिश), सेशल्सदीप- रूपया, सर्बिया- दीनार, विदेशों की कागजी मुद्रायें 500 से अधिक

**विदेशी मुद्राओं का संग्रह -**

1/2 पैनी, 1/2 सेन्ट, 1/2 पेन्श, 1/2 पुन्ट से लेकर, 1, 2, 3, 4, 5, 10, 15, 20, 25, 50, 100, 200, 250, 500, 1000, 2000, 5000, 10000, 100000, तक के मुद्रायें

डॉलर - अमरीका, न्यूजीलैण्ड, आस्ट्रेलिया, मेकसिकों, ताईवान, मलाया, लायब्रेरिया, सिंगापुर, हांगकांग, गुयाना, कनाडा, सूरीनाम, जिमबांबे, ट्रिनान्ड एन्ड टोबेको, बहमास। यूरो - फ्रांस, जर्मनी, इटली, स्पेन, आयरलैण्ड, ग्रीस, निदरलैण्ड, लाटिवा। रेयाल - सऊदी अरब, ओमानी रेयाल (बैयासा), यमनि रेयाल, कतारी रेयाल। दिनारस - बहरीन, इराकी दिनार, कुवैती दिनार, लीवियन दीनार, जोर्डनियन दिनार, सरबियन दीनार, युगोस्लवाकिया दीनार, ट्रयूनियसियन दीनार, अलजेरियन दिनार (सेन्टीम)। रूपया - भारत, नेपाल, इन्डोनेशिया, पाकिस्तान, श्रीलंका, मालदीप, मारीशस, सशेल्सदीप।

**विदेशी मुद्रायें-**

| | | | |
|---|---|---|---|
| आधी पैनी (1914-1931) (क्राउन) | आधी पैनी (1972, 73) (पौन्ड) | आधा पुन्ट (1928) आयरलैण्ड | आधा पेन्स |

**ब्रिटिश** - एक स्पेना 2 लीपा 3 कोपक 4 पैसा 5 कीपक, 10 दीनारा 15 कोपक 20 सेन्टीमनी 25 हलाला, 50 लीरा 100 शि. 200 श. 200 लीरा 200 लीरा 500 येन 500 वोन 250 रेयाल 250 सेन्ट 1000, 2000, 5000, 10000, मेटाकिन्स 100000 टर्कीस लीरा 1/2 पेन्स 1/2 आधा पैनी आधा पैनी 1 स्पेना - 100000 तक की मुद्रायें - पौन्ड, डालर, फ्रेक, पैसो, येन, बोन कूना शिलिंगस रेयाल दीनार स्पेना क्रोना क्रोनर ज्लोटी फील्स लोक वेनी स्कडो।

अनेक प्रकार के रूपये यूयान हलाला दीरमस, अनेक देशो के डालर, कालोन, डोन, बबूआ, मार्क इसके अलावा 150 देशों के सिक्के, 19 देशों के डॉलर, 5 देशों के पौन्ड, 6 देशों के रियाल तथा 12 देशों की दिनार मिलाकर 35000 सिक्के मेरे संग्रह में है। इसमें 2000 यू.एस.ए. के सम्मिलित है। ■

# वजन नापने के विभिन्न मापों का अनोखा संग्रह

रंजीत कुमार झा

नाम – रंजीत कुमार झा
पता- अशोका-गार्डन -भोपाल (म.प्र.)
शौक्षणिक योग्यता-विधुत अभियन्ता (सोलर-ऊर्जा)
पुरस्कार- लिम्का बुक ऑफ रेकॉर्ड (तीन बार) (2017, 2018, 2019)

रणजीत कुमार झा (26 जनवरी 1989) मूल रुप से दरभंगा, बिहार से हैं और वर्तमान में भोपाल (म.प्र) में 108 भारतीय रियासतें हैं जो पूर्व स्वतंत्र भारत के 25 रियासतों से अलग-अलग आकार, लोगो, डिज़ाइन और माप में पुराने वजन का सीर / पुराना है। । पेशे से सौर उर्जा संयंत्र के डिजाइन इंजीनियर - झा भोपाल और रियासत-ई-भोपाल (मछली का प्रकार), इंदौर, ग्वालियर, मेवाड़, आगरा और अजमेर फाउंड्री, प्रतापगढ़, डूंगरपुर, कैथल, दिल्ली, सारण दस राज्य -1897, संयुक्त राजस्थान, राजस्थान टकसाल, जोरा, राजकोट से द्रष्टा हैं। , जयपुर, रामपुर, धौलपुर, नरसिहगढ़, गुडला, कच्छ, लीभी, बंगाल रियासत आदि उनका संग्रह छटांक, पाव छटांक, आधा (1/4) द्रष्टा, 1 सर्ग - 80 तोला, ढाई (21/2) द्रष्टा, 1 पसेरी 5 सीर आदि।

लिम्का रिकॉर्ड धारक और भारत में सिंगल प्रोफेशनल वेट कलेक्टर हैं, जिनके पास रत्ती, टोला और खरबूजा (अफीम) वजन का संग्रह है।

**संग्रह की प्रेरणा-**

दादी द्वारा बंगाला स्टेट का कि पुराना सेर दिया गया। संग्रह प्रदर्शनी-क्षेत्रीय विज्ञान केन्द्र -भोपाल 1215-2020 रंजीत कुमार झा, जो कि एक विद्युत अभियन्ता है उन्हें संग्रह करने का शौक शायद बचपन से ही है।। पुराने चीजों को सम्हाल कर रखना, उसके बारे में पढ़ना और उसका संग्रह करना रंजीत जी के व्यक्तित्व में है। इसी प्रवृत्ति को उजागर करते हुऐ भी रंजीत झा ने आज भारत वर्ष में सेर (वजन) संग्रह का एक नायाब संसार बनाया है। बाजार में बहुत तरह के संग्रह और संग्रहकर्ता हैं लेकिन आजादी से पूर्व भारतीय रियासतों के बॉट का संग्रह करने वाला

व्यक्ति शायाद गिनती के एक -दो ही है।। इंजीनियरींग के छात्र होने के कारण श्री झा ने इस संग्रह के भिन्न-भिन्न पहलुओं का उध्ययन भी किया है।। आज वर्तमान में रंजीत झा के पास 500 के ज्यादा बॉटों का संग्रह है।।

**इतिहास-**

वैसे तो बाँट का इतिहास बहुत पुराना और रोचक है।। बाँट का इतिहास मानव सभ्यता के विकास से जुड़ा है। प्राचीन काल में इन्डस (Indus) वैसी Civilization । सिन्धु घाटी सभ्यता। जो कि 4000 B.C के समय का बाँट लोयल (गुजरात) के संग्रहालय में सुरक्षित हैं सिन्धु घाटी सभ्यता से लेकर वर्तमान समय का मैट्रिक सिस्टम-बॉट सदैव से व्यापार का केन्द्र बिन्दु रहा। पुराने समय में बाँट अर्थात लौह युग से पहले-

महाजनपद (म.प्र. में उज्जैन महाजनपद था) के समय-काल में बिना मुहर के पत्थर या अनाज के माधयम से व्यापार होना था। महाजनपद के समय में बाँट का बिना मुहर पत्थर के रूप में चलन था। कुछ पत्थर के टुकडे पर ब्राम्ही भाषा में स्वस्ती लिखा मिला है।

मुगल सलतनत के आरंभ में ही प्रशासन ने एक नाप-तौल का युनिट बनाया। जो कि आगे चलकर एक बेंच मार्क बना :- 4 चावाल = 1 धान, 4 धान = 1 रती, 8 रती = 1 माशां, 12 माशां = 1 भरी, 24 रती (36 घना) = 1 तक, 1 भरी = 11.66375 ग्राम, 3.75 troy ounce = 10 भरी

**बादशाह अकबर शासनकाल :-**

अकबर ने नाप तौल को एक व्यवस्थित रूप दिया। इन्होंने (जौ) को एक लम्बाई का पैमाना माना।

**1833 से पूर्व बाँट का रूप :-**

8 रती = 1 मांशा (=0.9071856 ग्राम), 12 मांशा = 1 तोला (= 10.886227), 80 तोला = 1 सेर (= 870. 89816), 40 सेर = 1 मन (= 34.835926 कि.ग्राम), 1 रती = 1.75 जै (= 0.11339825

ग्राम), (1 जै = 0.064799 ग्राम), सन् 1833-रूपया और तोला वजन को 180 जै के रूप में रखा गया। 1 छटाक = 5 भरी, 1 अध-पाव = 2 छटाक = 1/8 सेर, 1 पाव = 2 अध-पाव = 1 सेर, 1 अघोर = 2 पाव = आधा सेर, 1 सेर = 2 अघोर = 4 पाव = 16 छटाक, = 80 तोला = 933.1 ग्राम, 1 सावा -सेर = 1 सेर + 1 पाव सेर, 1 दसासेर = 2 सावा सेर = 2.5 सेर, 1 पसेरी = 2 अधोसेरी = 5 सेर, 1 दसेरी = 2 पसेरी = 10 सेर, 1 मन = 4 पसेरी = 8 पसेरी = 40 सेर

**आजाद भारत :-**

सन् 1956 में आजाद भारत ने standard of weight and measurement act ls metric system को लाया। आजाद भारत ने पुराने राजे-रजवाड़े के बाँट को खत्म कर दिया। आज के बाँट को घर में लोहे के इतने पुराने बाँट को सुरक्षित रखना -एक चुनौति से कम नहीं है।

**1800 ईस्वी :-**

राजा एवं रजवाडे के 1857 ईस्वी के मराठा युद्ध के बाद अंग्रेजी हुकुमत द्वारा सिक्के ढालने पर प्रतिबंध को अपने राज्य के बाँट ढलवा करके किया। 1857 में युद्ध के बाद अंग्रेजों से राजवाडों पर सिक्के छापने पर प्रतिबंध लगा दिया। तब समस्त राजा एवं रजवाड़ो ने अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए अपने-अपने राज्य एवं राजा के नाम पर बाँट को ढालने लगे। यहीं

से राजवाडे बाँट की शुरूआत होती है। अंग्रेजों ने भी जॉन v का बांट निकाला। बाद में चलाया 1960 वे दशक में भारत में matric system आया तो आजतक चल रहा है।


# पत्रिका ही नहीं, एक रचनात्मक अनुष्ठान

## पत्रिका मुफ्त मांग कर, कृपया हमारे अनुष्ठान को आघात न पहुँचाएं

**'कला समय'** के सदस्य बनें- ❍ पत्रिका की वार्षिक/द्वैवार्षिक /आजीवन सदस्यता ग्रहण करें। सदस्यता शुल्क मनीआर्डर, ड्राफ्ट, ऑनलाइन अथवा व्यक्तिगत रूप से भुगतान किया जा सकता है।

**'कला समय' की एजेंसी के नियम-** ❍ आपके गांव, कस्बे, शहर में सांस्कृतिक पत्रिका 'कला समय' की एजेन्सी के लिए सम्पर्क करें। ❍ कम से कम दस प्रतियों से एजेन्सी शुरू की जायेगी। ❍ पत्रिका कुरियर अथवा रजिस्टर्ड बुक पोस्ट से भेजी जायेगी। डाक खर्च एजेन्सी को वहन करना होगा। ❍ कमीशन, प्रतियों की संख्या के आधार पर।

**स्थायी तथा सम्पादकीय पता और दूरभाष क्रमांक के साथ सम्पर्क करें-** जे-191, मंगल भवन, महावीर नगर, ई-6, अरेरा कॉलोनी, भोपाल- 462016 Email : bhanwarlalshrivas@gmail.com मो. 9425678058, 0755-2562294

**लेखकों/कलाकारों से** ❍ कला, संस्कृति और विचार के अछूते पहलुओं पर सृजनात्मक, शोधात्मक और सूचनात्मक आलेख, टिप्पणियां, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, ललित निबंध, कविताएँ, छायाचित्र, रेखांकन तथा शोध आमंत्रित हैं। ❍ रचनाएँ कागज के एक ओर टाइप की हुई तथा मौलिकता का प्रमाण पत्र संलग्न हो। कृपया रचना के साथ पर्याप्त डाक टिकिट लगा लिफाफा भी संलग्न करें। रचनाएँ और चित्र ई-मेल से भी भेजे जा सकते है।

**प्राथमिकता के साथ :** Chanakya फोंट / वर्ड फाइल / PDF फॉर्मेट में ही भेजें।

**अनुरोध : वे सदस्य जिनका वार्षिक / द्विवार्षिक सदस्यता शुल्क समाप्त हो रहा है, कृपया अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करायें। सदस्यों को पत्रिका साधारण डाक से भेजी जाती है। नहीं मिलने की स्थिति में सदस्यता शुल्क के साथ ` 120/- का प्रतिवर्षानुसार रजिस्टर्ड डाक शुल्क अतिरिक्त भेजा जाना होगा।**

**-संपादक**

# स्पेनिश कवि अरनेस्तो कार्देनाल की कविताएं

विश्व कविता में आज निकारागुआ में जन्मे विश्व विख्यात स्पेनिश कवि अरनेस्तो कार्देनाल की दो चर्चित कविताओं का अनुवाद। पंचानवे वर्ष की उम्र में 3 मार्च 2020 को उनका देहांत हुआ है। अपने एक साक्षात्कार में उन्होंने कहा था – 'जीजस क्राइस्ट ने मुझे मार्क्स की तरफ जाने की राह दिखाई।'

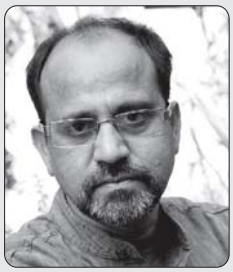

**अनुवाद : मणि मोहन**

प्रो. मणि मोहन अनुवाद के क्षेत्र में लंबे समय से सक्रिय हैं। अनुवाद के अलावा वे समकालीन हिंदी कविता के समर्थ कवि भी है। अनुवाद के माध्यम से वे हमें विश्व साहित्य की विरासत और हलचल से अवगत कराते रहते हैं।
सम्प्रति: शा. स्नातकोत्तर महाविद्यालय गंज बासौदा में अंग्रेजी के प्राध्यापक। मो.- 09425150346

रेखांकन : डॉ. भवानीशंकर शर्मा

## मर्लिन मुनरो के एक प्रार्थना

प्रभु

स्वीकार करो इस खूबसूरत स्त्री को दुनियाँ जिसे मर्लिन मुनरो के नाम से जानती थी। हालांकि यह उसका वास्तविक नाम नहीं था। (परन्तु आप उसका असली नाम जानते हैं, एक आनाथ लड़की, छ: वर्ष की उम्र में जिसके साथ बलात्कार हुआ; दुकान पर काम करने वाली वह लड़की जिसने सोलह की उम्र में आत्महत्या की कोशिश की)

अब वह अपने सामने है
बिना किसी मेकअप के
बिना अपने प्रेस एजेंट
बिना छायाकारों
और आटोग्राफ के लिए पागल भीड़ के बिना
एक अंतरिक्ष यात्री की तरह
अंतरिक्ष की रात्रि का सामना करती
एक तन्हा लड़की।

जब वह छोटी थी तो उसने एक सपना देखा था
कि वह चर्च में नग्न खड़ी थी
(टाइम अकाउंट के अनुसार)
सजदे में झुकी भीड़ के सामने,
उनके सिर फर्श पर टिके थे
और इस वजह से उसे पंजों के बल
चलना पड़ा था।
आप एक मनोचिकित्सक से बेहतर
जानते हो सपनों को।
चर्च, घर, गुफा सब के सब कोख की
सुरक्षा की ओर संकेत करते हैं
परन्तु इसके अतिरिक्त भी ...
जो सिर हैं वे उसके चाहने वाले हैं, यह स्पष्ट है
(अन्धकार में प्रकाश की किरण की नीचे
अनगिनित सिर)
परन्तु यह पवित्र जगह
ट्वेंटीथ सेचुरी फॉक्स का स्टूडियो नहीं है।
संगमरमर और स्वर्ण से बनी
यह इबादतगाह उसकी देह है
जिसमें मनुष्य का पुत्र हाथ में
चाबुक लिए खड़ा है
टेंव्टीथ सेंचुरी फॉक्स स्टूडियों के
मालिकों को खदेड़ता हुआ
जिन्होंने तुम्हारे प्रार्थना घर को
चोरों की गुफा में बदल दिया है।
प्रभु
पाप और रेडियोधर्मिता से प्रदूषित इस दुनियाँ में
किसी दुकान में काम करने वाली लड़की पर
सारे इलज़ाम मत लगाओ
जिसने दुकान पर काम करने वाली
किसी आम लड़की की तरह
स्टार बनने का सपना देखा था।
उसका स्वप्न यथार्थ में बदल गया
(किसी फ़िल्मी यथार्थ की तरह)
हमारे अपने जीवन की कथा
और पटकथा असंगत थी।
उसे क्षमा करें प्रभु
हमें भी क्षमा करें
हमारी बीसवी शताब्दी के लिए।
इस कोलॉसल सुपर प्रोडक्शन के लिए
जहां हम सब काम करते थे।
वह प्रेम की भूखी थी और हमने
उसे नींद की गोलियां दीं।
चूँकि हम सन्त नहीं थे इसलिए अवसाद से
बचने के लिए मनोचिकित्सा सुझाई गई थी।
याद है, प्रभु ... कैमरे के प्रति उसका भय
और मेकअप के प्रति उसकी घृणा
फिर भी हर सीन के लिए उसकी

नए मेकअप के लिए ज़िद
और किस तरह पनप रहा था
उसके भीतर एक भय
जिसकी वजह से वह स्टूडियो के लिए
अक्सर लेट हो जाती थी।
किसी आम सेल्सगर्ल की तरह
उसने स्टार बनने का सपना देखा था।
और उसका जीवन मायावी था
किसी स्वप्न की तरह
मनोचिकित्सक जिसकी व्याख्या का
रिकार्ड संधारित करते थे।
उसकी रूमानियत बन्द आँखों के साथ
किसी चुम्बन की तरह थी
और जब उसने उन्हें खोला
तो महसूस किया कि वह
फ्लडलाइट के ठीक नीचे थी
(जैसे ही उन्होंने फ्लडलाइट बन्द की)
और उन्होंने उस कमरे की दोनों दीवारें हटा दीं
(वह एक फिल्मी सेट था)
निदेशक अपनी पटकथा के साथ चला गया
क्योंकि शॉट फिल्माया जा चुका था।
या फिर एक नौका में समन्दर की कोई सैर,
एक चुम्बहन सिंगापूर में
रियो में विंडसर के ड्यूक और
उसकी पत्नी के साथ एक नृत्य
एक सस्ते अपार्टमेंट की छोटी सी
बैठक में देखा जा चुका सब कुछ।
फिल्म खत्म हुई बिना अंतिम चुम्बन के।
अपने बिस्तर पर वह मृत मिली थी
और उसका हाथ टेलीफोन पर था।
और गुप्तचर कभी नहीं जान पाये
कि वह किसे फोन करना चाहती थी।
उसकी हालत
ठीक उस व्यक्ति की तरह थी जिसने अपने
एकमात्र मित्र की आवाज
सुनने के लिए फोन किया था
और सुनी थी एकमात्र आवाज
रिकॉर्डिंग की – रॉन्ग नम्बर
या फिर
उस व्यक्ति की तरह जिसे
गुंडों ने घायल कर दिया था
कटे हुए टेलीफोन तक पहुंचने से पहले।
प्रभु
वह कोई भी रहा हो जिसे वह
फोन करने वाली थी
और फोन नहीं किया
(और सम्भव है वह कोई भी नहीं था या फिर कोई
था जिसका नम्बर लॉस एन्जिल्स की फोनबुक में
नहीं था)
आप उस फोन का जवाब जरूर दें।

## तोते

मेरा दोस्त मिशेल एक सैन्य अधिकारी है
होंदुरेन सीमा पर, सोमाटो के निकट
और एक दिन उसने मुझे बताया
कि उसने प्रतिबंधित
प्रजाति के तोतों को पकड़ा
जिन्हें तस्करी से अमेरिका भेजा रहा था
जहाँ वे अंग्रेजी बोलना सीखते।
यहाँ कुल 186 तोते थे
जिनमें से 47 तोते अपने पिंजरों में
दम तोड़ चुके थे
मेरा मित्र इन सभी तोतों को
वापिस उस जगह ले गया
जहाँ से उन्हें पकड़ा गया था
और जैसे ही लॉरी पहाड़ों के निकट
उस जगह पहुँची जहाँ तोतों का घर था
सभी तोते उत्तेजित हो गए
अपने पंख फड़फड़ाना शुरू कर दिए
टकराने लगे पिंजरों की दीवारों से।
और जब खोले गए पिंजरे
तो सब के सब बाहर निकले
तीरों की बौछार की तरह।
मैं सोचता हूँ
क्रांति ने ठीक यही किया था
हमारे लिए भी
उसने मुक्त किया था पिंजरों से
जहाँ बंदी बनाया गया था हमें
अंग्रेजी बोलने के लिए
उसने हमें वह मुल्क लौटाया
जहाँ से हम बेदखल हुए थे,
हरे भरे पहाड़ लौटाए तोतों को
सुअपंखी साथियों ने ..
परन्तु वहां 47 थे जो मारे गए।

■

गीत

# राम अधीर के गीत

**राम अधीर**

**जन्म- 12 अप्रैल 1935, आर्वी जिला वर्धा ( महा. )**
**प्रकाशन : सूरज को उत्तर दो, धूप सिरहाने खड़ी है, बूंद की थाती, वह नदी बीमार है,लाला जगदलपुरी की बस्तर की लोक कथाओं का सम्पादन तथा धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, कादम्बिनी, नवभारत टाइम्स, राजस्थान पत्रिका, नई दुनिया, इंदौर, सान्ध्य मित्र, दैनिक, ट्रिब्यूनल, पंजाब केसरी, दैनिक भास्कर आदि रचनाएं प्रकाशित।**

## पक्ष निर्णय कहेगा

तुम अदालत में जिरह के नाम पर
कुछ भी कहो पर
यह सुनिश्चित है कि
मेरे पक्ष में निर्णय रहेगा।
तुम कहोगे मैं गुनाहों को
शरण देता रहा हूं।
और आहत फूल के सिर पर
चरण देता रहा हूं।
किन्तु, मैं निर्दोष घोषित हो चुकूंगा देखना तब
देवता तक को व्यथा होगी, घना संशय रहेगा।
अनगिनत अपराध मेरे हैं, सभी तो जानते हैं।
और मेरी आदतें काफी
बुरी हैं, मानते हैं।

रेखांकन : डॉ. भवानीशंकर शर्मा

मैं पराये आंसुओं में डूबकर यह कह रहा हूं
जिंदगी का दर्द समझाऊं, यही आशय रहेगा।
रात भी ऐसी नहीं है याद जिसने हो सुलाया।
हां, मुझे इन परिचितों की
भीड़ ने सचमुच भुलाया।
मैं हजारों बार अपने आप से लड़ता रहा हूं
क्योंकि मेरे बाद जीवन का यही परिचय रहेगा।

## छूट जायेगी नगरिया...

मन हुआ अवधूत जबसे ज्ञान चौंतिसा पढ़ा है
डाल दे तन पर जुलाहे, हाथ करघे की चदरिया।
यह नहीं होगी कभी मैली कि
ओढ़ूंगा जतन से।
यह मुझे क्या, आत्मा को
भी बचायेगी पतन से।
रात भर कहरा सुना अब भोर में साखी सुनूंगा
कुछ सबद सहचर रहे तो बीत जायेगी उमरिया।
आत तक अनभिज्ञ हूं मेरे
पिया का घर कहां है
किस जगह काशी बसी है।
और वह मगहर कहां है
पीठ पर कब तक चलूंगा लादकर इन पोथियों को
पांव भी थकने लगे हैं और लंबी डगरिया।
छांव तक करती रही है,
छल मनुज से जिन्दगी में।
इसलिए सब सार आकर
बस गया है बंदगी में।
ब्रह्म मुझको मिल न पाया, मंदिरों में या मठों में
दीप जब घट का जलाया पास में दीखा संवरिया
ज्ञान का सागर कबीरा ने
मथानी से मथा है।
और अनहद-नाद निरगुनिया
जमातों की कथा है।
प्रेम के दो अक्षरों में खोज साहब का ठिकाना
यह सुनिश्चित है कि पीछे छूट जायेगी नगरिया।

## अंतिम कड़ी बनकर बिखरना...

वेदना आकार लेती है, अगर यह जानना हो,
तुम किसी दिन गीत की अंतिम कड़ी बनकर बिखरना।
गीत, हाँ, वह गीत, जिसने
यह बड़ी दुनियाँ रची है।
किन्तु, जिसके पास देने को न
कुछ पूँजी बची है।
उन ठिकानों पर जहाँ जीवन नई शुरूआत में है,
तुम कभी उन बस्तियों के पास से होकर गुजरना।
मन बड़ा जिद्दी कि बस
अंधियार से ही जूझता है।
मूढ़ संचित ज्ञान के बल पर
पहेली बूझता है।
इस सदन का यह दिया, बस पंथ बन जाए तुम्हारा
थरथराती लौ न बन जाना, मगर थोड़ा सिहरना।
कंठ आकुल हो न जाए
इसलिए सागर बना हूँ।
मैं किसी आहत नदी के
तीर की गागर बना हूँ।
यह महावर और मेंहदी याकि आलेखन सुघड़तम,
बात छालों की सुना कुछ देर, फिर सजना-संवरना।

■

कविता

# गोविन्दसिंह असिवाल की कविताएँ

**गोविन्दसिंह असिवाल**

जन्म : 29 दिसम्बर 1936, उत्तरांचल कुमाऊं के गांव गुजरगड़ी में।
सम्मान : डाक, दूरसंचार, केन्द्रीय, राज्य निगम, बैंक कर्मचारी व श्रम संगठनों, भाकपा और निर्दलीय द्वारा।
प्रकाशन : संसद पर सैलाबी प्रदर्शन, पीरका अभिषेक, खुशियों के झरने ढूंढ रहा है मेरा पागलपन, शब्दों की झील, कागज की नाव, चिड़ियाँ आदि।

## इस हंसों के देश में

कौवे चुग गए मोती सारे,
इस हंसों के देश में।
भूखे मर गये हंस बेचारे,
इस हंसों के देश में।
जनम-जनम की ख़ता बताकर
राज-धर्म ने लूटा हमको,
अरबपति ही बने लुटेरे
इस हंसों के देश में।
कारीगर की अंगुलियों ने
भव्य इमारत चुनी कई
मुक्त गगन हैं छतें उनकी
इस हंसों के देश में
संविधान में जड़े हुए हैं
अधिकारों के अंश कई
निरक्षर भूखे पेट कई
इस हंसों के देश में।

रेखांकन : डॉ. भवानीशंकर शर्मा

सत्ताधारी हाथों में है
सुख-सुविधाएँ जन्नत की
श्रमजीवी ही नरक भोगते
इस हंसों के देश में।

## ज़िन्दगी जीने का

ज़िन्दगी को जीने का
तरीक़ा होना चाहिए।
गीता और कुरआन सा
पाकीज़ा होना चाहिए।
नफ़रतों की आंधी हो
या फसादों का नाच हो
आदमी को प्यार का
मसीहा होना चाहिए।
अर्थहीन जीने वाले तो
बेशुमार हैं जहाँ में
एक खूबसूरत ज़िन्दगी का
सलीका होना चाहिए।
ज़िन्दगी तो जंग का
इक मैदान है भाई
जंग का अंजाम भी
बाग़ीचा होना चाहिए।
घुट-घुट कर निराशा में
जीना भी कोई जीना है
हर पल होठों पर हाज़िर एक
लतीफ़ा होना चाहिए।

## धूप

कनक शिखर हैं ऊँचे-ऊँचे
धरे अनेकों रूप।
छीन रहे हैं खड़े-खड़े ये
तेरी-मेरी धूप।
इस बस्ती की परम्परा थी
हिलमिल गाएं गीत
और यहाँ पर बांटा करते थे
एक सुनहली धूप।
होड़ लगी है बाज़ारों में
लम्बी-लम्बी दौड़ें
अटक गयी अटारियों पर
वो बेचारी धूप।
चांद-सितारे चलते हैं
सूरज के अनुरूप
ठिठुर रहे हैं हम धरती पर
कहाँ मिलेगी धूप ?
इस सीमेन्ट के जंगल में
ऊँचाई की दौड़
मुक़ाबला है इन ऊँचों से
मिल जायेगी धूप।

## शांति की पांखी

शांति के पांखी उड़े
नीले इस आकाश में।
युद्ध के बादल न छाएँ,
फिर कभी आकाश में।
सरसराती ही रहें नित
गंध में भीगी हवा
विस्फोट ना विध्वंस गूंजे
फिर कभी आकाश में।
हर तरफ हों खुशियों के डेरे
मौसमों की रंग-रलियाँ
गाज की आवाज़ हो ना
फिर कभी आकाश में।
सोना-चाँदी खूब वर्षे
और वर्षे फूल भी
मावसी न रंग उभरे
फिर कभी आकाश में।
हर तरफ़ हों खुशबुवें
प्यार के मंज़र कई
इन्द्रधनुष धूमिल पड़े ना
फ़िर कभी आकाश में।

## एक ग़ज़ल भोपाल है

काफ़िये और रदीफ़ों की
एक ग़ज़ल भोपाल है।
दिलकश मंज़र कई-कई
और खुशबू का ताल है।
महावीर गिरी से दिखता है
ऐरोड्रम का सीन
लैडिंग-फ्लाइंग प्लेनों का
लगता बड़ा कमाल है।
मुस्कान फिसलती शिखरों से
चारों तरफ नज़ारे हैं
सकरी गलियों में रहता
इक बूढ़ा भोपाल है।
कुछ दरवाजे, चंद महल
और ये बूढ़ी मस्जिद हैं
कहीं-कहीं पर मिल जाता
रियासती भोपाल है।
सतरंगी संस्कृतियाँ इसकी
भारत भवन की चहल-पहल
नयी कलाएं नव रंगत लेकर
चुलबुला भोपाल है।

ग़ज़ल

# अशोक 'अंजुम' की ग़ज़लें

**अशोक 'अंजुम'**

जन्म : 15 दिसम्बर 66 ( देवथला, जिला : अलीगढ़ )
प्रकाशन : 24 मौलिक और 38 सम्पादित पुस्तकें प्रकाशित। विभिन्न भाषाओं में रचनाओं का अनुवाद। काव्य-मंचों पर व्यंग कवि, गीतकार, ग़ज़लकार, दोहाकार के रूप में चर्चित। अलीगढ़ एंथम के रचयिता।
संपर्क : संपादक : अभिनव प्रयास, स्ट्रीट-2 , चन्द्र विहार कॉलोनी, अलीगढ-202002,
मो. : 09258779744

रेखांकन : डॉ. भवानीशंकर शर्मा

## एक

आदमी यूँ आदमी के काम आए
इक दिया ज्यूँ रोशनी के काम आए
आँख में आँसू का बादल रख सलामत
खुश्क हो मौसम नमी के काम आए
कुल जहाँ अपना जिसे माने बने अब
ऐसा मजहब जो सभी के काम आए
मेरे मौला तेरी कुदरत को नमन है
खोदे जो खाई उसी के काम आए
वाकया ऐसा कोई लाना न ख़बरी
देश में जो सनसनी के काम आए
मत ज़हर घर में कभी रखना मियाँ जो
बेखुदी में खुदकशी के काम आए
ज़िन्दगी सच में फ़क़त वह ज़िन्दगी है
ज़िन्दगी जो ज़िन्दगी के काम आए

## दो

पाँव ऐसे न डाल दरिया में
आ रहा है उबाल दरिया में
रात सपनों ने खुदकुशी कर ली
बह गये सब सवाल दरिया में
आ गया फिर चुनाव का मौसम
पड़ रहे फिर से जाल दरिया में
आज बारिश ने शरारत यूँ की
जम के आया उछाल दरिया में
एक दरिया यूँ शहर से गुज़रा
बह गया सब बबाल दरिया में
खीजकर एक दिन कहा माँ ने
अब न नेकी को डाल दरिया में

## तीन

पत्थर से टकराए पत्थर
शीशे से घबराए पत्थर
तुमने सदा मनाए पत्थर
इसीलिए इतराए पत्थर
हम तो खुशबू बाँट रहे थे
बस्ती ने बरसाए पत्थर
शिल्पकार भी शीश झुकाए
मंदिर में मुस्काए पत्थर
इंसानों की राह में आकर
पल-पल ठोकर खाए पत्थर
धरती ने तब फूल खिलाए
हमने ज़रा हटाए पत्थर
राम नाम का मिला सहारा
सागर ने तैराए पत्थर

## चार

अपनेपन को ढूंढ रहा है तेरा मेरा अपनापन
भारी-भारी कसमें-वादे हल्का-फुल्का अपनापन
तेरा इतना, मेरा इतना, दोनों की सीमाएँ तय
अपनेपन में है बँटवारा, ऐसा कैसा अपनापन
अहसानों का एक पुलिंदा रखा हुआ है सीने पर
फिर ये कैसी यारी अपनी, फिर ये कैसा अपनापन
हर इक आहट पर लगता था तुम होगे. तुम ही होगे
आँखें दर पर लगी रही हैं, रहा तरसता अपनापन
कुछ बारिश ऐसी होती हैं जिनमें सब धुल जाता है
पक्के-पक्के रिश्ते-नाते, कच्चा-कच्चा अपनापन
विश्वासों के कैनवास पर जिसे सजाया था 'अंजुम'
कैसे-कैसे रंग दिखाए, पाकर मौका अपनापन

ग़ज़लें

# अपर्णा पात्रीकर की हिन्दुस्तानी ग़ज़लें

**अपर्णा पात्रीकर**

**गृहणी है, अर्थशास्त्र में एम.ए. तथा पत्रकारिता में डिप्लोमा किया है। लगभग 3 साल से कविता लिख रही है। बकायदा बहर में ग़ज़ल पिछले 6 माह से लिख रही हैं।**
**मो. 9425664821**

अपर्णा पात्रीकर की ग़ज़लें न तो बहु प्रचलित उर्दू ग़ज़ल के दायरे में आती हैं न हिन्दी ग़ज़ल के। उन्हें कोई नाम देना हो तो सिर्फ एक ही शब्द मौजूँ हो सकता है और वह है हिन्दुस्तानी ग़ज़ल। वो ग़ज़ल जो वली दखिनी से चलती हुई मुल्ला वजही आदि से होकर अपने जमाने तक चलती चली आई है। वो जो आशिक मासूक की गुफ्तगू भी है और जब-तब समय की कंटीली झाडियों में फंसे हिरन की छटपटाहट और सिसकियाँ भी। यहाँ ग़मे जानां और ग़मे दौरां आपस में कितने एकमेक हो गए हैं कि तय करना मुश्किल। जहाँ तक ग़ज़ल के 'फार्म' की पूर्णता अपूर्णता का सवाल है अपर्णा ने इसे बेशक उस्तादों के निकट रहकर सीखा है। इसलिए वह दुरुस्त हैं। यह तो हर कवि/शायर जानता है कि सृजन का प्राण तो उस अनुभूति में निवास करता है जो सर्जक की आधार पहचान बनता है। पर कैसी अनुभूति ? वह जो शायर के निजी सच को जमाने के सच में बदल डाले। कहने की जरूरत नहीं कि अपर्णा का सच इससे अलग नहीं है –

खौफ से पत्थरों के रूकेगा नहीं
आइना सच दिखाने पे मजबूर है।।

--0--

साथ रहते हैं हम फिर भी हैं अजनबी
बीच में एक अनजान दीवार है।।

अपर्णा के ये शेर ही उनकी पहचान के परिचय पत्र हैं।

**प्रस्तुति : विजय बहादुर सिंह, 9425030392**

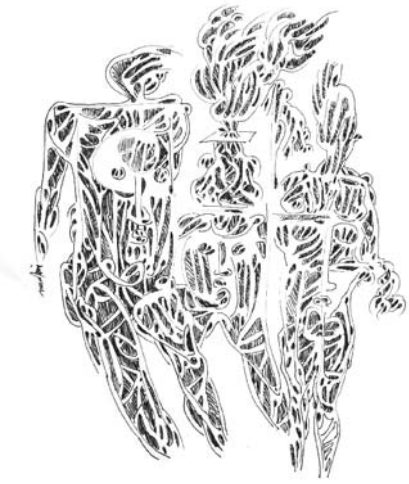

रेखांकन : डॉ. भवानीशंकर शर्मा

## एक

आंखें कहती हैं हां लब पे इंकार है
किस क़दर खूबसूरत ये इकरार है।।।।
सर झुकाऊं कहां कशमकश है बड़ी
इक तरफ है खुदा इक तरफ यार है ।।2।।
तीरगी मांगता दूसरों के लिए
रौशनी के लिए जो तलबकार हैं।।3।।
नापती तौलती छांटती हर नज़र
चारसू मेरे जैसे कि बाज़ार है।।4।।
साथ रहतें है हम फिर भी हैं अजनबी
बीच में एक अंजान दीवार है।।5।।
आंसुओं की जुबां वो समझता नहीं
चश्में नम को शिकायत ये हर बात है।।6।।
ढूंढता रहता है औरों की गलतियां
जहन से शख़्स लगता वो बीमार है।।7।।
ज़िंदगी में कमी दोस्तों की नहीं
इक अदद आशना की भी दरकार है।।8।।

## दो

तुम्हारी राह तकते तकते सावन हार जाता है
मेरा सब्र भी इसके साथ साजन हार जाता है।।1।।
करें पर्दा कहां तक हुस्न अपने आप को ढांके
निगाहें शोख के आगे ये चिलमन हार जाता है।।2।।
हमारी नस्ल तो नाता जड़ों से तोड़ बैठी है
विदेशी बेरियों से अपना जामन हार जाता है।।3।।
ग़लतफहमी ने भाई को जुदा भाई से कर डाला
दिलों के बीच हो दीवार आंगन हार जाता है।।4।।
हमेशा जंग में लड़ना जरूरी तो नहीं होता
कभी तो बस डराने से ही दुश्मन हार जाता है।।5।।
नहीं मिलती जगह इन आंसुओं को अपनी आंखों में
कि आंसू थामने में रोज़ दामन हार जाता है।।6।।
बुढ़ापा मर्ज़ है ऐसा दवा जिसकी नहीं कोई
कि इसके सामने हर एक यौवन हार जाता है।।7।।

■

विचार

# मैं बसंत हूँ

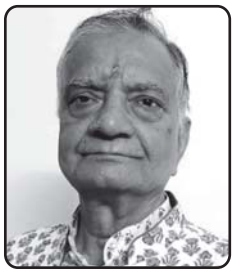

**डॉ. देवदत्त शर्मा**

मैं वसन्त हूं। ऋतुओं का कंत, उमंग अनन्त और प्रकृति का श्रृंगार हूं। मिलन की उत्कंठा, संयोग का सौख्य, बिछोह का अंगार और सृजन का आगार हूं। मेरे उत्फुल्ल स्पर्श से प्रौढ़ा प्रकृति निमिष भर में नवौढ़ा नायिका सी सजीली-लजीली हो जाती है। मेरी वासन्ती बयार, उद्दाम यौवना के उन्नत उरोजों से लुढ़कते अल्हड़ आंचल सी, जब व्योम से उतर कर भूदेवी के वक्ष पर प्रसृत होती है तो मेरे मसृण स्पर्श से उसका अंग-अंग रोमांचित हो उठता है। विटप वल्लरियां झूमने लगती हैं, नव द्रुम पात ठिठुराए ठूंठों पर सजने लगते हैं। सद्य: यौवना से प्रस्फुटित प्रसूनों की स्निग्ध मुस्कान पर बहुरंगी तितलियां न्यौछावर होने लगती हैं। काष्ठछेदक भ्रमर अपनी कर्तन क्रूरता भूलकर पुष्प पराग के राग से रंजित और रूपरस पान से उन्मत्त हो नवकिसलय की कोमल पंखुड़ियों में अवगुंठित हो जाता है।

मलयागिरि से सुवासित मेरी मधुमासी मदमाती शीतोष्ण समीर प्रकृति पराग के आसव का पान कर इठलाती हुई मंथर गति से लोक परिवेश में प्रवेशती है तो लोक मानस भी मन्मथ सा थिरकने लगता है। प्रेमियों के मन के वन खिल उठते हैं और प्रेमासव का पान कर उनके मनमयूर नर्तन करने लगते हैं। उनके तन के वन में किलकती कोयल प्रेम के गीत गाने लगती है। गदराया बौराया कोविदार, छितराया गुलमोहर, अरण्य आग सा दहकता पलाश, रक्तिम पुष्पों की चुनरी ओढ़े शाल्मली और स्वर्णिम छटा से आत्ममुग्ध अमलताश अपनी कनकप्रभा का चंदोवा ताने गुंजरित भ्रमरों और पराग लोलुप पक्षियों को आमंत्रित करने लगता है।

मैं ऋतुराज, रसराज वसंत ही नहीं हूं, अनुराग का राग, कवियों की कल्पना, चितेरों का चितराम, लोक का उल्लास, प्रकृति लालित्य का प्रभास, प्रेम का पयोधि और संयोग का श्रृंगार हूं। वसंती बयार के डैनों पर जब मैं कुसुमायुधों से सज्जित अनंग के साथ धरा पर अवतरित होता हूं तो घर-आंगन, वन-उपवन, कुंज-निकुंज यहां तक कि तन और मन सब उमंग-उल्लास से सराबोर हो वसंती हो जाते हैं। तब मैं श्वास-प्रश्वास और उच्छवास तथा जड़-चेतन में समाविष्ट हो सबको उमंग-तरंग से बौरा देता हूं। प्रकृति का पात-पात, प्राणियों का गात-गात मधुमास की सुवास से सुवासित हो उठता है।

लेखक- 'स्वर सरिता' पत्रिका (जयपुर) राजस्थान के संपादक हैं।


**कला समय के संबंध में स्वामित्व तथा अन्य विवरण विषयक घोषणा पत्र**
**फार्म-IV**

| | | |
|---|---|---|
| 1. प्रकाशन का स्थान | – | जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)-462016 |
| 2. प्रकाशन की अवधि | – | द्वैमासिक |
| 3. मुद्रक का नाम | – | भँवरलाल श्रीवास |
| राष्ट्रीयता | – | भारतीय। |
| पता | – | जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)-462016 |
| 4. प्रकाशक का नाम | – | भँवरलाल श्रीवास |
| राष्ट्रीयता | – | भारतीय। |
| पता | – | जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)-462016 |
| 5. संपादक का नाम | – | भँवरलाल श्रीवास |
| राष्ट्रीयता | – | भारतीय। |
| पता | – | जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)-462016 |
| 6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों। | – | भँवरलाल श्रीवास |
| राष्ट्रीयता | – | भारतीय। |
| पता | – | जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)-462016 |

मैं भँवरलाल श्रीवास घोषणा करता हूँ कि ऊपर दी गई विशिष्टयाँ मेरे सर्वोत्तम ज्ञान और विश्वास के साथ सही हैं।

तारीख- 1 मार्च 2021

**भँवरलाल श्रीवास**
प्रकाशक के हस्ताक्षर

समाधान

# भारतीय संगीत में नृत्य का स्थान

डॉ. लक्ष्मी नारायण गर्ग

संगीत कला में गायन, वादन और नृत्य इन तीनों कलाओं का समावेश किया गया है। प्रकृति के उल्लास ने मानव-मन को स्वत: ही नाचने की ओर प्रेरित किया है। वायु के स्पर्श से पेड़-पौधे झूम उठते हैं, वर्षा के आगमन से जीव-जन्तुओं में नया जीवन आ जाता है, मोर नाचने लगते हैं। आकाश में नक्षत्र अपनी निश्चित गति के अनुसार एक-दूसरे की परिक्रमा करते रहते हैं; मानो समस्त सृष्टि नृत्यमयी हो।

भारतीय समाज के मांगलिक पर्वों पर नृत्य की प्रथा आज भी विद्यमान है, जिसमें अलग-अलग अवसरों पर तत्सम्बन्धी भाव प्रकट करने वाले विभिन्न नृत्य प्रस्तुत किए जाते हैं। शास्त्रीय नृत्यों की श्रेणी में उत्तर भारत में कथक, सुदूर पूर्व में मणिपुरी नृत्य, दक्षिण-पूर्व में ओडिसी नृत्य, मध्य दक्षिण भाग में भरतनाट्यम् नृत्य और दक्षिण-पश्चिम में कथकलि नृत्य शैलियाँ विख्यात हैं। इसी प्रकार साधारण ग्राम्य-समाज में सैकड़ों प्रकार के उपशास्त्रीय और लोकनृत्य प्रचलित हैं।

**नृत्य और जीवन**

मानव-हृदय में अनेक भाव सोए पड़े रहते हैं, जो अनुकूल अवसर पाकर संगीत के माध्यम से अभिव्यक्त होते हैं। आदिकाल में जब भाषा का विकास नहीं हुआ था, तो मनुष्य ने विभिन्न मुद्राओं व चेष्टाओं को ही भावनाओं की अभिव्यक्ति का साधन बनाया। उछल-कूद के अनेक रूप क्रीड़ाओं के रूप में प्रसिद्ध हुए और कुछ रूप व्यवस्थित होकर नृत्यकला के रूप में प्रकाश में आए। जैसे-जैसे संस्कृति और भाषा का विकास होने लगा, वैसे-वैसे काव्य, संगीत, शिल्प और नृत्य की कलाओं का विकास भी होने लगा।

**नृत्य-सम्बन्धी साहित्य**

देवताओं का मनोरंजन करने के लिए, ब्रह्मा ने 'नाट्यवेद' की रचना की, जो महर्षि भरत के द्वारा 'नाट्यशास्त्र' के रूप में प्रकाश में आई। नाट्य के अन्तर्गत ही नृत्यकला का पोषण हुआ। जो भाव भाषा, गीत और चित्र के द्वारा अभिव्यक्त नहीं हो पाते या शिथिल रूप में अभिव्यक्त होते हैं, वे सब नृत्य या नृत्त के माध्यम से अत्यन्त पुष्ट रूप में प्रस्तुत हो जाते हैं। रस, भाव और व्यंजन से युक्त नर्तन को 'नृत्य' कहा जाता है और अभिनय तथा भाव से रहित नर्तन को 'नृत्त' कहते हैं। भिक्षा माँगने के लिए स्वर या शब्द इतने प्रभावशाली नहीं होते, जितनी कि भिक्षुक की चेष्टाएँ या मुद्राएँ। वे मानव की आन्तरिक पीड़ा को इतने सबल रूप में अभिव्यक्त करती हैं कि करुण रस का उद्रेक होने लगता है और दाता का हृदय दया के भाव से अभिभूत हो जाता है।

इस प्रकार देखा जाता है कि विभिन्न मुद्राओं, चेष्टाओं और गतियों के द्वारा भाव की अभिव्यक्ति अधिक महत्त्व रखती है और जब इनको स्वर, शब्द और ताल का आश्रय मिल जाता है, तो नृत्यकला के रूप में भिन्न-भिन्न रसों की अभिव्यक्तियाँ होने लगती हैं। वास्तविक रसोद्रेक के कारण देश और काल को भूलकर दर्शक एक अनिर्वचनीय आनन्द की सत्ता में लीन हो जाता है, जिसे रसानुभूति की अवस्था कहते हैं। यह लौकिक सुख और दु:ख से परे की स्थिति होती है। नृत्यकला का मुख्य प्रयोजन यही है।

नाट्य एवं गायन और वादन के प्रयोग से अलग, स्वतन्त्र रूप में नृत्यकला का प्रयोग होता आया है, जिसका विकसित रूप आज भारत की सभी शास्त्रीय नृत्य-शैलियों में देखने को मिलता है। प्राचीन काल में ईश्वर की आराधना के लिए जो नृत्य प्रचलित था, वही आज विशद् रूप से समाज का मनोरंजन भी कर रहा है। प्रागैतिहासिक युग में नृत्य स्वतन्त्र रूप में विकसित हो चुका था, इसलिए रस-परिपाक में सहायता प्रदान करने के लिए नाट्य में उसे सम्मानपूर्वक ग्रहण किया गया।

भरत के 'नाट्यशास्त्र' और नन्दिकेश्वर के 'अभिनय-दर्पण' में शरीर के सभी अंगों-हाथ, पैर, सिर, आँख, ग्रीवा, मुख और चेष्टा द्वारा विभिन्न प्रकार के अभिनय बताए गए हैं, जिनसे विभिन्न भावों और रसों की सृष्टि होती है। भारत में नृत्य को एक धार्मिक अनुष्ठान के रूप में ही सम्मानित किया गया है और कहा गया है कि जो प्रसन्न चित्त से, श्रद्धा-भक्ति से सम्पन्न होकर नृत्य करते हैं, वे जन्म-जन्मान्तर के पापों से मुक्त हो जाते हैं। आजीविका की दृष्टि से किए जानेवाले नृत्यों को धर्म-संहिता में निकृष्ट कोटि का बताया गया है। नृत्य वास्तव में मानव का शरीर-क्रिया-विज्ञान है, जो विविध दशाओं को प्रदर्शित करता हुआ रस की उत्पत्ति में सहायक होता है। इसमें जीवन का वह उल्लास निहित है, जो आत्मा का स्पन्दन है।

नृत्य-सम्बन्धी साहित्य पर मुख्य रूप से केवल तीन प्राचीन ग्रन्थ उपलब्ध हैं, जिनमें महर्षि भरत का 'नाट्यशास्त्र', नन्दिकेश्वर का 'अभिनय दर्पण' और आचार्य शार्ङ्गदेव द्वारा लिखित 'संगीतरत्नाकर' मुख्य हैं। 'नाट्यशास्त्र' के रचनाकाल के विषय में अनेक मतभेद हैं। भारतीय तथा पाश्चात्त्य विद्वानों के अनुसार छह हज़ार श्लोक वाले वर्तमान 'नाट्यशास्त्र' का रचना-काल ईसा पूर्व 500 से लेकर 400 ई0 तक निर्धारित करने की चेष्टा की गई, जबकि भारतीय पौराणिक आधार एवं अनेक साक्ष्यों के अनुसार त्रेतायुग (रामायण-काल) के प्रारम्भ में इसकी रचना हुई थी। महर्षि वाल्मीकि द्वारा भरत की जातियों का गान लव-कुश को सिखाए जाने का उल्लेख मिलता है। 'नाट्यशास्त्र' का आदि रूप 12000 श्लोक-वाला था, जिसे 'द्वादश-साहस्री' कहा जाता था। 'नाट्यशास्त्र' के श्लोक 'सूत्र' तथा 'कारिका' कहे जाते हैं। नाट्यकला से सम्बन्धित जिन मुख्य विषयों का विवेचन वर्तमान 'नाट्यशास्त्र' में किया गया है, उनमें रस, भाव, अभिनयधर्मी वृत्ति, प्रवृत्ति, सिद्धि, स्वर, आतोद्य (वाद्य), गान एवं रंग-मंडप प्रमुख हैं।

**शिक्षा में नृत्य का स्थान**

यूनान के लेखक सिसेरो के अनुसार-'नाटक जीवन का प्रतिरूप, रीति-रिवाज का दर्पण और सत्य का प्रतिबिम्ब है।' नृत्य में नाटक या नाट्य ही प्रधान हैं, क्योंकि किसी कथावस्तु को आंगिक मुद्राओं और चेष्टाओं से बता पाना, नृत्य के द्वारा ही सम्भव है। गान, काव्य और वाद्य का सम्मिश्रण होने से नृत्यकला की शक्ति बहुत बढ़ जाती है। प्राचीन आचार्य मम्मट ने कहा है-'नाट्य

के माध्यम से प्रसिद्धि, धन, कर्तव्य, सदाचार आदि की उपलब्धि होती है।'

वास्तव में नृत्य, मनोरंजन के साथ-साथ आध्यात्मिक आनन्द का संचार भी करता है, जिससे मनुष्य की आसुरी प्रवृत्तियाँ शान्त होती हैं। इसीलिए भारत के मन्दिरों में ईश्वराराधन के लिए नृत्य को सर्वोपरि माना गया था। आसन और प्राणायाम की भाँति नृत्य की क्रियाओं से भी रक्त का संचार ठीक होकर नाड़ी-शुद्धि का लाभ मिलता है।

नृत्य के दो विभाग किए गए हैं-तांडव (पुरुषोचित) और लास्य (स्त्रियोचित)। इसलिए पुरुष और स्त्री, दोनों ही नृत्य कर सकते हैं। यदि कोई व्यक्ति पूर्णरूप से नर्तक न बनना चाहे, तो भी नृत्य-ज्ञान उसके अन्य संगीत-ज्ञान में वृद्धि करनेवाला सिद्ध होगा। समाज की स्थिति और आन्तरिक मनोभावों को प्रकट करने में नृत्यकला पूरी तरह सक्षम है। नृत्य को 'नाट्य का शरीर' कहा गया है और गीत को 'नाट्य की शय्या'। 'ऋग्वेद' में असंख्य रूप धारण करनेवाला इन्द्र अपने नायकोचित कार्यों को नृत्य में प्रस्तुत करता हुआ बताया गया है। वैदिक काल में नृत्यकला को अत्यन्त शुभ माना जाता था, इसीलिए प्राचीन भित्ति-चित्रों में नृत्यकला से सम्बन्धित मूर्तियों की प्रचुरता है।

आज की शिक्षा-पद्धति में नृत्य को यद्यपि उत्साह-वर्धक रूप में ग्रहण नहीं किया गया है, लेकिन प्राचीन काल में यह कला बहत विकसित अवस्था में थी। इसके उदाहरण अनेक पुराणों में मिलते हैं। कृष्ण को 'नटवर' कहा गया है, जो नृत्य इत्यादि कलाओं में निष्णात् थे। उल्लासपूर्ण अभिव्यक्ति के लिए नृत्य से बढ़कर दूसरा कोई माध्यम नहीं, इसलिए यदि शिक्षा में उसे उचित स्थान दिया जाए, तो व्यक्ति और समाज-दोनों ही लाभान्वित होंगे। आज पूरे संसार में नृत्यकला का प्रचलन है। शास्त्रीय नृत्य अपने स्थान पर है तो लोकनृत्य घर-घर में प्रचलित हैं, जिन्हें यथोचित अवसरों पर प्रस्तुत किया जाता है। सच कहा जाए तो नृत्यकला राष्ट्रीय एकता को बढ़ाने में अत्यन्त सहायक है, क्योंकि वह मानव का स्वाभाविक गुण-धर्म है।

**नृत्य और व्यायाम**

हमारे यहाँ 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' की कल्पना की गई है, अर्थात् सत्य ही शिव है और शिव ही सुन्दर (आनन्द) है। नृत्य के द्वारा आन्तरिक अनुभूतियों को अंग, उपांग एवं मुद्राओं द्वारा प्रकट किया जाता है, इसीलिए उसे सत्य का उद्घाटक कहते हैं। जब उन अनुभूतियों को कोई दूसरा ग्रहण करता है, तो वह भी आनन्दित होता है। इसी प्रकार जब हम व्यायाम करते हैं, तो अपने समस्त अवयवों का संचालन करते हुए उन्हें लचीला और शक्तिशाली बनाते हैं। समस्त अवयवों को एक ऊर्जा मिलती है, जिससे रक्त व प्राण शुद्ध होते हैं तथा हमारे मन और बुद्धि पर सात्तिवक प्रभाव पड़ता है।

जब किसी अंग की क्रिया क्रमपूर्वक एक निश्चित लय में बार-बार होती है, तो 'व्यायाम' कहलाती है। इसमें शक्ति का स्रोत बाहर से अन्दर की ओर रहता है। लेकिन जब यह क्रिया अन्दर से बाहर की ओर होती है, तो शक्ति का स्रोत आन्तरिक मनोभावों को भी साथ निकाल लाता है और उससे रस की अनुभूति होती है। दोनों स्थितियाँ व्यायामपरक हैं, लेकिन स्रोत के उलट जाने से, उनमें ज़मीन और आसमान का अन्तर हो जाता है।

पाश्चात्त्य देशों में व्यायामपरक नृत्य की ओर अधिक ध्यान दिया गया है और भारत में नृत्य-प्रधान व्यायाम का महत्त्व रहा है। व्यायाम की दृष्टि से नृत्य अपने में पूर्ण है, क्योंकि समस्त शरीर का संचालन करते हुए नर्तक को स्वास्थ्य का लाभ स्वत: मिलता रहता है। छोटे बच्चे रस और भाव की बात नहीं समझ सकते, इसलिए उन्हें व्यायामपरक नृत्य द्वारा आसानी से ट्रेनिंग दी जा सकती है। श्रृंगार-प्रधान भाव की अपेक्षा वे वीरोचित भाव को जल्दी ग्रहण कर लेते हैं। लेजिम लेज़म), 'मार्चिंग सौंग' तथा राष्ट्रीय भावना-प्रधान गीतों के द्वारा नृत्य की आधारभूमि सहज ही तैयार हो जाती है। व्यायामपरक नृत्य ही आगे चलकर जब भावनापरक होने लगता है, तो नर्तक को पूर्वाभ्यास का पूरा लाभ मिलता है। शरीर, मन और बुद्धि को स्वस्थ तथा चुस्त रखने के लिए नृत्य से बढ़कर दूसरी कोई कला नहीं है। जिस तरह भारत में भावना-प्रधान नृत्यों के अनेक रूप विकसित हुए, उसी तरह पाश्चात्त्य देशों में व्यायामपरक एवं भावना-रहित नृत्यों का विकास हुआ, जिनमें डिस्को और ब्रेक जैसे डान्स प्रमुख हैं। आजकल विदेशी ऐक्रोबैटिक (Acrobatic) पद्धति का प्रचार बढ़ता जा रहा है, जिसमें किसी रिकॉर्डिड संगीत के साथ-साथ नए-नए नृत्त-प्रधान व्यायामों का अभ्यास किया जाता है।

**नृत्यकला और उसका महत्त्व**

वैदिक काल से नृत्यकला आध्यात्मिक उत्थान और मनोरंजन का साधन रही है। जो भावनाएँ गायन और वादन के द्वारा प्रस्तुत नहीं की जा सकतीं, जैसे अत्यन्त हर्ष की अवस्थाएँ या रौद्ररस का संचार, वे सब नृत्य के द्वारा सशक्त रूप में प्रस्तुत की जा सकती हैं।

मनुष्य की पाशविक वृत्तियों और उद्दाम भावनाओं को दबाने में नृत्य का प्रमुख हाथ रहा है। मानव और समाज के आदर्शों को उपस्थित करने में नृत्य एक प्रमुख भूमिका अदा करता है। इसके साथ ही शारीरिक क्षमताओं का विकास भी इसके द्वारा होता है।

धार्मिक अनुष्ठान हो, सामाजिक उत्सव हो या लौकिक साधना, सभी स्तरों पर नृत्य का अपना महत्त्व है।

पशु-पक्षियों तक में देखा जाता है कि वे हर्षोल्लास को प्रकट करने के लिए नृत्य का सहारा लेते हैं। भाषा की उत्पत्ति से पूर्व मुद्रा-प्रदर्शन ही मनुष्य की भाषा थी। उसकी आँखें, गर्दन, नाक, उँगलियाँ, हाथ, पैर इत्यादि अवयव भावनाओं को स्पष्ट करते थे। आज भी छोटा बच्चा, डाँटने पर अपने अभिभावक के नेत्रों में झाँकता है और उसकी भौंह के बाँकपन तथा चेहरे की आकृति से भावं की गम्भीरता का अनुमान लगा लेता है। पशुओं में भी यह बात देखी जा सकती है। तात्पर्य यही है कि जिस गहराई या गम्भीरता को वाणी व्यक्त नहीं कर सकती, उसे आँख की चितवन, कपोल की ललाई, गर्दन का घुमाव और उपांगों की विविध चेष्टाएँ सहज ही व्यक्त कर देती हैं। मूक अभिनय की प्रस्तुति में हम आज भी रस लेते हैं और चेष्टाओं से ही कथानक को समझते रहते हैं। बिहारी का एक दोहा है -

**कहत नटत रीझत खिजत, मिलत खिलत लजियात।**
**भरे भुवन में करत हैं, नैनन ही सों बात।**

नायक-नायिकाओं के परस्पर मूक वार्तालाप या भावाभिव्यक्ति का इससे अच्छा उदाहरण पूरे साहित्य में नहीं है।

प्राय: देखा जाता है कि मनुष्य दिनभर काम-काज में व्यस्त रहता है और शाम तक पूरी तरह थक जाता है, फिर भी रातभर नाचने के लिए तैयार हो जाता है। वह नाचना श्रमयुक्त होते हुए भी उसे सुख-शान्ति और उल्लास के क्षण प्रदान करता है। यही नृत्य की महिमा या उसका महत्त्व है।

**नृत्य और राष्ट्र**

नृत्य, व्यक्ति की भावनाओं के साथ उसकी राष्ट्रीयता को भी प्रतिबिम्बित करता है, साथ ही उससे मनुष्य के रीति-रिवाज, रहन-सहन और सामाजिक संस्कृति का ज्ञान भी मिलता है।

कलाओं के क्षेत्र में भारत का एक गौरवशाली स्थान रहा है, इसलिए यहाँ के नृत्यों में भारतीय संस्कृति की पूरी झलक मिलती है। विदेशों में भारतीय नृत्य के लोकप्रिय होने का प्रधान कारण यही है। प्राचीन और आधुनिक सांस्कृतिक काव्यों, राष्ट्रीय भावनाओं, उपदेशात्मक कथाओं, धार्मिक आख्यानोंऔर लोक-परम्पराओं का दिग्दर्शन कराकर नृत्य को जब प्रस्तुत किया जाता है, तो उससे सम्पूर्ण राष्ट्र का प्रतिनिधित्व होता है। इसीलिए समाज और राष्ट्र के उत्थान की दृष्टि से नृत्य का विशेष महत्त्व है। इससे नर्तक और सामाजिक, दोनों ही समान रूप से उत्साहित और गौरवान्वित होते हैं।

**लोकनृत्य**

प्रकृति ने मनुष्य को नाचने की प्रेरणा दी। पशु-पक्षियों की विभिन्न चालें और उड़ानें, लहरों की अठखेलियाँ और खुली हवाओं में झूमते पेड़-पत्तों ने मनुष्य को झूमने और थिरकने पर मजबूर कर दिया। इसी से मानव-समाज में लोकनृत्यों का जन्म हुआ आगे चलकर लोकनृत्यों के विभाग हुए और उन्हें अपनी परम्पराओं के अनुसार विकसित होने का मौका मिला। विवाह तथा शिशु-जन्म से सम्बन्धित नृत्य 'संस्कार-नृत्य' कहलाए, इतिहास से सम्बन्धित नृत्य 'कथा-नृत्य' या 'नाट्य-नृत्य' कहलाए, विभिन्न ऋतुओं से सम्बन्धित नृत्य 'ऋतु-नृत्य' कहलाए, त्योहारों से सम्बन्धित नृत्य 'पर्व-नृत्य' कहलाए, सांस्कृतिक मेलों से सम्बन्धित नृत्य 'उत्सव-नृत्य' कहलाए और देवी-देवताओं की उपासना से सम्बन्धित नृत्य' आध्यात्मिक नृत्य' की श्रेणी में गिने जाने लगे।

लोकनृत्यों का कोई शास्त्र नहीं होता, उनका नियमन परम्परा करती है और मानव-हृदय का उल्लास ही उनका सौन्दर्य होता है। जब विभिन्न क्रीड़ाएँ नृत्यों से जुड़ गईं, तो इससे चमत्कार-प्रधान लोकनृत्य भी सामने आए। इन चमत्कारों को शास्त्रीय नर्तकों ने भी ग्रहण किया। इसी प्रकार लोकनर्तकों ने भी कुछ शास्त्रीय उपादान ग्रहण किए। इस तरह विभिन्न प्रान्तीय लोकनृत्यों का स्वरूप निखरता हुआ समृद्ध होता गया।

लोकनृत्यों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है-

1. आदिवासीनृत्य (बीहड़ों में रहनेवाली जनजातियों से सम्बन्धित),
2. ग्रामीण नृत्य (गाँवों में रहनेवाली अनुसचित जातियों से सम्बन्धित)
3. शहरी नृत्य (उच्चवर्ग से सम्बन्धित)

ये सब अपने धर्म, कुल, जाति, परम्परागत-रीति-रिवाजों और मान्यताओं के आधार पर सम्पूर्ण भारत में प्रचलित हैं, जिनका अपना ढंग और अपना स्वरूप है। आधुनिक वातावरण और विदेशी संस्कृति के प्रभाव से लोकनृत्यों का विशुद्ध स्वरूप अब तिरोहित होता जा रहा है, इसलिए उसकी रक्षा की जानी चाहिए।

**नृत्य का आध्यात्मिक महत्त्व**

भारतीय नृत्यों का विकास धर्म पर आधारित रहा है। प्रकृति के उपादानों ने मनुष्य को एक ओर सुख-शान्ति दी है, तो दूसरी ओर प्राकृतिक आपदाओं ने उसे भय-ग्रस्त भी किया है। इस भय ने ही मनुष्य को पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश-इन पाँच महाभूतों की पूजा-अर्चना करना सिखाया। 'कण-कण में भगवान व्याप्त हैं' की व्याख्या ने उसे विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान करने की प्रेरणा दी। देव-स्तुतियाँ शुरू हुईं और पूजा-नृत्यों का जन्म हुआ। नृत्य धार्मिक अनुष्ठानों का प्रधान अंग बन गया। वैदिक काल में यज्ञ जैसी क्रियाओं के समय नृत्य किए जाते थे। 'ऋग्वेद' में लिखा है कि खुले आकाश के नीचे नृत्य करते हुए लोगों के पदों की धूल से आकाश आच्छादित हो जाता था। 'यजुर्वेद' में शैलूष (नृत्य करनेवाली एक प्राचीन जाति) तथा बाँस पर चढ़कर नृत्य करने वाले नट-नर्तकों की चर्चा की गई है। स्त्रियों के द्वारा यज्ञ-वेदी के चारों ओर नृत्य करना वैदिक काल में अत्यन्त शुभ माना जाता था। धीरे-धीरे जब नृत्यों का विकास हुआ और समाज के सांस्कृतिक पर्व विकसित हुए, तो प्राचीन धार्मिक कथाओं पर आधारित नृत्यों तथा नृत्य-नाटिकाओं का विकास हुआ, जिनमें सबसे प्रमुख रासलीला नृत्य है। रास के अनेक रूप आज पूरे विश्व में व्याप्त हैं, जिन्हें अलग-अलग नामों से पुकारा जाता है।

रामायण और महाभारत काल में कथावाचकों की परम्परा शुरू हुई। इस परम्परा ने विभिन्न प्रदेशों में विभिन्न नृत्य और नर्तकों को उत्पन्न किया। मूर्ति-पूजा और भगवान् की लीलाओं के प्रदर्शन प्रत्येक नृत्य-शैली में पल्लवित हुए। सुर, तुलसी और मीरा जैसे भक्त-कवियों की परम्परा ने नृत्य-प्रधान पद्यों की रचना की। मूर्तिकारों ने मन्दिरों के प्रांगणों में शिल्प की जो कला बिखेरी, उसमें भी नृत्य को प्रमुख स्थान दिया गया। नटराज शंकर और नटवर-नागर कृष्ण की उपासना में गद्य-पद्यात्मक गाथाएँ लिखी गईं और नृत्य धार्मिक जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग बन गया। धर्म से जुड़े ऐसे विशिष्ट नृत्य ही प्रायः शास्त्रीय नृत्य कहलाने लगे। दक्षिण भारत के मन्दिरों में नृत्य-रत मूर्तियों के शिल्प और 'नाट्यशास्त्र' पर आधारित नृत्य-मुद्राएँ आज भी अंकित हैं। उपासना के भाव से ओतप्रोत नर्तन भारत की सभी शास्त्रीय नृत्य-शैलियों में देखा जा सकता है। चरित्र के उत्थान की दृष्टि से ही आध्यात्मिक नृत्यों का विकास हुआ है। भक्तिभाव में डूबकर मनुष्य अपनी पाशविक प्रवृत्तियों पर आसानी से विजय प्राप्त कर सकता है और समाज तथा राष्ट्र के प्रति भी एक समर्पण की भावना उसमें जाग्रत होती है। भावप्रधान नृत्य को मनोरंजन के साथ मोक्ष-प्राप्ति का साधन भी माना गया है, इसलिए भारतीय संगीत में नृत्य-कला का विशिष्ट स्थान है।

स्तंभकार लेखक- 'संगीत' मासिक पत्रिका हाथरस के प्रधान संपादक है।
मो.: 09837061272

## श्रृद्धांजलि

**बंसी कौल**
**पद्मश्री से सम्मानित वरिष्ठ रंगकर्मी**
जन्म : 23-8-1949 निधन : 6-2-2021

**राम अधीर**
**वरिष्ठ गीतकार, पत्रकार**
जन्म : 12-4-1935 निधन : 8-2-2021

**बटुक चतुर्वेदी**
**वरिष्ठ साहित्यकार**
जन्म : 6-7-1932 निधन : 19-3-2021

**कला समय परिवार की ओर से विनम्र श्रृद्धांजलि**

आलेख

# मालवा के लोक मानस का प्रभावी मंच है 'माच'

डॉ. शैलेन्द्रकुमार शर्मा

भारत के विभिन्न अंचलों में बोली जाने वाली लोक-भाषाएँ राष्ट्रभाषा की समृद्धि का प्रमाण हैं। लोक-भाषाएँ और उनका साहित्य वस्तुत: भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रवाणी के लिए अक्षय स्रोत हैं। हम इनका जितना मंथन करें, उतने ही अमूल्य रत्न हमें मिलते रहेंगे। कथित आधुनिकता के दौर में हम अपनी बोली-बानी, साहित्य-संस्कृति से विमुख होते जा रहे हैं। ऐसे समय में जितना विस्थापन लोगों और समुदायों का हो रहा है, उससे कम लोक-भाषा और लोक-साहित्य का नहीं हो रहा है। घर-आँगन की बोलियाँ अपने ही परिवेश में पराई होने का दर्द झेल रही हैं। इस दिशा में लोकभाषा, साहित्य और संस्कृतिप्रेमियों के समग्र प्रयासों की दरकार है। भारत के हृदय अंचल 'मालवा' ने तो एक तरह से समूची भारतीय संस्कृति को 'गागर में सागर' की तरह समाया हुआ है। मालवा की परम्पराएँ समूचे भारत से प्रभावित हुई हैं और पूरे भारत को मालवा की संस्कृति ने किसी न किसी रूप में प्रभावित किया है। मालवा भारत का हृदय अंचल है। आज का मालवा सम्पूर्ण पश्चिमी मध्यप्रदेश और उसके साथ सीमावर्ती पूर्वी राजस्थान के कुछ जिलों तक विस्तार लिए हुए है। इसकी सीमा रेखा के संबंध में एक पारम्परिक दोहा प्रचलित है, जिसके अनुसार चम्बल, बेतवा और नर्मदा नदियों से घिरे भू-भाग को मालवा की सीमा मानना चाहिए-

इत चम्बल उत बेतवा मालव सीम सुजान
दक्षिण दिसि है नर्मदा यह पूरी पहचान।

मालवा लोक-साहित्य की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। यहाँ का लोकमानस शताब्दी-दर-शताब्दी कथा-वार्ता, गाथा, गीत, नाट्य, पहेली, लोकोक्ति आदि के माध्यम से अभिव्यक्ति पाता आ रहा है। जीवन का ऐसा कोई प्रसंग नहीं है, जब मालवजन अपने हर्ष-उल्लास, सुख-दु:ख को दर्ज करने के लिये लोक-साहित्य का सहारा न लेता हो। भारतीय लोक-नाट्य परम्परा में

मालवा के 'माच' का विशिष्ट स्थान है। मालवा क्षेत्र का प्रतिनिधि लोक नाट्य 'माच' है, जो अपनी सुदीर्घ परम्परा के साथ आज भी लोक मानस का प्रभावी मंच बना हुआ हैं। मालवा के लोकगीतों, लोक-कथाओं, लोक- नृत्य रूपों और लोक-संगीत के समावेश से समृद्ध 'माच' सम्पूर्ण नाट्य (टोटल थियेटर) की सम्भावनाओं को मूर्त करता है। लोकमानस की सहज अभिव्यंजना और लोक रंग व्यवहारों की सरल रेखीय अनायासता से उपजा यह लोकनाट्य लोकरंजन और लोक मंगल के प्रभावी माध्यम के रूप में स्थापित है। 'माच' मालवा-राजस्थान के व्यापक जनसमुदाय को आन्दोलित करता आ रहा है। 'माच' शब्द संस्कृत के 'मंच' शब्द का ही परिवर्तित रूप है। माच के नाटकों को खेल कहा जाता है, जो मुक्ताकाशी रंगमंच पर प्रस्तुत किए जाते हैं। संगीत, नृत्य, पाठ, अभिनय और बोलों की अन्तर्क्रिया 'माच' को एक सम्पूर्ण नाट्य या यूँ कहें टोटल थियेटर का रूप दे देती है। माच के खेलों में सामाजिक सद्भाव, परस्पर प्रेम और सहज लोक जीवन के दर्शन होते हैं। माच के दर्शकों में भी एक खास ढंग की रसिकता देखी जा सकती है।

इसके दर्शक महज दर्शक नहीं होते, मंच व्यापार में उनकी आपसदारी भी दिखाई देती है। माच के क्षेत्र में अनेक घराने बने, जिन्होंने अपने-अपने ढंग से माच को नई ऊर्जा, नई गति दी। गुरु गोपाल जी, गुरु बालमुकुन्दजी, भागीरथ पटेल, गुरु रामकिशन जी, गुरुराधाकिशनजी, उस्ताद कालूराम जी, पं. ओमप्रकाश शर्मा, सिद्धेश्वर सेन, फकीरचंद जी, चुन्नीलाल जी, अनिल पांचाल आदि का माच के खेलों के सृजन और मंचन की परम्परा को आगे बढ़ाने में अविस्मरणीय योगदान रहा है। मालवा का माच पुराण, इतिहास और लोकाख्यानों में निहित उच्च आदर्श, प्रणय और लोक मंगल की भावभूमि को समाहित करता आ रहा है। समाज में व्याप्त विसंगतियों और विद्रूपताओं के विरुद्ध माच के खेलों ने लोक के अंदाज में तीखा प्रतिकार किया है। आधुनिक रंगमंच पर भी माच शैली के साथ प्रयोग सामने आ रहे हैं। यह लोकविधा अपनी प्रासंगिकता बरकरार रखे हुए है।

'माच' की उत्सभूमि उज्जैन मानी जाती है। लगभग दो सौ से अधिक वर्षों से 'माच' मालवा का प्रमुख लोकनाट्य बना हुआ है। इसके उद्भव और विकास में मालवा की अनेक लोकानुरंजक कला प्रवृत्तियों का योगदान रहा है। मालवा क्षेत्र में प्रचलित गरबी गीत, ढारा-ढारी के खेल, तुर्रा कलंगी, नकल-स्वांग की प्रवृत्ति, गम्मत, हाजरात विद्या आदि को 'माच' के उद्भव एवं

विकास में महत्त्वपूर्ण मानने वालों में डॉ. शिवकुमार मधुर का प्रमुख नाम है। मालवा के इन लोक कला रूपों में अन्तर्निहित तत्त्वों जैसे-नृत्य, गान एवं अभिनय, आध्यात्मिकता, नकल-स्वांग प्रवृत्ति, निर्गुणी भक्ति के तत्त्व, पुरुषों द्वारा स्त्री पात्रों की भूमिका सहित अनेक रंग व्यवहार आदि 'माच' में आज भी मौजद हैं। डॉ. मधुर के अनुसार- 'ढारा-ढारी के खेलों से अभिनय, गर्बा-उत्सव से संगीत, तुर्राकलंगी से काव्य-गायन और स्वांग-नकल प्रदर्शनी से अभिनय, हास-परिहास, चुटीले व्यंग्य एवं जनमनोरंजन के तत्त्व जुटाकर माचकारों ने इस नई रंग शैली को पनपाया।'

राजस्थान में प्रचलित 'ख्याल' का प्रभाव भी 'माच' के खेलों में दिखाई देता है। इसीलिए प्रसिद्ध इतिहासज्ञ डॉ. रघुवीरसिंह ने ख्यालों को माचों का जनक कहा है। 'माच' की शैली के आरम्भकर्ता गुरु गोपालजी को माना जाता है, जो मूलत: राजस्थान के रहने वाले थे और बाद में मालवा में बस गए थे। ऐसा माना जाता है कि गुरु गोपाल जी ने मालवा क्षेत्र में राजस्थान के 'ख्याल' जैसा कोई नाट्य रूप न पाकर स्थानीय संगीत और लोककला रूपों के समावेश से 'माच' की शुरूआत की, जो परम्परा से क्रमश: परिष्कृत, संरक्षित और संवर्धित होता गया।

'माच' शब्द का सम्बन्ध संस्कृत मूल 'मंच' से है। इस प्रचलित परिवर्तित रूप मिलते हैं। उदाहणार्थ-माचा, मचली, माचली, माच, मचौली, मचान जैसे कई शब्दों का आशय मंच के समानार्थी भाव बोध को ही व्यक्त करता है। माच गुरु सिद्धेश्वर सेन 'माच' की व्युत्पत्ति के पीछे सम्भावना व्यक्त करते हैं कि 'माच' के प्रवर्तक गुरु गोपालजी ने सम्भवत: कृषि की रक्षा के लिए पेड़ पर बने 'मचान' को देखा होगा, जिस पर चढ़कर स्त्री या पुरुष आवाज आदि के माध्यम से नुकसान पहुँचाने वाले पशु-पक्षियों से खेत की रक्षा करते हैं गुरु गोपालजी ने 'मचान' शब्द को ध्यान में रखा होगा और फिर नाटक-प्रदर्शन के ऊँचे स्थान (मंच) से उसी 'मचान' की आकृति एवं रूप साम्य के आधार पर अपने मंच का नाम 'माच' दे दिया होगा। कालान्तर में यही नाम प्रचलित हो गया। वस्तुत: 'माच' के मंच और 'मचान' में पर्याप्त साम्य रहा है। पुराने दौर में माच का मंच इतना अधिक ऊँचा बनाया जाता था कि उसके नीचे से बैलगाड़ी भी गुजर जाती थी। इन दिनों मंच की ऊँचाई प्राय: सामान्य ही रहती है।

'माच' के आदि प्रवर्तक गुरु गोपाल जी के अलावा माच परम्परा को गुरु बालमुकुन्दजी, गुरु रामकिशनजी, गुरु भैरवलालजी, गुरु राधाकिशनजी, गुरु कालूरामजी, गुरु फकीरचन्दजी, गुरु शिवजीराम, गुरु चुन्नीलाल, श्री सिद्धेश्वर सेन, श्यामदास चक्रधारी आदि ने आगे बढ़ाया और अनेक खेलों का लेखन एवं प्रदर्शन किया। माच के विभिन्न गुरुओं के बीच नये-नये माच के निर्माण एवं प्रदर्शन की स्वस्थ प्रतिस्पर्धा रहती थी। विभिन्न माच गुरुओं द्वारा मालवी में रचे गए लगभग सवा सौ अधिक माच के खेल मिलते हैं, जिन्हें डॉ. मधुर ने सुविधा की दृष्टि से चार भागों में बाँटा है - धार्मिक और पौराणिक कथानक, शौर्य कथाएँ, प्रेमाख्यान और सामाजिक कथानक।

इन सभी प्रकार के खेलों में जीवन की विभिन्न पहलुओं की अभिव्यक्ति के साथ ही कहीं मानव मन की सुकोमल भावनाओं के रागात्मक सन्दर्भो को व्यक्त किया गया है, तो कहीं साहसी और वीर चरित्रों को, कहीं आध्यात्मिकता की अभिव्यंजना है, तो कहीं सामयिक समस्याओं से टकराने की कोशिश। विविधायामी जीवन सन्दर्भो की अभिव्यक्ति के साथ ही उच्चतम

मूल्यों की सिद्धि 'माच' की केन्द्रीय प्रवृत्ति रही है, जो कहीं पौराणिक तो कहीं ऐतिहासिक, कहीं लोक-प्रसिद्ध तो कहीं काल्पनिक चरित्रों के माध्यम से मूर्त होती है।

भारत की समृद्ध नाट्य परम्परा की जीवंतता और निरंतरता को आधार देने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान लोक-नाट्यों का ही रहा है। लोकमानस की अभिव्यंजना के लिए उपलब्ध विविध माध्यमों में से लोक-नाट्य ही अपनी तीव्र रसवत्ता और सहज सम्प्रेषणीयता के भाषागत अन्तर के बावजूद एक अन्त: सूत्र में जुड़े दिखाई देते है। लोकमानस की स्वाभाविक अभिव्यक्ति इन सारे लोक-नाट्य रूपों को एकसूत्र में जोड़ती दिखाई देती है। यह स्वाभाविक उनकी जटिल बौद्धिकता से विहीन भावात्मकता से उपजती है, जो कथानक, संवाद, गीत-संगीत, नृत्य, प्रदर्शन-शैली, रंग-शिल्प, भाषा आदि सभी स्तरों पर स्पष्टत: दृष्टिगोचर होती है। इस दृष्टि से मालवा क्षेत्र का लोक-नाट्य रूप 'माच' भारत के अन्य लोक नाट्यों रूपों से अलग नहीं है। उसमें भी वहीं लोकरंजता के अनुकूल संगीत, नृत्यमूलक अभिनय एवं प्रदर्शन के तत्त्व, धार्मिकता के साथ ही सामाजिक, राजनैतिक, लोककथामूलक और प्रेमाख्यानपरक कथानकों की बहुलता तथा शृंगार, वीर, करुण और हास्य रसमूलक अतिरंजित भावप्रवणता और तल्लीनता मौजूद है, जो भारत के अन्य लोकनाट्य रूपों जैसे नौटंकी, ख्याल, भवई, तमाशा, करियाला आदि में मिलते हैं। वस्तुत: इन सभी की सौन्दर्य दृष्टि संस्कृत नाटकों की भांति रसमूलक ही है। इसी तरह इन लोकनाट्य रूपों में वैयक्तिक संघर्ष के स्थान पर व्यक्ति एवं समूह के अन्त: सम्बन्धों की पहचान तथा जीवन की अनेक स्थितियों से गुजरकर एक तरह के संतुलन की दशा में दर्शकों को ले जाने की प्रवृत्ति मौजूद है, जिसमें कहीं लोकमंगल की सिद्धि होती है, तो कहीं कारुणिक अन्त के बावजूद लोकादर्श की स्थापना। माच के प्रवर्तक गुरु गोपालजी (1773-1842 ई.) से लेकर आज तक सृजनरत माचकारों की एक लम्बी फेहरिस्त है, जिन्होंने माच के लगभग डेढ़ सौ खेलों का प्रणयन किया है। बीसवीं शती के शुरूआती दशकों में 'माच' ही मालवा का प्रतिनिधि रंगमंच था, जिसके प्रदर्शनों में रात-रात भर सैकड़ों दर्शकों की भीड़ जुटी रहती थी। यद्यपि पिछली शताब्दी के ढलते-ढलते माच की लोकप्रियता एवं प्रदर्शनों में कुछ कमी आई है, फिर भी इसके संरक्षण, विस्तार और नवाचारी प्रयोगों द्वारा माच गुरुओं ने इसे आज जीवंत बनाए रखा है।

लेखक- प्रोफेसर एवं कुलानुशासक विक्रम विश्वविद्यालय,
उज्जैन (म.प्र.) मो. 9826047765

■

छायाकार–जगदीश कौशल

# समय की धरोहर

## पंडित रघुनाथ सेठ

**जन्म : 17 दिसम्बर 1931** **निधन : 15 फरवरी 2014**

पंडित रघुनाथ सेठ देश के मूर्धन्य बाँसुरी वादकों में से एक है. बांसुरी का जिन दिनों उत्तर–भारतीय शास्त्रीय संगीत में समायोजन हो रहा था तभी आपने बांसुरी को अपनाया और इसे शास्त्रीय संगीत के अनुरूप बनाने के लिए निरन्तर सूझबूझ एवं अथक परिश्रम द्वारा इसमें कई परिवर्तन एवं परिवर्द्धन किए सुविख्यात बांसुरीवादक पन्नालाल घोष का मार्गदर्शन भी आपको प्राप्त हुआ। बांसुरीवादन क्षेत्र को अनेकानेक प्रकार से समृद्ध बनाने में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आपने फिल्मस डिवीजन में काम करते हुए दो हजार से अधिक वृतचित्रों में संगीत दिया, फिर भी, एक बार फिर ''ये नजदीकियाँ'' तथा 'दामुल' जैसी फिल्मों में भी आपने संगीत दिया।

संगीत के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए देश की विभिन्न संस्थाओं द्वारा आपको सम्मानित किया गया। वर्ष 1983 में उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी पुरूस्कार एवं वर्ष 1995 का केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी पुरूस्कार प्रमुख हैं पंडित रघुनाथ सेठ का यह फोटो उनके बचपन के घनिष्ठ मित्र सुविख्यात वरिष्ठ छायाकार श्री जगदीश कौशल के एलबम से प्राप्त हुआ है।

संस्मरण

# सेठ से पंडित रघुनाथ सेठ तक का सफरनामा

जगदीश कौशल

वर्ष 1946 की बात है। नौगाँव (बुन्देलखण्ड) जिला छतरपुर की रामलीला मण्डली के मंच पर एक सीन समाप्त होने के बाद दूसरे सीन की तैयारी के बीच के समय में एक 15 साल का बालक आता है। सादा कुर्त्ता पायजामा पहने लखनवी शाल ओड़े बिखरे झबरे बालों बाला यह बालक उन दिनों का सुप्रसिद्ध गाना ''भारत की एक सन नारी की हम कक्ष सुनाते हैं'' बड़े स्वभाविक अंदाज में गाता है। जैसे ही बालक में गाने की अलाप वाली यें पक्तियाँ –

**सीता सीता करें, वनों में फिरें विरह में जरें...**
**राम रघुराई अपनी तीव्र ध्वनि में गाई वहाँ**

उपस्थित विशाल जनसमुदाय की तालियों की गड़गड़ाहट ने उस बालक का उत्साह वर्धन किया. यह बालक और कोई नहीं आज देश के सुविख्यात बांसुरी वादक पंडित रघुनाथ. सेठ ही थे।

इन पक्तियों के लेखक ने यह दृश्य अपनी बाल्यावस्था में स्वयं देखा है. यह मेरा परम सौभाग्य है कि मुझे बचपन से ही ऐसे महान संगीत शास्त्री का सांनिध्य प्राप्त हुआ. हम दोनों पब्लिक हाईस्कूल, नौगाँव में एक साथ पढ़ते थें यद्दिप वह मुझसे सीनियर थे लेकिन एक समान कलात्मक रूचि के कारण हम घनिष्ठ मित्र थे, उनका सेठ से सेठ जी बनने के पीछे भी एक रोचक संस्मरण है. स्कूल के दिनों में उनकी मित्र मण्डली उन्हे सेठ कहकर ही सम्बोधित करती थी एक दिन की घटना मुझे आज भी याद है. जब मैं उनके घर गया था और जैसे ही मैंने सेठ कहकर उन्हें पुकारा तो उनके पिताजी बाबू बद्री प्रसाद श्रीवास्तव जी दरवाजा खोलकर बाहर आये और मुझे अपने पास बुलाकर पूँछे जनाबे आली आप किनके साहब जादें हैं मैनें अपने पिताजी का नाम बताया तो तपाक से बोले अच्छा तो जनाब कौशल बाबू के साहबजादें हैं. मेरे पिताजी और सेठ जी के पिताजी तत्कालीन पोलिटिकल ऐजेन्ट के दफ्तर में एक साथ काम करते थे.

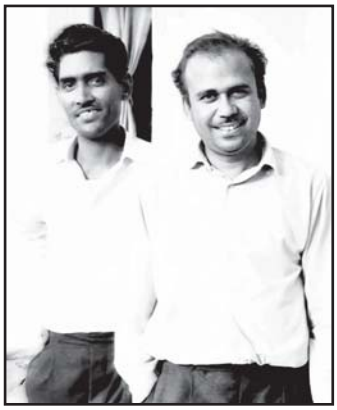

मूलत: इनका परिवार लखनऊ का रहने वाला था इसलिए लखनवीं तहजीब के कायल थे. मुझे समझाकर बोले ये क्या सेठ ..सेठ लगा रखा है क्या आप उन्हें सेठ जी कहकर नहीं बुला सकते हैं बस उस दिन के बाद से पूरी मित्र मण्डली में रघुनाथ सेठ भैया सेठ जी हो गए.

सेठ जी से पंडित रघुनाथ सेठ तक का सफरनामा तो इतना लम्बा और संर्घष पूर्ण रहा जिसका यदि विस्तार से वर्णन किया जाय तो एक अच्छा खासा ग्रंथ तैय्यार हो जायेगा मैं यहाँ उनकी कुछ विशेष उपलब्धियों का उल्लेख करना आवश्यक समझता हूँ जिनके कारण वह साधारण

सेठ से पंडित रघुनाथ सेठ के नाम से सुप्रसिद्ध हुए। पंडित रघुनाथ सेठ की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उन्होंने बांसुरी जैसे वाद्ययंत्र को शास्त्रीय संगीत के निष्पादन के अनुरूप बनाने के लिए निरन्तर सूझ बूझ एवं अथक परिश्रम द्वारा इसमें कई परिवर्तन और परिवर्धन किए. आपने 50 के दशक में अपनी एक नवीन शैली बनाई जो गायकी और तंत्रकारी का मिश्रण थी. इस प्रकार बांसुरीवादन के क्षेत्र को अनेकानेक प्रकार से समृद्ध बनाया.

दूसरी उपलब्धि देश के अग्रिम पंक्ति के शास्त्रीय संगीतकार होने के साथ आपने भारत सरकार के फिल्म्स डिवीजन में काम करते हुए लगभग दो हजार से अधिक वृत्तचित्रों में संगीत देकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया तभी तो टी.एस. जौहर ने एक बार उनके नाम का उल्लेख करते हुए लिखा था कि फिल्म डिवीजन में रघुनाथ सेठ ने सबसे ज्यादा फिल्मों में संगीत दिया. इसके अलावा पंडित रघुनाथ सेठ ने ''फिर भी'', ''एक बार फिर'', ''ये नजदीकियाँ'',''दामुल'',''परिणति'' आदि।

कमर्शियल फिल्मों में भी संगीत निर्देशन किया है. श्री सेठ ने 17–18 साल की कच्ची उम्र में मुम्बई जाकर अपना कैरियर शुरू किया. मलाड के पास गांधी भवन में रहते हुए वह सुविख्यात बांसुरी वादक पन्नालाल घोष के सानिन्ध में आए और उनसे उन्हें मार्गदर्शन प्राप्त हुआ इसके पहले वह सन्1951 में एच. एम. बी. एज क्लूट प्लेयर काम कर चुके थे सन् 1951 से 1954 तक मुम्बई में रहकर कई फिल्मों में बांसुरी वादन किया आपने सन् 1954 में आकाश वाणी के लखनऊ केन्द्र में म्यूजिक कम्पोजर और उसके बाद विविध भारती और दुरदर्शन दिल्ली में म्यूजिक प्रोड्यूसर के पदों पर रहकर हजारों की संख्या में सुविख्यात कवियों, शायरों और सन्त महात्माओं के गीत, गजल और भजनों को संगीतवद्ध किया।

आपके संगीत निर्देशन में गाने वालों की सूची में भारत रत्न स्वर सम्रगी लतामंगेशकर आशा भोंसले, तलत महमूद, मन्ना डे, हेमन्तकुमार, महेद्रकपूर, भूपिन्दर हजारिका, सुरेश वाडकर आदि के साथ तत्कालीन आकाशवाणी की सुप्रसिद्ध गायिका शान्ति माथुर, शान्ता सक्सेना कुसुम पंडित जैसे अनेक नामों की एक लम्बी फेहरिस्त जुड़ी हुई है जिसमें नन्हा मुन्ना राही हूँ देश का सिपाही हूँ –बोलो मेरे साथ जयहिन्द जय हिन्द'' गाने वाली मशहूर गायिका शन्ति माथुर का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

■

स्मृति शेष

# संकल्प रथ के सारथी: अधीर जी के व्यक्तित्व का सच्चा और आत्मीय मूल्यांकन है...

**-नर्मदा प्रसाद उपाध्याय**

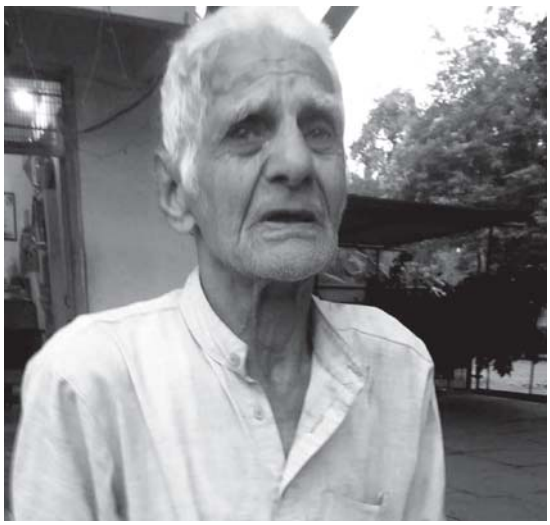

अन्तत: अधीर जी सदैव के लिये चले गये। वे धैर्य से इतना जी गये यह भी कम विस्मय नहीं क्योंकि उनके जैसा जुझारू, पारदर्शी, मुखर आलोचक और साहित्य के मुफ्तखोरों से जूझने वाले की नियंता लम्बा जीवन कहां देता है ? उनकी तरह के बिरले दीप विरोध की हवा के निर्मम थपेड़ों में जल्दी ही बुझ जाते हैं, बुझा दिये जाते हैं। तो जाने कितने स्मृति बिम्ब उभरते और ओझल होते हैं। मुझे उनका बहुत स्नेह मिला। अपने भोपाल प्रवास के समय तो प्राय: अक्सर भेंट होती। मुझे निकट से उनके संघर्ष और फक्कड़पन को देखने और अनुभव करने का अवसर मिला।

इस निर्मोही और विरागी सर्जक ने मोह और अनुराग को रचा जैसे कोई आजीवन पतझड़ झेलने वाला वसन्त को गाये। यह नदी बीमार है के बहुतेरे गीत इसके गवाह हैं। गीत और नवगीत को समर्पित पत्रिका 'संकल्प रथ' उनके जीवन का संकल्प बन गई जिसे पूरा करने के लिए उन्होंने अपना जीवन दिया। तमाम विपरीत परिस्थितयों और घोर आर्थिक संकट के बीच वे इस संकल्प की दीप शिखा को जलाए रहे। लेकिन जब उसे बंद करना पड़ा तो लगा कि जैसे उनके जीवन के द्वार का कपाट बंद होने लगा हो। संकल्प रथ उनकी प्राण शक्ति का संबल था।

वे प्रवाह के खिलाफ रहे। साथ बहते तो कहानी सुखान्त हो सकती थी। वे थे तो राजस्थान से लेकिन छत्तीसगढ़ उनके रक्त में था वे वहां की मिट्टी से आजीवन जुड़े रहे। उनके जैसा यात्री नहीं देखा जिसने कोई राह चुन ली तो फिर पांव भले चलने में असमर्थ हो गये लेकिन यह पगडंडी नहीं छोड़ी।

न्याय बहुतों के साथ नहीं होता लेकिन ऐसा बहुत कम के साथ होता है कि उनके समर्पण को जानते बूझते विस्मृत किया जाये उनके प्रविष्टि को साहित्य के बही खाते में प्रविष्ट न होने दिया जाये। अधीर जी की नियति ऐसे ही विस्मरण और अप्रविष्ट की रही। एक गीत तो रचा गया लेकिन वह बिन गाया रह गया। उन्हें मेरी विनम्र श्रद्धा का यह स्वर समर्पित।

लेखक: प्रख्यात ललित निबंधकार तथा कलाविद् है।

■

# वे छंदबद्ध कविता के हिमायती थे

**- रामवल्लभ आचार्य**

स्मृति : सोमवार दिनांक 8 फरवरी 2021 को जैसे ही सूरज ने मुंह फेरा प्रख्यात गीतकार श्री राम अधीर ने भी सदा सदा के लिये आँखें मूँद ली। गीत विधा के प्रति एक निष्ठ भाव से जीवन भर समर्पित रहने वाले रामावतार त्यागी की परम्परा के गीतकार श्री राम अधीर गीत विधा पर समर्पित पत्रिका 'संकल्प रथ' के माध्यम से पूरे देश के गीतकारों के सृजनकर्म को प्रकाशित प्रसारित करने में अपनी महती भूमिका का निर्वहन करते रहे। रामनवमी दिनांक 12 अप्रैल 1935 को महाराष्ट्र के आर्वी में जन्में श्री राम अधीर का अधिकांश जीवन भोपाल में बीता। वे अपने समय के सर्वाधिक प्रसारित होने वाले दैनिक समाचार पत्र नवभारत के साहित्य संपादक रहे। वे साहित्य के उत्कृष्ट सृजन के सदैव पक्षधर रहे और उन्होंने अपनी संपादकीय प्रतिभा के बल पर साप्ताहिक परिशिष्ट का स्तर कभी गिरने नहीं दिया। वे छंदबद्ध कविता के हिमायती थे और छंद से विचलन के घोर विरोधी थे। इसी कारण वे अनेक रचनाकारों की घोर आलोचना से भी नहीं झिझकते थे। अनेक वर्षों तक वे छंदधर्मी रचनाकारों की अनौपचारिक संस्था 'छंद' के माध्यम से गोष्ठियों का आयोजन करते रहे किन्तु उनके तल्ख टिप्पणियों के कारण अनेक गीतकार उनसे विमुख हुए और वह संस्था अधिक नहीं चल सकी। श्री राम अधीर के गीत संसार में महत्वपूर्ण स्थान रहा और देश भर में उन्हें गीत केंद्रित आयोजनों में आमंत्रित किया जाता रहा। उनके प्रकाशित कृतियाँ गीत संग्रह 'सूरज को उत्तर दो', 'धूप सिरहाने खड़ी है', 'बूँद की थाती' और 'वह नदी बीमार है' उन्हें देशभर के अनेक साहित्यिक सम्मानों से विभूषित किया गया जिसमें सांस्कृतिक संस्था मधुवन का 'श्रेष्ठ कला आचार्य' अलंकरण भी शामिल है। विगत वर्ष नगर निगम भोपाल द्वारा सम्मान निधि रू. एक लाख सहित। राजेन्द्र अनुरागी सम्मान हेतु उनका चयन किया गया था। किन्तु किन्हीं कारणों से वह कार्यक्रम एन मौके पर निरस्त हो गया। 85 वर्ष के सार्थक जीवन यात्रा के पश्चात इस गीत पुरोधा के महाप्रयाण से गीत विधा को गहरा आघात लगा है। मैं अपनी अपार श्रद्धा के साथ उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्मा को शांति और परिवार को यह दु:ख वहन करने की शक्ति प्रदान करे।

ऊँ शांति: शांति: शांति:

लेखक: वरिष्ठ साहित्यकार कवि व गीतकार है।

■

स्मृति लेख

# बंसी कौल के रंग कर्म का ओर-छोर

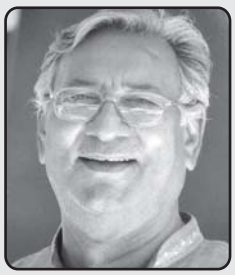

रामप्रकाश त्रिपाठी

बंसी कौल! नाटक की दुनिया की जानी-पहचानी शख्सियत। यह शख्सियत वह है जो दुनिया-जहान के सामने है। बहुत ही कम, बल्कि बेहद अंतरंग लोग ही जानते हैं कि इस बंसी का कोई एक सुर नहीं है। एक बंसी में कई बंसी हैं। कवि बंसी, चित्रकार बंसी,लेखक-साहित्यकार बंसी, चिंतक-विचारक बंसी, श्रमजीवी और अलाल बंसी। और भी बंसी हो सकते हैं उसकी शख्सियत में पिनहा-मैंने सिर्फ उनका जिक्र किया जिनसे मैं परिचित हूँ जैसे दोस्त बंसी, भावाकुल बंसी,व्यावहारिक बंसी। मैं बंसी को ग्वालियर से जानता हूँ। वे राष्ट्रीय नाटय विद्यालय से रंग-मंच स्नातक कर रंग-श्री लिटिल बैले ट्रुप के साथ काम करने के लिये आये थे। अभिनेता बंसी नाट्य निर्देशक बंसी, कोरियोग्राफर बंसी और संस्थाबाज.... बंसी। रंगश्री के नाट्य प्रकोष्ठ की तरह शुरू हुआ रंग-विदूषक। आधुनिक और पारंपरिक रंगमंच की प्रयोग भूमि। विदूषक में रंजक भाव तो है लेकिन बुद्धि-विवेक और जन पक्षधरता की संवेदना के साथ। भारतीय शास्त्रीय रंगमंच में विदूषक की परिकल्पना ही ऐसी है।

महाराजा अग्निवरण के पैर, आला अफसर, की एक जमाने में धूम हुआ करती थी। ये नाटक बंसी की निर्देशकीय प्रतिभा के ही नहीं उनके सोच और विचारधारा के परिचायक भी रहे हैं। यों तो रंग-श्री से जुड़ना ही उनके वैचारिक रूझान का परिचय देने के लिए काफी था, फिर भी विचार और विचारधारा का सृजन में उसका प्रस्फुटित होना जरूरी था। यह उनके नाटकों की परिकल्पना और प्रस्तुतियों ने किया।

रंगश्री उसके संस्थापक शांतिबर्धन, गुलबर्धन और लंबे समय तक प्रिंसिपाल, कोरियोग्राफर रहे प्रभात गांगली उदय शंकर के अल्मोड़ा स्थित नाट्य शिविर, कम्युनिस्ट पार्टी के सेंट्रल स्कॉड, इप्टा से आते हैं। शांतिदा तो बाकायदा क्रांतिकारियों में से रहे हैं और फरारी काटी है। गुलबर्धन पार्टी की कार्ड होल्डर रही हैं। सब कुछ के बावजूद इन सबकी और रंगश्री की खूबी यह रही है कि वे कला का प्रयोग मनुष्य के परिष्कार और रूचि बोध के उन्नयन के लिए करते रहे हैं। दलगत राजनीति में वे नहीं रहे। स्वाभाविक था कि रंगभूमि पर जहाँ बैले यानी नृत्यनाटिका के क्षेत्र में सर्वसमावेशिता और सांस्कृतिक बहुलता का पल्लवन हो रहा हो,वहाँ बंसी के सींग आसानी से समा सकते थे। बंसी ने अपनी युवावस्था का वेशकीमती वक्त और ऊर्जा का भाग रंगश्री को दिया। बल्कि नवोन्मेषी, बहुजन हिताय रंग-चेतना को दिया । इससे उनकी वैचारिक और सकर्मक संकल्पना और समर्पण को समझा जा सकता है।

रंगश्री रामायण, पंचतंत्र,डिस्कवरी ऑफ इंडिया,पशुतंत्र आदि नृत्यवाटिकाओं द्वारा जहाँ भारतीय बैले की अवधारणा को शास्त्रीय और लोक तत्वों के रसायन से तैयार कर रहा था तथा इतिहास को कलात्मक संवेदना के साथ मंचित कर रहा था , वहीं उसमें नये समय की गति और समकालिक दृष्टि विषयक कमज़ोरियाँ नजर आ रही थीं। इस बर्फ को तोड़ने के लिए बंसी ने एक बैले तैयार किया। 'आकारों की यात्रा' छतरियों के द्वारा ऐसी-ऐसी सम्मोहक छवियाँ उन्होंने कल्पनाशील संयोजन से गढ़ीं कि लोग दाँत में ऊँगली दबाकर रह गये। इस तरह यहाँ उन्होंने कोरियाग्राफी में भी अपना लोहा मनवाया । ऐसा ही उन्होंने संस्था द्वारा नवीन बैले अतीत की स्मृतियाँ ( मेमोरी ऑफ सैड़नेस ) के अंतिम दिनों में अपनी जादुई संस्पर्श से किया।

यह बैले गैस कांड पर आधारित था। भोपाल गैस कांड के बाद बदहवास शहर के सामान्यीकरण में जैसी रचानात्मक भूमिका बंसी ने निभाई। वह कलाकारों के लिए प्राय: दुर्लभ होती है। गहरी करूणा और जनसंवेदी हुए बिना यह संभव नहीं होता है।

बंसी नाट्य जगत में कुशल अभिनेता, कुशल निर्देशक और कुशल मंच शिल्पी के रूप में ख्यात हैं। उनकी कीर्ति बहुवर्णी है। पुरस्कारों, सम्मानों की मैं बात नहीं कर रहा हूँ न उनकी वैश्विक छवि को उकेरने का उपक्रम कर रहा हूँ। मैं पूरी विश्वसनीयता, दावे और चाक्षुप प्रमाणों के आधार पर कहता हूँ कि बंसी बेहद डरपोक रंगकर्मी हैं। हालाँकि उनकी ज्ञान-गुण्डई और बैखोफ मुँहफटपन से मैं औरों की तर खूब वाकिफ हूँ लेकिन जिस तरह अपनी प्रस्तुति के बाद वे दर्शकों, प्रशंसकों, रिपोर्टरों और समीक्षकों से आँख चुराते हैं, यह मैने खूब देखा है और यह सबको आश्चर्यचकित करता है।

वजहें क्या हैं इसकी ?

क्या बंसी के प्रॉडक्शंस इतने खराब होते हैं कि वे दर्शकों को मुँह नहीं दिखाना चाहते ? या यह कि वे रूबरू दर्शकों की आलोचना या निंदा बर्दाश्त नहीं कर सकते ? क्या वे आलोचना असहिष्णु हैं ? ऐसा तो नहीं हो सकता। प्राय: रंगकर्म में उनकी जादूगिरी के दर्शक कायल हैं। प्रयोगधर्मिता का जहाँ तक सवाल है, उसमें वे किसी से पीछे नहीं हैं। मध्यप्रदेश का शिखर सम्मान, भारत सरकार की संगीतनाटक अकादमी द्वारा दी गई उपाधि और पद्श्री उन्हें कोई पेड़ पर लटके नहीं मिल गये थे। 'यकीनन तुझमें कोई बात होगी, ये दुनिया यूँ ही पागल तो नहीं है' ( ताज ) । फिर इतना, डर, इतना संकोच, इतनी भीति पब्लिक से क्यों ?

दरअसल बंसी एक बेचैने आत्मा रहे है। 'संतोष -धन' उनके खाते में नहीं हैं। वे अमोघ असंतोष के साधक हैं। सबसे ज्यादा असंतुष्ट वे स्वयं और स्वयं की कृतियों से करते रहे हैं। उन्हें अपना हर सृजन अधूरा और अपूर्ण लगता रहा है। वे उस 'पाजिटिविटी ' के

मुखालिफ है जो स्वेटमार्डन से शिवखेड़ा तक के लोग परोस रहे हैं।

वे सृजन- शंकालु हैं। अर्थात् अपने ही सृजन के प्रति शंकालु। शायद वे आलोचना से उतना नहीं डरते जितने कि आत्मालोचन से आत्म प्रताड़ित होते हैं। इसलियें वे हर प्रस्तुति के बाद ज्यादा सिगरेट फूँकते ओर सामान्य से ज्यादा पैग पीते और अनर्गल गप्प-गोष्ठियों में मुब्तिला नजर आते रहे हैं साथ ही प्रस्तुति पर चर्चा से बचते हैं। मुझे लगता है कि बंसी को ये ही बात विशिष्ट और बड़ा सर्जक भी बनाती है।

मैंने उन्हें बहुत करीब से रंग निर्देशन करते देखा है। उनकी रेपट्री के अभिनेता प्रस्तुति के बाद कितने ही खुश नजर क्यों न आते हों, लेकिन पूर्वाभ्यास के दौरान वे हलाकान ही रहते हैं। वजह यह है कि प्रस्तुति के मंच पर जाते-जाते निर्देशक बंसी के दिमाग में नया विचार काँधता है तो वे या तो प्रस्तुति के ढंग में परिवर्तन कर देते हैं अथवा सेट या संगीत में बदलाव ला देते हैं। अंदाजा लगाया जा सकता है कि इससे पूर्वाभ्यास के तकाजों के चलते मंचस्थ रंगकर्मियों को कितना तनाव झेलना पड़ता होगा। कभी-कभी कलाकार से चूक भी हो जाती है और कभी-कभी आशा से अधिक परिणाम वे देते हैं। बहरहाल अपनी प्रस्तुति के प्रति संशयशीलता बंसी में बनी ही रहती है। अपनी रचना के लिये वे शंकालु रहते हैं आश्वस्त नहीं । यह निराश्वति ही उनको नये से नया और 'जो है उससे बेहतर' करने के लिए प्रेरित करती है। चूंकि वे स्वयं संतुष्ट नहीं होते इसलिए प्रशंसा बटोरते भी नहीं फिरते। यह लिखे जाने तक उनके द्वारा निर्देशित 'तुक्के पे तुक्का' नामक व्यंग्य नाटक की भारतीय उपमहाद्वीप में सौ से ज्यादा प्रस्तुतियाँ हो चुकी हैं। कई कलाकार बदले, कलाकारों की पीढ़ियाँ बदली,मगर उदय शाहणे पर से बंसी का भरोसा नहीं बदला। उन्होंने अब तक 100 प्रस्तुतियों में तुक्कू की भूमिका निभाई है। अगली ' बात तुक्के पर तुक्का' की। इसमें एक नवाब का किरदार है। वह राजनीतिक परिदृश्य के हिसाब से बदल जाता है। इंदिरा गांधी के जमाने में नवाब महिला (समता सागर) थीं और मोदी काल में उन्हीं की कद काठी के हर्ष द्रोण की पुन: वापसी हो गयी। पूरा नाटक फार्स है, मगर वह पक्षपात, भाई-भतीजावाद, राजनीतिक षडयंत्र, दुरभिसंधियों से विदूषकी अंदाज में संवाद करता है। यह संवाद तात्कालिक रूप से दर्शकों को गुदगुदाता भी है और उनकी चेतना या संवेदना को झकझोरता भी है, वैकल्पिक दुनिया के लिए प्रेरित भी करता है।

'सीढ़ी-दर -सीढ़ी उर्फ तुक्के पे तुक्का' का उदाहरण मैं खासतौर पर इसलिये दे रहा हूँ क्योंकि यह एक नयी नाट्य-शैली है जो बंसी ने बहुत खाक छानने के बाद ईजाद की है। हबीब तनवीर के अतिरिक्त अकेले बंसी ऐसे रंग निर्देशक हैं जिनकी बिलकुल अपनी और भिन्न शैली हैं। दोनों में दिलचस्प यह है कि दोनों की शैलियों के रंग-शिल्प' लोक आधारित हैं। हबीब जी की प्राय: सारी बतकही मुहावरे में है। बंसी वक्त के तकाजे के मुताबिक लोक का विस्तार करते नजर आते हैं। बंसी के रंग-रसायन में केवल एक क्षेत्र विशेष का लोक-संस्कार नहीं है। वहाँ लोक के विविध रंगों के साथ अखाड़ेबाजी भी है, नटगीरी भी है, चौपाल चर्चा भी हैं। कथा गायकी भी हैं और असमाप्त लतरामियाँ भी । इसलिए बंसी के रंग विदूषक (जो 1984 से स्वतंत्र रूप में सुस्थापित हुआ।) में किस्से आफंती के, अंधेर नगरी, गधों का मेला, नैन नचैया, बेढब थानेदार, सौदागर और रंगबिरंगी दुनिया का भाव-बोध गड्डमड्ड होता है, तो वह न कल्चर का धल्लूधारा होता है न अमलगमेशन बल्कि वह अनेकता में एकता वाले विश्व मानव की तलाश में हांका लगता है,जन जागरण की तरह का तमाशा होता हैं। वहाँ खोजा नसीरूद्दीन,वीरबल, तेनालीराम रंग अनुभव में परकाया प्रवेश करते दीखते हैं, ब्रेख्त से संवाद करते दृष्टिगोचर होते हैं। यह अद्भुत ढंग से होता रहा हैं।

अब हमारे कतिपय आधुनिकतावादी या उत्तर आधुनिकतावादी रंग-प्रेमियों को इसमें सिर्फ भांड-मिराशीपन या अतार्किक उछलकूद नजर आती हो तो नजर आये और रूढ शास्त्रीयता पर परंपरावादियों को यह शास्त्रीयता का लंघन नज़र आता हो तो आये, लोक कलाओं के स्वयंभू विवेचकों,व्याख्याकारों को इसमें लोक नजर में न आता हो तो न आय, मगर जो सर्वसमावेशिता में यकीन करते हें, उन्हें बंसी का विदूषक विश्वसनीय दीखता है। क्योंकि इसमें हास्य बोध भी है। सामाजिकता में अर्जित विचारधारात्मक प्रवाह भी है, सहज-सरल प्रतिरोध और आक्रोश भी है। कहना चाहिये कि असहमतियों के साथ दृढ़ प्रतिज्ञता भी है, रंजकता में पोषीदा गहरी करूणा भी है इसलिए रंग विदूषक का नाटक जब गुदगुदाता है तो दर्शक की आँखें नम भी होती हैं। उसके नेत्र विस्फरित भी होते हैं क्योंकि वह' साधारणी करण के जरिये दर्शक के दुख-दर्द घुटन-पीड़ा पर अँगुली भी रख देता है। बंसी में यह करूणा, यह पीड़ा पैवस्त है। मैं, यानी रामप्रकाश अपने रहन-सहन के मामले में उदासीन हूँ। सजने की इच्छा पर हमेशा' ऐसी क्या पड़ी है' का भाव हावी रहता है। बंसी उम्र में मुझसे छोटे हैं पर अनुभव में शायद बड़े। एक बार मैं उनके घर द्वारका के सतीसर अपार्टमेण्ट में ठहरा। शहर में घूमा भी। अचानक उन्होंने गाड़ी बाटा के शोरूम पर रूकवाई। मुझे लगा जूता-चप्पल लेना होगा। यों भी बंसी ब्रांडेड चीजें चावसे पहनते और बरतते हैं। अंदर गये तो वे मेरी तरफ इशारा करके बोले इनके नाप का जूता दिखाओ। मैं हतप्रभ! मैंने कहा ये क्या बकवास है, मैं अच्छा खासा जूता पहने हुए हूँ। बस इतना कहना था कि कश्मीरी पंडित के मुँह से मातृ देवो भव, पितृ देवा भव। किस्म के श्लोक झरने लगे। मैंने सार्वजनिक प्रदर्शन को स्थगित करवाने में ही खैर समझी। बहरहाल सरे बाजार बंसी ने मुझे जूते दे दिये। गाड़ी में बैठने के बाद बारी मेरी थी। बंसी ने कहा कि तुम समझोगे नहीं । मेरा बचपन बहुत गुरबत में बीता है। कश्मीर में जब बर्फ ही बर्फ होती और पास में फटे पुराने जूते होते या न भी होते तो भारी तकलीफ होती। तुम मैदान के लोग नहीं समझ सकते कि बर्फ के शूल कैसे चुभते हैं। तबसे जूते मेरा कॉम्पलेक्स हैं। अच्छे जूते मेरा सपना रहे हैं। तुम्हारे पुराने और थेकड़ेदार जूते को देखकर मेरा कॉम्पलेक्स जाग उठा और बंसी यह कहकर हँसे। मगर यह सिर्फ हँसी नहीं थी- उसमें गहरा दर्द भी था। वार्तालाप को हलका करने के लिये मैंने कहा कि तुम साले बर्फ वे चाकू के मारे हुए हो। वैसे जूते मैं कम ही पहनता हूँ। ज्यादा चप्पलें पहनता हूँ पर जब भी जूते पहनता हूँ तो उनमें बंसी की पैबस्त यातना न चाहकर भी दिख जाती है।

बंसी ने अपनी स्वतंत्र रेपट्री बच्चों से शुरू की। रंग बिरंगे जूते, मोची की अनोखी बीवी ,रिपट्री के आरंभिक नाटक थे। यह 1984-1985 का दौर था। दिलचस्प है कि इन नाटकों की कार्यशालाओं में प्रशिक्षित बच्चे आज भी रंग विदूषक परिवार के सदस्य हैं। कुछ तो रंग विदूषक के नाटकों का निर्देश करते हैं। रंग विदूषक प्रकटत: ड्रामा स्कूल नहीं है। लेकिन उसमें कलाकार का परिष्कार और विकास गुरूकुल की तरह होता है। मैंने रंग संस्थाएँ बहुत देखी हैं। सूत्रधार का निर्माण, संचालन भी किया है। अनुभव से कह सकता हूँ कि कोई भी नाटक मंडली एक निर्देशक के नाम पर चलती है। लेकिन रंग विदूषक में ऐसा नहीं है। उसके कलाकारों ने अपनी नाट्क मंडिलयाँ भी बनाई हैं लेकिन रंग विदूषक में रहते हुए संस्था के नाटक कों का निर्देशन किया है और कई-कई जगह मंचन किया है। यह सचमुच दुर्लभ है। यह दुर्लभता मात्र संयोग नहीं है। उसमें वही पैबस्त करूणा का सृजन है जो न दिखता है न दिखाया जाता है। कला की या नाटक की दुनिया का आदमी नहीं है बंसी । वह सामाजिक है। समसामजिक विषयों से वह मंच को सिर्फ रचता नहीं है और न सिर्फ मुद्दे-दर मुद्दे कलात्मक मुठभेड़ करता है रंग माध्यम से। उसे यह गलतफहमी भी नहीं है कि उसके बदले से समाज बदल जायगा। हाँ, लेकिन नयी और बेहतर दुनिया का सपना जरूर है उसके पास। नई दिल्ली के पास हरियाणा के साहिबाबाद में

जब जन नाटक मंच के कलाकार-निर्देशक सफदर हाशमी का बेहरमी से कत्ल किया गया था, तब देशभर के रंगकर्मियों को जुटाने और राष्ट्रव्यापी प्रतिरोध खड़ा करने में बंसी की भूमिका बहुत अहम और उग्र थी। रंग जगत के सावयवी, अग्रगामी और विचारधारा समृद्ध मंच 'सहमत' के गठन में भी उसकी उल्लेखनीय सहभागिता रही। यह सब कानों सुनी बात है। आँखिन देखी, गतिविधि तो 1992 के भोपाल के सांप्रदायिक दंगो के दौरान की है। दिसंबर भोपाल के लिए त्रासद महीना रहा है। दिसंबर में ही भोपाल गैस कांड (2 दिसंबर 1984) हुआ था और दिसंबर में ही बाबरी मस्जिद ढहाई गई थी (6 दिंसबर 1992) उसके बाद उस भोपाल में भी सांप्रदायिक कारणों से 142 लाशें गिरी थीं । जिस भोपाल में भारत-पाक विभाजन के दौरान खून तो दूर, किसी का पसीना तक नहीं बहा था। पहली बार भोपाल के दामन पर धर्मांध-सांप्रदायिकता ने खून के छीटें डाले थे। औसत भोपालियों की तरह बंसी भी दुखी थे। अतिरिक्त संवेदनशीलता के चलते। मगर बंसी अनिद्रा के शिकार हो गये। कर्फ्यू आलूद शहर। आठों दिशाओं की ओर से उठते गहरे काले धुएँ की मोटी-मोटी लकीरें जैसी धरती और आसमान को तक्सीम करने पर आमादा थी। पुलिस -फौज की दौड़ती चिंघाड़ती जीपें। प्रोफेसर कालोनी की एक छत पर खड़े होकर बंसी ने भी यह देखा। बंसी ने जो देखाा वह इस सबसे ज्यादा था घर से बच्चे भी बाहर नहीं निकल सकते थे। वे पतंगें उड़ा रहे थे। बंसी ने धुआँ-धुआँ आसमान में पतंगें देखीं और सोचा-

**जो कुछ आज हैं वो कल तो नहीं है**
**ये शामे गम मुसलसल तो नहीं है।** (ताज भोपाली)

....और आसमान की पतंगें उड़ाने का मन बना बंसी का । फोन खटकाये गये। मध्यप्रदेश विज्ञानसभा, भारत ज्ञान विज्ञान समिति, एकलव्य, जनवादी ,लेखक संघ के साथी दंगों में घायल, उजड़े लोगों की मदद कर रहे थे। मध्यप्रदेश मेडीकल रिप्रजेण्टेविट एसोसिएशन के साथी सेंपल वाली सारी दवाएँ और उपकरण मुहैया करा रहे थे। कर्फ्यू लंबा खिच रहा था। दिन में करफ्यू में ढील के वक्त कांग्रेस पार्टी ने नीलम पार्क में अमन का जुलूस निकालने के लिए आह्वान किया। मतभेदों को झटककर सभी लोग जुटे। मैं, राजेश जोशी बंसी कौल, विनोद रायना, संतोष चैबे, राजेंद्र शर्मा, सतीश मेहता, एसआर आजाद ,डॉ. अजय खरे किशोर उमरेकर.....आदि-आदि, सभी वहीं थे। मंच पर से दिग्विजय सिंह ने घोषणा की कि अमन-जुलूस निकालने की इजाजत पुलिस नहीं दे रही हैं। हम प्रशासन की मदद के मद्देनज़र अमन जुलूस स्थगित कर रहे हैं।

हम सबको धक्का लगा। नेताओं से हुज्जत भी की, मगर नतीजा नहीं निकला। तब हम सबने बैठकर वहीं नीलम पार्क में सांस्कृतिक मोर्चे' का गठन किया और अमन जुलूस निकालने का फैसला किया। नये भोपाल में दिन का कर्फ्यू नहीं था लिहाजा अरेरा कालोनी के एकलव्य कार्यालय में मोर्चे की बैठकें हुईं। जुलूस की थीम बनी। ''मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना'' यह सांप्रदायिक सद्भाव के मद्देनज़र भगवत रावत ने सुझाया था। लेकिन यह शहर तो मज़हब के नाम पर ही जलाया गया था, अत: इस पर सहमति नहीं बनी। दो नाम और आये ''खून के धब्बे धुलेंगे कितनी बरसातों के बाद'' और ''खून फिर खून है टपकेगा तो जम जायेगा'' तय हुआ कि इनमें से किसी एक को ही जुलूस की थीम की तरह रखा जायेगा। बंसी ने कहा जुलूस सिर्फ जुलूस न हो, उसमें....।

बड़े-बड़े आकार की पतंगे हों, उनमें नारे और संदेश लिखे हों। उन्होंने कहा कि एक चादर हो जो खून में लिथडी हो। ठेले हों जिनमें श्रमिक काम कर रहे हों मगर उन पर एक जाल डला हो और उनके हाथ मजबूरन रूक गये हों। ताजिये के जुलूसों में या दिल्ली की फूलवालों की सैर के दौरान जैसे ने नेजे निकलते हैं वैसे कलात्मक नेजे तैयार किये जाएँ। सबको सहमति बनी। भगवत रावत, राजेशी जोशी, संतोष और विनोद ने कवितांश और आप्त संदेश ढूँढे। बंसी ने थियेट्रिकल डिवाइस से जुलूस डिजाइन किया। शहर भर के लेखकों, कलाकारों, रंगकर्मियों, संस्कृतिकर्मियों को फोन से सूचित किया गया। जुलूस की तिथि निर्धारित हुई। पुलिस अधीक्षक ने शांति जुलूस की इजाजत देने से इंकार किया। मगर सब अड़ गये। अधीक्षक ने कहा कि अवज्ञा करेंगे तो हमें सख्ती पर मजबूर होना पड़ेगा। हम सबने कहा ठीक है आप शांति जुलूस पर लाठी चलवाइये, गोलियाँ बरसाइये, मगर यह कार्रवाई नहीं रूकेगी। आखिर यह गांधी का देश है।

अंतिम से एक दिन पहले 90 फिट लंबी चादर पर खूब सारा लाल रंग डाला गया। एकलव्य कैंपस में उसे बिछा दिया गया। जब छत पर चढ़कर बंसी ने उसे देखा तो दौड़ते हुए नीचे आये और बोले कि नहीं ,यह भयानक है। खून का ऐसा प्रदर्शन दहशत पैदा करेगा। तब तमाम, पेस्टल कलर्स लाये गये और खून के लाल रंग को तमाम रंगों में सराबोर कर दिया गया। जाहिर था कि तब जुलूस की थीम, जो बैनर पर लगनी थी वह अप्रासांगिक हो गयी। लिहाजा नयी थीम बनी, जो राजेश और बंसी ने मिलकर बनाई- ''सब रंगों का एक ही नाम- हिंदुस्तान-हिंदुस्तान''।

जीपों-कारों, तांगों में लादकर जब इस चलित मंचीय सामग्री को लेकर हम इकबाल मैदान पहुंचे तो हमारे आश्चर्य का ठिकाना नहीं था कि हमारे पांच सौ अमन पसंद लोगों के टारगेट से छह गुना लोग वहाँ प्रतीक्षारत थे। पुलिस के पास इस उत्साह और संकल्प को रोकने का मनोबल नहीं था। लिहाजा वे इस शांति जुलूस की व्यवस्थाओं में जुट गये।

'सब रंग चादर' जैसे किसी मजार पर चढ़ने वाली पवित्र चादर की तरह हो गयी। हर आदमी उसे छूकर देखता । जुलूस में जीपों पर, ठेलों पर नेजों पर पतंगें ही पतंगें। ऐसा प्रभावी जुलूस कि पुलिस अफसर ने हमारे निर्धारित रूट से 14 किलो मीटर ज़्यादा चलवाया। गोया कि पूरे दंगा प्रभावित क्षेत्र से गुजरने को मजबूर किया। इस जुलूस में जाति, धर्म, संप्रदाय, पेशा किसी में फर्क नहीं था। एक झटके मे लंबे समय से लगे कर्फ्यू का आतंक टूट गया इस तरह दैहिक उपस्थिति के अलावा श्रव्य माध्यम से भी पूरा शहर इस अमन अभियान में जुटा। दूसरे दिन भोपाल कर्फ्यू मुक्त था। और बच्चे गिरियाँ-पतंगें लेकर सड़कों पर थे। जीवन पटरी पर था।

यह जो था वह रंगकर्म ही था। ऐसा रंग कर्म जो भरत की बताई रंगपीठ के आयतन और आकार से कहीं बड़ा, पूरे शहर का था। इसमें किरदार प्रोफेशनल्स या शौकिया कलाकार न होकर आमजन थे। एक डिजाइन पोस्टरों से भरा हुआ प्रेम गुप्ता का भी था जो सबरंग से मिलकर एक रंग हो गया था।

मुझे लगता है एक रंगकर्मी को, एक अभिनेता को, एक रंग निर्देशक को इस तरह समाज का होना चाहिए जैसा बंसी ने करके दिखाया। यह उसका हस्तक्षेप कारी थियेटर था। बंसी की रंग समीक्षा, आलोचना करने वाले बहुत हैं इसलिए मैंने सोचा-बंसी के रंग- रूट को खोजा जाये। नहीं मालूम कितना खोज पाया। पर कुछ तो पता चल ही गया कि एक समाज संपृक्त रंग कर्मी का रंग-रसायन कैसे बनता है।

इसमें बेशक बहुतों की मेहनत का योगदान था लेकिन बंसी की डिजाइन ने कमाल कर दिया। लीलाधर मण्डलोई भोपाल रेडिया स्टेशन के केन्द्र निदेशक थे। उन्होंने इस जुलूस की रनिंग कमेण्ट्री करवाई थी जिसने जुलूस के आयतन में एक नया आयाम जोड दिया था।

- 17, निराला नगर भदभदा रोड भोपाल, मो.: 9753425445

स्मृति शेष

( जीवन वृत्तांत )

# प्रथम गौंड महिला गौंडी चित्रकार : कलाबाई श्याम

विजय काटकर

स्व. श्रीमती कलावती आनंद सिंह श्याम अंतर्राष्ट्रीय प्रथम गौंड महिला गौंडी चित्रकार हैं। स्व. श्रीमती कलावती श्याम का जन्म ग्राम पाटनगढ़ जिला-डिंडोरी, म.प्र. में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री सोन साय तेकाम और माता का नाम श्रीमती ललिया बाई तेकाम है। बचपन में ही इनका विवाह ग्राम के ही श्री आनंद सिंह श्याम के साथ सात वर्ष (7 वर्ष) की उम्र में हुआ था। स्व. कलावती श्याम पहली गौंड महिला चित्रकार थी जिन्होंने गौंड चित्रकला को पहली बार सन् 1980 में कागज और कैनवास पर उतारा था। उस समय भोपाल में बहुकला केन्द्र भारत भवन का निर्माण श्यामला हिल्स, बड़ा तालाब के पास हो रहा था। तब भारत भवन, भोपाल से आदिवासी लोक कलाकारों की खोज करने एक चित्रकारों की सर्वे टीम ग्राम - पाटनगढ़, जिला-डिंडोरी गई थी। इस टीम में श्री अशोक साठे एवं श्री विवेक टेम्बे प्रमुख थे। उस समय श्रीमती कलावती श्याम की उम्र सौलह वर्ष (16 साल) थी। उस समय यह गाँव में बकरी चराने का काम करती थी। इनके साथ स्व. श्री जनगढ़ सिंह श्याम (अन्तरराष्ट्रीय गौंड चित्रकार) भी गाय और बकरी चराने का कार्य करते थे। चूँकि जनगण श्याम गौंडी चित्रकारी करते थे इसीलिए उन्हें भारत भवन, भोपाल में चित्रकारी के लिए बुला लिया गया। वहीं श्रीमती कलावती श्याम अपने पति श्री आनंद कुमार श्याम के साथ जबलपुर चली गई। वहां छः सात साल रहने के उपरान्त जब श्रीमती कलावती श्याम के पति श्री आनंद श्याम की नौकरी भारत भवन, भोपाल में लग गई, तब श्रीमती कलावती श्याम भी उनके साथ भोपाल आ गई। भारत में इसी दरम्यान प्रथम महिला चित्रकारों का शिविर (केम्प) लगा तो श्रीमती कलावती श्याम उसमें सम्मिलित हुई। इस शिविर में यह पहली गौंड चित्रकार के रूप में शामिल हुई। इसके बाद सन् 1986 में श्रीमती कलावती आनंद सिंह श्याम जे. स्वामीनाथन के सानिध्य में ग्राफिक स्टूडियो, भारत भवन, भोपाल में चित्रकारी का कार्य करती रही।

अन्तरराष्ट्रीय चित्रकार स्व. श्री जनगढ़ सिंह श्याम के बाद पति-पत्नी इस चित्रकला को आगे बढ़ाने के लिए निरन्तर वरिष्ठ चित्रकार श्री जे. स्वामीनाथन की मृत्यु उपरान्त इनकी स्मृति में भोपाल एवं दिल्ली में सामुहिक चित्रकला प्रदर्शनियाँ करने लगे। कभी ये वन्या के सहयोग से और कभी कला परिषद, भारत भवन के सहयोग से और कभी इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्राहलय, भोपाल के सहयोग से क्रियाशील रहे। निरन्तर चित्रकला की प्रदर्शनियों के माध्यम से नये चित्रकारों को अपने साथ सामूहिक कला प्रदर्शनी में सम्मिलित करते रहे तथा गौंडी चित्रकला की परम्परा का विस्तार एवं विकास करते रहें। फिर श्री जनगढ़ सिंह श्याम के बाद इन्होंने नर्मदा प्रसाद तेकाम, वेंकट रमन सिंह श्याम, विजय श्याम, सुरेश धुर्वे, भज्जू श्याम, रामसिंह उवेती हो चाहे दुर्गा श्याम हो, मयंक या ननकुसिया बाई श्याम हो इन्होंने सभी चित्रकारों को आगे बढ़ाने की प्रेरणा और सहयोग दिया।

स्व. कलावती श्याम पहली ऐसी महिला चित्रकार है जो इस भित्ती चित्र को डिंडोरी जिले के पाटनगढ़ ग्राम से जे. स्वामीनाथन के समक्ष पहली बार पेपरसीट कैनवास पर बनायी थी। वे दीवार पर बनने वाली भित्ती चित्र कागज, कैनवास, कार, बस, ट्रेन, हवाई जहाज पर बनाते-बनाते विश्व जगत के कई शहरों, देशों में पहुँच गई तथा इन चित्रकारों ने राज्य, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सम्मान और पुरुस्कार प्राप्त किए।

**प्रदर्शनी यात्रा**

देश के विभिन्न प्रमुख शहरों में जिनमें उदयपुर, डिंडोरी, भोपाल, जबलपुर, मुंबई, दिल्ली, अहमदाबाद, चण्डीगढ़, कोलकता, चैन्नई, बैंगलोर, सूरत, इलाहाबाद, नागपुर, खजराहो आदि में स्व. कलावती श्याम एवं श्री आनंद सिंह श्याम के चित्रों-कलाकृतियों की प्रदर्शनियां जहां लगी वहीं विदेशों के कई देशों जैसे - इंग्लैंड, फ्रांस, अमेरिका, जापान, स्कॉटलेंड, जर्मनी, स्पेन, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, हॉलेण्ड, पॉलेण्ड, नीदरलेंड इत्यादि स्थानों में प्रदर्शनी लग चुकी है। विश्व के अनेक देशों की यात्रा इन्होंने सिर्फ और सिर्फ अपनी गोंडी चित्रकारी को पहुँचाने, पहचान दिलाने, स्थापित करने के लिए लगन और जुनून के साथ सफलता पूर्वक की तथा मान-सम्मान प्राप्त किया।

1. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्राहलय द्वारा ग्राम-पाटनगढ़, जिला-डिंडोरी में चित्र शिविर एवं प्रदर्शनी (सन् 1993)
2. दक्षिण मध्यक्षेत्र नागपुर द्वारा आयोजित जनजाति चित्र शिविर,

औरंगाबाद (महाराष्ट्र) (सन् 1994)

3. भारत भवन, भोपाल द्वारा आयोजित फाइन आर्ट मध्यप्रदेश पार्ट-2 नामक प्रदर्शनी, नई दिल्ली (सन् 1995)
4. गोंडवाना उत्सव जबलपुर, मध्यप्रदेश में आदिवासी गोंडी कला चित्रकला प्रदर्शनी, साज सज्जा (सन् 1996)
5. सामुहिक आदिवासी चित्रकला प्रदर्शनी, भोपाल (सन् 1997)
6. प्रगति मैदान, मध्यप्रदेश हाउस, नई दिल्ली (सन् - 1997) भोपाल (सन् 1998)
7. खजराहो सन् 1998, पूना एवं मंदसौर सन् 1999, भोपाल।
8. खजुराहो (सन् 1999), नई दिल्ली सन् 2000 क्राफ्ट म्यूजियम, नई दिल्ली सन् 2000 अमरकंटक सन् 2000, दिल्ली सन् 2000, अनादि, नई दिल्ली सन् 2000

**शिरकत**

1. आदिवासी लोककला परिषद पचमढ़ी द्वारा पचमढ़ी में, 1993, 94, 95, 96 सह-कलाकार
2. आदिवासी लोककला परिषद द्वारा आयोजित महेश्वर उत्सव मध्यप्रदेश में साज-सज्जा हेतु 1994
3. नागर कला एवं आदिवासी लोक चित्र शिविर, चंडीगढ़ सन्-1995
4. भारत भवन चित्र शिविर पार्ट-2, भोपाल सन् 1995
5. आदिवासी लोककला परिषद, चित्र शिविर भोपाल सन् 1996
6. भारत भवन द्वारा आयोजित मध्यप्रदेश विधानसभा के लिए चित्र शिविर - 1996
7. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्राहलय द्वारा आयोजित भारत, ऑस्ट्रेलिया के तत्वाधान में आदिवासी डाट चित्र शिविर (केन को लबंग के आथित्य में) सन् 1997
8. अन्तरराष्ट्रीय व्यापार मेला, प्रगति मैदान, एम.पी. हाउस, नई दिल्ली सन् 1997
9. ट्रायफेड चित्रकला प्रदर्शनी, भोपाल सन् 1998
10. एच.एस.व्ही.एन. चित्रकला प्रदर्शनी, मंदसौर भोपाल-1999
11. प्रगति मैदान क्राफ्ट म्यूजियम, नई दिल्ली, खजुराहो सन् 2000
12. नागपुर, खजुराहो, अमरकंटक, नई दिल्ली आकसक-भोपाल रीति सन् 2000
13. छत्तीसगढ़ आर्ट फाउण्डेशन, चित्र शिविर, रायपुर सन् 2001

**संग्रह -**

1. आदिवासी लोककला परिषद, भोपाल (म.प्र.)
2. भारत भवन, श्यामला हिल्स, भोपाल (म.प्र.)
3. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्राहलय, भोपाल (म.प्र.)
4. मृगनयनी, भोपाल (म.प्र.)
5. ट्रायफेड, भोपाल (म.प्र.)
6. सा.से.जो. नागपुर (महाराष्ट्र)
7. प्रगति मैदान, नई दिल्ली (भारत)

इसके अतिरिक्त देश-विदेश के अनेक संग्राहलयों में कलाबाई की कृतियाँ संग्रहित है।

## कविता
## कलाबाई श्याम के जीवन वृत्त

रच गई थी
बस गई थी
कला के जीवन में
चित्रकला,
जीवन के अंतिम क्षण तक
चित्रकारी का चला
निरन्तर सिलसिला
ले हाथ में कूची
बालपन से
गोबर, माटी, गेरुआ
और खाड़ी से
घर, दीवार, आंगन में
चित्रों को बना उकेरा
इसी समय में
बाल्य कला को
गुरु जनगढ़ श्याम मिला
फिर चली कूची कागज, कैनवास पर
फिर घुमी-फिरी
गाँव, शहर, स्वदेश ही नहीं
विदेशों से भी न्यौता मिला,
छुआ शिखर चित्रकला क्षेत्र में, कला ने
विश्व जगत भी
हुआ दंग, अपनी मेहनत से, कलाकारी से
चित्रकला संसार भी दिया हिला।

सम्पर्क : 309, यादवपुरा, पुरानी विधानसभा, भोपाल-462003, म.प्र.

■

# कराल काल में काकली संगीत

भोपाल शहर में मार्च माह के पहले पखवाड़े का ऐसा दौर, जब कोरोना महामारी से हर दिन संक्रमित होने वालों का आँकड़ा 300-400 व्यक्ति हो रहा हो, ऐसे वक्त भी सच्चा संगीत रसिकजन, का जोख़िम उठाते हुए भी काकली संगीत संस्था के 11वें संगीत समारोह के संगीत के जुनून में अच्छी-खाँसी तादाद में मौजूद रहा, लेकिन किसी भी श्रोता के संक्रमित होने की कोई रिपोर्ट नहीं है।

भोपाल की काकली संगीत संस्था का 11 वाँ 2 दिवसीय संगीत समारोह गत 13-14 मार्च, शनिवार-रविवार की शाम स्थानीय मायाराम सुरजन हिन्दी साहित्य सम्मेलन भवन (पी.एण्ड टी. चौक) मे आयोजित हुआ। इस वर्ष का संगीत समारोह विदिशा के विलक्षण प्रति भावान युवा संगीतकार स्व. दीपक पाठक की यादगार को समर्पित था, जिनका वर्ष 1995 में 39 वर्ष 6 माह की अल्प आयु मे 'सेरेब्रल हैमरेज' बीमारी से आकस्मिक निधन हो गया। दीपक पाठक अपने वक्त के देश-विख्यात संगीतकार और शास्त्रीय संगीत गायक पं. गंगा प्रसाद पाठक (1902-1976) के पुत्र थे।

संगीत समारोह की शुरूआत-वरिष्ठ सैन्य अधिकारी कर्नल विजय कुमार सहगल (से. नि.) ने दीप प्रज्वलित करके की और काकली संगीत महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं के काकली वृन्द समूह ने पहले-पहले 'काकली-गीत' का समवेत गायन किया। ' काकली गीत 'संगीतकार सत्यनारायण शर्मा द्वारा रचित है, जिसकी धुन संगीत कालेज की उप प्राचार्या डा. दीप्ति गेड़ाम परमार ने तैयार की है। फिर काकली वृंद के इन्ही गायक कलाकारों ने दीपक पाठक की राग- 'अहीर भैरव' और 'बैरागी तोड़ी' में रचित दो राग बन्दिशेगायीं। अहीर भैरव की बन्दिश आड़ा चैताल मध्य लय में और बैरागी तोड़ी-मध्यलय तीन ताल में निबद्ध थी। दीपक की तीन ताल में रचित राग 'पटदीप' की बंदिश सहित ये 3 बन्दिशें हाथरस की प्रसिद्ध 'संगीत 'मासिक पत्रिका में वर्ष-1994 में प्रकाशित हुई थीं।

इस अवसर पर काकली संगीत महाविद्यालय की वार्षिकी पत्रिका 'अनंता ' का विमोचन कर्नल विजय सहगल ने किया। पत्रिका का सम्पादन डॉ. दीप्ति गेड़ाम परमार ने किया है। 'अनंता' का यह अंक स्व. दीपक पाठक के अल्प जीवन के सांगीतिक अवदान पर केन्द्रित है, जिसमें दीपक रचित राग पटदीप-अहीर भैरव और बैरागी तोड़ी की राग बन्दिशें पुर्नप्रकाशित हैं। संगीत समारोह में वर्ष 2021 का काकली संगीत सम्मान ग्वालियर घराने के 2 वयोवद्ध संगीतज्ञों भोपाल के श्री रामचंद्र विष्णु गोरे (93 वर्ष) और प्रयागराज के प्रो. पं. श्यामलाल विद्यार्थी 89 को उनकी आजीवन ग्वालियरी गायकी शैली की संगीत साधना के सम्मान में अर्पित किया गया।

संगीत समारोह में पहले दिवस की रात्रि कालीन संगीत सभा की शुरूआत में भोपाल के युवा कलाकार चैतन्य भट्ट ने सिंथसाइजर-की बोर्ड पर रात्रि के दूसरे प्रहर के औड़व-षाड़व स्वरों वाले राग 'रागेश्री' में आलाप- जोड़ और झाला बजाया, फिर मध्यलय तीन ताल में बड़े खयाल की बन्दिश बजायी, और द्रुतलय तीन ताल में छोटे खयाल की बन्दिश बजाकर वादन को विराम दिया। सिंथसाइजर- की बोर्ड भारतीय शास्त्रीय संगीत जगत में अगर बिल्कुल नया पाश्चात्य संगीत साज नहीं है, तो बहुत पुराना भी नहीं है। यही कारण है कि की बोर्ड पर 'रागेश्री' की रंजकता, सुनने में जितनी-आसान महसूस होती है, वही गंधार और निषाद के वाद-संवाद की स्वर रंजनी की, तालबद्ध अदायगी, मुश्किल होती है। ताल के आरोहण से परे, सिर्फ रे सा नि ध सा, ...ग म ध नि् ध, म ग' के आलाप के स्वरों से कलाकार के की बोर्ड वादन की परीक्षा हो जाती है। अभी की बोर्ड में राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दुस्तानी संगीत में अभिजीत पोहणकर के सिवा कोई और नाम देखने-सुनने में नहीं आया है। चैतन्य भट्ट को की बोर्ड वादन में अभी शास्त्रीय संगीत का लम्बा सफर तय करना है। चैतन्य भट्ट के साथ ग्वालियर के वरिष्ठ तबलाकार मुन्नालाल भट्ट की अनुभवी तबला संगत ने की बोर्ड वादन का मर्तबा काफी ऊँचा कर दिया।

पहली रात्रि की संगीत सभा की आखिरी और महत्वपूर्ण कला प्रस्तुति प्रयागराज के डा. जयंत खोत की थी। जयंत खोत, ग्वालियर घराने के प्रमुख गायक हैं। वे स्व. पं. बाला साहेब पूछवाले के उन खास 10 शिष्यों में एक हैं, जिनका उल्लेख बालासाहेब ने अपनी आत्मकथा 'मैं जैसा भी हूँ' में पृष्ठ-73 पर किया है। जयंत खोत ने बालासाहेब के गायन में वर्षों-वर्ष तानपूरा संगत करके बड़े मनोयोग से बाला साहेब की गायकी न सिर्फ हासिल की है, बल्कि आत्म सात की है। इन दिनों वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय में 'संगीत' विषय के विभागाध्यक्ष हैं। उन्होंने गायन की शुरूआत रात के दूसरे पहर के राग 'जोग' से की, जिसमें बालासाहेब रचित मध्यलय रूपक ताल में निबद्ध बन्दिश' सुरतिया प्यारी नीकी लागत है इन साँवरिया 'रसिक' की 'से गाया, जिसके दौरान जयंत खोत ने बताया कि बालासाहेब 'रसिक' नाम से खयाल की बन्दिशें रचा करते थे। यह 'उपनाम' इस बन्दिश में भी है।

राग 'जोग' की' ग ग म प म, म ग,म रे सा' स्वरावली से गुजरते हुए, फिर डा. खोत ने अपनी 'जोग' की बन्दिश 'चतुर सुघर बलमा मोरा, सुंदर सा-

सलोना सा' की अदायगी की। अगली पेशकश 'राग' आभोगी कानडा में शिव स्तुति थी, जो बाला साहेब रचित बन्दिश थी और अभी 11 मार्च को (परसों) सम्पन्न' शिवरात्रि पर्व की अनुभूति परक यादगार में थी। मध्यलय एक ताल रचित इस बन्दिश के बोल 'देव-देव महादेव शिवशंकर महेश्वर' थे और फिर इसी बंदिश से लगा रागजोग का तराना, ता ना ना देरे ता ऽऽ नोम 'मध्यलय तीन ताल में गाया।

इसके बाद डॉ. खोत ने ग्वालियरी गायकी में प्रचलित राग 'खमाज' की ठुमरी का गायन किया। यह ठुमरी पं. रातनजनकर रचित थी, जिसके बारे में जयंत खोत ने बताया कि ग्वालियरी शैली की ठुमरी की बन्दिशों में गायक कलाकारों द्वारा एक-दूसरे से सवाल जबाव हुआ करते थे, कि पं. रातनजनकर की इस ठुमरी का तुर्की-ब-तुर्की जवाब पं. नातू ने नायिका की छेड़-छाड़ वाली बन्दिश में दिया। गायन जारी रखते हुए खमाज की तीन ताल की पारम्परिक बन्दिश ''आज मोरी कलाई मुरक गई... नजर पिया तुम मानत नाँहि'' श्रेताओं ने सुनी और आगे राग 'हमीर' में पूर्व मध्यकालीन कवि 'जय देव' रचित अष्टपदी' को स्थायी अन्तरे में गाते हुए बताया कि ग्वालियर घराने में अष्टपदी को अनेक राग-रागिनियों में गाने की परम्परा, काफी पहले से चली आ रही थी, जिसमें स्थायी-अन्तरा, सँचारी और आभोग गाए जाते थे। गायन का समापन जयन्त खोत ने राग -भैरवी की एक टप्पा बन्दिश से किया और 'भैरवी' में एक द्रुत तराना गाते हुए गायन को विराम दिया। जयन्त खोत की गायन प्रस्तुति में शुरू से अंत तक उनके गुरू बाला साहेब पूछवाले की गायकी सुनी और महसूस की जा सकती थी, और यही शिष्य की कला प्रस्तुति की सच्ची सफलता थी। गायन के साथ तानपूरा संगत डॉ. दीप्ति परमार, तबले पर मुन्नालाल भट्ट और हारमोनियम पर जितेन्द्र शर्मा ने उत्कृष्ट साज़-संगत की। पहले दिन की इस रात्रि कालीन संगीत सभा का समापन काकली वृन्द के कलाकारों द्वारा विश्व कल्याण सम्बन्धी ऋग्वेद की ऋचाओं के समवेत गायन से हुआ।

रविवार 14 मार्च के दूसरे दिन की रात्रि कालीन संगीत सभा में काकली संगीत महाविद्यालय की छात्रा समीक्षा जोशी ने गुरु सज्जन लाल भट्ट रचित राग 'रागेश्री' में विलम्बित आड़ा चैताल में निबद्ध बड़ा खयाल 'पिया घर नाँहि आए और फिर मध्यलय एक ताल में छोटा खयाल 'पियु के दरस बिन सखी' गाया। लगातार अनुशासित -गंभीर रियाज और गुरू दीप्ति गेड़ाम के सक्षम मार्ग दर्शन में समीक्षा की गायन प्रस्तुति में काफी निखार आया है। समीक्षा ने गायन का समापन राग 'श्वमाज' पर आधारित एक टप्पे से किया, जिसके शब्द थे, 'बोल सुना ऽऽऽऽ जानी।' टप्पा गायकी जैसी जटिल शैली को आत्म विश्वास से मंच पर प्रस्तुत करना यह इंगित करता है कि संगीत कला में समीक्षा का भविष्य उज्जवल है। समीक्षा के गायन में अच्छी तबला संगत काकली महाविद्यालय की छात्रा आरती मारन ने की और हारमोनियम पर उत्कृष्ट संगत वरिष्ठ वादक जितेन्द्र शर्मा ने की।

संगीत सभा की अगली प्रस्तुति सागर की उभरती तबला वादिका एकलव्या भट्ट का एकल तबला वादन थी, जिसमें एकलव्या ने तबले पर ''तीन ताल'' बजाया, जिसमें पेशकार, पलटे, चक्करदार तिहाईयों का प्रदर्शन किया। वादन क्रम जारी रखते हुए एकलव्या ने बनारस अंग के दो कायदे बजाकर 'सम से सम तक' कठिन आवर्तन पूरे किए। एकलव्या के तबले में किड़नग और घिड़नग' के ध्वनि सौंदर्य के साथ, बोलों का प्रभावी निकास 'धातिट धिन, घातिट धिन' में रियाज के हाथ की लयदार माधुरी खास तौर पर सुनने लायक थी। एकलव्या का 20 मिनट का कलात्मक तबला वादन उत्कृष्टता का उदाहरण था, जो इतना अनुशासित था कि तेजतर ताल वादन का एक-एक बोल साफ-साफ सुना और समझा जा सकता था। तारीफ यह कि ऐसे तबला वादन में एक बार भी तबला नहीं उतरा कि उसे चढ़ाने की जरूरत हो। तबले के साथ हारमोनियम पर नगमा संगत पिता और गुरू सागर के हेमन्त भट्ट ने की।

काकली संगीत सभा की आखिरी पेशकश में प्रयागराज के प्रो. पं. श्यामलाल विद्यार्थी (89 वर्ष) का ग्वालियर घराने का प्रभावशाली खयाल गायन हुआ। श्यामलाल विद्यार्थी ने क्लासिकी गायकी की तालीन पं. रामाश्रय झा और सन पचास के दशक के दिग्गज गायक ग्वालियर घराने के पं. नारायण लक्ष्मण गुणे से हासिल की है। बकौल विद्यार्थी, उन्होनें लगातार 15 वर्ष गुरू की तन-मन धन से सेवा की और ग्वालियरी गायकी प्राप्त की : नतीजतन बारहमासी रियाज से पं. विद्यार्थी की जवानी जैसी आवाज की चमक दमदार और बुलन्द है।

गायन की शुरूआत पं. श्यामलाल विद्यार्थी ने राग 'आभोगी के बड़े खयाल की बन्दिश' सुध न रही कछु काम काज की, से की। पं. गुणे की यह बन्दिश मध्यलय-एकताल में निबद्ध थी। इस 89 साल की उम्र में भी विद्यार्थी जी की आवाज की घुमत-फिरत, सरगम की तीव्रता और ग्वालियरी शैली की तानों की झड़ी सुनते ही बनती थी, बल्कि हैरत में डालने वाली थी। बसन्त ऋतु की रात के माहौल में 'आमोगी कानड़ा के स्वरों ''सा ध सा, रे ग् म, रे सा की गूँज से जिस संयोग श्रृंगार की सृष्टि होती है, वह श्रोता को सीधे रसोद्रेक से जोड़ देती हैं फिर आभोगी की अगली तीन ताल की द्रुत बंदिश 'बैरन भई रतियाँ.... वियोग श्रृंगार का दूसरा पहलू श्रोता के सामने लाती है।

पं. श्यामलाल की अगली प्रस्तुति 'राग' खंबाबती' की है, जो है तो मूल रूप में दाक्षिणात्य शैली का राग लेकिन उत्तरी राग गायन पद्धति में समरस हो गया है। पं. श्यामलाल राग खंबावती' में संयोग श्रृंगार की तीन ताल की बन्दिश 'लाज शरम तोको नाँहि आवत' गाते हैं, तो बन्दिश में धैवत और मध्यम की स्वर संगति' बहुत मधुर महसूस होती है। फिर गायक 'राग काफी-कानड़ा' गाते हैं कि जिसमें 'निध प म प, म प, नि ग नि सा' स्वरों में भरपूर 1 मिनट लम्बी तान लेते हैं। जवानों जैसी यह सुदीर्घ तान 89 साल उम्र के फेफड़ों में अविश्वसनीय जैसी असंभव तान महसूस होती है। काफी कानड़ा मिश्र राग है,

जिसकी उत्पत्ति पूर्वांग में कानड़ा और उत्तरांग में काफी के मिश्रण से हुई है। काफी कानड़ा की रचनाओं में श्रृंगार के दोनों पहलुओं का अधिक प्रभाव दिखायी देता है।

गायन का क्रम जारी रखते हुए श्यामलाल विद्यार्थी अब पेश करते हैं राग 'भीम', जो दिन के तीसरे पहर का औड़व संपूर्ण 5+7 स्वरों वाला राग है। राग 'भीम' का वादी स्वर 'षड्ज' और संवादी स्वर पंचम है। आम श्रोता राग' भीमपलासी' से ज्यादा परिचित है, और गायक-वादक राग-भीम कम ही गाते-बजाते हैं। पं. श्यामलाल इस राग में संयोग श्रृंगार की बंदिश ''जाने दो मोहे अपने घरवा....बरजोरी नित की अब ना सहूँगी,' गाते हैं।

यह वसन्त ऋतु और फागुन का महीना है और होली का पर्व सामने है। ऐसे माहौल में 'अष्ट छाप' के मध्यकालीन भक्त कवि कृष्णदास के 'ब्रज की होरी' के पदों का गायन संगीत की महफिल को ऋतु सापेक्ष जीवंत कर देता है। श्यामलाल राग 'देश' की अद्धाताल में निबद्ध यह कृष्ण भक्ति पद गाते हैं''- हाय होली के खेलैया, होली खेलहूँ न जानी। कृष्णदास, ग्वालन की संगत, रस की बात का जाने।,,

अगली गायन बन्दिश राग-'सिन्दूरा-काफी में है, जो झपताल में पं. श्यामलाल द्वारा स्वर रचित शिव स्तुति है-

**हर-हर महादेव, शीशजटा-जूट, लिपटे भुजंग**
**कानन कुण्डल-गले मुण्ड माला**
**डमरू डिमक डीम, बाजे निराला**
**हर -हर-महादेव.....**

गायन का समापन कबीर के निर्गुणी पद 'माया महाठगिनि हम जानी' से होता है, जिसे पं. श्यामलाल राग भैरवी में गाते हैं। पं. श्यामलाल विद्यार्थी के ग्वालियर घराने की पुरानी गायन शैली की प्रस्तुति में तबले की साथ-संगत ग्वालियर ही के वरिष्ठ कलावन्त, पं. मुन्नालाल भट्ट करते हैं। कहना न होगा कि श्यामलाल विद्यार्थी की पुरानी ग्वालियरी खयाल गायकी में तबले के साथ संगत बहुत ही जटिल और चुनौती वाली थी, बल्कि खयाल गायन की उत्कृष्ट के अनुरूप थी। खयाल गायन में उनके शिष्य उमाशंकर पाण्डेय गुरू के साथ अनुशासित संगत देते है और गायन के बीच-बीच में कुछ के ऐसी चमकदार तानें लेते है, जिससे उनकी प्रतिभा की रोशनी अलग से चमकती है। पं. श्यामलाल के गायन में वरिष्ठ वादक जितेन्द्र शर्मा चुनौती भरी ललित हारमोनियम संगत करते हैं। संगीत समारोह के समापन में काकलीवृंद के कलाकारों ने माखनलाल चतुर्वेदी रचित देश भक्ति पद-'पुष्प की अभिलाषा' का गायन किया।

इन दो बुजुर्ग कलाकारों पं. श्यामलाल विद्यार्थी (89 वर्ष) और पं. मुन्नालाल भट्ट (66 वर्ष) के बेहतरीन गायन-वादन को सुनते हुए, देश के वर्तमान सांगीतिक माहौल का ध्यान आता है, जहाँ 89 वर्ष का अति बुजुर्ग कलाकार, जवानों को मात करने वाला 'अखाड़ा पछाड़' गाना गा रहा है, और 66 साल का वरिष्ठ संगतकार ताल बादन में जबरजंग-तबला संगत कर रहा है। भारत में न जाने ऐसे कितने ही बुजुर्ग कलाकार अपने भीतर कलाओं का श्रेष्ठतम खजाना संजोये हुए है कि जिन्हे अपनी कला के प्रदर्शन के लिए विशाल भारतीय समाज में कोई सम्मानजनक मंच नहीं हैं। अनुभवों का यह अनमोल कोष लिए ये बुर्जुग कलाकार धीरे धीरे दुनिया से विदा होते जा रहे हैं। यह समस्त समाज के लिए गंभीर चिन्तन का विषय है कि इस लगातार अपूरणीय कलात्मक क्षरण को रोकने के लिए समाज के सभी चिन्तन-शील लोगों को आगे आना होगा, और सरकार से अधिक अपेक्षा करना छोड़ना होगा।

रिपोर्ट : राम मेश्राम

## ''डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर स्मृति सम्मान'' से सम्मानित हुए ललित शर्मा

झालावाड़ 18 मार्च । विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग द्वारा बुधवार शाम झालावाड़ के इतिहासकार ललित शर्मा को ''डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर स्मृति सम्मान-2021 ई.'' से सम्मानित किया गया।

शर्मा को यह सम्मान मालवा के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में शाजापुर एवं आगर जिले के इतिहास के अनछुए पक्षों को उजागर कर प्रकाशित करने एवं डॉ. वाकणकर के कार्यो को आगे बढ़ाने हेतु प्रदान किया गया।

इस अवसर पर विक्रम विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अखिलेश कुमार पाण्डेय एवं विभागाध्यक्ष डॉ. आर.के. अहीरवार ने शर्मा को शाल, पुष्पहार पहनाकर तथा प्रतीक चिन्ह व अभिनन्दन पत्र भेंट कर सम्मानित किया। समारोह में विश्वविद्यालय परिक्षेत्र के 60 महाविद्यालयों के लगभग 100 इतिहास व्याख्याता तथा उज्जैन के इतिहासकार भी मौजूद थे।

पुस्तक समीक्षा

# कला समीक्षा की कसौटी की परख

अखिलेश निगम

डॉ. मंजु प्रसाद द्वारा लिखित 'भारतीय चित्रकला का विकास' (दिल्ली की ए.आर. पब्लिशिंग द्वारा प्रकाशित) उनकी पहली प्रकाशित पुस्तक है। इसका प्रकाशन इस अर्थ में और भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि यह हिन्दी भाषा में है। जिसकी कमी कला-क्षेत्र में बराबर खटकती रही है। यह पुस्तक डॉ. प्रसाद की शिक्षा-यात्रा का वह पड़ाव है जो उनकी पी-एचडी उपाधि के शोध से उपजी है।

भारतीय चित्रकला के विकास के साथ-साथ कला-लेखन विशेषत: कला समीक्षा की विकास-यात्रा इस पुस्तक का मूलाधार है जिसे लेखिका ने सात खण्डों में विस्तारित किया है, यथा -भारतीय और पाश्चात्य कला सिद्धांत, भारत की पारम्परिक कला, पाश्चात्य संस्कृति के सम्पर्क में भारत में नई कला धारा, भारतीय आधुनिक कला (सन् 1947 से सन् 1975 तक), हिन्दी पत्रकारिता में कला समीक्षा, हिन्दी के प्रमुख कला समीक्षक, हिन्दी कला समीक्षा की उपलब्धियाँ। विषय की प्रमाणिकता के संदर्भ में अजंता, लघु चित्र शैली (विशेषत: राजस्थान शैली), बंगाल स्कूल के प्रमुख चित्रकारों सहित आधुनिक भारतीय कलाकारों के रंगीन चित्रों का समावेश किया गया है।

वहीं चित्रकार एवं कला समालोचक अशोक भौमिक का भूमिका/कथन भी कला-जगत के एक कटु सत्य को उद्घाटित करता है - हिन्दी में चित्रकला पर पुस्तकें कम देखने को मिलती हैं। इसका प्रमुख कारण अच्छे लेखकों का आभाव रहा है, साथ ही हमारे देश में चित्रकार और चित्रकला जिस वर्ग द्वारा पोषित है, उसकी भाषा अंग्रेजी है इसीलिए हिन्दी (या अन्य किसी भारतीय भाषाओं) में लिखी गयी समीक्षाएं कलाकारों के मूल्याकंन में मददगार साबित नहीं होती हैं। यह भारतीय चित्रकला का एक दुर्भाग्यजनक सच भी है कि बहुत कम सक्रिय चित्रकारों ने कला लेखन को अपनी जिम्मेदारी समझ कर कुछ लिखा है। हिन्दी ही नहीं बल्कि समूचे भारत की कला समीक्षा, किसी अज्ञात कारण से कुछ साहित्यकारों का (मुख्यत: कवियों का) कार्य क्षेत्र रहा है। इसके चलते चित्रों को, साहित्य समीक्षा के मानकों और सिद्धांतों पर, साहित्य की शब्दावली में ही किया जाता रहा है। इसके समानांतर, अन्य कला रूपों से चित्रकला की विशिष्टता को चिन्हित करने की जगह पर कलाओं के अंतर-संबंधों पर सतही बातचीत होती रही।

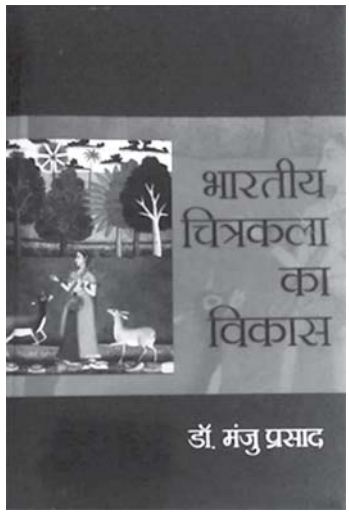


वर्तमान समय में कला के मूल्यांकन के संबंध में यह प्रश्न आता है कि कला समीक्षा की कसौटी क्या हो, दर्शक की प्रतिक्रिया, काल का प्रमाण पत्र या संसार के बाजार में लगने वाले मूल्य ? आज प्राय: इन्हीं आधारों पर कला श्रेष्ठता का निर्णय होता है। परंतु किसी भी मौलिक कला के मूल्यांकन की सच्ची कसौटी तो कलाकार की अपने उद्देश्य में, उसी की मनतुष्टि से जांची जाने वाली सिद्धि है- लेखिका का यह वक्तव्य (उपसंहार) कला/ मूल्यांकन पर एक गंभीर मंथन का आमंत्रण है।

शोध और प्रकाशन के बीच की रेखा पर यदि थोड़ा अधिक ध्यान देने पर बल दिया जाता तो अधिक बेहतर होता। फिर भी हिन्दी में एक संदर्भ ग्रंथ के रूप में पुस्तक स्थापित होने योग्य है।

**कला** - भारतीय चित्रकला का विकास, **लेखिका** - डॉ. मंजु प्रसाद, **प्रकाशक** - ए.आर. पब्लिशिंग कंपनी, दिल्ली, **मूल्य** - 525 रुपये

**लेखिका परिचय :** बिहार में जन्मी (1969) डॉ. मंजु प्रसाद की बी.एफ.ए की शिक्षा पटना स्कूल ऑफ आर्टस से और फिर एम.एफ.ए तथा पी.एचडी की उपाधि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से प्राप्त कर अब वे लखनऊ में रहकर कला लेखन और चित्रकारी में संलग्न हैं।

-1- राधा कृष्णन् पुरम, स्टेट बैंक के पीछे,
पो.-गोसाईंगंज, लखनऊ (उ.प्र.)-226501, मो.: 9580239360

जब हम अच्छा खाने, अच्छा पहनने और अच्छा दिखने में खर्च करते हैं
तो अच्छा पढ़ने-लिखने और सोचने-समझने की खुराक में खर्च क्यों न करें !

कला समय

प्रबंध संपादक

सम्पर्क- जे-191, मंगल भवन, महावीर नगर, ई-6, अरेरा कॉलोनी, भोपाल- 462016 फोन : 0755-2562294, मो.-94256 78058
ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com / bhanwarlalshrivas@gmail.com

# दर्पण म्यूजिक सोसाइटी ऑफ किराना घराना का संगीत समारोह

श्री सलीम खान दिल्ली के युवा, उत्साही एवं निष्ठावान कलाकर्मी हैं, विश्वविख्यात सरोद वादक उस्ताद फिरदौस अहमद खान के सुयोग्य सुपुत्र सलीम..दर्पण म्यूजिक सोसाइटी ऑफ किराना घराना नामक अपनी एक संस्था के माध्यम से संगीत के प्रचार-प्रसार मे निरंतर लगे हुए है कोरोना के विश्वव्यापी संकट के थोड़ा सा धीमा पड़ते ही सलीम खान ने क्लासिकल हैरिटेज ऑफ इंडियन क्लासिकल म्यूजिक के सहयोग से एक ..द्वि दिवसीय भव्य संगीत समारोह का आयोजन गाँधी हिंदुस्तानी साहित्य सभा दिल्ली के सभागार में आयोजित किया..कोरोना के बचाव से सारे नियमों का कड़ाई से पालन करते हुए। प्रथम दिन के कार्यक्रम का सुंदर शुभारम्भ पदम्श्री पंडित भजन सोपोरी जी के युवा एवं प्रतिभावान शिष्य दिव्यांश हर्षित श्रीवास्तव के सुन्दर संतूर वादन से हुआ जिसे काफी पसंद किया गया इनके साथ सटीक तबला संगति श्री राशिद नियाजी ने की. विश्वविख्यात बांसुरी वादक पंडित अजेय प्रसन्ना के सुमधुर बांसुरी और विश्वविख्यात तबला वादक उस्ताद रफीउद्दीन साबरी के तबले की अद्भुत जुगलबंदी ने लोगों का मन मोह लिया, यह सुंदर कार्यक्रम आज की उपलब्धि रहा।

पहले दिन के कार्यक्रम का सुंदर समापन शाकिब उमर चिश्ती एवं उनके दल द्वारा प्रस्तुत सूफियाना कलाम इस कार्यक्रम का विशेष आकर्षण रहा. दूसरे दिन के संगीत संध्या की शुरूआत मोहसिन अली खान के सुरीले गायन से हुई साबरी हुसैन की तबला संगति और जाकिर धोलपूरी की हारमोनियम संगति

भी प्रशंसनीय रही। उस्ताद रफीउद्दीन साबरी के तबले और पंडित राधे श्याम शर्मा के पखावज की प्रभावशाली और चामत्कारिक जुगलबंदी ने दर्शकों को खूब रोमांचित किया. हारमोनियम पर डॉ. विनय मिश्र की संगति बहुत ही समझदारी भरी हुई थी. समारोह का भव्य समापन सुफियाना कलाम से हुआ.. गायक थे.. दानिश हिलाल खान, इनके साथ तबले पर साबिर अली और उजित उदय, सारंगी पर एजाज हुसैन और हारमोनियम पर जाकिर धौलपुरी ने बहुत ही अच्छी संगति की बहुत दिनों के सांगीतिक सूनेपन के बाद यह सुरीला आयोजन अत्यंत सुखद प्रतीत हुआ।

रपट- पं. विजयशंकर मिश्र

# संगीत नायक पंडित दरगाही मिश्र संगीत अकादमी गुरुग्राम में वसंतोत्सव

महान संगीतकार संगीत नायक पंडित दरगाही मिश्र की स्मृति में उनके सुयोग्य प्रपौत्र पंडित विजय शंकर मिश्र द्वारा गुरुग्राम में स्थापित और संचालित संगीत अकादमी का वसंतोत्सव कार्यक्रम पिछले दिनों अत्यंत धूमधाम से संपन्न हुआ जिसमें विभिन्न विधाओं के लब्ध प्रतिष्ठित संगीतकारों ने माता सरस्वती और पंडित दरगाही मिश्र जी को अपनी संगीताजलि सादर समर्पित की। कार्यक्रम का संचालन पंडित विजयशंकर मिश्र ने किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ सुमधुर सरस्वती वंदना जयति जयति जय मां सरस्वती के गायन से हुआ जिसे दिनेश कुमार और पूनम रानी भारद्वाज ने प्रस्ततुत किया इसके बाद प्रशंसा ने राग मालकौंस में एक द्रुत ख्याल सुरीले अंदाज में प्रस्तुत किया, तबला संगति उदय शंकर मिश्र ने और हारमोनियम संगति बी के अलंकृत ने किया श्वेता शर्मा द्वारा प्रस्तुत राग विहाग का गायन भी काफी पसंद किया गया तबले पर उदय शंकर मिश्र और हारमोनियम पर बी के अलंकृत ने अच्छी संगति की। दिव्याशुं विडला द्वारा सितार पर राग जयजयवंती की ओर व्याख्या द्वारा संतूर पर राग केदार की अवतारणा अत्यंत सुंदर और सुरीली रही.उदयशंकर मिश्र ने अत्यन्त सूझ बूझ और सहयोगी भाव से दोनों ही युवा कलाकारों की संगति की सौरभ पांडे का भजन भी पसंद किया गया. दिनेश कुमार ने राग वसंत में दो भावपूर्ण रचनाओं की प्रस्तुति की तबले पर उदय शंकर मिश्र और हारमोनियम पर बी के अलंकृत ने सहयोग पूर्ण संगति की। इस अवसर पर अलंकृत बैंड की एक सामूहिक प्रस्तुति ने भी लोगों का दिल जीत लिया। बी के अलंकृत ने इसका निर्देशन और नेतृत्व किया।

इस अवसर पर इस बैंड द्वारा निर्मित और प्रसारित एक भजन के वीडियों का लोकार्पण पंडित अभय शंकर मिश्र, काकोली मिश्र, उदयशंकर मिश्र और पंडित विजयशंकर मिश्र तथा रेणुका आर्या ने किया, इस अवसर पर अलंकृत बैंड की पूरी टीम उपस्थित थी।

ख्यातिप्राप्त गायिका श्वेता दुबे ने अपने सम्मोहक गायन का शुभारंभ एक गुरू वंदना तत्पश्चात सरस्वती वंदना से किया .इसके बाद उन्होंने एक वसंत गीत एक रूमानी दादरा और होली का बहुत ही अच्छा गायन किया. तबले पर दीपक कुमार और हारमोनियम पर गीतेश मिश्र ने इनकी बहुत ही बढ़िया संगति कीं हालांकि ये तीनों ही कलाकार सीधे मंच पर मिले थे लेकिन इनकी आपसी सूझबूझ और तालमेल प्रशंसनीय थी।

अमन पाथरे और दीपक कुमार ने अपने युगल तबला वादन से काफी सराहना अर्जित की। बोलों का सुंदर निकास, बहुत ही अच्छी तैयारी,सुंदर बोलों की सुंदर प्रस्तुति और आपसी सामंजस्य के कारण ये दोनों ही युवा ताबलिक खूब सराहे गये। इनके साथ हारमोनियम पर उमेश साहू ने बहुत ही अच्छी संगति की।

मोनिदीप मित्रा एक ऐसे गिटार वादक है जो बहुत ही सफलता के साथ इस पाश्चात्य वाद्य पर भारतीय शास्त्रीय संगीत की संदुर प्रस्तुति कर रहे है। इस शाम इन्होंने गिटार पर राग रागेश्वरी की अत्यंत मार्मिक प्रस्तुति की। उनके वादन ने लोगों को खूब आकर्षित किया। तबला संगति श्री अमृतेश् शांडिल्य ने की थी।

स्नेहलता मिश्र युवा पीढ़ी की अत्यंत प्रतिभाशाली गायिका हैं। उन्होंने अपने गायन की सुंदर शुरूआत एक दादरा से किया... कंकड़ मोहे लागी.... और इसके बाद उनके द्वारा प्रस्तुत होली ने तो जैसे लोगों को सुर,लय की रंगों से भिगो दिया। एक शब्द सुरों की चाशनी में डूबे हुए थे जैसे। उनके पति विख्यात तबला वादक पं. जयशंकर मिश्र की संगति भी काफी प्रभावशाली रही। लग्गी लड़ी के कई अलग अलग प्रकारों का वादन किया उन्होंने। हारमोनियम संगति गीतेश मिश्र ने की।

श्री अमृतेश् शांडिल्य ने अपने स्वतंत्र तबला वादन में दिल्ली, फर्रूखाबाद और बनारस घराने की कई अच्छी बंदिशों की आकर्षक प्रस्तुति की, पंडित सुरेश तलवलकर ने कई रचनाओं की भी प्रस्तुति की अमृतेश ने। पंडित गीतेश मिश्र देश के प्रतिष्ठित गायक है। कई लोगों के साथ हारमोनियम संगति करने के पश्चात गायन के लिए बैठने पर भी गीतेश उर्जा से भरे हुए थे। पंडित जय शंकर मिश्र के प्रभावशाली तबला संगति और संघमित्रा चक्रवर्ती के हारमोनियम संगति में उन्होंने राग हिंडोल और मालकौंस में अपने घर और घराने की कई दुर्लभ श्रेणी की रचनाओं का शानदार प्रदर्शन किया। स्वर और लय पर अद्भुत पकड़ तथा रागों का सुंदर सुविचारित प्रयोग उनकी विशेषता है।

गीतेश मिश्र ने अपने गायन का समापन मालकौंस से किया और विदुषी संघमित्रा चक्रवर्ती ने अपने गायन का शुभारंभ मालकौंस से किया। उन्होंने झपताल में मध्य लय की एक बंदिश प्रस्तुत करने के बाद एक तराना भी प्रस्तुत किया। सुरीलापन और मार्मिक गायन इनके गायन की मुख्य विशेषता है। कार्यक्रम के बाद अल्पाहार की भी व्यवस्था थी। एक लंबी अवधि के बाद इस तरह के भव्य सांस्कृतिक आयोजन से लोगों को ऐसा अनुभव हुआ जैसे महीनों की तेज गर्मी के बाद बारिश के झोंकों ने दस्तक दी हो।

– रिपोर्ट एवं चित्र: रेणुका आर्या

# 75 वें जन्म दिवस के अवसर पर अरूण तिवारी का अमृत महोत्सव

4 फरवरी 2021 को होटल कोर्ट यार्ड मेरियेट डी.बी. माल भोपाल में साहित्यक पत्रिका 'प्रेरणा' के संपादक श्री अरूण तिवारी जी का 75 वाँ जन्मदिन उनके अमृत महोत्सव के रूप में बड़े उत्साह और भव्यता के साथ मनाया गया। श्री तिवारी की हाल प्रकाशित पुस्तकें 'अपनी बात', 'सृजन का समकालीन परिदृश्य', 'प्रेरणा के नये अंक' और 'प्रेरणा सीनियर सिटीजन टाइम्स' न्यूज पेपर का लोकार्पण किया गया इस अवसर पर पैलेस आर्चर्ड रहवासी समिति के वरिष्ठ सदस्यों, पारिवारिक मित्रों, 'प्रेरणा' परिवार और प्रतिष्ठित लेखकों ने बड़ी संख्या में भागीदारी की। सभी ने तिवारी जी के रचनात्मक अवदान को सराहा और उन्हें बधाई देते हुए उनके स्वस्थ सुंदर जीवन के साथ शतायु होने की कामनाएँ की।

कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ कथाकार मुकेश वर्मा निदेशक वनमाली सृजनपीठ भोपाल ने की, मुख्य अतिथि श्री अरुण तिवारी जी के साथ विशेष अतिथि थे वरिष्ठ कथाकार श्री शंशाक एवं सानिध्य रहा कवि मार्क्सवादी विचारक श्री शैलेन्द्र शैली जी और कवि, पत्रकार श्री युगेश शर्मा जी का इसी दिन उनका भी जन्मदिन था उन्हें भी बधाई दी गई। संचालन और समन्वय वरिष्ठ कवि बलराम गुमाश्ता ने किया।

अमृत महोत्सव के सफल आयोजन में अपनी सद्भावना और

सहयोग के साथ जो संस्थाएं शामिल हुई उनमें 'कला समय', 'राग भोपाली', 'पहले पहल', 'प्रेरणा परिवार', 'पैलेस आर्चर्ड रहवासी समिति', 'विश्वरंग', 'वनमाली सृजनपीठ', 'आई सेक्ट प्रकाशन' और 'सरोकार सहकारिता' तिवारी परिवार की ओर से श्री अभिनव, श्री आराध्य, श्री अनिमेष तथा 'कला समय' के संपादक श्री भंवरलाल श्रीवास जी ने सभी मेहमानों, संस्थानों और अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

रपट : बलराम गुमास्ता

Pratham Homoeopathic Clinic & Research Centre

# Pratham Homoeopathic Clinic & Research Centre

FEE ₹200/-

## Assured results in HAIR CARE SOLUTIONS

Hair fall, Baldness,
Premature grey hairs,
Scalp issues like Dandruff,
Split ends etc

## Assured results in SKIN ISSUES

Dermatitis, Acne, Blotches,
Pimples, Dry skin, White spots,
Corns, Cracked heels,
Repeated skin, Allergies in kids etc

## Assured results in KID'S ISSUES

Anxiety, Bed wetting,
Recurrent allergies,
Behavior issues, Skin infections,
Low appetite & weight

**Dr. Sandhya Chouksey**
Senior Consultant Homoeopath

**PRATHAM HOMOEOPATHIC CLINIC & RESEARCH CENTRE**
301-302,Mahasagar Corporate, Geeta Bhawan, Indore
Time : 10 am - 2 pm, Sunday closed
97524 10846 / 98260 60636

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी भँवरलाल श्रीवास द्वारा दृष्टि ऑफसेट, 36-37, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन नं-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)-462016 से प्रकाशित। संपादक-भँवरलाल श्रीवास